जूनियर एडेड भर्ती-2021

संस्कृत

जय जूनियर

लेखक
सर्वज्ञभूषण

सम्पादक
शुभम ममगाई

- **प्रकाशक**
  संस्कृतगङ्गा (पञ्जीकृत)
  59, मोरी, दारागञ्ज, प्रयागराज
  (कोतवाली दारागञ्ज के आगे, गङ्गाकिनारे संकटमोचन छोटे हनुमान् मन्दिर के पास), Mb. : 9839852033
  email-Sanskritganga@gmail.com
  www.sanskritganga.org

- **प्रकाशन-सहयोग**
  युनिवर्सल बुक
  1519 अल्लापुर, प्रयागराज
  ☎ : 0532-2503638

- मुख्यवितरक
  राजू पुस्तक केन्द्र
  अल्लापुर, प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)
  मो० 9453460552
- पुस्तकें डाक द्वारा भी आर्डर कर सकते हैं–
  Mob. : 8004545095
  8004545096

- **अक्षर विन्यास- नितिन कुमार, संदीप कुमार, विनय साह**

- **प्रथम संस्करण –** मार्च 2021 महाशिवरात्रि

- **मूल्य – रु 125/-** (एक सौ पच्चीस रुपये मात्र)

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

1. राजू पुस्तक भण्डार, अल्लापुर, इलाहाबाद
   सम्पर्क सूत्र : 0532-2503638, 9453460552
2. संस्कृतगङ्गा, दारागञ्ज, इलाहाबाद - 8004545096
3. गौरव बुक एजेन्सी, कैण्ट, वाराणसी
4. विजय मैग्जीन सेन्टर, बलरामपुर
5. जायसवाल बुक सेन्टर, हरदोई – 9415414569
6. शिवशंकर बुक स्टाल, जौनपुर
7. न्यू पूर्वांचल बुक स्टाल, जौनपुर – 9235743254
8. कृष्णा बुक डिपो बस्ती – 8182854095
9. मौर्या बुक डिपो, पाण्डेयपुर, वाराणसी– 9454735892
10. मनीष बुक स्टोर, गोरखपुर – 9415848788
11. द्विवेदी ब्रदर्स, गोरखपुर – 0551-344862
12. विद्यार्थी पुस्तक मन्दिर, गोरखपुर – 9838172713
13. रंजन मिश्रा, गोरखपुर (बस स्टैण्ड)
14. आशीर्वाद बुक डिपो, अमीनाबाद, लखनऊ
15. मालवीय पुस्तक केन्द्र, अमीनाबाद, लखनऊ – 9918681824
16. मॉडर्न मैग्जीन बुक शॉप, कपूरशाला, लखनऊ
17. साहू बुक स्टॉल, अलीगंज, लखनऊ – 9838640164
18. भूमि मार्केटिंग, लखनऊ – 9450520503
19. दुर्गा स्टोर, राजा की मण्डी, आगरा – 9927092063
20. महामाया पुस्तक केन्द्र, बिलासपुर – 09907418171
21. डायमण्ड बुक स्टाल, ज्वालापुर, हरिद्वार
22. कम्पटीशन बुक हाउस, सब्जी मण्डी रोड, बरेली – 9897529906
23. अजय गुप्ता बुक स्टोर, लखीमपुर – 809062054
24. शिवशंकर बुक स्टाल, रीवा – 9616355944
25. कृष्णा बुक एजेन्सी, वाराणसी – 9415820103
26. गर्ग बुक डिपो, जयपुर
27. अग्रवाल बुक सेन्टर, मुखर्जी नगर, नयी दिल्ली
28. चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी (सभी बुक स्टालों पर)
    मो. – 9839243286, 9415508311, 0532-2420414
29. विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक वाराणसी – 0542-2413741
30. मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी
31. केशवी बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स, नयी दिल्ली – 93
32. महावीर बुक स्टाल, खजूरी बाजार, इन्दौर
33. हिन्दी बुक डिपो, मुरादाबाद – 94566888596
34. माँ बुक स्टेशनर्स, शहडोल छत्तीसगढ़ – 9406754644
35. ज्ञानगंगा, राँची, झारखण्ड – 9234249100

जूनियर एडेड भर्ती परीक्षा

संस्कृत पाठ्यक्रम

1. संस्कृत भाषा एवं साहित्य के इतिहास की जानकारी
2. व्याकरण
3. अपठित गद्यांश/पद्यांश
4. प्रमुख लेखकों / कवियों का सामान्य परिचय एवं उनकी कृतियाँ

संस्कृतगङ्गा उवाच

''जय जूनियर''

प्रिय- संस्कृतमित्राणि !

नमः संस्कृताय !

- **''जय जूनियर''** नामक यह पुस्तक **'जूनियर एडेड भर्ती परीक्षा'** में जो लोग 'संस्कृत भाषा' का चुनाव करेंगे उनके लिए अत्युपयोगी होगी।
- संस्कृतभाषा का इतिहास, संस्कृत साहित्य की सामान्य जानकारी, व्याकरण में सन्धि, समास, कारक, प्रत्यय आदि के साथ संस्कृत कवियों एवं लेखकों का परिचय एवं उनकी कृतियों का भी सामान्य परिचय इस पुस्तक में दिया गया है।
- अपठित गद्यांश एवं पद्यांश को इस पुस्तक में शामिल नहीं किया गया है, इसके लिए आप **संस्कृतगंगा का यू-ट्यूब चैनल** देख सकते हैं, वहाँ परीक्षोपयोगी गद्यांश एवं पद्यांश प्रत्येक शाम को 7:00 बजे पढ़ाया जा रहा है।
- आपकी परीक्षा 18 अप्रैल 2021 को है, इसलिए बचे हुए इस एक माह में आपको इस **''जय जूनियर''** नामक पुस्तक को अवश्य पढ़ लेना चाहिए, इससे आपको परीक्षा पास करने में आसानी होगी- ऐसा मेरा विश्वास है।
- जो लोग व्यवस्थित रूप से 'जूनियर एडेड भर्ती' की **सभी वीडियो** एवं **ई-नोट्स** प्राप्त करना चाहते हैं वे लोग **'Sanskrit Ganga' App** को डाउनलोड करके उसका लाभ ले सकते हैं। किसी भी प्रकार की परेशानी होने पर दिये गए नम्बरों पर सुबह 9:00 बजे से शाम 5:00 बजे के बीच संस्कृतगंगा कार्यालय से सम्पर्क कर सकते हैं। **मोबाइल नं.– 7800138404, 9839852033**
- इस जूनियर परीक्षा के लिए ऑनलाइन पढ़ाने में **अरुण कुमार पाण्डेय 'निर्मोही सर', सुमन मैम, शिवम चतुर्वेदी** का विशेष योगदान रहा, कामना करता हूँ कि संस्कृत जगत् का विशेष आशीर्वाद इन्हें मिले, इनकी सभी मनोकामनायें पूर्ण हों।
- इस 'जय जूनियर' नामक पुस्तक के सम्पादन में **शुभम ममगाई** जी का विशेष योगदान रहा जो हमारे टाइपिस्ट **संदीप, नितिन** एवं **विनय** जी को क्षण भर भी चैन से बैठने नहीं देते; पुस्तक को शीघ्रातिशीघ्र आप तक पहुँचाने के लिए रात-दिन एक करके अथक परिश्रम किया; ईश्वर संस्कृतजगत् में ऐसे शुभ कार्य करने वाले और शुभम को पैदा करते रहें- यही कामना है।
- पुस्तक के नामकरण एवं कवर पेज की वैचारिक कल्पना **अम्बिकेश प्रताप सिंह** ने की, अपनी कम्प्यूटर कला से उसको सजाने का कार्य **ब्रह्मानन्द मिश्र** ने किया, अहर्निश परिश्रम करके अक्षर संयोजन का कार्य **संदीप, नितिन** एवं **विनय** जी ब्रह्मा, विष्णु, महेश इन त्रिदेवों की तरह संस्कृतजगत् पर कृपा करते रहते हैं। मुद्रण कार्य करके पुस्तक के अधिकृत विक्रेता के रूप में राजू पुस्तक केन्द्र के स्वामी **राजकुमार गुप्ता** का परिश्रम प्रशंसनीय है। अपने इन सभी साथियों का हृदय से आभार।
- पुस्तक को लिखने एवं प्रूफ आदि कार्यों में हो सकता है कुछ त्रुटि रह गयी हो तो उसके लिए क्षमाप्रार्थी हूँ, समय कम होने के कारण सभी कार्य जल्दबाजी में हुए हैं इसलिए सम्भव है कि कुछ कमियाँ रह गयी हों। मुझे विश्वास है उदारमन से आप उसे क्षमा करेंगे।

भवदीय

सर्वज्ञभूषण

संस्कृतगङ्गा

दारागञ्ज, प्रयागराज

दिनाङ्क - 11 मार्च, 2021, महाशिवरात्रि।

विषय-सूची

❑❑

1. संस्कृत भाषा का इतिहास

भाषा की उत्पत्ति

- 'भाषा की उत्पत्ति' यह विषय अत्यन्त उलझा हुआ है। इस विषय पर विद्वानों ने जो विचार प्रस्तुत किये हैं, वे अपूर्ण और अनिर्णयात्मक हैं।
- भाषा उत्पत्ति के लिए दो बातें अनिवार्य हैं-
  1. वाग्यन्त्र से ध्वनन या वर्णोच्चारण की क्षमता प्राप्त करना।
  2. उच्चरित ध्वनि का, अर्थ के साथ सम्बन्ध स्थापित करने का प्रारम्भ।
- प्रथम बात प्रायः सभी पशु-पक्षियों एवं अन्य जीवों में प्राप्त होती है।
- पशु- पक्षियों में स्पष्ट उच्चारण या व्यक्त वाक् का अभाव है, अतः वे स्पष्ट रूप से बोलनें में असमर्थ हैं।
- मनुष्य को बोलने की क्षमता जन्म से प्राप्त है, अतः वह जन्म से वाग्यन्त्र या वागिन्द्रिय का प्रयोग करता है।
- दूसरी बात में शब्द और अर्थ के सम्बन्ध जानने की जिज्ञासा ही मुख्य विषय है।
- भाषा-उत्पत्ति विषयक समस्त सिद्धान्त अनुमान पर आश्रित हैं एवं विज्ञान अनुमान पर आश्रित न होकर तथ्यों पर निर्भर होता है।
- यह दर्शन, मानव-विज्ञान या समाज-विज्ञान का विषय होने के कारण भाषा-विज्ञान इस दिशा में अपनी असमर्थता प्रकट करता है।
- सामान्य लोकप्रियता का विषय होने से इसके प्रस्तावित सिद्धान्तों का वर्णन किया जा रहा है-

1. दिव्योत्पत्ति-सिद्धान्त

- यह सबसे प्राचीन मत है। इसके अनुसार- जिस प्रकार परमात्मा ने मानव- सृष्टि की, उसी प्रकार मानव के लिए एक परिष्कृत भाषा भी दी।
- दैवीय शक्ति ही इस सिद्धान्त का मूल है। उसी दैवी शक्ति ने ही सृष्टि के प्रारम्भ में ही वेदों का ज्ञान दिया, जिससे मानव अपना क्रिया-कलाप चला सका।
- वेदों, उपनिषदों तथा अनेक दर्शन ग्रन्थों में यह बात प्रमाणित है कि ईश्वर से ही वेदों की उत्पत्ति हुई।

समीक्षा- इस सिद्धान्त पर निम्न आपत्तियाँ की गयी हैं।

1.यह सिद्धान्त तर्क या विज्ञान संगत नहीं है, केवल आस्था पर निर्भर है।

2. यदि भाषा ईश्वर-प्रदत्त होती तो सृष्टि में भाषा भेद नहीं होता।

3. जर्मन् विद्वान् **हेर्डर** ने लिखा है कि ''यदि भाषा ईश्वरकृत होती तो यह अधिक सुव्यवस्थित और तर्कसंगत होगी, अधिकांश भाषाएं अव्यवस्थित और त्रुटिपूर्ण हैं।''

2. सङ्केत-सिद्धान्त

- इसे **निर्णयवाद**, **निर्णयसिद्धान्त** तथा **स्वीकारवाद** आदि अनेक नामों से जाना जाता है।
- इस सिद्धान्त के प्रवर्तक 18वीं शताब्दी के फ्रेंच विद्वान् **'रूसो'** हैं।
- इनके अनुसार 'व्यक्ति प्रारम्भ में सङ्केतों के माध्यम से अपना अभिप्राय व्यक्त करता था तथा बाद में सामूहिक रूप से वस्तुओं की संज्ञा दी गयी।'
- इसे **'सामाजिक-समझौता'** कहा जा सकता है।

समीक्षा- इस सिद्धान्त की कुछ न्यूनताएं हैं-

1. बिना भाषा के सभा का आयोजन और विचार-विनिमय कैसे हुआ?

2. सङ्केत शब्दों के निर्माण के लिए क्या आधार था? किसी व्यक्ति का सुझाव मान लिया गया या फिर सबके अलग-अलग मत थे?

3. यदि भाषा के बिना सभा का आयोजन, सङ्केत निर्माण एवं सङ्केतों की सामाजिक सम्पुष्टि हो सकती है, तो भाषा की क्या आवश्यकता रह जाती है।

अतः यह सिद्धान्त मान्य नहीं है।

3. रणन-सिद्धान्त

- इस सिद्धान्त को **धातु-सिद्धान्त, अनुकरण-सिद्धान्त, अनुरणनमूलकतावाद, अनुरणात्मक-अनुकरण, डिंग-डांगवाद** आदि नामों से निर्दिष्ट किया गया है।
- इस सिद्धान्त के मूल प्रवर्तक **'प्लेटो'** थे तथा इसको **'हेस'** और **'मैक्समूलर'** ने व्यवस्थित किया।
- इस मत के अनुसार 'प्रकृति में एक सामान्य नियम है किसी वस्तु पर चोट मारने पर एक विशेष ध्वनि होती है। यह ध्वनि ही उसकी विशेषता है। इसी ध्वनि को रणन कहा जाता है।

समीक्षा-

1. इस सिद्धान्त में इतने दोष थे कि बाद में मैक्समूलर ने इसे छोड़ दिया।

2. इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि किस वस्तु से मस्तिष्क में कौन-सी ध्वनि झंकृत हुई।

3. यह सिद्धान्त शब्द और अर्थ में रहस्यात्मक स्वाभाविक सम्बन्ध मानता है। शब्द और अर्थ का साङ्केतिक सम्बन्ध है न कि स्वाभाविक यह मत अस्वीकृत होने पर भी रोचकता के लिए प्रचलित है।

4. ध्वन्यनुकरण-सिद्धान्त

- इस सिद्धान्त के अन्य नाम भी हैं, जैसे- **अनुकरण-सिद्धान्त, ध्वन्यात्मकानुकरण-सिद्धान्त, अनुकरणमूलकतावाद, शब्दानुकरणवाद, भों-भों-वाद** आदि।
- कुत्ते की ध्वनि को अंग्रेजी में BOW-WOW कहते हैं, अतः हिन्दी में यह **भों-भों-वाद** हुआ।
- इस सिद्धान्त का अभिमत है कि प्राकृतिक वस्तुओं,पशु-पक्षियों आदि की ध्वनि के अनुकरण पर विभिन्न वस्तुओं के नाम रखे जाते हैं। जो वस्तु जैसी ध्वनि करती है, उसका वैसा ही नाम पड़ता है। जैसे-काँव-काँव से काक या कौआ, कू-कू से कोयल, झर-झर से झरना आदि।

समीक्षा-

1. विश्व की भाषाओं में ध्वन्यनुकरण वाले शब्दों की संख्या एक प्रतिशत भी नहीं है। अतः यह भाषोत्पत्ति सम्बन्धी उचित समाधान नहीं है।

2. **प्रो0 रेनन** की आपत्ति है, यदि मनुष्य पक्षियों जैसे तुच्छ जीवों के शब्दों का अनुकरण करके भाषा बना सकता है, तो वह पशु-पक्षियों से निकृष्ट सिद्ध होता है।

3. कुछ भाषाओं में ध्वन्यनुकरण-शब्द हैं ही नहीं। जैसे- उत्तरी अमेरिका की **'अथवस्कन'** भाषा।

आंशिक रूप से स्वीकार्य होते हुए भी यह मत सम्पूर्ण रूप से स्वीकार नहीं हैं।

5. आवेग-सिद्धान्त

- इस सिद्धान्त को **'मनोभावाभिव्यक्तिवाद, मनोरागव्यञ्जक शब्दमूलकतावाद, पूह-पूह सिद्धान्त, मनोभावाभि-व्यञ्जकतावाद** आदि के नाम से जाना जाता है।
- इसके अनुसार आरम्भ में मनुष्य भाव प्रधान था और प्रसन्नता, दुःख, विस्मय, घृणा आदि के भाववश उसके मुख से ओ, छि, धिक्, आह आदि शब्द सहज ही निकले। धीरे-धीरे इन्हीं से भाषा का विकास हुआ।

समीक्षा- इसको माननें में निम्न कठिनाइयाँ हैं-

1. ये शब्द विचारपूर्वक प्रयुक्त नहीं होते हैं बल्कि आवेग की तीव्रता में अनायास निकल पड़ते हैं।

2. भिन्न-भिन्न भाषाओं में ऐसे शब्द एक रूप में नहीं मिलते यदि स्वभावतः निकलते तो सभी मनुष्यों में लगभग एक समान होते।

3. भाषा में आवेग शब्दों की संख्या 40-50 से अधिक नहीं होगी इन शब्दों से पूरी भाषा पर प्रकाश नहीं पड़ता। अतः इनको पूर्णतः भाषा का अंग नहीं माना जा सकता।

यह भी समस्या को समाप्त करनें में असमर्थ है।

6. श्रम-ध्वनि-सिद्धान्त

- इसे **यो-हे-हो-वाद, श्रम-परिहरणमूलकतावाद** भी कहा जाता है। इनके प्रतिपादक **'न्वायर' (न्वारे)** नामक भाषाशास्त्री हैं।
- इनके अनुसार 'परिश्रम का कार्य करते समय साँस तेजी से बाहर-भीतर आने-जाने,साथ-साथ स्वरतन्त्रियों को विभिन्न रूपों में कम्पित होने एवं तदनुकूल ध्वनियाँ उच्चरित होने से कार्य करने वाले को राहत मिलती है।
- उदाहरणार्थ कपड़ा धोते समय धोबी 'हियो' या 'छियो' कहता है और मजदूर आदि 'हो-हो, हूँ-हूँ कहते हैं।

समीक्षा-

1. यह मत भाषा की उत्पत्ति के लिए सर्वथा असन्तोष जनक है।
2. शारीरिक परिश्रम जन्य ये शब्द निरर्थक हैं। भाषा की उत्पत्ति के लिए सार्थक शब्दों की आवश्यकता है।
3. अर्थहीन शब्दों से भाषा की उत्पत्ति नहीं हो सकती। यह मत सबसे निकृष्ट और अग्राह्य है।

7. इंगित-सिद्धान्त

- इस सिद्धान्त के प्रवर्तन का श्रेय पालिनेशियन भाषा विद्वान् डॉ. **'राये'** को है। **डार्विन** भी इसके समर्थक हैं।
- **प्रो. रिचर्ड** इसे 'मौखिक इंगित सिद्धान्त' कहते हैं।
- इस मत के अनुसार 'प्रारम्भ में मानव ने अपनी आङ्गिक चेष्टाओं का ही वाणी के द्वारा अनुकरण किया और भाषा बनी। जैसे- पानी पीने के समय मुँह से 'पा' जैसी ध्वनि हुई, अतः 'पा' का अर्थ 'पीना' हुआ।

समीक्षा-

1. अपने अनुकरण पर शब्द-रचना हास्यास्पद है। दूसरे के अनुकरण पर शब्द रचना मान्य हो सकती है।

2. हाथ, पैर, ओष्ठ आदि के आधार पर शब्द- रचना की कल्पना निर्मूल है।

3. इंगित- सिद्धान्त पर बने शब्दों की संख्या भाषा में बहुत कम है। यह सिद्धान्त भी सारहीन है।

8. सम्पर्क- सिद्धान्त

- इस मत के प्रतिपादक **जी. रेवेज़ हैं,** जो मनोविज्ञान के विद्वान् थे।
- इनके मतानुसार 'मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, उसमें पारस्परिक

सम्पर्क की प्रवृत्ति जन्मसिद्ध है। प्रारम्भ में भूख आदि की अभिव्यक्ति के लिए मौखिक और साङ्केतिक अभिव्यक्ति का सहारा लिया होगा, उनसे जो ध्वनियाँ निकली वे धीरे-धीरे भाषा बनी।'

समीक्षा-

1. प्रो0 रेवेज़ का यह सिद्धान्त बालमनोविज्ञान, जीव-मनोविज्ञान और आदिम प्राणि-मनोविज्ञान पर आश्रित है एवं तर्कसंगत भी है।
2. कुछ अन्य भाषाशास्त्री भी इस मत को अमान्य नहीं करते किन्तु भाषोत्पत्ति के प्रश्न को अनिर्णीत मानते हैं।

9. सङ्गीत-सिद्धान्त

- इसको **प्रेम-सिद्धान्त, सिंग-सांग थ्योरी,** WOO-WOO थियरी भी कहा जाता है।
- डार्विन, स्पेन्सर एवं येस्पर्सन ने इसे कुछ रूपों में माना था।
- इनके सिद्धान्त के अनुसार, 'मानव के सङ्गीत से भाषा की उत्पत्ति हुई।'

समीक्षा-

1. गुनगुनाने से भाषा की उत्पत्ति होना केवल अनुमान पर आश्रित है, इसका कोई प्रमाण नहीं है।
2. प्रारम्भिक व्यक्ति गुनगुनाता था, इसका भी कोई पुष्ट आधार नहीं है।

   अतः यह सिद्धान्त भी अस्वीकार्य है।

10. प्रतीक-सिद्धान्त

- इस सिद्धान्त में माना जाता है कि 'संयोग से किसी शब्द का किसी अर्थ से सम्बन्ध हो जाता है, और वह शब्द उस अर्थ का प्रतीक हो जाता है।'
- भाषा-विज्ञान में ऐसे शब्दों को 'नर्सरी-शब्द' कहते हैं जैसे- माता, पिता, बाबा आदि।

समीक्षा-

1. प्रतीक सिद्धान्त मूलतः भाषा के प्रारम्भिक शब्दों की व्याख्या करता है। भाषा में 'नर्सरी-शब्द' आये, ये भी सत्य है।
2. यह स्थूल शब्दों की उत्पत्ति बता सकता है, सूक्ष्म अर्थ के बोधक शब्दों की उत्पत्ति बताने में असमर्थ है।

11. समन्वय-सिद्धान्त

- इस सिद्धान्त के प्रवर्तक प्रसिद्ध भाषाशास्त्री **'हेनरी स्वीट'** हैं।
- उन्होंने नये सिद्धान्त की अपेक्षा सर्वसिद्धान्त - संकलन को अधिक उपयुक्त समझा है।
- उनके अनुसार 'यदि सभी सिद्धान्तों में से आवश्यक तत्त्व को एकत्रित कर लिया जाय तो भाषा की उत्पत्ति सम्बन्धी समस्याओं का निराकरण हो सकता है।'

समीक्षा-

1. भाषा की उत्पत्ति समझाने के लिए अन्य कोई एकमत शुद्ध न होने से सबका समन्वय उपयुक्त माना गया।
2. यह सिद्धान्त सामान्यतया निर्विरोध रूप से स्वीकार किया जाता है।

12. प्रतिभा-सिद्धान्त

- प्रतिभा- सिद्धान्त के संस्थापक आचार्य **भर्तृहरि** हैं।
- 'वाक्यपदीय' में भर्तृहरि नें प्रतिभा को विश्व की आत्मा माना है और उसे सर्वशक्ति- सम्पन्न बताया है।
- इस प्रकार भाषा की उत्पत्ति मनुष्य के प्रतिभाओं से हुई है।
- भर्तृहरि, पूर्व-जन्म के संस्कारों को भी भाषोत्पत्ति का कारण मानते हैं।

समीक्षा

1. मनुष्यों में कोई मौलिक उद्‌भावना या शक्ति नहीं थी। अतः भाषोत्पत्ति सम्बन्धी 'समन्वय-सिद्धान्त'ही सर्वथा उत्कृष्ट है।

संस्कृत भाषा का उद्‌भव एवं विकास

- संस्कृत भाषा भारत- यूरोपीय अथवा भारत- जर्मनीय परिवार की प्रमुख भाषाओं में है।
- संस्कृत के मूल स्रोत के सम्बन्ध में चाहे जो भी कल्पनाएं की जायें, किन्तु इसके भाषायी इतिहास का प्रारम्भ इसके प्राचीनतम रूप 'ऋग्वेद' से ही मानना होगा।
- 'अवेस्ता' और 'हित्ती', भाषाओं के दो ऐसे रूप हैं जो कि ऋग्वेद से काफी बाद के होने पर भी वैदिक भाषा के प्राग्वैदिक रूपों की झाँकी प्रस्तुत कर सकते हैं।
- संस्कृत आर्यों की भाषा थी और आर्य का मूल निवास भारत ही है। इस बात को पश्चिमी देश नहीं मानते हैं क्योंकि पूरे विश्व को सभ्य और शिक्षित करने के ठेकेदार सिर्फ मिस्र, यूनान आदि देश ही हो सकते हैं।
- भारोपीय भाषाविज्ञानी संस्कृत के उस मूल रूप की स्थिति एशिया या यूरोप में चाहे जहाँ मानने की बात कहें, किन्तु संस्कृत से भाषा के जिस रूप का बोध होता है उसका जन्म एवं पोषण भारत की इसी भूमि पर हुआ था, इसमें कोई सन्देह नहीं।
- सौभाग्य की बात है कि संस्कृत विश्व की एक ऐसी पुरातन भाषा है, जिसके साहित्य भण्डार में विश्व की प्राचीनतम लिखित सामग्री प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है, जिसकी साहित्यिक भागीरथी का प्रवाह कई हजार वर्षो से निरवच्छिन्न रूप में प्रवाहमान रहा है यद्यपि उसके भाषिक विकास की प्रक्रिया अवश्य ही आज से लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व एक बिन्दु पर आकर स्थिर-सी हो गयी थी।

- ऋग्वैदिक काल के उपरान्त हमें इसके विकास के विभिन्न स्तरों के रूप अपेक्षाकृत अधिक स्पष्ट रूप में दृष्टिगोचर होने लगते हैं।
- ऋग्वेद तथा अथर्ववेद के मन्त्रों की भाषा संहिताओं तथा ब्राह्मण ग्रन्थों की भाषा, ब्राह्मणों तथा सूत्रों एवं उपनिषदों की भाषा, उपनिषदों तथा महाकाव्यों की भाषा की पारस्परिक तुलना करने पर स्पष्ट हो जाता है कि संस्कृत में, एक जीवित भाषा में कालक्रम से होने वाले परिवर्तनों के समान, उल्लेख्य परिवर्तन घटित हो रहे थे।
- संस्कृत भाषा के विकास स्तर को तीन-स्तरों पर देखा जा सकता है।

  1. वैदिक 2. उत्तरवैदिक 3. लौकिक
- वैदिक के अन्तर्गत संहिताओं तथा ब्राह्मण- ग्रन्थों की भाषा को,उत्तरवैदिक में आरण्यकों, उपनिषदों एवं सूत्र साहित्यों की भाषा को रखा जा सकता है।
- इसके बाद की साहित्यिक एवं शास्त्रीय भाषा को लौकिक के अन्तर्गत रखा जा सकता है।
- लौकिक साहित्य ग्रन्थ 'रामायण' है। रामायण काल से लेकर वर्तमान समय तक संस्कृत का विकास हो रहा है। इस प्रकार संस्कृत भाषा रूपी गङ्गा को वैदिक काल से लेकर वर्तमानकाल तक पहुँचने में अनेक मार्गों का अनुसरण करना पड़ा है।

भारोपीय परिवार

भारतीय यूरोपीय (भारोपीय) से मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाओं की सामान्य रूपरेखा-

विश्व भाषाओं के पारिवारिक वर्गीकरण के अनुसार 18 भेद माने गये हैं! इन 18 भाषाओं को चार भूखण्डों में बाँटा गया है।

(क) यूरेशिया (यूरोप-एशिया)

(ख) अफ्रीका

(ग) प्रशान्त महासागरीय भूखण्ड

(घ) अमेरिका भूखण्ड

यूरेशिया भूखण्ड के अन्तर्गत ही भारोपीय परिवार की गणना की जाती है।

विश्व के भाषा परिवारों में भारोपीय परिवार का सबसे अधिक महत्त्व। इसके मुख्य कारण निम्न हैं -

- **प्रयोगाधिक्य -** इस परिवार की भाषाओं के बोलने वालों की संख्या सबसे अधिक है।
- **भौगोलिक व्यापकता -** प्रायः सारे विश्व में इस परिवार की भाषाएं बोली जाती हैं।
- **सांस्कृतिक उत्कर्ष -** इस परिवार के लोग सभ्यता और संस्कृति में विश्व में सबसे अग्रणी हैं।
- **भाषावैज्ञानिक उत्कर्ष -** भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र के अभ्युदय का सर्वाधिक श्रेय इसी परिवार को है। संस्कृत, अंग्रेजी, जर्मन और फ्रेंच में सर्वाधिक भाषाशास्त्रीय चिन्तन हुआ।
- **तुलनात्मक भाषाविज्ञान का जन्मदाता -** भारोपीय परिवार की विभिन्न भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन से ही तुलनात्मक भाषाविज्ञान का जन्म हुआ है।
- **भारोपीय परिवार के विभिन्न नाम**

  भारोपीय परिवार के विभिन्न नाम समय-समय पर सुझाए गए हैं। जिनमें प्रमुख चार नाम है-

  1 इण्डो जर्मनिक या भारत जार्मनिक परिवार

  2 आर्य परिवार

  3 भारोपीय परिवार - यह नाम अत्यन्त प्रचलित हुआ, अतः इसे ही अपनाया गया। यह नाम सर्वप्रथम फ्रेंच विद्वानों ने दिया।

4 भारत हित्ती परिवार-

- **भारोपीय परिवार की शाखाएँ -**
- भारोपीय शब्द भारत + यूरोपीय का मूल रूप है।
- यह Indo-European अनुवाद है।
- इस परिवार में भारतवर्ष से लेकर यूरोप तक फैली हुई भाषाओं का संग्रह है।
- इस परिवार में दस शाखाएँ हैं -

  1. भारत-ईरानी (आर्य) (Aryan, Indo- Iranian)
  2. बाल्टो स्लाविक (Balto-Slavic,Letto-Slavic)
  3. आर्मीनी (Armenian)
  4. अल्बानी (Albanian, Illyraian)
  5. ग्रीक (Greek, Hellenic)
  6. केल्टिक (Keltic)
  7. जर्मानिक (ट्यूटानिक) (Germanic, Teutonic)
  8. इटालिक (Italic)
  9. हिटाइट (Hiltite)
  10. तोखारी (To khorian)
- **केन्टुम् और शतम् (सतम्) वर्ग**
- भारोपीय परिवार की भाषाओं को ध्वनि के आधार पर दो भागों में विभक्त किया जाता है-

1. केन्टुम् 2. शतम्

- इस विभाजन का श्रेय **प्रो. अस्कोली** को है।
- सभी भारोपीय भाषाओं को दो भागों में विभक्त किया गया है
- प्रथम चार परिवार शतम् वर्ग में आते हैं और शेष छः परिवार 'केन्टुम्' वर्ग में

➤ 'सौ' के लिए मूल भारोपीय भाषा का शब्द क्मतोम् (Kmtom) माना जाता है।

मूल भारोपीय शब्द - Kmtom **(क्मतोम् = शतम्)**

शतम् (सतम्) वर्ग	केन्टुम् वर्ग
संस्कृत - शतम्	लैटिन - केन्टुम्
अवेस्ता - सतम्	ग्रीक - हेकटोन
फारसी - सद	केल्टिक - केत्
हिन्दी - सौ	तोखारी - कन्ध
रुसी - स्तो (Sto)	गाथिक - हुन्ड
लिथुआनियन - (स्जिम्तास)	जर्मन - हुन्डर्ट
	फ्रेंच - सं
	इटालियन - केन्तो

➤ भारोपीय परिवार-विभाजन

भारोपीय-परिवार को केन्टुम् और शतम् वर्ग के आधार पर निम्न प्रकार से बाँटा गया है-

शतम् वर्ग	केन्टुम् वर्ग
1. भारत-ईरानी	5. ग्रीक
2. बाल्टो स्लाविक	6. केल्टिक
3. आर्मीनी	7. जार्मनिक
4. अल्बानी	8. इटालिक
	9. हिटाइट
	10. तोखारी

भारोपीय परिवार की विशेषताएँ -

➤ रचना की दृष्टि से भारोपीय परिवार श्लिष्ट योगात्मक है।

➤ इस परिवार की मूल भाषाएँ संस्कृत, ग्रीक, लैटिन आदि संयोगात्मक थीं, परन्तु इनसे विकसित आधुनिक भाषाएँ हिन्दी, अंग्रेजी आदि वियोगात्मक हो गई।

➤ भारोपीय भाषाओं की धातुएँ प्रायः एकाक्षर थीं।

➤ इन भाषाओं में (संस्कृत में) प्रत्यय दो प्रकार के थे-

1. **कृत् -** जो सीधे धातु से जोड़े जाते थे। इन्हें Primary Suffixes कहते हैं। जैस - भू + त = भूत
2. **तद्धित -** ये शब्दो से जुड़ते हैं। जैसे - भूत + इक = भौतिक इन्हें Secondary Suffixes कहते हैं।

➤ शब्द या धातु से पद बनाने के लिए दो प्रकार से प्रत्यय लगते थे -

(क) सुप् - (Case-imdicating Suffixes)(शब्दों से)

(ख) तिङ्- (Verbal Suffixes) (धातुओं से)

➤ पदों का ही वाक्य में प्रयोग होता था।

➤ पदों को समस्त कर बृहत् पद बनाने की प्रवृत्ति मूल भारोपीय भाषा में थी। वह भारोपीय परिवार में भी रही।

➤ मूल भारोपीय भाषा में उदात्त स्वर के कारण स्वर भेद (गुण, वृद्धि, दीर्घ) होता था।

➤ भारोपीय भाषाओं में मूल प्रत्ययों का लोप हो गया और स्वर परिवर्तन से ही अर्थ-परिवर्तन का काम लिया जाने लगा। अंग्रेजी धातुओं में - Drink - Drank - Drunk, संस्कृत में देव > दैव, विधि > वैध, कुमार > कौमार

➤ भारोपीय भाषा में प्रत्ययों की अधिकता है। मूल भाषा से पृथक् होकर अनेक भाषाएँ विकसित हुईं।

➤ विश्व भाषा परिवारों में भारोपीय भाषा-परिवार का सबसे अधिक महत्त्व है। भारोपीय परिवार में भी आर्य परिवार या आर्य शाखा का सर्वाधिक महत्त्व है।

शतम् वर्ग

1.भारत ईरानी (आर्य) 2.बाल्टो स्लाविक 3.आर्मीनी 4. अल्बानी

1 आर्य या भारत ईरानी शाखा

➤ **प्राचीनतम साहित्य -** विश्व का प्राचीनतम ग्रन्थ 'ऋग्वेद' अपने शुद्ध और प्राचीनतम रूप में संस्कृत में उपलब्ध है।

➤ समस्त वैदिक साहित्य इसी शाखा में प्राप्त है।

➤ पारसियों का धर्मग्रन्थ अवेस्ता इसी शाखा में प्राप्त है।

➤ **प्राचीन वर्णमाला एवं ध्वनियाँ -** मूल भारोपीय भाषा की प्राचीन ध्वनियों के निर्धारण में संस्कृत और अवेस्ता का असाधारण योगदान है।

➤ **प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता -** विश्व की प्राचीनतम संस्कृति और सभ्यता का सर्वांगीण इतिहास संस्कृत और अवेस्ता भाषा के साहित्य से प्राप्त होता है।

➤ **भाषाशास्त्रीय देन -** भाषाशास्त्र को ध्वनिविज्ञान, पद विज्ञान (व्याकरण), अर्थविज्ञान का मौलिक आधार संस्कृत से ही प्राप्त होता है।

भारतीय आर्यभाषाएँ

कालविभाजन

भारतीय आर्यभाषाओं को काल की दृष्टि से तीन भागों में बाँटा गया है-

1. **प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएँ -** 2500ई. पू. से 500ई. पू. तक
2. **मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएँ -** 500ई.पू. से 1000ई. तक
3. **आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ -** 1000 ई. से वर्तमान समय तक

प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएँ

➤ विकास क्रम के अनुसार प्राचीन भारतीय आर्यभाषाओं को दो भागों में बाँटा गया है-

1. वैदिक संस्कृत 2. लौकिक संस्कृत

वैदिक संस्कृत -

- ➤ वैदिक संस्कृत को ही 'वैदिक', 'वैदिकी', 'छन्दस्' तथा 'छान्दस' आदि नामों से भी जाना जाता है।
- ➤ प्राचीनतम रूप ऋग्वेद में मिलता है।
- ➤ अन्य वेदों का समय इसके बाद ही माना जाता है।
- ➤ समस्त प्राचीनतम संस्कृत वाङ्मय वैदिक संस्कृत में मिलता है
- ➤ वैदिक भाषा की पद रचना श्लिष्ट योगात्मक थी।
- ➤ धातुरूपों में लेट् लकार का प्रयोग होता था।
- ➤ वेद में संगीतात्मक स्वर की प्रधानता थी।

लौकिक संस्कृत

- ➤ संस्कृत का सबसे प्राचीन एवं आदिकाव्य वाल्मीकिरामायण 500 ई.पू. का है।
- ➤ महाभारत, पुराण, काव्य, नाटक आदि ग्रन्थ 500 ई.पू. से आज तक अविच्छिन्न एवं अविहत गति से अपना गौरव स्थापित किये हुए हैं।
- ➤ यास्क, पतञ्जलि, कात्यायन, भास, कालिदास आदि के लेखों से यह स्वतः सिद्ध होता है कि ईसा पूर्व तक संस्कृत लोक व्यवहार की भाषा थी।
- ➤ संस्कृत में ही समस्त प्राचीनज्ञान, विज्ञान, कला, पुराण, काव्य, नाटक आदि है।
- ➤ संस्कृत ने न केवल भारतीय भाषाओं को अनुप्राणित किया अपितु विश्व भाषाओं मुख्यतया भारोपीय भाषाओं को भी प्रभावित किया।

मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएँ

- ➤ मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाओं को तीन भागों में बाँटा गया है -

1.प्राचीन प्राकृत या पालि (500 ई. पू. से 100 ई. तक)
2.मध्यकालीन प्राकृत (100 ई. से 500 ई. तक)
3.परकालीन प्राकृत या अपभ्रंश (500 ई. से 1000ई. तक)

आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ -

1. पश्चिमी हिन्दी - इसकी पाँच प्रमुख बोलियाँ हैं-
1. खड़ी बोली 2. ब्रजभाषा 3. बाँगरु 4. कन्नौजी 5. बुन्देली

2. राजस्थानी -
- ➤ इसका विकास शौरसेनी के नागर अपभ्रंश से हुआ है।
- ➤ पिंगल के अनुकरण पर राजस्थानी में **डिंगल** काव्य की रचना हुई। इसकी चार प्रमुख बोलियाँ हैं - मारवाड़ी, जयपुरी, मालवी, मेवाती।

3. गुजराती -
4. मराठी - 4 बोलियाँ मुख्य हैं- देशी, कोंकणी, नागपुरी, बरारी
5. बिहारी - 3 प्रमुख भाषाएँ हैं- भोजपुरी, मैथिली, मगही
6. बंगाली **7. उड़िया** **8. असमी**
9. पूर्वी हिन्दी -इसकी तीन बोलियाँ हैं।अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी
10. लहँदा (लहँदी) - लहँदा का अर्थ है पश्चिमी। इसकी चार प्रमुख बोलियाँ हैं-
- ➤ केन्द्रीय बोली, दक्षिणी (मुलतानी), उत्तरपूर्वी (पोठवारी), उत्तरपश्चिमी (धन्नी)

11. सिन्धी -
- ➤ इसकी पाँच बोलियाँ हैं- विचौली, सिरैकी, लाड़ी, थरेली, कच्छी

12. पंजाबी
13. पहाड़ी - इसके तीन भाषा वर्ग हैं-
- ➤ पश्चिमी (30 बोलियाँ)
- ➤ मध्य (दो 1. गढ़वाली 2. कुमायूँनी)
- ➤ पूर्वी (नेपाली) यह नेपाल की राजभाषा है।

मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएँ

- ➤ प्राचीन प्राकृत या पालि (500 ई.पू. से 100 ई. तक)

प्राचीन प्राकृत या पालि (प्रथम प्राकृत)

- ➤ तृतीय शताब्दी ई.पू. से प्रथम शती ई. तक के शिलालेख इसके अन्तर्गत आते हैं।
- ➤ पालि बौद्धग्रन्थ - महावंश, जातक आदि कथाएँ, प्राचीन जैनसूत्रों की भाषा, प्रारम्भिक नाटकों की भाषा प्राकृत रही है।
- ➤ प्राचीन प्राकृत को प्रथम प्राकृत भी कहते हैं।

प्राकृत की उत्पत्ति संस्कृत से - प्रकृति का अर्थ है-मूलभाषा संस्कृत, उससे उत्पन्न भाषा प्राकृत है।
- ➤ प्राकृत भाषा के सभी प्राचीन वैयाकरणों ने प्राकृत की उत्पत्ति संस्कृत से मानी है।
- ➤ प्रकृतिः संस्कृतं तत्र भवं तत आगतं वा प्राकृतम् (हेमचन्द्र)
- ➤ प्रकृतिः संस्कृतं तत्र भवं प्राकृतमुच्यते (प्राकृतसर्वस्व)
- ➤ प्रकृतिः संस्कृतं तत्र भवत्वात् प्राकृतं स्मृतम् (प्राकृत चन्द्रिका)
- ➤ प्राकृतस्य तु स्वयमेव संस्कृतं योनिः (प्राकृत संजीवनी)
- ➤ नाट्यशास्त्रकार भरतमुनि ने यह कहा है कि संस्कृत भाषा के शब्दों का ही विकृत एवं परिवर्तित रूप प्राकृत भाषा है।

पालि की व्युत्पत्ति -

- ➤ डा. मैक्स वेलेसन ने पाटलि (पाटलिपुत्र) से पालि की उत्पत्ति मानी है। पाटलि > पाडलि > पालि
- ➤ भिक्षु जगदीश काश्यप ने परियाय (बुद्धोपदेश) शब्द से पालि की उत्पत्ति मानी है।
  परियाय > पलियाय > पालियाय > पालि
- ➤ अमरकोश के टीकाकार भानुजी दीक्षित ने 'पालरक्षणे' से पालि शब्द माना है। पाल् + इ = पालि
- ➤ आचार्य बुद्धघोष और आचार्य धम्मपाल ने छठी शती ई. ने

पालि शब्द का प्रयोग बुद्धवचन या मूल त्रिपिटक के लिये किया है। उससे यह शब्द 'पालि' भाषा के लिए आया है।
- अभिधानप्पदीपिका ने पा धातु से पालि शब्द माना है पा - पालेति रक्खतीति पालि, जो रक्षा करती है या पालन करती है।

पालि की प्रमुख विशेषताएँ

- पालि में वैदिक संस्कृत की 5 स्वर ध्वनियाँ लुप्त हो गई - ऋ , ॠ , ऌ , ऐ, औ।
- पालि में वैदिक संस्कृत के 5 व्यंजन लुप्त हो गए- श, ष, (:) विसर्ग, जिह्वामूलीय, उपध्मानीय
- पालि मे दो नए स्वर आयें - ह्रस्व ऍ, ह्रस्व ओ।
- संस्कृत के ऐ > ए, औ > ओ हो गए।
- ड, ढ को ळ, ळ्ह्।
- संधियों में केवल तीन संधियाँ हैं-

1. स्वर सन्धि 2. व्यंजन सन्धि 3. निग्गहीत (अनुस्वार) सन्धि

- पालि में हलन्त शब्द नही हैं। केवल अजन्त ही हैं।
- पालि में द्विवचन नहीं होता है।
- शब्दरूपों में चतुर्थी और षष्ठी के रूप समान होते हैं।
- स्त्री प्रत्यय सात हैं - आ, ई, इनी, नी, आनी, ऊ, ति।
- पालि में 500 से अधिक धातुएँ हैं, 9 गण हैं। अदादिगण और जुहोत्यादिगण नहीं है।
- पालि में लेट् लकार के रूप भी मिलते हैं - हनासि, दहासि
- आत्मनेपद का प्रयोग प्रायः लुप्त हो गया। परस्मैपद शेष रहा
- पालि में तद्भव शब्दों का आधिक्य है। तत्सम और देशज शब्द कम है।

शिलालेखी प्राकृत

- प्राचीन प्राकृत में अशोक के शिलालेखों की प्राकृत भी आती है, अतः इसे **शिलालेखी प्राकृत** भी कहते हैं।
- शिलालेखी प्राकृत को ही अशोकन प्राकृत, लाट प्राकृत भी कहते हैं।

मध्यकालीन प्राकृत (द्वितीय प्राकृत)

- मध्यकालीन प्राकृत को **'साहित्यिक प्राकृत'** भी कहते हैं।
- सर्वप्रथम भरतमुनि ने प्राकृत भाषाओं के विषय में विचार किया है। उनके मतानुसार 7 मुख्य प्राकृत है और 7 गौण
- **मुख्य प्राकृत -** मागधी, अवन्तिजा, प्राच्या, शौरसेनी, अर्धमागधी, बाहलीक, दाक्षिणात्य (महाराष्ट्री)
- **गौण प्राकृत -** शाबरी, आभीरी, चाण्डाली, सचरी, द्राविड़ी, उद्स्ता, वनेचरी
- प्राचीन प्राकृत वैयाकरण वररुचि ने चार प्राकृत मानी हैं- शौरसेनी, महाराष्ट्री, मागधी, पैशाची। मागधी के दो रूप हो गये (1) मागधी (2) अर्धमागधी

1- शौरसेनी

- इसका क्षेत्र शूरसेन (मथुरा के आस-पास) प्रदेश था।
- इसका विकास पालि कालीन स्थानीय भाषा से हुआ।
- मध्यदेश की भाषा थी।
- नाटकों में सर्वाधिक प्रयोग हुआ।
- स्त्रियों आदि का वार्तालाप शौरसेनी प्राकृत में ही होता था।
- शौरसेनी से वर्तमान **हिन्दी का विकास** हुआ
- राजशेखर कृत **कर्पूरमंजरी का समस्त गद्य भाग शौरसेनी प्राकृत** में है।
- भास, कालिदास आदि के **नाटकों में गद्य शौरसेनी** में ही है।

2 - महाराष्ट्री

- मूलस्थान महाराष्ट्र है। इससे ही **मराठी भाषा का विकास** हुआ।
- प्राकृत में सर्वाधिक साहित्य महाराष्ट्री में है।
- दण्डी ने काव्यादर्श में महाराष्ट्री को सर्वश्रेष्ठ प्राकृत माना है।
- प्राकृत नाटकों में **पद्यरचना महाराष्ट्री** में है।
- महाराष्ट्री प्राकृत के प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं - राजा हाल कृत गाहा सत्तसई (गाथा सप्तशती), प्रवरसेन कृत रावणवहो (सेतुबन्धः), वाक्पति कृत गउडवहो (गौडवधः), जयवल्लभ कृत - वज्जालग्ग, हेमचन्द्राचार्य कृत 'कुमारपालचरित'
- कर्पूरमञ्जरी के पद्य महाराष्ट्री में है।
- भरतमुनि ने दाक्षिणात्य प्राकृत से महाराष्ट्री का निर्देश किया है।

3- मागधी

- यह मगध की भाषा थी।
- प्राचीनतम रूप अश्वघोष के नाटकों में मिलता है।
- लंका में पालि को मागधी कहते हैं।
- कालिदास के नाटकों में तथा शूद्रक के मृच्छकटिक में मागधी का प्रयोग मिलता है।
- भरत के नाट्यशास्त्र के अनुसार अन्तःपुर के नौकर, अश्वपालक आदि की भाषा मागधी थी।
- इसके तीन प्रकार मिलते हैं -

1. शकारी 2. चाण्डाली 3. शाबरी

- मागधी से ही भोजपुरी, मैथिली, बंगला, उड़िया, असमी विकसित हुई।

4- अर्धमागधी

- अर्धमागधी का क्षेत्र मागधी और शौरसेनी के मध्य में है।
- यह कोसल के समीपवर्ती क्षेत्र की भाषा थी।
- इसमें मागधी के गुण अधिक है और साथ ही शौरसेनी के भी, अतः इसे अर्धमागधी कहा जाता है।
- मागधी को **ऋषिभाषा** या **आर्यभाषा** भी कहते हैं।

- भगवान् महावीर के सभी धर्मोपदेश इसी भाषा में हैं।
- अधिकांश **जैन साहित्य** इसी भाषा में है।
- इसमें गद्य और पद्य दोनों प्रकार का साहित्य है।
- आचार्य विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण में इसे चेट, राजपुत्र एवं सेठों की भाषा बताया है।
- इसका प्राचीनतम प्रयोग **अश्वघोष के नाटकों में** मिलता है।
- **मुद्राराक्षस और प्रबोधचन्द्रोदय में** अर्धमागधी का प्रयोग हुआ है।
- इससे **पूर्वी हिन्दी का विकास** हुआ है।

5 - पैशाची

- इसका क्षेत्र पश्चिमोत्तर भारत एवं अफगानिस्तान का क्षेत्र था।
- पैशाची को **पैशाचिकी, भूतभाषा, भूतभाषित** आदि भी कहते हैं।
- गुणाढ्य की प्रसिद्ध रचना 'बृहत्कथा' पैशाची प्राकृत में ही है।
- वर्तमान समय में इसका साहित्य **'नगण्य'** है।
- इसका विकसित रूप **'लहँदा' भाषा** है।
- हेमचन्द्र कृत-कुमारपालित और काव्यानुशासन में तथा हम्मीरमदमर्दन नाटक में इसका प्रयोग मिलता है।
- राक्षस, पिशाच, निम्नकोटि के पात्र लोहार आदि इसी भाषा का प्रयोग करते थे। (रक्षः पिशाचनीचेषु पैशाची द्वितयं भवेत्)

प्राकृत भाषाओं की सामान्य विशेषताएं -

- प्राकृत श्लिष्ट योगात्मक भाषा है।
- शब्दरूपों और धातुरूपों की संख्या प्राकृत में कम हो गई।
- शब्दरूप केवल तीन या चार प्रकार के रह गए।
- धातु के रूप भी प्रायः एक या दो प्रकार से चलने लगे।
- प्राकृत भाषा संयोगात्मक से वियोगात्मक की ओर अग्रसर हुई।
- प्राकृत भाषा में आत्मनेपद का अभाव हो गया।
- तद्भव शब्दों की संख्या प्राकृत में अधिक है। तत्सम शब्दों की कम।

अपभ्रंश (परकालीन प्राकृत, तृतीय प्राकृत)

- अपभ्रंश शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग आचार्य व्याडि और पतञ्जलि ने किया है। भर्तृहरि, भामह, दण्डी आदि ने भी अपभ्रंश का उल्लेख किया है।
- अपभ्रंश के सबसे प्राचीन उदाहरण भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में मिलते हैं।
- दण्डी के समय से इसका प्रयोग प्रारम्भ हो गया था।
- अपभ्रंश साहित्य की प्रमुख रचनाएँ निम्न हैं-
  हरिषेण कृत - पउमचरिउ
  पुष्पदन्त कृत - महापुराण और जसहर चरिउ
  विद्यापति कृत - कीर्तिलता
  अद्दहमाण कृत - सन्देश-रासक
- अपभ्रंश को देशीभाषा, देसी, अपभ्रष्ट, अवहट्ट भी कहते हैं।
- मार्कण्डेय ने प्राकृत सर्वस्व में तीन अपभ्रंश माने हैं-
  नागर, उपनागर, ब्राचड।
- नागर गुजरात की अपभ्रंश, ब्राचड सिन्धु की, उपनागर दोनों के मध्य की मानी जाती है।
- सामान्यतया सभी भाषाशास्त्री विद्वानों का मत है कि पाँच प्राकृतों से ही अपभ्रंश का विकास हुआ है।

❑❑
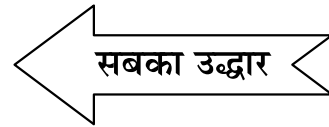
2. संस्कृत- साहित्य के इतिहास की जानकारी

संस्कृत साहित्य समीक्षा के प्रमुख सिद्धान्त

- काव्यशास्त्र का ही एक नाम **'साहित्यशास्त्र'** है आधुनिक युग में अन्य सब नामों की अपेक्षा यह नाम अधिक प्रचलित है।
- राजशेखर ने तो इसे 'साहित्यविद्या' नाम से अभिहित किया है।
- साहित्यशास्त्र का प्रमुख तत्त्व 'आत्मतत्त्व' है। प्राचीन आचार्य इसी आत्मतत्त्व के चिन्तन में सक्रिय रहे हैं और अपने-अपनें चिन्तन के आधार पर अलग-अलग रूपों में अवलोकन करते रहे। इसप्रकार विभिन्न आचार्यों द्वारा काव्य के विभिन्न तत्त्वों का काव्यात्म रूप में दर्शन के कारण छः सम्प्रदायों अथवा सिद्धान्तों का जन्म हुआ। इसप्रकार साहित्यशास्त्र के मुख्यतः छः सिद्धान्त/ सम्प्रदाय बन गये-

1. रस सम्प्रदाय	2. अलङ्कार सम्प्रदाय
3. रीति सम्प्रदाय	4. वक्रोक्ति सम्प्रदाय
5. ध्वनि सम्प्रदाय	6. औचित्य सम्प्रदाय

1. रस-सम्प्रदाय - आचार्य भरत

- इस सम्प्रदाय के प्रथम आचार्य **'भरत'** माने जाते हैं।
- राजशेखर, **नन्दिकेश्वर** को रस का मूल व्याख्याता मानते हैं। किन्तु उनका कोई ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है।
- आचार्य भरत की दृष्टि में साहित्य रचना के लिए रस इतना महत्त्वपूर्ण है कि उसके बिना कोई अर्थ ही नहीं प्रवृत्त होता।
- विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भाव ही रस के निष्पादक होते हैं-

  नहि रसादृते कश्चिदर्थः प्रवर्तते।
  विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः॥

  यह रससूत्र ही रससिद्धान्त का प्राणभूत है।
- भरत के रस-सिद्धान्त के इस सूत्र में 'संयोग' और 'निष्पत्ति' शब्दों की व्याख्या में बड़ा मतभेद है। जिसके परिणामस्वरूप अनेक सिद्धान्तों का जन्म हुआ।
- भट्टलोल्लट, शङ्कुक, भट्टनायक और अभिनवगुप्त ही भरत के रससूत्र के प्रमुख व्याख्याकार हैं।
- भट्टलोल्लट का मत **'उत्पत्तिवाद'** है।
- श्रीशङ्कुक का मत **'अनुमितिवाद'** है।
- भट्टनायक का मत **'भुक्तिवाद'** है।
- अभिनवगुप्त का मत **'अभिव्यक्तिवाद'** के नाम से प्रसिद्ध है।
- आचार्य मम्मट भी अभिनवगुप्त के 'अभिव्यक्तिवाद' का समर्थन करते हैं।
- काव्याश्रित रस के सम्बन्ध में प्रथम बार व्याख्या 'अग्निपुराण' में हुई।
- आचार्य भरत आठ रसों को ही स्वीकार करते हैं।

  'अष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः।'
- भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र के छठे अध्याय में रस तथा सातवें अध्याय में स्थायीभावों का विस्तार से वर्णन किया है, वही रस सिद्धान्त का आधार है।

  प्रवर्तक- आचार्य भरत

  समर्थक- शारदातनय, शिङ्गभूपाल, भानुदत्त, रूपगोस्वामी, भोजराज, विश्वनाथ, राजशेखर, केशवमिश्र आदि।

2. अलङ्कार-सम्प्रदाय - आचार्य भामह

- रस सम्प्रदाय के बाद दूसरा स्थान अलङ्कार सम्प्रदाय का आता है।
- आचार्य **'भामह'** इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक माने जाते हैं।
- अलङ्कार सम्प्रदाय के अनुयायी भी रस की सत्ता मानते हैं, किन्तु उसे प्रधानता नहीं देते।
- उनके मत में काव्य का प्राणभूत जीवनाधायक तत्त्व अलङ्कार ही है।

  'रसवद्दर्शितस्पष्टशृङ्गारादिरसं यथा।'-

  भामह (काव्यालङ्कार 3/6)
- अलङ्कार सम्प्रदायवादी, काव्य में अलङ्कारों को ही प्रधान मानते हैं और इसका अन्तर्भाव रसवदलङ्कारों में करते हैं।
- रसवत् प्रेय, ऊर्जस्विन् और समाहित, चार प्रकार के रसवदलङ्कार माने जाते हैं।
- भामह के अतिरिक्त दण्डी भी इन रसवदलङ्कारों के भीतर ही रस का अन्तर्भाव करते हैं।

  'मधुरे रसवद्वाचि वस्तुन्यपि रसस्थितिः।' दण्डी (काव्यादर्श 1/51)
- इस सिद्धान्त की भी व्याख्या अग्निपुराण में मिलती है।
- जयदेव के अनुसार, अलङ्कारविहीन काव्य की कल्पना वैसी ही है जैसे 'उष्णताविहीन अग्नि की कल्पना।'
- सर्वप्रथम भरत ने चार अलङ्कारों (उपमा, रूपक,दीपक, यमक) का उल्लेख किया है।
- अग्निपुराणकार ने 23 अलङ्कारों को स्वीकार किया है।
- भामह ने 38 अलङ्कारों का विवेचन किया है।

- उद्भट 41 अलङ्कार मानते हैं।
- रुद्रट ने 68 अलङ्कारों का निरूपण किया है।
- भोज ने 72 अलङ्कारों को स्वीकार किया है।
- मम्मट 67 अलङ्कारों का उल्लेख करते हैं। 6 शब्दालङ्कार और 61 अर्थालङ्कार।
- रुय्यक और विश्वनाथ ने 78 अलङ्कारों को स्वीकार किया है।
- जयदेव अपने चन्द्रालोक में 100 अलङ्कार मानते हैं।
- अप्पयदीक्षित ने 'कुवलयानन्द' में 120 अलङ्कारों का विवेचन किया है।

समर्थक- इस सम्प्रदाय के समर्थकों में दण्डी, उद्भट, रुद्रट, जयदेव, अप्पयदीक्षित, पण्डितराज जगन्नाथ, तथा विश्वेश्वर पाण्डेय आदि प्रमुख हैं।

3. रीति सम्प्रदाय '- आचार्य वामन

- कालक्रम में अलङ्कार- सम्प्रदाय के बाद रीति-सम्प्रदाय का स्थान आता है।
- रीति सम्प्रदाय के संस्थापक **आचार्य वामन हैं।**
- वामन ने काव्य में अलङ्कार की प्रधानता के स्थान पर रीति की प्रधानता का प्रतिपादन किया है- **'रीतिरात्मा काव्यस्य'**
- यह आचार्य वामन का सिद्धान्त है, इसीलिए उन्हें रीति-सम्प्रदाय का प्रवर्तक माना जाता है।
- इन्होंने 'रीति' को इस प्रकार बताया है- **'विशिष्टपदरचना रीतिः।'** अर्थात् विशिष्ट पद रचना का नाम 'रीति' है।
- वाक्य में आये 'विशिष्ट' शब्द की व्याख्या- **'विशेषो गुणात्मा'** है।
- इस प्रकार काव्य में माधुर्यादि गुणों का समावेश ही उसकी विशेषता है और यह विशेषता ही 'रीति' है।
- इस सिद्धान्त में 'गुण' और 'रीति' का अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध है, इसलिए 'रीति- सम्प्रदाय' को **'गुण-सम्प्रदाय'** के नाम से भी जाना जाता है।
- वामन ने निम्न दो सूत्रों के माध्यम से गुण और अलङ्कार का भेद स्पष्ट किया है, तथा अलङ्कार की अपेक्षा गुण को अधिक महत्त्व दिया है।

सूत्र-1 **'काव्यशोभायाः कर्तारो धर्माः गुणाः।'**
(काव्यालङ्कार सूत्र - 3.2.1)

2. **'तदतिशयहेतवस्त्वलङ्काराः।'** (काव्यालङ्कार सूत्र-3.1.2)

- गुण काव्यशोभा के उत्पादक होते हैं तथा अलङ्कार केवल उस शोभा के अभिवर्धक होते हैं।
- अतः काव्य में अलङ्कारों की अपेक्षा गुणों का स्थान अधिक महत्त्वपूर्ण है।
- राजशेखर ने रीति का सर्वप्रथम अधिकारी **'सुवर्णनाभ'** को बताया है, किन्तु 'सुवर्णनाभ' कौन थे? उनकी रचना कौन सी है? इसके बारे में कुछ पता नहीं है।
- 'रीति' का व्यापक अर्थ लेने पर वेदों में भी रीति की झलक दिखलाई देती है।
- रीति का शास्त्रीय विवेचन भरत के 'नाट्यशास्त्र' से प्रारम्भ होता है।
- रीति के चार भेद स्वीकार किये गये हैं- वैदर्भी, गौडी, पाञ्चाली और लाटी।
- रीति एक रचना शैली है जिसके अन्तर्गत रस, गुण, अलङ्कार आदि समाविष्ट हैं।

4. वक्रोक्ति सम्प्रदाय - आचार्य कुन्तक

- कालक्रमानुसार रीति के बाद वक्रोक्ति- सम्प्रदाय आता है।
- वक्रोक्ति सम्प्रदाय के संस्थापक वक्रोक्तिजीवितकार आचार्य **'कुन्तक'** माने जाते हैं।
- आचार्य कुन्तक ने काव्य में रीति की प्रधानता को समाप्त कर 'वक्रोक्ति' की प्रधानता को स्थापित किया।
- यद्यपि काव्य में 'वक्रोक्ति' की महत्ता भामह ने भी स्वीकार किया है-

सैषा सर्वैव वक्रोक्तिरनयार्थो विभाव्यते।
यत्नोऽस्यां कविना कार्यः कोऽलङ्कारोऽनया विना॥
(भामह- काव्यालङ्कार- 2/85)

- दण्डी ने काव्य में 'वक्रोक्ति' का महत्त्व इस प्रकार वर्णित किया है-

'भिन्नं द्विधा स्वभावोक्तिर्वक्रोक्तिश्चेति वाङ्मयम्'
(काव्यादर्श- 2/363)

- आचार्य वामन ने भी काव्य में 'वक्रोक्ति' का स्थान माना है- **'सादृश्याल्लक्षणा वक्रोक्तिः'** (काव्यालङ्कार सूत्र- 4.3.8)
- तथापि इन आचार्यों के मत से 'वक्रोक्ति' सामान्य अलङ्कार आदिरूप ही है।
- आचार्य कुन्तक ने वक्रोक्ति को जो गौरव प्रदान किया है, वह गौरव इन आचार्यों ने नहीं दिया है।
- इसलिए 'कुन्तक' ही इस सम्प्रदाय के संस्थापक माने जाते हैं।
- आचार्य कुन्तक ने इस सिद्धान्त के ऊपर भी 'वक्रोक्तिजीवित' नामक विशाल एवं महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ की रचना की है।
- आचार्य कुन्तक ने 'रीति-सम्प्रदाय' को भी परिमार्जित करके अपने यहाँ स्थान दिया है।
- वामन की वैदर्भी आदि रीतियाँ देश भेद के आधार पर मानी जाती थीं, किन्तु कुन्तक ने उनका आधार देश को न मानकर रचनाशैली को माना है और उनके 'रीति' के स्थान पर मार्ग शब्द का प्रयोग किया है।
- आचार्य कुन्तक, वामन की 'वैदर्भी' रीति को 'सुकुमारमार्ग', गौडी रीति को 'विचित्रमार्ग' तथा पाञ्चाली रीति को 'मध्यम मार्ग' कहते हैं।

- कुन्तक के अनुसार वक्रोक्ति छः प्रकार के हैं-
  1. वर्ण- विन्यास वक्रता 2. पदपूर्वार्द्ध वक्रता
  3. पदोत्तरार्द्ध वक्रता 4. वाक्य वक्रता
  5. प्रकरण वक्रता 6. प्रबन्ध वक्रता
- अतः उक्ति वैचित्र्य के आधार पर कुन्तक का यह 'वक्रोक्ति सिद्धान्त', अलङ्कार सिद्धान्त की ही एक शाखा है।

5. ध्वनि- सम्प्रदाय - आचार्य आनन्दवर्धन

- वक्रोक्ति सम्प्रदाय के बाद ध्वनि- सम्प्रदाय का उदय हुआ।
- इस सम्प्रदाय के संस्थापक आचार्य **'आनन्दवर्धन'** माने जाते हैं।
- आनन्दवर्धन के मत में 'काव्य की आत्मा ध्वनि है'-
  'काव्यस्यात्मा ध्वनिरिति बुधैर्यः समाम्नातपूर्वः।'
- सभी सम्प्रदायों में ध्वनि- सम्प्रदाय सबसे प्रबल एवं महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त रहा है।
- विद्वानों के अत्यन्त विरोध पर भी ध्वनि- सिद्धान्त वैसे ही प्रफुल्लित रहा है।
- **ध्वनि-** सिद्धान्त के विरोधी समूह में वैयाकरण, साहित्यिक, वेदान्ती, मीमांसक आदि प्रमुख हैं।
- आचार्य मम्मट ने विरोधियों का खण्डन करके ध्वनि- सिद्धान्त की पुनः स्थापना की, इसीलिए मम्मट को **'ध्वनिप्रतिष्ठापक परमाचार्य'** कहा जाता है।
- आनन्दवर्धन ने आत्मा का अर्थ, 'तत्त्व' किया है और तत्त्व का अर्थ है, 'जिसके स्वरूप का कभी बाध न हो'
- काव्य का वह आत्म स्थानीय अर्थ 'प्रतीयमान' कहलाता है। यही प्रतीयमान अर्थ काव्य की आत्मा है।
- इनके अनुसार प्रतीयमान अर्थ वह है जो अङ्गना के प्रसिद्ध अवयवों से भिन्न लावण्य के समान महाकवियों की वाणी में वाच्यार्थ से भिन्न भाषित होता है। सहृदयी जनों को यही अर्थ आनन्दित करता है-

प्रतीयमानं पुनरन्यदेव वस्त्वस्ति वाणीषु महाकवीनाम्।
यत्तत्प्रसिद्धावयवातिरिक्तं विभाति लावण्यमिवाङ्गनासु॥

(ध्वन्यालोक-1/4)

- यही प्रतीयमान अर्थ ध्वन्यर्थ या व्यङ्ग्यार्थ है जो तीन प्रकार से होता है-
  1. रसादि रूप में 2. अलङ्कार रूप में 3. वस्तु रूप में
  'एवं वस्त्वलङ्काररसभेदेन त्रिधा ध्वनिः'
- इसमें वस्तुध्वनि और अलङ्कारध्वनि की अपेक्षा रसध्वनि श्रेष्ठ है और यही काव्य की आत्मा है।
- आनन्दवर्धन के अनुयायी अभिनवगुप्त भी रसध्वनि को काव्य की आत्मा स्वीकारते हैं। **'सर्वत्र रसध्वनेरेवात्मभावः।'**

समर्थक- इस सिद्धान्त के समर्थक रुय्यक, मम्मट, अभिनवगुप्त और पण्डितराज जगन्नाथ हैं।

6. औचित्य- सम्प्रदाय - आचार्य क्षेमेन्द्र

- औचित्य सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य **क्षेमेन्द्र** माने जाते हैं। उन्होंने औचित्य को काव्य का **जीवितत्त्व** कहा है-
  'औचित्यं रससिद्धस्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम्।'
- इसी आधार पर क्षेमेन्द्र को औचित्य सम्प्रदाय का प्रवर्तक माना जाता है किन्तु उनके पहले भी इस पर विचार हो चुका था।
- सर्वप्रथम भरत के ' नाट्यशास्त्र' में औचित्य की चर्चा की गयी है।
- भरत के पश्चात् भामह ने औचित्य को काव्य का सबसे बड़ा गुण बताया है।
- दण्डी ने भी गुण, दोष के विधान में औचित्य और अनौचित्य को कारण स्वीकार किया है।
- रुद्रट ने अनौचित्य को सर्वाधिक महत्त्व दिया है। उनके अनुसार रस का उन्मेष, परमरहस्य औचित्य है और अनौचित्य ही रसभङ्ग का प्रधान कारण है।
  'अनौचित्यादृते नान्यद् रसभङ्गस्य कारणम्।'
- महिमभट्ट ने काव्य में औचित्य को अनिवार्य तत्त्व बताया है।
- आचार्य क्षेमेन्द्र औचित्य को परिभाषित करते हुए कहते हैं, ''जो वस्तु जिसके अनुरूप होती है उसे 'उचित' कहते हैं और उचित का जो भाव है, वह औचित्य कहलाता है''-

उचितं प्राहुराचार्याः सदृशं किल यस्य यत्।
उचितस्य च यो भावस्तदौचित्यं प्रचक्षते॥

(औचित्यविचारचर्चा, 7)

- यह औचित्य ही रस का जीवितभूत है, उसका प्राण है और काव्य में चमत्कारी तत्त्व हैं।
  'औचित्यं रससिद्धस्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम्।'

(औचित्यविचारचर्चा)

- क्षेमेन्द्र के अनुसार - अलङ्कारों में अलङ्कारत्व तभी होता है जबकि उनका विन्यास उचित स्थान पर होता है और गुणों में गुणत्व तभी होता है जबकि औचित्य से च्युत नहीं होते हैं-

उचितस्थानविन्यासादलङ्कृतिरलङ्कृतिः।
औचित्यादच्युता नित्यं भवन्त्येव गुणा गुणाः॥

(औचित्यविचारचर्चा)

- क्षेमेन्द्र ने- 'औचित्यविचारचर्चा' में औचित्य के सत्ताइस (27) भेदों का निरूपण किया है, किन्तु काव्य के प्रत्येक अङ्गों में औचित्य के व्याप्त होने के कारण उसके अनेक भेद हो सकते हैं।

काव्य

- काव्य शब्द संस्कृत भाषा में बहुत प्राचीन है जिसे कवि के कर्म के रूप में जाना जाता है-
  'कवेः कर्म काव्यम् ' (कवि +ण्यत्)
- 'कवि' शब्द 'कु' अथवा 'कव् ' धातु (भ्वादिगण आत्मनेपदी - कवते) से बना है। जिसका अर्थ है-
  ध्वनि करना, विवरण देना, चित्रण करना।
- महाकाव्य साहित्यविधा का उद्भव वैदिकसूक्तों से ही मिलता है जैसे - स्तुतिपरक नाराशंसियाँ, दान- स्तुतियाँ, संवादसूक्त आदि द्वारा।
- रामायण और महाभारत जैसे आर्षकाव्य महाकाव्यसाहित्य विधा के भास्कर हैं जिन्होंने परवर्ती काव्यों को विषयवस्तु शैली, भाषा शैली, वर्णनविधि आदि की उपजीव्यता दी।
- वाल्मीकि से कालिदास की रचना तक आने में काव्यकला को कई शताब्दियाँ लगी।
- रामायण, महाभारत के बाद कालिदास की उत्पत्ति तक जो महाकाव्य लिखे गये थे वे केवल नाम मात्र ही शेष हैं।
  इस काल के कुछ ग्रन्थों के नाम निम्नलिखित हैं–
  जाम्बवतीजय या **पातालविजय** (पाणिनि -450 ई०पू०)
- 18 सर्गों में श्रीकृष्ण द्वारा पाताल जाकर जाम्बवती के विजय और परिणय की कथा वर्णित है।
- राजशेखर के नाम से जल्हण की सूक्तिमुक्तावली (1247) में उद्धृत-**नमः पाणिनये तस्मै यस्मादाविरभूदिह।
  आदौ व्याकरणं काव्यमनु जाम्बवतीजयम्॥**
- वररुचि (350ई०पू०) ने **'स्वर्गारोहण'** नामक काव्य बनाया था।
  जिसे पतञ्जलि ने - **वाररुचं काव्यम्** कहा है।
  समुद्रगुप्त के 'कृष्णचरित' काव्य में इसका उल्लेख है।
- महाभाष्यकार पतञ्जलि -150 ई०पू० में 'महानन्द -काव्य' की रचना की थी।
- समुद्रगुप्त ने कृष्णचरित में इसकी चर्चा की है।
- इसके बाद महाकवि कालिदास का युग प्रारम्भ होता है।
- मनोहारिणी शैली के प्रवर्तक कालिदास।
- इसी शृंखला में महाकवि भारवि, माघ और श्रीहर्ष का नाम उल्लेखनीय है।

काव्य के प्रकार

- काव्य के मुख्यतः दो भेद होते हैं- **श्रव्य और दृश्य**
  काव्य का वर्गीकरण

श्रव्य-

(1) पद्य - 1. महाकाव्य - रघुवंशम् आदि
2. खण्डकाव्य - मेघदूतम् आदि
3. मुक्तककाव्य - नीतिशतकम् आदि

(2) चम्पू - नलचम्पू आदि

(3) कथा - कादम्बरी आदि

(4) आख्यायिका - हर्षचरितम् आदि

दृश्य

रूपक - 10

1. नाटक	-	अभिज्ञानशाकुन्तलम्
2. प्रकरण	-	मृच्छकटिकम्
3. भाण	-	लीलामधुकरम्
4. प्रहसन	-	धूर्तचरितम्
5. डिम	-	त्रिपुरदाह
6. व्यायोग	-	सौगन्धिकाहरणम्
7. समवकार	-	समुद्रमन्थन
8. वीथी	-	मालविका
9. अङ्क	-	शर्मिष्ठा ययाति
10. ईहामृग	-	कुसुमशेखरविजय

उपरूपक -18

1. नाटिका	2. त्रोटक	3. गोष्ठी
4. सट्टक	5. नाट्यरासक	6. प्रस्थानक
7. उल्लास्य	8. काव्य	9. प्रेंखण
10. रासक	11. संलापक	12. श्रीगदित
13. शिल्पक	14. विलासिका	15. दुर्मल्लिका
16. हल्लीश	17. प्रकरणिका	18. भाणिका

महाकाव्य

- महाकाव्य को सर्वप्रथम आचार्य **भामह** ने परिभाषित किया।
- भामह के बाद **आचार्य दण्डी** ने काव्यादर्श में महाकाव्य का लक्षण प्रस्तुत किया।
- 'अग्निपुराण' में भी महाकाव्य के लक्षण प्राप्त होते हैं।
- महाकाव्य के विषय में विस्तृत वर्णन **विश्वनाथ** ने साहित्यदर्पण में किया।

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार महाकाव्य का लक्षण -

- महाकाव्य सर्गों में विभक्त होता है।
- महाकाव्य का नायक देवता, कुलीन क्षत्रिय, धीरोदात्त आदि गुणों से युक्त हो सकता है अथवा एक वंशज अनेक कुलीन राजा भी नायक हो सकते हैं।
  **सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैको नायकः सुरः।
  सद्वंशः क्षत्रियो वापि धीरोदात्त गुणान्वितः॥
  एकवंशभवा भूपाः कुलजा बहवोऽपि वा।**

- शृङ्गार वीर और शान्त रस में से कोई एक प्रधान रस होता है और अन्य रस उसके सहायक।
- इसमें सभी नाटक संधियाँ होती हैं।

शृङ्गारवीरशान्तानामेकोऽङ्गीरस इष्यते।
अङ्गानि सर्वेऽपि रसाः सर्वे नाटकसन्धयः।

- महाकाव्य का कथानक ऐतिहासिक अथवा किसी सज्जन व्यक्ति से सम्बद्ध होता है।
- धर्मार्थकाममोक्ष का वर्णन होता है तथा इनमें से किसी एक फल की प्राप्ति का वर्णन होता है।

इतिहासोद्भवं वृत्तमन्यद् वा सज्जनाश्रयम्।
चत्वारस्तस्य वर्गाः स्युस्तेष्वेकं च फलं भवेद्॥

- प्रारम्भ में तीन प्रकार के मङ्गलाचरणों में से एक होता है नमस्कारात्मक, वस्तुनिर्देशात्मक अथवा आशीर्वादात्मक में से एक।
- कहीं कहीं पर दुर्जन निन्दा या सज्जन प्रशंसा भी होती है।
- प्रत्येक सर्ग में एक ही छन्दोबद्ध पद्य होते हैं। सर्गान्त में छन्द परिवर्तन होता है।
- सर्ग संख्या 8 से अधिक होनी चाहिए अथवा न्यूनतम 8 होनी चाहिए।
- सर्ग न बहुत छोटे न बहुत बड़े होने चाहिए।
- कहीं कहीं विविध छन्दों से युक्त सर्ग भी होते हैं।
- महाकाव्य में सन्ध्या, सूर्योदय, चन्द्रोदय, वन विहार, नगर, मार्ग, जलक्रीड़ा, वन, सागर, संयोग, वियोग, अन्धकार दिन, प्रातः, शिकार, पर्वत, ऋतु, ऋषि, युद्ध, विजय विवाह, पुत्र जन्मोत्सव आदि विषयों का अवसरानुकूल वर्णन होना चाहिए।
- महाकाव्य का नामकरण वर्णनीय चरित्र के नाम से या कवि के नाम से अथवा किसी दूसरे के नाम से होना चाहिए।
- सर्ग का नाम सर्ग में वर्णनीय कथा के नाम से होना चाहिए।
- लक्ष्य ग्रन्थों को ध्यान में रखकर ये लक्षण बने हैं।

महाकाव्यों का शैलीगत विकास

- संस्कृत महाकाव्यों का विकास दो पृथक् मार्गों से हुआ है - 1.सुकुमारमार्ग 2. विचित्रमार्ग

(1) सुकुमार मार्ग

- आरम्भ में महाकाव्य सुकुमार मार्गी थे।
- सुकुमारमार्ग को **रसमयी पद्धति** भी कहते हैं।
- प्रसादगुणपूर्ण शैली में निरूपित मार्ग।
- वाल्मीकि, व्यास, कालिदास, अश्वघोष आदि कवियों की यही पद्धति है।
- रस और ध्वनि को काव्य की आत्मा मानकर अलंकारों का समुचित प्रयोग होता है।

(2) विचित्रमार्ग

- विचित्रमार्ग के रूप में पाण्डित्यपूर्ण शैली संस्कृत महाकाव्यों में मिलती है।
- शास्त्रीय वैदुष्यपूर्ण भाषा से युक्त महाकाव्य को अलंकार पद्धति या **विचित्रमार्ग** कहा गया।
- इस मार्ग में आनुषङ्गिक वर्णनों की प्रधानता।
- कविगण द्वारा वैदुष्य (विद्वता) का प्रदर्शन।
- विचित्रमार्ग के प्रवर्तक **भारवि** थे।
- भारवि का अनुसरण माघ ने किया।
- दोनों महाकवियों ने मूलकथा को बीच में छोड़कर प्रसक्तानुप्रसक्त वर्णनों में अपने को बाँध लिया।
- इस मार्ग में भाषा और विषय दोनों क्षेत्रों में विशेषता रहती है।
- इस पद्धति में चित्रकाव्य तक कवि पहुँच जाते हैं।
- श्लेषालंकार के प्रयोग से यह शैली दुरुह हो जाती है।
- ओज गुण को प्रमुख स्थान दिया।
- विचित्रमार्गी कवि कथानक की चिन्ता नहीं करते। भारवि ने अल्प कथानक को वर्णनों से भरकर 18 सर्गों का महाकाव्य बना दिया।
- जबकि सुकुमारमार्गी कालिदास ने रघुवंश के 19 सर्गों में अनेक पीढ़ियों के बड़े कथानक को समेट दिया।
- बाद के कवियों के लिए **वाल्मीकि की रसमयी पद्धति** तथा **भारवि की अलंकृत पद्धति** विद्यमान थी।
- बाद के कवियों ने अपनी रुचि के अनुसार दोनों में से एक को अपनाया।
- श्रीहर्ष ने दोनों के समन्वय का सफल प्रयास किया।

नाट्य साहित्य

- साहित्य के सभी प्रकारों में रूपक या नाट्य श्रेष्ठ माना गया है। इसकी रचना को कवित्व की अन्तिम सीमा कहा जाता है- **'नाटकान्तं कवित्वम्।'**
- रूपक में गद्य-पद्य दोनों का मिश्रण तो रहता ही है, इसे सुनने के अतिरिक्त देखा जाता है। श्रव्य की अपेक्षा 'दृश्य' का अधिक सघन प्रभाव होता है।
- भरत ने नाट्यशास्त्र (6/31) में कहा है कि इस नाट्य-संसार में सब कुछ रसमय होता है, रस के बिना यहाँ कुछ भी प्रवृत्त नहीं होता- **'न हि रसादृते कश्चिदप्यर्थः प्रवर्तते।'** कोई व्यक्ति किसी भी रुचि का क्यों न हो, उसे अपना अनुकूल विषय नाट्य-जगत् में अवश्य मिल जायेगा। इसीलिए कालिदास ने इसकी प्रशंसा में कहा है-

नाट्यं भिन्नरुचेर्जनस्य बहुधाप्येकं समाराधनम्।
(मालविकाग्निमित्रम्- 1/4)

- काव्य को संस्कृत काव्यशास्त्रियों ने दृश्य और श्रव्य के रूप में दो वर्गों में रखा है। दृश्यकाव्य के दो भेद हैं- रूपक तथा उपरूपक। रूपक दस तथा उपरूपक अठारह प्रकार के होते हैं। रूपकों का एक प्रमुख भेद 'नाटक' है जो अपने अर्थ का विस्तार करके सामान्यतः आधुनिक भारतीय भाषाओं में नाट्यमात्र या दृश्यकाव्य मात्र (Drama) का अर्थ देता है।
- धनञ्जय ने नाट्य,रूप और रूपक-इन तीन शब्दों के प्रयोग के हेतुओं का निरूपण किया है जो वस्तुतः एकार्थक हैं।
- विविध पात्रों की अवस्थाओं का चतुर्विध अभिनय (आङ्गिक,वाचिक,सात्त्विक तथा आहार्य) के द्वारा जब नट अनुकरण करता है तो इसे **'नाट्य'** कहते हैं।

नाटक

- नाटक का कथानक प्रसिद्ध (इतिहास या पुराण में निर्दिष्ट) होता है, उसका नायक विख्यात वंश में उत्पन्न राजर्षि या राजा रहता है, उसे धीरोदात्त श्रेणी का होना चाहिए। कभी-कभी वीर रस या शृङ्गार रस के अनुरूप वह धीरोद्धत या धीरललित भी हो सकता है किन्तु धीरप्रशान्त नहीं। श्रीकृष्ण जैसे दिव्यादिव्य नायक भी होते हैं।
- नाटक का मुख्य रस शृङ्गार या वीर होता है **(एक एव भवेदङ्गी शृङ्गारो वीर एव वा)**। अन्य सभी रसों का यथावसर प्रयोग किया जाता है।
- नाटक में पाँच से लेकर दस अङ्क तक रखे जाते हैं। उसमें कथानक का स्वाभाविक विकास दिखाने के लिए पाँच अर्थप्रकृतियाँ (बीज, बिन्दु, पताका, प्रकरी और कार्य), पाँच अवस्थाएँ (आरम्भ, यत्न, प्राप्त्याशा, नियताप्ति और फलागम) तथा इनके योग से होने वाली पाँच सन्धियाँ (मुख, प्रतिमुख, गर्भ, विमर्श और निर्वहण) यथासाध्य रखी जाती हैं।
- जिस नाटक में इन सब के प्रयोग के साथ दस अङ्क हों उसे 'महानाटक' कहते हैं। **बालरामायण, हनुमन्नाटक** आदि महानाटक हैं।
- नाटक की अन्तिम सन्धि में 'अद्भुत रस' का प्रयोग हो इससे रोचकता आती है **(कार्यो निर्वहणेऽद्भुतः)**
- नाटक की रचना गोपुच्छाग्रवत् होनी चाहिए अर्थात् आरम्भ और अन्त सूक्ष्म(पतला) हो, मध्यभाग स्थूल (दीर्घ) हो।
- क्रमशः कार्यों का संक्षिप्त उपसंहार होना चाहिए। नाटक को काव्यमात्र में श्रेष्ठ कहा गया है-
  'काव्येषु नाटकं रम्यम्, नाटकान्तं कवित्वम्।'
- भास, कालिदास, भवभूति शूद्रक आदि के नाटक संस्कृत-जगत् में विख्यात हैं।

प्रकरण

- इसका कथानक कविकल्पित होता है। प्रायः लोककथाओं से कथानक लेकर इसकी रचना की जाती है।
- इसका नायक धीरप्रशान्त कोटि का मन्त्री, ब्राह्मण या वणिक् में से कोई एक होता है **(अमात्य-विप्र-वणिजामेकं कुर्याच्च नायकम्** -दशरूपक 3/39)। मृच्छकटिक में ब्राह्मण, मालतीमाधव में अमात्य तथा पुष्पदूतिका में वैश्य नायक है। इसमें नायिका दो प्रकार की होती है-कुलीना और वेश्या (गणिका)। किसी प्रकरण में कोई एक ही नायिका रहती है, (जैसे-मालतीमाधव में) तो किसी में दोनों प्रकार की नायिकाएं होती है (जैसे- मृच्छकटिक में)।
- धूर्त,जुआरी,विट,चेट आदि अनेक पात्रों से युक्त प्रकरण **'संकीर्ण'** कहलाता है। नाट्यदर्पण (2/68) में नायिका के आधार पर प्रकरण के इक्कीस भेद कहे गये हैं। रस की दृष्टि से इसमें शृङ्गाररस प्रधान होता है।

3.भाण

- इसमें कोई अत्यन्त चतुर तथा बुद्धिमान् विट अपने या दूसरे के अनुभव के आधार पर धूर्त के चरित का वर्णन करता है। यह एक अङ्क तथा एक ही पात्र का रूपक है। वह पात्र विट ही रहता है जो आकाशभाषित के रूप में स्वयं प्रश्न-उत्तर (उक्ति-प्रत्युक्ति) का प्रयोग करता है।
- इसमें मुख और निर्वहण सन्धियाँ रहती हैं, अन्य सन्धियाँ नहीं।

प्रहसन

- यह हास्यरस-प्रधान रूपक होता है, जिसमें कथानक कल्पित रहता है। इसमें धर्म का पाखण्ड करने वाले (जैन-बौद्ध) साधुओं, केवल जाति से ब्राह्मण कहलाने वाले धूर्तों एवं सेवक-सेविकाओं का चरित्र दिखाया जाता है।
- प्रहसन में वेशभूषा तथा भाषा की विकृति से भी हास्योत्पादन होता है। भाण के समान इसमें भी दो सन्धियों (मुख एवं निर्वहण) एवं 10 लास्याङ्गों का प्रयोग होता है। विश्वनाथ ने इसमें एक या दो अङ्क माने हैं।
- प्रहसन के तीन भेद होते हैं-शुद्ध, विकृत और संकीर्ण।

डिम

- इसका कथानक प्रसिद्ध होता है। नाट्य की कैशिकी वृत्ति वर्जित है, शेष तीनों वृत्तियाँ (भारती, सात्त्वती, आरभटी) प्रयुक्त होती हैं।
- इसमें नायक देवता, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस आदि होते हैं जो मानवेतर हैं, भूत, प्रेत, पिशाच आदि पात्रों का भी इसमें समावेश होता है। उद्धत कोटि के 16 पात्र इसमें रहते हैं। इसका प्रधान रस रौद्र होता है। माया, इन्द्रजाल, युद्ध,भगदड़ आदि के दृश्यों से यह भरा होता है।

- विमर्श सन्धि का प्रयोग नहीं होता। इसमें चार अङ्क रहते हैं।
- भरत ने **'त्रिपुरदाह'** नामक डिम का उल्लेख किया है।

व्यायोग

- इसका कथानक इतिहास-प्रसिद्ध होता है जो किसी विख्यात उद्धत व्यक्ति (भीम, दुर्योधन आदि) पर आश्रित रहता है।
- इसमें गर्भ एवं विमर्श नामक सन्धियाँ नहीं होती हैं। रसों की दीप्ति डिम के समान होती है।
- इसकी कथावस्तु एक दिन की घटनाओं से सम्बद्ध होती है।
- इसमें एक ही अंक रहता है तथा पुरुष-पात्रों की संख्या अधिक होती है।भास का **'मध्यमव्यायोग'** इसका मुख्य उदाहरण है।

समवकार

- इसका इतिवृत्त इतिहास-पुराण में प्रसिद्ध होता है जिसमें देवताओं और दैत्यों की कथा होती है। कैशिकी को छोड़कर अन्य वृत्तियाँ एवं विमर्श को छोड़कर अन्य सन्धियाँ होती हैं। इसमें तीन अङ्क रहते हैं जिनमें तीन बार कपट, तीन बार धर्म-अर्थ-काम का शृङ्गार एवं तीन बार पात्रों में भगदड़ दिखायी जाती है।
- इसके पात्र देवता और दानव होते हैं जिनकी संख्या 12 होती है, सभी वीररस से भरे रहते हैं और सब को पृथक्-पृथक् फल मिलता है।
- 'बिन्दु' नामक अर्थप्रकृति एवं 'प्रवेशक' नामक अर्थोपक्षेपक का इसमें प्रयोग नहीं किया जाता।
- नाट्यशास्त्र में **'समुद्रमन्थन'** नामक समवकार के अभिनय का उल्लेख है। भास के 'पञ्चरात्र' में भी कुछ लक्षण मिलते हैं।

वीथी

- यह शृङ्गाररस-युक्त एकाङ्की रूपक है। इसके कई लक्षण भाण के समान हैं। जैसे-केवल दो सन्धियाँ (मुख और निर्वहण) होना, शृङ्गाररस का सूच्य होना।

अङ्क

- इसे संशय-निवारणार्थ **'उत्सृष्टिकाङ्क'** भी कहते हैं क्योंकि रूपकों के खण्ड भी 'अङ्क' होते हैं। इस रूपक-भेद में कथानक इतिहास-प्रसिद्ध होता है, किन्तु कवि उसमें यथेष्ट परिवर्तन भी करता है। भाण के समान सन्धि (मुख और निर्वहण) भारती वृत्ति भाग तथा अङ्क केवल एक होते हैं।
- इसके नायक और अन्य पात्र साधारण होते हैं। इसमें करुणरस की प्रधानता होती है। अतः स्त्रियों का रोदन होना चाहिए।
- पात्रों में वाग्युद्ध एवं जय-पराजय की योजना होती है।
- कुछ आचार्यों ने इसमें एक से लेकर तीन अङ्कों तक का विधान किया है।

ईहामृग

- इसका कथानक प्रख्यात और कल्पित का मिश्रित रूप होता है। इसमें चार अङ्क तथा तीन सन्धियाँ होती हैं(गर्भ और विमर्श सन्धियाँ नहीं होती)

उपरूपक

- विश्वनाथ ने 18 उपरूपकों का यह क्रम रखा है-
  1. नाटिका 2. त्रोटक 3. गोष्ठी 4. सट्टक 5. नाट्यरासक 6. प्रस्थानक 7. उल्लास्य 8. काव्य 9.प्रेंखण 10.रासक 11. संलापक 12.श्रीगदित 13. शिल्पक 14.विलासिका 15. दुर्मल्लिका 16. प्रकरणिका 17. हल्लीश और 18. भाणिका

नाटिका

- नाटिका में चार अङ्क होते हैं।
- स्त्री-पात्रों का बाहुल्य एवं शृङ्गाररस की प्रधानता इसकी विशिष्टता है।
- इसका नायक धीरललित श्रेणी का कोई प्रसिद्ध राजा होता है।
- शृङ्गाररस के कारण कैशिकी वृत्ति एवं तदनुकूल गीत,नृत्य, वाद्य, हास्य आदि इसमें दिखाये जाते हैं।
- इसमें दो नायिकाएँ होती हैं-देवी (बड़ी रानी) तथा मुग्धा कन्या।
- उदयन को नायक बनाकर हर्ष ने **'प्रियदर्शिका'** और **'रत्नावली'** नामक नाटिकाओं की रचना द्वारा इस विधा का प्रयोग किया है।

सट्टक

- सट्टक भी नाटिका के समान होता है।
- इसमें सम्पूर्ण पाठ प्राकृत में होता है।
- प्रवेशक-विष्कम्भक का प्रयोग नहीं किया जाता है।
- अद्भुत रस का प्राचुर्य होता है।
- अङ्कों को 'जवनिकान्तर' कहते हैं।
- राजशेखर की **'कर्पूरमञ्जरी'** सट्टक है।

त्रोटक

- तोटक या त्रोटक में सात,आठ, नव या पाँच अङ्क रहते हैं।
- प्रधानरस शृङ्गार होता है।
- कालिदास का **'विक्रमोर्वशीयम्'** त्रोटक है।

नाट्योत्पत्ति

- संस्कृत दृश्यकाव्य का उद्भव कब और किस प्रकार से हुआ, इस प्रश्न का निश्चित समाधान करना कठिन है। फिर भी कुछ सिद्धान्तों का परिचय तो दिया ही जा सकता है।

भरत का मत

- नाट्य विज्ञान पर सर्वप्रथम ग्रन्थ 'नाट्यशास्त्र' ही है जिसका काल 100 ई॰ पू॰ से 300 ई॰ के बीच माना जाता है।
- भरत का मत 'नाट्यशास्त्र' में मिलता है कि सभी देवताओं ने

मिलकर ब्रह्मा जी से प्रार्थना की कि हमें ऐसे मनोरंजन का साधन प्रदान करें जो दृश्य और श्रव्य दोनों हो और जिसे सभी वर्णों के लोग ग्रहण कर सकें, ब्रह्मा ने इस प्रार्थना पर चारों वेदों से सार भाग लेकर 'नाट्यवेद' के रूप में पञ्चम वेद का निर्माण किया (**नाट्यवेदं ततश्चक्रे चतुर्वेदाङ्गसम्भवम्** 1/16) उन्होंने ऋग्वेद से पाठ्य (संवाद,कथनोपकथन), सामवेद से संगीत, यजुर्वेद से अभिनय और अथर्ववेद से रस-तत्त्व लेकर 'नाट्यवेद' की रचना की।

संवाद-सूक्तों से नाट्य की उत्पत्ति

- मैक्समूलर, सिल्वाँलेवी,फॉन श्रोएदर, हर्टल आदि यूरोपीय विद्वानों ने यह सिद्धान्त दिया कि ऋग्वेद के कतिपय संवाद-सूक्त ही नाटकों के प्राचीनतम रूप हैं।
- इन संवाद-सूक्तों में इन्द्र- मरुत् संवाद(ऋ0 1/165,170), अगस्त्य-लोपामुद्रा संवाद (ऋ0 1/179), विश्वामित्र-नदी संवाद (3/33), वसिष्ठ-सुदास संवाद (ऋ0 7/83), यम-यमी संवाद (ऋ0 10/10), इन्द्र-इन्द्राणी-वृषाकपि संवाद (ऋ 10/86), पुरूरवा-उर्वशी संवाद(10/95) तथा सरमा-पणि संवाद(10/108) प्रमुख है।

यूनानी रूपकों से उत्पत्ति

- वेबर तथा विन्डिश ने संस्कृत रूपकों का उद्भव यूनानी रूपकों से सिद्ध किया है।
- जर्मनी के ही विद्वान् पिशेल ने इस मत का प्रबल खण्डन किया है।

पुत्तलिका-नृत्य-सिद्धान्त

- प्रो. पिशेल ने यह विचार दिया है कि प्राचीन भारत में कठपुतलियों का नृत्य दिखाया जाता था। उसे ही सजीव रूप देने के लिए मानवों को मंच पर प्रस्तुत करके नाटकों का अभिनय प्रारम्भ हुआ।

मृतात्म-श्राद्ध-सिद्धान्त (वीर-पूजा)

- डॉ. रिजवे ने यह मत रखा था कि अपने मृत पूर्वजों के प्रति श्रद्धा प्रदर्शित करने के लिए जिस प्रकार यूनानी दुःखान्त रूपकों का उद्भव हुआ था, उसी प्रकार भारत में भी अपने दिवंगत वीर पुरुषों के प्रति आदर-भाव दिखाने के लिए नाटक अभिनीत होते थे।
- रामलीला और कृष्णलीला इसी प्रवृत्ति के पोषक दृष्टान्त हैं।

उत्सव-सिद्धान्त

- यूरोप के कुछ विद्वानों ने अपने यहाँ होने वाले मे-पोल-नृत्य को संस्कृत रूपकों का भी प्रथम रूप कहा है।

छाया-नाटक-सिद्धान्त

- जर्मन विद्वान् ल्यूडर्स तथा स्टेन कोनो का मत है कि छाया - नाटकों में जो छाया-चित्रों का प्रदर्शन होता है, वही संस्कृत रूपकों के मूल रूप रहे होंगे।

संस्कृत नाट्य की विशिष्टताएँ-

- भारतीय रूपक मनोरंजन-प्रधान या आनन्दपरक होते हैं।
- भरत ने इसकी व्याख्या की कि दुःखी, श्रान्त, शोकाकुल एवं तपःखिन्न लोगों को सही समय पर विश्रान्ति प्रदान करने वाला यह 'नाट्य' है-

  दुःखार्तानां श्रमार्तानां शोकार्तानां तपस्विनाम्।
  विश्रान्तिजननं काले नाट्यमेतद् भविष्यति॥
  (ना.शा. 1/114)
- संस्कृत रूपकों में 'दुःखान्त' की व्यवस्था नहीं है।
- यहाँ दस प्रकार के रूपक और अठारह प्रकार के उपरूपक होते हैं।
- इनमें 'नाटक' बहुत लोकप्रिय हैं।
- प्रकरण,प्रहसन,भाण,नाटिका, सट्टक आदि भी बहुत संख्या में लिखे गये हैं। इस प्रकार संस्कृत दृश्य काव्य का क्षेत्र व्यापक है।
- नाट्य-भेदों में कथानक प्रसिद्ध या कल्पित भी होता है।
- संस्कृत रूपकों में कथानक का विकास कुछ सिद्धान्तों पर आश्रित होता है। कथानक को अर्थप्रकृतियों, अवस्थाओं और सन्धियों में विभक्त किया जाता है।
- पात्रों की व्यवस्था भी रूपकों के विभाजन का आधार है। मुख्य पात्र नायक और नायिका हैं। जिनके भेदोपभेद माने गये हैं। नायकों को धीरोदात्त, धीरोद्धत, धीरप्रशान्त और धीरललित के रूप में चार प्रकार का माना गया है।
- संस्कृत रूपकों का पारस्परिक भेद रस प्रयोग के कारण भी है। नाटकों में शृङ्गार, वीर या शान्त-रस को मुख्य (अङ्गी) रस के रूप में रखा जाता है
- भवभूति ने करुणरस को प्रधान स्थान दिया है, अन्य सभी रसों का यथोचित निवेश होता है।
- नाट्यशास्त्रियों ने जीवन की कुछ क्रियाओं का मञ्चन की दृष्टि से वर्जन किया है। अनुचित, असभ्य और अशुभ दृश्य मञ्च पर नहीं दिखाये जाते। जैसे-युद्ध, मृत्यु, निद्रा, सम्भोग, शाप, चुम्बन, भोजन आदि।
- भाषा प्रयोग का विधान संस्कृत रूपकों की महत्त्वपूर्ण विशिष्टता है। भरत ने ही विधान किया था कि उच्च और मध्य वर्ग के पात्रों की भाषा संस्कृत होगी। प्राकृत में भी क्षेत्रीय प्रभेदों के विधान की दृष्टि से सामान्यतः महाराष्ट्री ,शौरसेनी, मागधी और अर्धमागधी प्राकृतों का प्रयोग किया गया है।
- रूपक भी धर्म के उपकरणों का यथेष्ट उपयोग करते हैं जैसे नान्दी या प्रस्तावना में देवस्तुति और भरतवाक्य में आशीर्वाद देना।

- पाश्चात्त्य नाट्य-विज्ञान में स्वीकृत अन्वितित्रय संस्कृत रूपकों में मान्य नहीं है।
- संस्कृत रूपकों में रसोद्भावन की दृष्टि से उचित स्थानों पर पद्य-प्रयोग किया जाता है।
- कथनोपकथन का मुख्य रूप तो गद्य ही रहता है किन्तु कुछ आवश्यक स्थलों में रोचकता, प्रकृति-वर्णन, नीति-शिक्षा, सुभाषित, विस्तृत घटनाओं का संक्षेपण आदि उद्देश्यों से पद्यों का भी प्रयोग होता है।
- विदूषक का प्रयोग संस्कृत रूपकों में हास्य-व्यंग्य के निवेश के लिए तो होता ही है,वह कथानक का भी एक अङ्ग होता है। वह कथा-प्रवाह को आगे बढ़ाता है।
- शुद्ध हास्य की दृष्टि से 'प्रहसन' और 'भाण' नामक रूपक-भेद संस्कृत में होते हैं जिसमें समाज की विसंगतियों पर व्यंग्य होता है।
- संस्कृतभाषा के रूपकों के प्रारम्भ में प्रस्तावना होती है। जिसमें कवि-परिचय के साथ नाटक के अभिनय के अवसर का भी संकेत रहता है।
- नान्दीपाठ से नाटक का प्रारम्भ एवं भरतवाक्य से समाप्ति, अङ्कों की योजना, बीच-बीच में विष्कम्भक, प्रवेशक आदि देना ये सब रचना-प्रक्रिया के मुख्य अङ्ग हैं।
- बीच में मञ्च से पात्रों का निर्गम,प्रवेश,स्वागत-भाषण, जनान्तिक भाषण आदि संकेत नाटकों के अभिनय और मञ्चन को सुविधायुक्त कर देते हैं।

गद्य साहित्य

- 'गद्य' शब्द गद्-धातु (व्यक्तायां वाचि) से यत् प्रत्यय लगकर बना है जिसका अर्थ है मानव की अभिव्यक्ति की मौलिक प्रक्रिया।
- दण्डी ने काव्यादर्श में 'गद्यकाव्य' की परिभाषा देकर इसे आख्यायिका और कथा के रूप में विभाजित किया है।
  'अपादः पदसन्तानो गद्यमाख्यायिका कथा।' (1/23)
- गद्यकाव्य इतना कठिन और विरल हो गया कि आठवीं शताब्दी ई0 में एक उक्ति चल पड़ी-**'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति'** अर्थात् गद्यकाव्य लिखना कवियों की कड़ी परीक्षा है।
- गद्य का प्रथम रूप हमें यजुर्वेद की संहिताओं में मिलता है।
- यजुर्वेद की परिभाषा ही दी गयी है- **'अनियताक्षरावसानं यजुः'** तथा **'गद्यात्मकं यजुः।'**
- कृष्ण-यजुर्वेद की तैत्तिरीय, काठक और मैत्रायणी संहिताएँ अधिकांशतः गद्यात्मक हैं।
- ब्राह्मण और आरण्यक (जो पूर्णतः गद्य में ही हैं) पतञ्जलि का महाभाष्य, शबरस्वामी का शाबरभाष्य (मीमांसा-दर्शन पर),शंकराचार्य का शारीरकभाष्य (ब्रह्मसूत्र पर) इत्यादि उत्कृष्ट शास्त्रीय गद्य के रूप हैं।
- आचार्य शंकर की गद्यशैली प्रसन्न-गम्भीर है,इसका परिमाण भी प्रचुर है क्योंकि दस उपनिषदों, गीता तथा ब्रह्मसूत्र पर उन्होंने भाष्य लिखे हैं।
- साहित्यिक गद्य के प्रयोग का अनुमान कात्यायन और पतञ्जलि के द्वारा दी गयी सूचनाओं से होता है।
- पतञ्जलि ने तो तीन आख्यायिकाओं के नाम भी दिये हैं- **वासवदत्ता, सुमनोत्तरा** तथा **भैमरथी**।
- साहित्यिक गद्य का स्पष्ट उदाहरण अभिलेखों में प्राप्त होता है। इस दृष्टि से रुद्रदामन का गिरिनार अभिलेख 150ई0) तथा हरिषेणकृत समुद्रगुप्त-प्रशस्ति (प्रयाग स्तम्भलेख 360 ई0) विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।
- समुद्रगुप्त की विजय-यात्राओं और व्यक्तिगत गुणों का वर्णन प्रयाग-प्रशस्ति में हुआ है। इस प्रशस्ति के लेखक हरिषेण हैं।
- साहित्यिक गद्य का विकासशील रूप **दण्डी, सुबन्धु** या **बाण** की रचनाओं में प्राप्त होता है।

गद्यकाव्य के भेद

- संस्कृत गद्यकाव्य के दो मुख्य भेद माने गये हैं-कथा और आख्यायिका
- आख्यायिका ऐतिहासिक विषयों पर एवं कथा पूर्णतः काल्पनिक विषयों पर आश्रित होती है।
- बाणभट्ट की गद्य-रचनाओं में 'हर्षचरित' आख्यायिका तथा 'कादम्बरी' कथा के रूप में प्रसिद्ध हुई।
- कथा में कथावस्तु कविकल्पित होती है।
- आख्यायिका में ऐतिहासिक होती है।
- कथा के आरम्भ में पद्यों के द्वारा सज्जनों की प्रशंसा, दुष्टों की निन्दा तथा कवि के वंश का वर्णन होता है।
- कथा का विभाजन नहीं होता, आख्यायिका उच्छ्वासों या निःश्वासों में विभक्त होती है।
- उच्छ्वासों के आरम्भ में भावी घटना का परोक्ष निर्देश करने वाले पद्य भी होते हैं।
- कथा में मुख्य कथानक को लाने के लिए दूसरी कथा से आरम्भ किया जाता है।
- आख्यायिका में कवि अपना वृत्तान्त देकर मुख्य कथा को आरम्भ करता है। इन दोनों में समानता के तथ्य भी बहुत हैं। जैसे- 1. दोनों की रचना संस्कृत गद्य में होती है। 2. गद्य की शैली दोनों में समान रहती है। 3. रसों और भावों का समान रूप से प्रयोग होता है। 4. नगर,वन,सरोवर,राजा,राजसभा,मृगया

प्रेम आदि का समान रूप से वर्णन दोनों में होता है

गद्य के प्रकार

समास के प्रयोग तथा वृत्तभाग के निवेश की दृष्टि से गद्य के चार प्रकार माने गये हैं-

1. मुक्तक 2. वृत्तगन्धि
3. उत्कलिकाप्राय 4. चूर्णक

- समास से रहित गद्य-रचना को मुक्तक कहते हैं।
- जहाँ गद्य में छन्द के अंश आ जाएँ उसे वृत्तगन्धि कहते हैं।
- लम्बे समासों से युक्त गद्य उत्कलिकाप्राय कहलाता है तथा अल्प समासों से युक्त गद्य को चूर्णक कहा जाता है।

गीतिकाव्य

- गीतिकाव्य का उद्‌गम ऋग्वेद की ऋचाओं से माना जाता है।
- अग्नि, इन्द्र, विष्णु आदि देवों के प्रति ऋषियों द्वारा स्तुतियाँ वेदों में ही की गयी हैं।
- इन्द्र के प्रति एक ऋचा में कहा गया है-

तुञ्जे- तुञ्जे य उत्तरे, स्तोमा इन्द्रस्य वज्रिणः।
न विन्धे अस्य सुष्टुतिम्॥ (ऋ0 1.7.7)
(अर्थात् विविध वस्तुओं का दान करने वाले अन्य देवों के लिए जो स्तोत्र है, मैं इन्द्र की स्तुति के लिए उपयुक्त स्तोत्र नहीं मानता)

- प्रजापति की स्तुति में हिरण्यगर्भ सूक्त (ऋ0 -10.12.1) उत्कृष्ट गीतिकाव्य है जिसके प्रत्येक मन्त्र के अन्त में आया है- **'कस्मै देवाय हविषा विधेम।'**
- इन्द्र के कई स्तोत्रों में उनके वीरकर्मों का वर्णन है जिससे ओजस्विता का संचार होता है जैसे-

यः पृथिवीं व्यथमानामदृंहद्,
यः पर्वतान् प्रकुपिताँ अरम्णात्।
यो अन्तरिक्षं विममे वरीयो,
यो द्यामस्तम्नात्स जनास इन्द्रः। (ऋ0- 2.12.2)

- ऋग्वेद में ही प्रभात काल की देवी उषा का वर्णन उसके सौन्दर्यपक्ष को विशेष रूप से अङ्कित करके किया गया है। **'जायेव पत्य उशती सुवासा उषा हस्त्रेव नि रिणीते अप्सः।'** (ऋ0-1.124.7)
- इसीप्रकार अथर्ववेद में भूमि की स्तुति में गीतिकाव्य का विन्यास है।
- पृथ्वी देवी के प्रति कृतज्ञता की अभिव्यक्ति 63 मन्त्रों में अथर्वा ऋषि ने की है।
- सामवेद का सङ्गीत पक्ष गीतिकाव्य के अनन्यगुण को विशेष रूप से धारण करता है।
- इसलिए वैदिक युग ही संस्कृत गीतिकाव्य के उद्भव के लिए ठोस धरातल देता है।
- रामायण का उदय गीतिकाव्य के रूप में ही हुआ है। इसमें विरह-वर्णन, देवस्तुति आदि गीतितत्त्व को ही स्पष्ट करता है।
- महाभारत में प्राप्त होने वाली स्तुतियाँ भी गीतिकाव्य के रूप में स्वीकृत हैं।
- गीता के 11 वें अध्याय में भगवान् श्रीकृष्ण का विराट् रूप वर्णन प्रकृष्टस्तोत्र काव्य है।
- भागवतपुराण, विष्णु तथा नारदपुराणादि में उपास्य देवों की स्तुतियाँ मिलती हैं।
- अध्यात्म रामायण में राम की ब्रह्म के रूप में स्तुति वर्णित है।
- लौकिक साहित्य में कालिदास से गीतिकाव्य का प्रारम्भ होता है। अतः कालिदास **संस्कृत गीतिकाव्य के प्रवर्तक हैं**।
- **गीतिकाव्य के दो भेद हैं-**

1. शृङ्गारिक गीतिकाव्य
2. आध्यात्मिक या नैतिक गीतिकाव्य

1. शृङ्गारिक गीतिकाव्य

- शृङ्गार मूलक संस्कृत गीतिकाव्यों का वर्ण्य विषय जीवन का भौतिक सुख है जिसमें स्त्रियों के सौन्दर्य, हाव-भाव, विलास आदि का वर्णन करते हुए उनके प्रति पुरुष के आकर्षण का चित्रण हुआ है।
- कुछ प्रमुख गीतिकाव्यों का परिचय यहाँ दिया जा रहा है-

1. ऋतुसंहार

- ऋतुसंहार संस्कृत वाङ्मय का प्रथम गीतिकाव्य है।
- यह कालिदास की प्रामाणिक रचना के रूप में छः सर्गों में निबद्ध है, जिसमें ग्रीष्म से वसन्त तक के छहों ऋतुओं का शृङ्गारिक वर्णन है।
- इसमें 144 पद्य हैं।

2. मेघदूत

2. मेघदूत कालिदास की प्रौढ़ एवं परिष्कृत गीति रचना है।

- यह **मन्दाक्रान्ता छन्द** में रचित एवं **दो खण्डों** में विभाजित है।
- टीकाकार मल्लिनाथ ने मेघदूत के **121** पद्यों की व्याख्या की है, किन्तु 6 श्लोक को प्रक्षिप्त मानकर **115** श्लोकों को प्रामाणिक माना है।
- इसमें यक्ष- यक्षिणी की प्रणय कथा का वर्णन है।

3. गाथा-सप्तशती

- यह **'हालकवि'** द्वारा रचित, **सात सौ मुक्तक पद्यों** की प्राकृत रचना है।
- इसका प्राकृत नाम- **'गाहासत्तसई'** है।

4. भर्तृहरि के शतकत्रय

- **भर्तृहरि** ने तीन शतकों की रचना की है जो गीतिकाव्य के अन्तर्गत वर्णित हैं-

1. नीतिशतक- (111 पद्य)
2. शृङ्गारशतक- (103 पद्य)
3. वैराग्यशतक- (111 पद्य)

5. अमरुकशतक

- इसके रचयिता '**अमरुक**' हैं। यह मुक्तक काव्य है।
- इसके पद्यों की संख्या 90 से 115 तक मिलती है।

6. भल्लट शतक

- यह अन्योक्ति पूर्ण नीतिमूलक पद्यों का संग्रह है।
- यह कश्मीरी कवि '**भल्लट**' की रचना है।

7. गीतगोविन्द

- '**गीतगोविन्द**' संस्कृतभाषा का श्रेष्ठ गीतिकाव्य है।
- इसके रचनाकार '**जयदेव**' हैं।
- इसमें 12 सर्ग तथा 24 प्रबन्ध हैं।

8. भामिनीविलास

- यह पण्डितराज जगन्नाथ के स्फुट पद्यों का संग्रह है।
- यह चार भागों (विलासों) में विभक्त है।

2. स्तोत्रकाव्य या धार्मिक गीतिकाव्य

- स्तोत्रकाव्य में भक्ति तथा वैराग्य दोनों विषयों का ग्रहण होता है।
- कुछ प्रमुख स्तोत्रकाव्य निम्नलिखित हैं-

1. पुष्पदन्त का शिवमहिम्न स्तोत्र

- मुख्यतः शिखरिणी छन्द में रचित शिव की महिमा का वर्णन है।

2. मयूरभट्ट का सूर्यशतक

- स्रग्धरा छन्द का प्रथम स्तोत्रकाव्य है।
- 100 पद्यों में सूर्य महिमा वर्णित है।

3. बाणभट्ट का चण्डीशतक

- इसमें भगवती दुर्गा की स्तुति है।
- इसमें भी स्रग्धरा छन्द के 100 पद्य हैं।

अन्य स्तोत्र ग्रन्थ

आनन्दलहरी, मुकुन्दमाला, वरदराजस्तव, नारायणीय, मूकपञ्चशती, सौन्दर्यलहरी, शिवताण्डवस्तोत्र आदि।

2.7 संग्रह-ग्रन्थ

संस्कृत साहित्य के इतिहास में हमें दो प्रकार के संग्रह ग्रन्थों का वर्णन प्राप्त होता है-

उद्भव और विकास
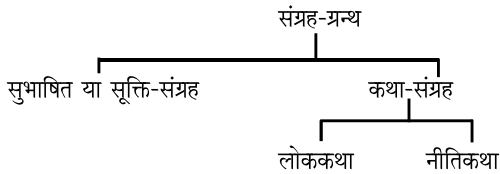
- कथा का बीज वैदिक वाङ्मय में विस्तृत रूप से मिलता है।
- पुरूरवा-उर्वशी, सरमा-पणि आदि संवाद सूक्तों में तात्कालिक कथाओं को संवादों में प्रस्तुत किया गया है।
- 'बृहद्देवता' में अनेक देवताओं की कथाएं हैं।
- उपनिषदों में भी जीव- जन्तुओं की कथाएं कुछ विशिष्ट उद्देश्य से दी गयी हैं। जैसे- दो हंसों के वार्तालाप ।
- महाभारत तथा पुराण- साहित्य तो कथाओं का अक्षय- कोश है।
- बौद्ध जातक कथाएं पालि साहित्य में प्रसिद्ध हैं।
- जैनों ने भी अपने कथा साहित्य का पर्याप्त विकास किया था।
- हरिषेण का '**बृहत्कथाकोश**' जैन सिद्धान्त का प्रतिपादन करता है।
- इसप्रकार कथा का सम्पूर्ण विकास ईसापूर्व में ही हो चुका था।

लोक कथाएँ

- संस्कृत का दुर्भाग्य है कि लोक कथाएँ मुख्यतः पैशाची भाषा में लिखित '**गुणाढ्य**' की **बृहत्कथा** (बड्डकहा) पर आश्रित हैं।'

बृहत्कथा

- लोक कथाओं का प्राचीनतम संग्रह 'गुणाढ्य' की बृहत्कथा में किया गया था।
- बृहत्कथा की भूमिका से पता चलता है कि पहले इसमें सात लाख श्लोक थे किन्तु बाद में केवल एक लाख ही बचे।
- वर्तमान समय में बृहत्कथा उपलब्ध नहीं है।
- महाभारत की भाँति बृहत्कथा भी उपजीव्य ग्रन्थ है।
- बृहत्कथा के उपजीवी ग्रन्थ निम्नलिखित हैं-

1. बृहत्कथाश्लोकसंग्रह

- नेपाल के **बुधस्वामी** इसके लेखक हैं।
- बृहत्कथा की नेपाली वाचना का एकमात्र प्रतिनिधि ग्रन्थ यही है।
- इसके 28 सर्गों में 4539 श्लोक हैं किन्तु यह ग्रन्थ अपूर्ण है।

2. बृहत्कथामञ्जरी

- यह **क्षेमेन्द्र** कृत ग्रन्थ है, जो बृहत्कथा का ही संक्षिप्त रूप है, इसमें कथाओं का संग्रह है।
- इसमें 19 अध्याय और 7500 श्लोक हैं।

3. कथासरित्सागर

- इसकी रचना **सोमदेव** ने किया है। यह ग्रन्थ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और विश्वविख्यात है।
- 'यथा नाम तथा गुण' के अनुसार यह वस्तुतः कथाओं का समुद्र है।
- यह 18 लम्भकों तथा 124 तरङ्गों में विभाजित है।
- इसमें 21388 (लगभग बाइस हजार) श्लोक हैं।

4. वेतालपञ्चविंशति

- इसमें भी कथाओं का संकलन है। वेताल और विक्रम से सम्बद्ध 25 शिक्षाप्रद एवं रोचक कथाओं का संग्रह है।

- पञ्चतन्त्र के समान यह भी विश्वसाहित्य बन गया है।
- हिन्दी में इसे **वैतालपचीसी** कहते हैं।

5. सिंहासनद्वात्रिंशिका

- इसे **'द्वात्रिंशत्पुत्तलिका'** या **'विक्रमचरित'** भी कहा गया है।
- इसमें बत्तीस कथाओं के माध्यम से विक्रमादित्य के गुणों का वर्णन किया गया है।
- दक्षिण भारतीय इसे **'विक्रमार्कचरित'** के नाम से जानते हैं।

6. शुकसप्तति

- यह सत्तर कथाओं का रोचक संग्रह- ग्रन्थ है।
- यह भी विश्व- साहित्य में गणनीय है।

अन्य कथा-संग्रह ग्रन्थ

शिवदास- **कथार्णव** (35 कथाएं)
विद्यापति- **पुरुष-परीक्षा** (44 कथाएं)
श्रीवीर- **कथा-कौतुक**
बल्लालसेन- **भोजप्रबन्ध**

नीतिकथाएँ

- नीतिकथाएं हमें नैतिक उपदेश देती हैं।
- इन कथाओं का उपयोग मनुष्य के व्यक्तित्व को सुधारने के लिए किया जाता है।
- भारतीय नीतिकथाएँ विश्वभर में अपना स्थान बना चुकी हैं।

1. पञ्चतन्त्र

- यह **विष्णुशर्मा** द्वारा रचित नीतिकथाओं का संग्रह है।
- मूल रूप से यह विलुप्त है।
- इसे अर्थशास्त्र का सार भी कहा जाता है।
- वर्तमान पञ्चतन्त्र में कुल 75 कथाओं का संकलन है, पद्यों की संख्या प्रायः 1100 है।
- पञ्चतन्त्र का मुख्य भाग गद्यात्मक है।
- यह भी विश्व साहित्य की श्रेणी में आता है। इसके 250 संस्करण विश्व की 50 भाषाओं में प्रकाशित हो चुके हैं।

2. हितोपदेश

- पञ्चतन्त्र पर आश्रित नीतिकथाओं में 'हितोपदेश' सर्वाधिक प्रचलित एवं महत्त्वपूर्ण है।
- इसकी रचना **नारायण पण्डित** ने की।
- हितोपदेश चार भागों में विभक्त है, इसमें 39 कथाएं हैं।
- प्रत्येक भाग की एक मुख्य कथा को जोड़ने पर कुल 43 कथाएं हैं।
- इसके पद्यों की संख्या 726 है।

अन्यनीति कथाएँ

बौद्ध तथा जैन कवियों ने अनेक नीतिकथाएं संस्कृत में लिखी हैं जिनमें-

आर्यशूर - **जातकमाला** (34जातक कथाएँ)
सिद्धर्षि (जैन)- **उपमितिभवप्रपञ्चकथा**
हेमविजयगणि- **कथारत्नाकर** (256 कथाएँ)

2. सुभाषित-संग्रह या सूक्ति-संग्रह

- चमत्कारी संस्कृत के सूक्तियों के लेखन एवं संग्रह का प्रयास प्राचीनकाल से होता रहा है।
- इन संग्रहों में मुक्तक पद्यों तथा प्रबन्ध-काव्यों के रमणीय पद्यों का भी संकलन बहुधा मूलकवि के नाम के साथ हुआ है।
- कुछ सूक्ति संग्रहों का परिचय यहाँ दिया जा रहा है-

1. कवीन्द्रवचनसमुच्चय

- यह कवि **'विद्याकर'** की कृति है। इसे **'सुभाषितरत्नकोष'** भी कहा जाता है।
- यह संस्कृत का प्राचीनतम सूक्ति-संग्रह है।
- इस संग्रह का विभाजन 50 व्रज्याओं में है।

2. सदुक्तिकर्णामृत

- यह **'श्रीधरदास'** की रचना है। यह संग्रह पाँच प्रवाहों में विभक्त है।
- पुनः **'प्रवाह'** वीचियों में विभक्त है। प्रत्येक वीचि में पाँच-पाँच पद्य हैं।
- पूरे संग्रह में 476 वीचियाँ एवं 2380 पद्य हैं।

3. सूक्तिमुक्तावली

- यह **'जल्हण'** द्वारा सङ्कलित है। इसे **'सुभाषितमुक्तावली'** भी कहते हैं।
- इसमें 133 खण्डों में विभाजित 2790 पद्य सङ्कलित हैं।

4. शार्ङ्गधर पद्धति

- यह **'शार्ङ्गधर'** कवि की कृति है। यह भाग स्वतन्त्र रूप में प्रयाग से प्रकाशित है।
- इसमें 163 परिच्छेद तथा 6300 पद्य थे किन्तु प्रकाशित संस्करण में परिच्छेद उतने ही हैं। केवल पद्य 4689 हो गये।

5. सुभाषितावली

- इसके सङ्कलनकर्ता **'वल्लभदेव'** हैं।
- इस सूक्ति संग्रह में 101 पद्धतियों में 3527 पद्य सङ्कलित हैं।

6. पद्यावली- रूपगोस्वामी (386 पद्य)
7. सूक्तिमुक्तावली- सोमप्रभाचार्य
8. सुभाषित-नीवी- वेदान्त देशिक
9. सुभाषितरत्न-सन्दोह- अमितगति
10. सुभाषित- सुधानिधि तथा **पुरुषार्थसुधानिधि-** सायणाचार्य

- सूक्ति ग्रन्थों में **'सुभाषितरत्नभाण्डागार'** सबसे बड़ा है। इसमें 10000 (दस हजार) से अधिक पद्य हैं।

काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार

ग्रन्थ	ग्रन्थकार	समय
1. नाट्यशास्त्र	आचार्य भरत	ई.पू. द्वितीय शताब्दी
2. काव्यालङ्कार	भामह	500 ई.
3. काव्यादर्श	दण्डी	सातवीं शताब्दी
4. काव्यालङ्कारसारसंग्रह	उद्भट	अष्टमशताब्दी का उत्तरार्द्ध
5. काव्यालङ्कार सूत्र	वामन	800-850 ई. लगभग
6. काव्यालङ्कार	रुद्रट	नवम शताब्दी का पूर्वार्द्ध
7. ध्वन्यालोक	आनन्दवर्धन	नवम शताब्दी का उत्तरार्द्ध
8. काव्यमीमांसा	राजशेखर	दशम शताब्दी
9. अभिधावृत्तमात्रिका	मुकुलभट्ट	दशम शताब्दी का पूर्वार्द्ध
10. काव्यकौतुक	भट्टतौत	दशम शताब्दी का मध्य
11. दशरूपक	धनञ्जय और धनिक	दशम शताब्दी का उत्तरार्द्ध
12. (i) अभिनवभारती ('नाट्यशास्त्र' की टीका)	अभिनवगुप्त	एकादश शताब्दी
(ii) ध्वन्यालोकलोचन ('ध्वन्यालोक' की टीका)	अभिनवगुप्त	
(ii) 'काव्यकौतुकविवरण ('काव्यकौतुक' का विवरण)	अभिनवगुप्त	
13. वक्रोक्तिजीवितम्	कुन्तक	एकादश शताब्दी का पूर्वार्द्ध
14. व्यक्तिविवेक	महिमभट्ट	एकादश शताब्दी का मध्य
15. (i) सरस्वतीकण्ठाभरण	भोजराज	एकादशशताब्दी 1050 ई. लगभग
(ii) शृङ्गारप्रकाश	भोजराज	
16. (i) औचित्यविचारचर्चा	क्षेमेन्द्र	एकादशशताब्दी का उत्तरार्द्ध
(ii) कविकण्ठाभरण	क्षेमेन्द्र	
17. नाटकलक्षणरत्नकोष	सागरनन्दी	एकादश शताब्दी
18. काव्यप्रकाश	मम्मट	1050 ई. (एकादश शताब्दी का उत्तरार्द्ध)
19. अलङ्कारसर्वस्व	रुय्यक	द्वादशशताब्दी
20. वाग्भटालङ्कार	वाग्भट्ट	बारहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध
21. काव्यानुशासन	हेमचन्द्र	बारहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध
22. नाट्यदर्पण	रामचन्द्र गुणचन्द्र	बारहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध
23. भावप्रकाशन	शारदातनय	तेरहवीं शताब्दी
24. चन्द्रालोक	पीयूषवर्ष जयदेव	तेरहवीं शताब्दी का मध्यभाग
25. साहित्यदर्पण	विश्वनाथ कविराज	14वीं शताब्दी
26. एकावली	विद्याधर	1285 ई. से 1325 ई. के मध्य
27. (i) कुवलयानन्द	अप्पयदीक्षित	षोडशशताब्दी
(ii) चित्रमीमांसा	अप्पयदीक्षित	
(iii) वृत्तवार्तिक	अप्पयदीक्षित	
28. रसगङ्गाधर	पण्डितराज जगन्नाथ	17वीं शताब्दी का मध्यभाग

महाकाव्य	सर्ग	कवि
1. कुमारसम्भवम्	कालिदास	17 (अन्यमत 8)
2. रघुवंशम्	19	कालिदास
3. बुद्धचरितम्	28	अश्वघोष
4. सौन्दरनन्द	18	अश्वघोष
5. किरातार्जुनीयम्	18	भारवि
6. शिशुपालवधम्	20	माघ
7. नैषधीयचरितम्	22	श्रीहर्ष
8. भट्टिकाव्य (रावणवधम्)	22	भट्टि
9. जानकीहरणम्	20 से 25 सर्ग (प्राप्त 10-15 सर्ग)	कुमारदास
10. हरविजयम्	50 सर्ग	रत्नाकर (सबसे बड़ा महाकाव्य)
11. धर्मशर्माभ्युदय	21 सर्ग	हरिश्चन्द्र
12. राघवपाण्डवीयम्	13 सर्ग (माधवभट्ट)	कविराज

कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ

रचना	लेखक
1. जाम्बवतीविजयम् (पातालविजयम्)	पाणिनि
2. स्वर्गारोहणम्	कात्यायन (वररुचि)
3. महानन्दकाव्य	पतञ्जलि
4. प्रयागप्रशस्ति	हरिषेण
5. सेतुबन्ध	प्रवरसेन
6. हयग्रीववध	भर्तृमेण्ठ
7. गउडवहो	वाक्पति
8. रामचरित	अभिनन्द

9. **नवसाहसाङ्कचरित**	पद्मगुप्त
10. **पारिजातहरणम्**	कविकर्णपूर
11. **नरनारायणानन्द**	वस्तुपाल
12. **रघुनाथचरित**	वामनभट्टबाण
13. **सेतुकाव्य**	मातृगुप्त
14. **कादम्बरीसार**	अभिनन्द (काश्मीरी कवि)
15. **रामायणमञ्जरी**	क्षेमेन्द्र (काश्मीरी)
16. **भारतमञ्जरी**	क्षेमेन्द्र (काश्मीरी कवि)
17. **विक्रमाङ्कदेवचरित**	बिल्हण (काश्मीरी)
18. **श्रीकण्ठचरितम्**	मंखक (काश्मीरी)
19. **राजतरङ्गिणी**	कल्हण (काश्मीरी)
20. **जातकमाला**	आर्यशूर (बौद्ध कवि)
21. **गुरुगोविन्दसिंह महाकाव्यम्**	डॉ. सत्यव्रतशास्त्री
22. **सीताचरितम्**	डॉ. रेवाप्रसाद द्विवेदी
23. **जानकीजीवनम्**	डॉ. अभिराज राजेन्द्र मिश्र

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख नाट्यग्रन्थ

ग्रन्थ	अङ्क	लेखक
1. **प्रतिज्ञायौगन्धरायण**	4	भास
2. **स्वप्नवासवदत्तम्**	6	भास
3. **ऊरुभङ्गम्**	एकाङ्की	भास
4. **दूतवाक्यम्**	एकाङ्की	भास
5. **पञ्चरात्रम्**	3	भास
6. **बालचरितम्**	5	भास
7. **दूतघटोत्कचम्**	एकाङ्की	भास
8. **कर्णभारम्**	एकाङ्की	भास
9. **मध्यमव्यायोगः**	एकाङ्की	भास
10. **प्रतिमानाटकम्**	7	भास
11. **अभिषेकनाटकम्**	6	भास
12. **अविमारकम्**	6	भास
13. **चारुदत्तम्**	4	भास
14. **मृच्छकटिकम्** (प्रकरण)	10	शूद्रक (शिमुक)
15. **मालविकाग्निमित्रम्**	5	कालिदास
16. **विक्रमोर्वशीयम्** (त्रोटक)	5	कालिदास
17. **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**	7	कालिदास
18. **मुद्राराक्षसम्**	7	विशाखदत्त
19. **प्रियदर्शिका** (नाटिका)	4	हर्ष (हर्षवर्धन)
20. **रत्नावली** (नाटिका)	4	हर्ष (हर्षवर्धन)
21. **नागानन्द**	5	हर्ष (हर्षवर्धन)
22. **वेणीसंहारम्**	6	भट्टनारायण
23. **मालतीमाधवम्** (प्रकरण)	10	भवभूति
24. **महावीरचरितम्**	7	भवभूति
25. **उत्तररामचरितम्**	7	भवभूति
26. **शारिपुत्रप्रकरण्** (प्रकरण)	9	अश्वघोष
27. **अनर्घराघवम्**	7	मुरारि
28. **बालरामायणम्** (महानाटक)	10	राजशेखर
29. **बालभारत** (प्रचण्डपाण्डव)	2	राजशेखर
30. **विद्धशालभञ्जिका** (नाटिका)	4	राजशेखर
31. **कर्पूरमञ्जरी** (सट्टक)	4	राजशेखर
32. **कुन्दमाला**	6	दिङ्नाग
33. **प्रबोधचन्द्रोदय**	6	कृष्णमिश्र
34. **प्रसन्नराघवम्**	7	जयदेव

कुछ अन्य नाट्यग्रन्थ

नाट्यग्रन्थ	लेखक
1. **आश्चर्यचूडामणि**	शक्तिभद्र
2. **रामाभ्युदय**	यशोवर्मा
3. **महानाटक**	हनुमान्
4. **हनुमन्नाटक**	दामोदर मिश्र
5. **रुक्मिणीहरणम्**	वत्सराज
6. **त्रिपुरदाह**	वत्सराज
7. **समुद्रमन्थन**	वत्सराज
8. **सौगन्धिकाहरणम्**	विश्वनाथ
9. **सामवतम्**	अम्बिकादत्तव्यास
10. **दूताङ्गद (छायानाटक)**	सुभट
11. **सुभद्रापरिणय (छायानाटक)**	व्यासरामदेव
12. **पार्वतीपरिणय**	बाणभट्ट

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख गद्यकाव्य

गद्यरचना	लेखक
1. **दशकुमारचरितम्**	दण्डी
2. **अवन्तिसुन्दरीकथा**	दण्डी
3. **वासवदत्ता** (कथा)	सुबन्धु
4. **कादम्बरी** (कथा)	बाणभट्ट
5. **हर्षचरितम्** (आख्यायिका)	बाणभट्ट
6. **मुकुटताडितक**	बाणभट्ट

7. मन्दारमञ्जरी	विश्वेश्वर पाण्डेय
8. शिवराजविजयम् (ऐतिहासिक उपन्यास)	अम्बिकादत्तव्यास
9. प्रबन्धमञ्जरी	हृषीकेश भट्टाचार्य
10. कथापञ्चकम्	पण्डिता क्षमाराव
11. ग्रामज्योतिः	पण्डिता क्षमाराव
12. कथामुक्तावलिः	पण्डिता क्षमाराव
13. कौमुदीकथाकल्लोलिनी	डॉ. रामशरणत्रिपाठी
14. तिलकमञ्जरी	धनपाल
15. गद्यचिन्तामणि	वादीभसिंह
16. वेमभूपालचरितम्	वामनभट्ट बाण
17. द्वासुपर्णा	डॉ. रामजी उपाध्याय
18. गद्यरामायणम्	वरददेशिक
19. गाँधीचरितम्	चारुदेवशास्त्री
20. रामचरितम्	देवविजयगणी

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख गीतिकाव्य

गीतिकाव्यम्	लेखक
1. ऋतुसंहारम्	कालिदास
2. मेघदूतम्	कालिदास
3. नीतिशतकम्	भर्तृहरि
4. शृङ्गारशतकम्	भर्तृहरि
5. वैराग्यशतकम्	भर्तृहरि
6. अमरुशतकम्	अमरुक
7. गीतगोविन्दम्	जयदेव
8. गङ्गालहरी/पीयूषलहरी	पण्डितराज जगन्नाथ
9. अमृतलहरी	पण्डितराज जगन्नाथ
10. सुधालहरी	पण्डितराज जगन्नाथ
11. लक्ष्मीलहरी	पण्डितराज जगन्नाथ
12. करुणालहरी	पण्डितराज जगन्नाथ
13. आसफविलास	पण्डितराज जगन्नाथ
14. जगदाभरणम्	पण्डितराज जगन्नाथ
15. प्राणाभरणम्	पण्डितराज जगन्नाथ
16. यमुनावर्णनम्	पण्डितराज जगन्नाथ
17. भामिनीविलास (गीतिकाव्य)	पण्डितराज जगन्नाथ
18. गाथासप्तशती	हाल
19. चौरपञ्चाशिका	बिल्हण
20. आर्यासप्तशती	गोवर्धनाचार्य
21. चाणक्यशतकम्	चाणक्य
22. घटकर्परकाव्यम्	घटकर्पर
23. नीतिसार	घटकर्पर
24. चण्डीशतकम्	बाणभट्ट
25. सूर्यशतकम्	मयूरभट्ट
26. भल्लटशतकम्	भल्लट
27. वक्रोक्तिपञ्चाशिका	रत्नाकर
28. देवीशतकम्	आनन्दवर्धन
29. कुट्टिनीमतम्	दामोदरगुप्त
30. बल्लालशतकम्	बल्लाल
31. चारुचर्या	क्षेमेन्द्र
32. सेव्यसेवकोपदेश	क्षेमेन्द्र
33. समयमातृका	क्षेमेन्द्र
34. कथाविलास	क्षेमेन्द्र
35. दर्पदलन	क्षेमेन्द्र
36. पवनदूत	धोयी
37. नेमिदूतम्	विक्रमकवि
38. शुकसन्देश	लक्ष्मीदास
39. भृङ्गसन्देश	वासुदेव
40. हंसदूतम्	रूपगोस्वामी
41. चन्द्रदूतम्	विमलकीर्ति

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख स्तोत्रकाव्यम्

1. शिवताण्डवस्तोत्रम्	रावण
2. सौन्दर्यलहरी	शङ्कराचार्य
3. चर्पटपञ्जरिकास्तोत्रम्	शङ्कराचार्य
4. श्रीकृष्णाष्टकम्	शङ्कराचार्य
5. आनन्दलहरी	शङ्कराचार्य
6. शिवमहिम्नस्तोत्रम्	पुष्पदन्त
7. आलबन्दारस्तोत्रम्	यामुनाचार्य (आलबन्दार)
8. गङ्गास्तव	जयदेव
9. कृष्णकर्णामृतम्	बिल्वमङ्गल (कृष्णालीलाशुक)
10. वरदराजस्तव	अप्पयदीक्षित
11. नारायणीयम्	नारायणभट्ट
12. आनन्दमन्दाकिनी	मधुसूदन सरस्वती
13. गन्धर्वप्रार्थनाष्टकम्	रूपगोस्वामी

सुभाषितग्रन्थाः

सुभाषितग्रन्थाः	ग्रन्थकारः
1. कवीन्द्रवचनसमुच्चयः	विद्याकरपण्डितः
2. सदुक्तिकर्णामृतम् (सूक्तिकर्णामृतम्)	श्रीधरदास
3. सूक्तिमुक्तावली	सिद्धचन्द्रमणि

(सुभाषितमुक्तावली)

4. सूक्तिरत्नाकरः	सिद्धचन्द्रमणि
5. सुभाषित सुधानिधि	सायण
6. शार्ङ्गधरपद्धति	शार्ङ्गधर
7. सुभाषितरत्नभाण्डागार	शिवदत्त एवं नारायणराम आचार्य
8. सूक्तिमुक्तावली	डॉ. नरेन्द्रदेव शास्त्री
9. संस्कृतसूक्तिरत्नाकर	डॉ. रामजी उपाध्याय

ऐतिहासिक काव्य

ऐतिहासिक काव्य	लेखक
1. बुद्धचरितम्	अश्वघोष
2. हर्षचरितम्	बाणभट्ट
3. गउडवहो (गौडवधः)	वाक्पतिराज
4. नवसाहसाङ्कचरितम्	पद्मगुप्त (परिमल)
5. विक्रमाङ्कदेवचरितम्	बिल्हण
6. राजतरङ्गिणी	महाकवि कल्हण
7. सोमपालविजयम्	जल्हण
8. प्रबन्धकोष	राजशेखर
9. वेमभूपालचरितम्	वामनभट्ट बाण

कथासाहित्यम्

कथाग्रन्थः	लेखकः
1. पञ्चतन्त्रम्	विष्णुशर्मा
2. हितोपदेश	नारायणपण्डित
3. बृहत्कथा	गुणाढ्य
4. बृहत्कथाश्लोकसंग्रह	बुधस्वामी
5. बृहत्कथामञ्जरी	क्षेमेन्द्र
6. कथासरित्सागर	सोमदेव
7. वेतालपञ्चविंशतिका	शिवदास एवं जम्भलदत्त
8. सिंहासनद्वात्रिंशिका	लेखक का नाम अज्ञात
द्वात्रिंशत्पुत्तलिका	
विक्रमचरित	
विक्रमार्कचरित	
9. शुकसप्ततिः	अज्ञात
10. पुरुषपरीक्षा	विद्यापति
11. भोजप्रबन्ध	बल्लालसेन
12. जातकमाला	आर्यशूर
13. प्रबन्धकोष	राजशेखर
14. उदयसुन्दरीकथा	सोड्ढल

चम्पूकाव्य

चम्पूकाव्य	लेखक
1. नलचम्पू (दमयन्तीकथा)	त्रिविक्रमभट्ट
2. मदालसाचम्पू	त्रिविक्रमभट्ट
3. जीवन्धरचम्पू	हरिश्चन्द्र
4. यशस्तिलकचम्पू	सोमदेवसूरि
5. रामायणचम्पू	राजाभोज (भोजराज)
6. भागवतचम्पू	अभिनवकालिदास
7. भारतचम्पू	अनन्तभट्ट
8. वरदाम्बिकापरिणयचम्पू	रानी तिरुमलाम्बा
9. भरतेश्वराभ्युदयचम्पू	पं. आशाधरसूरि
10. रुक्मिणीपरिणयचम्पू	अमलाचार्य (अम्मल)
11. आनन्दवृन्दावनचम्पू	कवि कर्णपूर

संस्कृत पत्र-पत्रिकायें

1. साप्ताहिक-पत्रिका

- **भवितव्यम्** (नागपुर)
- **संस्कृतम्** (अयोध्या)
- **गाण्डीवम्** (वाराणसी)
- **पण्डितपत्रिका** (काशी)

2. पाक्षिक-पत्रिका

- **भारतवाणी** (पूना)
- **शारदा** (पूना)
- **संस्कृतसाकेत** (अयोध्या)

3. मासिक-पत्रिका

- **संस्कृतमञ्जूषा** (कलकत्ता)
- **सूर्योदय** (काशी)
- **आनन्दकल्पतरु** (कोयम्बटूर)
- **गुरुकुलपत्रिका** (गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार)
- **जयतु संस्कृतम्** (काठमाण्डू)
- **दिव्यज्योतिः** (शिमला)
- **बालसंस्कृतम्** (मुम्बई)
- **भारती** (जयपुर)
- **भारतीयविद्या** (मुम्बई)

- **मालवमयूर** (मन्दसौर)
- **संस्कृतरत्नाकर** (दिल्ली)
- **सरस्वतीसौरभम्** (बड़ौदा)
- **संस्कृतसञ्जीवनम्** (पटना)
- **साहित्यवाटिका** (दिल्ली)
- **भारतोदयः** (हरिद्वार)
- **सम्भाषणसन्देशः** (बङ्गलोर)
- **चन्दमामा** (बङ्गलोर)

4. त्रैमासिक-पत्रिका

- **सङ्गमनी** (प्रयाग)
- **सरस्वतीसुषमा** (सम्पूर्णानन्द सं. वि. वि. वाराणसी)
- **सागरिका** (सागर वि. वि. सागर म.प्र.)
- **विश्वसंस्कृतम्** (होशियारपुर)
- **उशती** (गङ्गानाथ झा, प्रयाग)
- **महाराजसंस्कृतपत्रिका** (मैसूर)

5. षाण्मासिक-पत्रिका

- **पुराणम्** (वाराणसी)
- **संस्कृत प्रतिभा** (नई दिल्ली)
- **विद्वत्कला** (ज्वालापुर, हरिद्वार)

6. वार्षिक-पत्रिका

- **अमृतवाणी** (बङ्गलोर)
- **संस्कृतगङ्गा** (प्रयाग)

संस्कृत कवियों के माता-पिता

कवि	पिता माता	अन्य
1. **बाणभट्ट**	चित्रभानु–राजदेवी	पितामह-**अर्थपति**
2. **भवभूति**	नीलकण्ठ–जतुकर्णी (जातुकर्णी)	(पितामह–**भट्टगोपाल**)
3. **भारवि**	श्रीधर (नारायणस्वामी)-सुशीला	
4. **माघ**	दत्तक (सर्वाश्रय)-ब्राह्मी	(पितामह–**सुप्रभदेव**)
5. **श्रीहर्ष**	श्रीहीर–मामल्लदेवी	
6. **विशाखदत्त**	पृथु (भास्करदत्त)	(पितामह–**वटेश्वरदत्त**)
7. **हर्षवर्धन**	प्रभाकरवर्धन–यशोवती	(बड़े भाई–**राज्यवर्धन,** बहन – **राज्यश्री**)
8. **राजशेखर**	दर्दुक (दुहिक) शीलवती	**अकालजलद** (पितामह)
9. **अम्बिकादत्तव्यास**	दुर्गादत्त	पितामह - श्रीराजाराम
10. **जयदेव (गीतगोविन्दकार)**	भोजदेव–रामादेवी (राधादेवी)	
11. **पण्डितराजजगन्नाथ**	पेरुभट्ट–लक्ष्मीदेवी	
12. **कल्हण**	चम्पक	
13. **त्रिविक्रमभट्ट**	देवादित्य (नेमादित्य)	पितामह-**श्रीधर**
14. **पाणिनि**	पणिन्–दाक्षी	
15. **कात्यायन (वररुचि)**	–	पितामह-**याज्ञवल्क्य**
16. **मम्मट**	जैयट	भाई-**कैय्यट (उव्वट)**
17. **विश्वनाथ**	चन्द्रशेखर	
18. **भर्तृहरि**	गन्धर्वसेन	
19. **अश्वघोष**	सुवर्णाक्षी (माता)	
20. **पतञ्जलि**	गोणिका (माता)	
21. **कालिदास**	शारदानन्द (श्वसुर, विद्योत्तमा के पिता)	
22. **मुरारि**	श्रीवर्धमानभट्ट/तन्तुमती	
23. **भट्टोजिदीक्षित**	लक्ष्मीधर	

24. वरदराज	दुर्गातनय	
25. रत्नाकर	अमृतभानु	
26. जयदेव (प्रसन्नराघवकार)	महादेव–सुमित्रा	
27. विश्वेश्वर पाण्डेय	लक्ष्मीधर पाण्डेय	
28. पण्डिता क्षमाराव	श्री शङ्करपाण्डुरङ्ग	
29. दण्डी (भारवि के प्रपौत्र)	वीरदत्त–गौरी	प्रपितामह–**भारवि**
30. वेदव्यास	सत्यवती	

कवियों की उपाधियाँ/उपनाम

क्र.सं.	कवि	उपाधि/उपनाम/कविविषयक कथन
1.	**वाल्मीकि**	आदिकवि
2.	**कृष्णद्वैपायन**	व्यास या वेदव्यास
3.	**कालिदास**	(i) दीपशिखा (ii) रघुकार (iii) कविकुलगुरु (iv) कविताकामिनी विलास (v) उपमासम्राट्
4.	**अम्बिकादत्तव्यास**	(i) घटिकाशतक (ii) सुकवि (iii) शतावधान (iv) अभिनवबाण (v) भारतरत्न
5.	**बाणभट्ट**	(i) पञ्चबाणस्तु बाणः (ii) बाणस्तु पञ्चाननः (iii) कविताकानन केसरी (iv) वश्यवाणीचक्रवर्ती (v) गद्यसम्राट् (vi) वाणी बाणो बभूव (vii) कविताकामिनीकौतुक (viii) तुरङ्गबाण (ix) गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति (x) बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम् (xi) बाणःकवीनामिह चक्रवर्ती (xii) महानयं भुजङ्गः (xiii) सर्वेश्वर
6.	**जयदेव (प्रसन्नराघव एवं 'चन्द्रालोक' के लेखक)**	(i) पीयूषवर्ष (ii) कवीन्द्र (iii) वाणी का विलास (iv) असमरसनिष्यन्दमधुर
7.	**मल्लिनाथ**	(i) कोलाचल (ii) महामहोपाध्याय
8.	**त्रिविक्रमभट्ट**	यमुनात्रिविक्रम
9.	**विश्वनाथ**	(i) सन्धिविग्राहक, (ii) अष्टादशभाषा वारविलासिनी (iii) कविराज (iv) कवि सूक्ति रत्नाकर
10.	**जगन्नाथ**	पण्डितराज
11.	**भारवि**	(i) आतपत्र (ii) दामोदर (उपनाम) (iii) चक्रकवि
12.	**माघ**	(i) घण्टामाघ (ii) सर्वाश्रय
13.	**भवभूति**	(i) श्रीकण्ठ (भट्टश्रीकण्ठ) (ii) पदवाक्यप्रमाणज्ञ (iii) श्रीकण्ठपदलाञ्छनः (iv) उम्बेक/उदम्बर (v) वश्यवाक् (vi) शिखरिणीकवि (vii) परिणतप्रज्ञ
14.	**भट्टनारायण**	(i) भट्ट (ii) मृगराज (iii) कवि मृगेन्द्र/कवीन्द्र
15.	**मम्मट**	(i) वाग्देवतावतार (ii) राजानक (iii) ध्वनिप्रस्थापनपरमाचार्य
16.	**आनन्दवर्धन**	(i) राजानक (ii) ध्वनिप्रतिष्ठापकाचार्य (iii) सहृदय शिरोमणि
17.	**कुन्तक**	'राजानक' (यह उपाधि काश्मीरी विद्वानों को सम्मानार्थ मिलती थी)
18.	**महिमभट्ट**	'राजानक'
19.	**रुय्यक**	'राजानक'
20.	**क्षेमेन्द्र**	(i) जनकवि (ii) सकलमनीषिशिष्य
21.	**भास**	(i) कविताकामिनी हास (ii) भासो हासः (iii) अग्निमित्र (ज्वलनमित्र)

क्र.सं.	कवि	उपाधि/उपनाम/कविविषयक कथन
22.	अश्वघोष	(i) आर्यभदन्त (ii) बौद्धभिक्षु
23.	मुरारि	(i) बालवाल्मीकि (ii) महाकवि (iii) इन्दु
24.	बिल्हण	विद्यापति
25.	हेमचन्द्र	कलिकालसर्वज्ञ
26.	अभिनवगुप्त	(i) लोचनकार (ii) परम- माहेश्वराचार्य
27.	कणाद	(i) उलूक (ii) कणभुक्
28.	कात्यायन	वररुचि
29.	गौतम	अक्षपाद
30.	दयानन्द सरस्वती	स्वामी
31.	भट्टि	
32.	मातृचेट	बौद्धकवि
33.	यामुनाचार्य	आलवन्दार
34.	राजशेखर	(i) यायावर (ii) कविराज (iii) बालकवि
35.	वाचस्पतिमिश्र	(i) सर्वतन्त्रस्वतन्त्र (ii) तात्पर्याचार्य
36.	वात्स्यायन	मल्लनाग
37.	विद्यापति	(i) षट्तर्कषण्मुख (ii) वादिराज सूरि (iii) मैथिलकोकिल
38.	विद्यारण्यमुनि	माधवाचार्य
39.	क्षमाराव	पण्डिता
40.	पतञ्जलि	शेषनाग, फणिभृत, नागनाथ, भगवान्, तीर्थदर्शी
41.	प्रभाकर मिश्र	(i) गौडमीमांसक (ii) गुरु
42.	माधवभट्ट	(i) कविराज (ii) सूरि (iii) पण्डित
43.	हर्षवर्धन	(i) राजा (ii) कवीन्द्र (iii) गीर्हर्ष (iv) कविता का हर्ष (v) अनङ्ग
44.	जयदेव (गीतगोविन्दकार)	कविराजराज
45.	श्रीहर्ष	कविताकामिनी का हर्ष
46.	आनन्दराय मखी	वेदकवि
47.	रत्नाकर	(i) कांस्यताल, (ii) वागीश्वर
48.	शेषाचलपति	आन्ध्रपाणिनि
49.	आर्यभट्ट	अश्मकाचार्य
50.	मङ्ख	कर्णिकार
51.	शाकटायन	आदिशाब्दिक
52.	पद्मगुप्त	परिमल कालिदास
53.	द्वादशाविद्यापति	वदिराज सूरि
54.	प्रसन्नराघवकार जयदेव	पीयूषवर्ष
55.	दिंगनागाचार्य	तर्कपुंगव
56.	मुकुलभट्ट	(i) साहित्यमुरारि (ii) पदवाक्य-प्रमाण-पारावारपारीण
57.	ब्रह्मगुप्त	गणकचक्रचूडामणि
58.	श्रीनिवासदीक्षित	(i) रत्नखेट (ii) षड्भाषाचतुर

क्र.सं.	कवि	उपाधि/उपनाम/कविविषयक कथन
59.	**सोमदेव सूरि**	(i) कविकुलराजकुञ्जर (ii) तार्किक चक्रवर्ती
60.	**धनपाल**	सरस्वती
61.	**वस्तुपाल**	लघुभोजराज
62.	**शान्तिसूरि**	वादिवेताल
63.	**हृषिकेशभट्टाचार्य**	अभिनवबाण

कवियों का निवासस्थान (जन्मस्थान)

कवि	निवासस्थान (जन्मस्थान)
1. कालिदास	उज्जयिनी (काश्मीर/बंगाल)
2. बाणभट्ट	'प्रीतिकूट' (शोणनदी के पश्चिमी तट पर आधुनिक–'शाहाबाद')
3. भारवि	अचलपुर (दाक्षिणात्य/धारानगरी)
4. अम्बिकादत्त व्यास	जयपुर राजस्थान, ग्राम-रावतजी का धुला (अध्ययन–काशी में)
5. कल्हण	काश्मीर
6. पाणिनि	शालातुर ग्राम (अटक)
7. पतञ्जलि	गोनर्द (गोण्डा)
8. दण्डी	दक्षिण में विदर्भ (महाराष्ट्र)
9. भवभूति	पद्मपुर (दक्षिणभारत)
10. अश्वघोष	साकेत (अयोध्या)
11. माघ	श्री भिन्नमाल 'भीनमाल' राजस्थान (आबूपर्वत तथा लूनानदी के बीच स्थित)
12. श्रीहर्ष	कन्नौज
13. भट्टि	बल्लभी
14. कुमारदास	श्रीलङ्का
15. शूद्रक	दाक्षिणात्य
16. हर्ष	स्थाणीश्वर (थानेश्वर)
17. भट्टनारायण	कान्यकुब्ज (कन्नौज)
18. राजशेखर	महाराष्ट्र (विदर्भ)
19. जयदेव (प्रसन्नराघवकार)	विदर्भप्रान्त-कुण्डिननगर
20. सुबन्धु	काश्मीर
21. पण्डितराज जगन्नाथ	आन्ध्रप्रदेश (तैलंग)
22. कात्यायन	दाक्षिणात्य
23. आनन्दवर्धन	काश्मीर
24. मम्मट	काश्मीर
25. अभिनवगुप्त	काश्मीर
26. भर्तृहरि	मालवा
27. क्षेमेन्द्र	काश्मीर
28. महिमभट्ट	काश्मीर
29. वाचस्पतिमिश्र	मिथिला (बिहार)
30. विश्वनाथ कविराज	उत्कल (उड़ीसा)

कवि	निवासस्थान (जन्मस्थान)
31. त्रिविक्रमभट्ट	मान्यखेट ग्राम (हैदराबाद)
32. रत्नाकर	काश्मीर
33. विश्वेश्वर पाण्डेय	अल्मोडा जिला ग्राम–पटिया
34. अमरुक	काश्मीर
35. गीतगोविन्दकार जयदेव	बंगाल के केन्दुबिल्व नामक ग्राम।
36. सोमदेव (कथासरित्सागर)	काश्मीर

संस्कृत के प्रमुख कवियों, नायकों, तथा ऋषियों का गोत्र एवं वंश

कवि/राजा	गोत्र/वंश/जाति	कवि/राजा	गोत्र/वंश/जाति
1. बाणभट्ट	वत्स/वात्स्यायन	**12. दुष्यन्त**	पुरुवंशी (चन्द्रवंशी)
2. भवभूति	काश्यप	**13. राम**	सूर्यवंश/इक्ष्वाकुवंश/रघुवंश
3. भारवि	कुशिक	**14. दुर्योधन**	कुरुवंशी/चन्द्रवंशी
4. कालिदास	ब्राह्मण जाति	**15. शिवाजी**	मराठा वंश
5. अम्बिकादत्त व्यास	पराशरगोत्रीय यजुर्वेदी ब्राह्मण त्रिप्रवर 'भीडा' वंश	**16. कुतुबुद्दीन**	गुलामवंश
6. विश्वेश्वर पाण्डेय	भारद्वाजगोत्र	**17. औरङ्गजेब**	मुगलवंश
7. मुरारि	मौद्गल्यगोत्र	**18. सिंहविष्णु**	पल्लववंश
8. भट्टनारायण	सारस्वत ब्राह्मण	**19. नरसिंहवर्मन्**	पल्लववंश
9. राजशेखर	यायावर क्षत्रियवंश	**20. विष्णुवर्धन**	चालुक्यवंश
10. पण्डितराजजगन्नाथ	तैलङ्गब्राह्मण	**21. दुर्विनीत**	गङ्गवंश
11. विश्वामित्र	कौशिक	**22. यशोवर्मा**	चन्देलवंश

कवियों का सम्प्रदाय

कवि	सम्प्रदाय	कवि	सम्प्रदाय
1. कालिदास	शैव	**8. कल्हण**	शैव
2. भवभूति	शैव	**9. अभिनवगुप्त**	शैव
3. भारवि	शैव	**10. भट्टनारायण**	वैष्णव (साथ में शिवभक्त भी)
4. माघ	वैष्णव	**11. रूपगोस्वामी**	वैष्णव
5. भर्तृहरि	शैव, ब्रह्म के उपासक	**12. विश्वनाथकविराज**	वैष्णव
6. बाणभट्ट	शैव	**13. राजशेखर**	शैव
7. अम्बिकादत्तव्यास	वैष्णव (शैव)	**14. जयदेव (गीतगोविन्दकार)**	वैष्णव

संस्कृत कवियों का राज्याश्रय

राजकवि	राजा
1. कालिदास	विक्रमादित्य
2. बाणभट्ट	सम्राट् हर्षवर्धन
3. भारवि	पुलकेशिन द्वितीय के अनुज विष्णुवर्धन

राजकवि	राजा
4. भवभूति	यशोवर्मा
5. दण्डी	नरसिंह वर्मन प्रथम, पल्लवनरेश सिंहविष्णु
6. 'परिमलकालिदास' या पद्मगुप्त	राजा मुञ्ज और सिन्धुराज (नवसाहसाङ्क)
7. रविकीर्ति	पुलकेशिन द्वितीय
8. उद्भट	काश्मीरनरेश जयादित्य
9. वामन	काश्मीर नरेश जयादित्य के मन्त्री
10. आनन्दवर्धन	काश्मीर नरेश अवन्तिवर्मा
11. राजशेखर	कन्नौज के शासक महेन्द्रपाल और महीपाल
12. धनञ्जय	मालव के परमारवंशी राजा मुञ्ज (वाक्पतिराज)
13. क्षेमेन्द्र	कश्मीर नरेश अनन्तराज
14. नारायण पण्डित	धवलचन्द्र (बंगाल के कोई राजा)
15. श्रीहर्ष (नैषधकार)	कन्नौज नरेश जयचन्द्र
16. अश्वघोष	कनिष्क
17. वाक्पतिराज	यशोवर्मा
18. भट्टि	वल्लभी के राजा श्रीधरसेन
19. रत्नाकर	राजा चिप्पट जयापीड
20. कविराज (माधवभट्ट)	जयन्तपुरी के कदम्बराजा कामदेव
21. कृष्णमिश्र	चन्देलराजा कीर्तिवर्मा
22. जयदेव (गीतगोविन्दकार)	बंगाल के राजा लक्ष्मणसेन
23. पण्डितराजजगन्नाथ	शाहजहाँ
24. विष्णुशर्मा (पञ्चतन्त्र)	महिलारोप्य के राजा अमरसिंह
25. नारायण पण्डित (हितोपदेश)	बंगाल के राजा धवलचन्द्र
26. सोमदेव (कथा सरित्सागर)	काश्मीरी राजा अनन्त
27. हरिषेण	समुद्रगुप्त

कवियों के प्रिय रस

कवि	प्रिय रस	कवि	प्रिय रस
1. कालिदास	शृङ्गार रस	**5. बाणभट्ट**	शृङ्गाररस
2. भवभूति	करुण रस	**6. श्रीहर्ष**	शृङ्गाररस
3. भारवि	वीररस, शृङ्गाररस	**7. भास**	शृङ्गार और वीररस
4. माघ	वीररस	**8. अमरुक**	शृङ्गाररस
		9. जयदेव	शृङ्गाररस

कवियों के प्रिय छन्द

कवि	प्रिय छन्द	अतिप्रिय छन्दों की संख्या
1. वाल्मीकि	अनुष्टुप् (श्लोक)	–
2. व्यास	अनुष्टुप्	–
3. कालिदास	आर्या, अनुष्टुप्, उपजाति, मन्दाक्रान्ता	06
4. अश्वघोष	अनुष्टुप्, उपजाति	–
5. भारवि	वंशस्थ, उपजाति	12
6. माघ	वंशस्थ, अनुष्टुप्	16
7. श्रीहर्ष	उपजाति छन्द	19
8. भट्टि	अनुष्टुप्, उपजाति	–
9. भास	अनुष्टुप्, वसन्ततिलका	कुल 24 छन्दों का प्रयोग
10. विशाखदत्त	शार्दूलविक्रीडित, शिखरिणी, स्रग्धरा	–
11. हर्षवर्धन	शार्दूलविक्रीडित, स्रग्धरा, अनुष्टुप्, आर्या	–
12. भट्टनारायण	अनुष्टुप्, वसन्ततिलका, शार्दूलविक्रीडित	–
13. भवभूति	अनुष्टुप्, शिखरिणी	–
14. राजशेखर	शार्दूलविक्रीडितम्	–
15. कृष्णमिश्र	वसन्ततिलका, शार्दूलविक्रीडितम्	–
16. जयदेव	वसन्ततिलका	–
17. अमरुक	शार्दूलविक्रीडितम्	–
18. भर्तृहरि	शार्दूलविक्रीडितम्	

कवियों के प्रिय अलङ्कार

कवि	प्रिय अलङ्कार
1. कालिदास	उपमा
2. भारवि	चित्रालङ्कार, अर्थालङ्कार
3. माघ	उपमा, उत्प्रेक्षा, अर्थान्तरन्यास, चित्रालङ्कार
4. श्रीहर्ष	उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, श्लेष, अनुप्रास, यमक
5. अश्वघोष	उपमा, रूपक, अनुप्रास
6. भवभूति	उपमा, उत्प्रेक्षा, काव्यलिङ्ग, रूपक
7. रत्नाकर	उत्प्रेक्षा अलङ्कार
8. विशाखदत्त	उपमा, रूपक, श्लेष
9. हर्षवर्धन	उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक
10. भट्टनारायण	उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा
11. सुबन्धु	श्लेष, विरोधाभास, परिसंख्या, उत्प्रेक्षा।
12. बाणभट्ट	विरोधाभास, श्लेष, परिसंख्या, उत्प्रेक्षा, उपमा, रूपक
13. अम्बिकादत्तव्यास	विरोधाभास

कवियों की प्रिय शैली रीति एवं गुण

कवि	रीति एवं गुण
1. भारवि	रीतिवादी या अलङ्कृत काव्यशैली के जन्मदाता
2. माघ	प्रसाद, माधुर्य एवं ओजगुणों का समन्वय
3. श्रीहर्ष	वैदर्भी एवं गौडीरीति, प्रसाद एवं ओजगुण
4. कालिदास	वैदर्भी, प्रसादगुण
5. बाणभट्ट	पाञ्चाली, ओज, माधुर्य, प्रसाद
6. दण्डी	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण।
7. अम्बिकादत्तव्यास	वैदर्भी और गौडी रीति का समन्वय।
8. सुबन्धु	गौडीरीति, ओजगुण (श्लेष अलंकार का प्रयोग)
9. भवभूति	गौडी एवं वैदर्भी रीति
	(i) मालतीमाधवम् और महावीरचरितम् में–गौडी रीति, ओजगुण
	(ii) उत्तररामचरितम् में–गौडी एवं वैदर्भी रीति, प्रसाद गुण
10. शूद्रक	वैदर्भीरीति एवं प्रसादगुण (कहीं कहीं 'गौडी रीति' भी)
11. अश्वघोष	वैदर्भीरीति, प्रसादगुण
12. भास	वैदर्भी रीति, प्रसाद, माधुर्य
13. मुरारि	गौडीरीति–ओजगुण
14. भट्टि	व्याकरणमूलक काव्यशैली की एक नवीन विधा के जन्मदाता।
15. कुमारदास	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण।
16. रत्नाकर	रीतिवादी कवि
17. विशाखदत्त	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण
18. हर्षवर्धन	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्य गुण
19. भट्टनारायण	गौडीरीति एवं ओजगुण
20. राजशेखर	गौडीरीति (यत्र तत्र पाञ्चाली भी)
21. दिङ्नाग (धीरनाग, वीरनाग)	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण
22. पण्डिता क्षमाराव	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण।
23. भर्तृहरि	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण
24. अमरुक	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण
25. विष्णुशर्मा (पञ्चतन्त्र)	वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण

संस्कृतकवियों की प्रसिद्धि का कारण

कवि	कविप्रसिद्धि
1. कालिदास	(i) उपमा (ii) वैदर्भीरीति
2. भारवि	(i) अर्थगौरव, (ii) अलङ्कृतकाव्यशैली के जनक
3. दण्डी	पदलालित्य
4. माघ	उपमा, अर्थगौरव, पदलालित्य तीनों के लिए
5. भवभूति	करुणरस के प्रयोक्ता
6. अम्बिकादत्तव्यास	ऐतिहासिक उपन्यास के प्रणेता
7. बाणभट्ट	(i) अलङ्कार एवं समास बहुल रचना (ii) कादम्बरी में तीन जन्मों की कथा (ii) पाञ्चाली रीति,
8. त्रिविक्रमभट्ट	(i) श्लेष अलङ्कार के प्रचुर प्रयोक्ता (ii) चम्पूकाव्य के आद्यप्रणेता
9. सुबन्धु	श्लेष प्रधानशैली के प्रयोक्ता

संस्कृत-कवयित्री

कवयित्री	ग्रन्थ	कालक्रम
1. **विज्जिका**	स्फुटपद्य	850 ई.
2. **गङ्गादेवी**	मथुराविजयम्	14वीं शताब्दी
3. **अवन्ति सुन्दरी** (राजशेखर की पत्नी)	देशीशब्दकोष	10वीं शताब्दी
4. **तिरुमलाम्बा** (राजा अच्युतराय की रानी)	वरदम्बिकापरिणयचम्पू	16वीं शताब्दी
5. **रामभद्राम्बा**	रघुनाथाभ्युदय	17वीं शताब्दी
6. **पण्डिता क्षमाराव**	कथामुक्तावली	1890-1954
7. **पुष्पा दीक्षित**	अष्टाध्यायी सहजबोध (व्याकरणग्रन्थ)	इक्कीसवीं शताब्दी
8. **मधुरवाणी**	रामकथा	1590 ई.
9. **सुभद्रा**	स्फुटपद्य	–
10. **विकटनितम्बा**	स्फुटपद्य	–
11. **शीला भट्टारिका**	स्फुटपद्य	–
12. **देवकुमारिका**	स्फुटपद्य	–

अन्य स्त्री लेखिकायें
राजम्मा, सुन्दरावली,
ज्ञानसुन्दरी आदि।

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख लेखकों का अनुमानित कालक्रम

लेखक	प्रमुख ग्रन्थ	अनुमानित काल
1. आचार्य लगध	**वेदाङ्गज्योतिष**	1400 ई.पू. से 800 ई.पू.
2. यास्क	**निरुक्त**	800 ई. पू.
3. आचार्य पिङ्गल	**छन्दःसूत्रम्**	800 ई.पू. से 700 ई.पू.
4. कपिल	**सांख्यसूत्र**	700 ई.पू.
5. जैमिनि	**मीमांसासूत्र**	600 ई.पू.
6. कणाद	**वैशेषिकसूत्र**	500 ई.पू.
7. चरक	**चरकसंहिता**	500 ई.पू.–200 ई.पू.
8. सुश्रुत	**सुश्रुतसंहिता**	500 ई.पू.
9. वाल्मीकि	**वाल्मीकीयरामायणम्**	500 ई.पू.
10. पाणिनि	**अष्टाध्यायी**	500 ई.पू.
11. महर्षिव्यास (कृष्णद्वैपायन)	**महाभारत एवं 18 पुराण**	400 ई.पू.
12. कौटिल्य (चाणक्य)	**अर्थशास्त्र**	400 ई.पू.
13. बादरायण	**ब्रह्मसूत्र**	300 ई.पू.
14. कात्यायन (वररुचि)	**अष्टाध्यायी पर वार्तिक**	300 ई.पू.
15. पतञ्जलि	**महाभाष्य, योगसूत्र**	185 ई.पू.

लेखक	प्रमुख ग्रन्थ	अनुमानित काल
16. भरतमुनि	नाट्यशास्त्रम्	100 ई.पू. से 300 ई.
17. भास	स्वप्नवासवदत्तम् आदि 13 नाटक	100 ई. पू. से 200 ई. के मध्य
18. मनु	मनुस्मृति	200 ई.पू. से 200 ई. के बीच
19. कालिदास	रघुवंशम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम् आदि	ई.पू. प्रथम शताब्दी
20. अश्वघोष	बुद्धचरितम्, सौन्दरानन्द	प्रथम शताब्दी ई.
21. गुणाढ्य	बृहत्कथा	प्रथमशताब्दी ई.
22. शालिवाहन (हाल)	गाहा सतसई (गाथासप्तशती)	प्रथम या द्वितीय शताब्दी ई.
23. वात्स्यायन	न्यायसूत्रभाष्य	द्वितीयशताब्दी ई.
24. शर्ववर्मा	कातन्त्रव्याकरण	द्वितीयशताब्दी ई.
25. शाबरस्वामी	शाबरभाष्य	द्वितीयशताब्दी ई.
26. विष्णुशर्मा	पञ्चतन्त्र	दूसरी शताब्दी से छठी शताब्दी के बीच
27. अमरसिंह	नामलिङ्गानुशासनम् (अमरकोष)	तीसरी शताब्दी का पूर्वार्द्ध
28. वात्स्यायन	कामसूत्रम्	तीसरी शताब्दी ई.
29. आर्यशूर	जातकमाला	तीसरी–चौथी शताब्दी ई.
30. शूद्रक	मृच्छकटिकम्	तीसरी–चौथी शताब्दी ई.
31. ईश्वरकृष्ण	सांख्यकारिका	चौथी शताब्दी ई.
32. विशाखदत्त	मुद्राराक्षसम्	पाँचवीं छठी शताब्दी ई.
33. कुमारदास	जानकीहरणम्	छठी शताब्दी ई.
34. भारवि	किरातार्जुनीयम्	छठी शताब्दी ई. (560 ई.–615 ई. के बीच)
35. दण्डी	दशकुमारचरितम्	छठी शताब्दी ई.
36. भर्तृहरि	वाक्यपदीयम्	छठी शताब्दी ई.
37. भट्टि	रावणवध/भट्टिकाव्य	500 ई. से 650 ई. के बीच
38. भामह	काव्यालङ्कार	छठी शताब्दी
39. माघ	शिशुपालवधम्	सातवीं शताब्दी ई. (675 ई.)
40. आदि शङ्कराचार्य	शाङ्करभाष्य, सौन्दर्यलहरी	सातवीं शताब्दी ई.
41. बाणभट्ट	कादम्बरी, हर्षचरितम्	सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध
42. मयूरभट्ट	सूर्यशतकम्	सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध
43. सुबन्धु	वासवदत्ता	सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध
44. हर्ष	प्रियदर्शिका, रत्नावली, नागानन्द	सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध
45. भवभूति	महावीरचरितम्, उत्तररामचरितम्	सातवीं शताब्दी के आसपास
46. अमरुकवि (अमरुक)	अमरुकशतकम्	सातवीं शताब्दी
47. वाक्पतिराज	गौडवहो	750 ई. के आसपास
48. भट्टनारायण	वेणीसंहारम्	सातवीं आठवीं शताब्दी
49. दामोदरभट्ट	कुट्टनीमतम्	आठवीं शताब्दी ई.
50. मुरारि	अनर्घराघवम्	आठवीं शताब्दी का उत्तरार्ध
51. वामन	काव्यालङ्कारसूत्र	आठवीं शताब्दी

लेखक	प्रमुख ग्रन्थ	अनुमानित काल
52. आनन्दवर्धन	ध्वन्यालोक	850 ई.
53. वाचस्पतिमिश्र	भामतीटीका, तत्त्वकौमुदी (सांख्य)	नवीं शताब्दी
54. दामोदरमिश्र	हनुमन्नाटक	नवी शताब्दी ई.
55. रत्नाकर	हरविजयम्	नवीं शताब्दी
56. राजशेखर	काव्यमीमांसा	नवीं शताब्दी का उत्तरार्ध
57. जयन्तभट्ट	न्यायमञ्जरी	दसवीं शताब्दी ई.
58. धनपाल	तिलकमञ्जरी	दसवीं शताब्दी
59. त्रिविक्रमभट्ट	नलचम्पू, मदालसाचम्पू	दसवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध
60. कुन्तक	वक्रोक्तिजीवितम्	ग्यारहवीं शताब्दी
61. महिमभट्ट	व्यक्तिविवेक	ग्यारहवीं शताब्दी
62. क्षेमेन्द्र	औचित्यविचारचर्चा, रामायणमञ्जरी	ग्यारहवीं शताब्दी
63. कृष्णमित्र	प्रबोधचन्द्रोदय	ग्यारहवीं शताब्दी
64. सोमदेव	कथासरित्सागर	ग्यारहवीं शताब्दी
65. रामानुज	श्रीभाष्य	ग्यारहवीं शताब्दी
66. बिल्हण	विक्रमाङ्कदेवचरितम्	ग्यारहवीं शताब्दी का उत्तरार्ध
67. भोज	रामायणचम्पू	ग्यारहवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध
68. केशवमिश्र	तर्कभाषा	बारहवीं शताब्दी ई.
69. भास्कराचार्य	लीलावती, बीजगणित	बारहवीं शताब्दी
70. मम्मट	काव्यप्रकाश	बारहवीं शताब्दी (ग्यारहवीं शताब्दी का उत्तरार्ध)
71. कल्हण	राजतरङ्गिणी	बारहवीं शताब्दी
72. मंखक	श्रीकण्ठचरितम्	बारहवीं शताब्दी
73. श्रीहर्ष	नैषधीयचरितम्	बारहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध
74. गोवर्धनाचार्य	आर्यासप्तशती	बारहवीं शताब्दी
75. जयदेव	गीतगोविन्दम्	बारहवीं शताब्दी
76. विज्ञानभिक्षु	सांख्यप्रवचनभाष्यम्	तेरहवीं शताब्दी
77. गङ्गेशोपाध्याय	तत्त्वचिन्तामणि	तेरहवीं शताब्दी
78. मध्वाचार्य	पूर्णप्रज्ञभाष्यम्	तेरहवीं शताब्दी
79. शार्ङ्गधर	शार्ङ्गधरसंहिता	तेरहवीं शताब्दी
80. गङ्गादास	छन्दोमञ्जरी	तेरहवीं शताब्दी से पन्द्रहवीं शताब्दी के मध्य
81. विद्यापति	पुरुषपरीक्षा	चौदहवीं शताब्दी ई.
82. नारायणपण्डित	हितोपदेश	चौदहवीं शताब्दी
83. विश्वनाथ	साहित्यदर्पण	चौदहवीं शताब्दी
84. अनन्तभट्ट	भारतचम्पू	पन्द्रहवीं शताब्दी
85. वल्लभाचार्य	अणुभाष्यम्	1479 ई. 1544 ई.

लेखक	प्रमुख ग्रन्थ	अनुमानित काल
86. बल्लालसेन	भोजप्रबन्धम्	सोलहवीं शताब्दी
87. तिरुमलाम्बा	वरदम्बिकापरिणयचम्पू	सोलहवीं शताब्दी
88. भट्टोजिदीक्षित	सिद्धान्तकौमुदी	सोलहवीं शताब्दी
89. अन्नंभट्ट	तर्कसंग्रह	सत्रहवीं शताब्दी
90. कौण्डभट्ट	वैयाकरणभूषणसार	सत्रहवीं शताब्दी
91. नागेशभट्ट	वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूषा	सत्रहवीं शताब्दी
92. सदानन्द	वेदान्तसार	सत्रहवीं शताब्दी
93. पण्डितराज जगन्नाथ	रसगङ्गाधर, गङ्गालहरी	सत्रहवीं शताब्दी (1600–1660 ई.)
94. अम्बिकादत्तव्यास	शिवराजविजयम्	1858–1900 ई.
95. पण्डिता क्षमाराव	कथामुक्तावली	1890–1954 ई.
96. पुष्पादीक्षिता	अग्निशिखा	इक्कीसवीं शताब्दी
97. रेवाप्रसाद द्विवेदी	सीताचरितम्	इक्कीसवीं शताब्दी
98. अभिराजराजेन्द्र मिश्र	जानकीजीवनम्	इक्कीसवीं शताब्दी
99. राधावल्लभ त्रिपाठी	लहरीदशकम्, गीतवीवरम्	इक्कीसवीं शताब्दी
100. ललितकुमार त्रिपाठी	गङ्गालहरी (सम्पादनम्)	इक्कीसवीं शताब्दी

संस्कृतसाहित्य के प्रमुख दम्पती, प्रेमी-प्रेमिका एवं उनकी सन्तानें

पति/प्रेमी	पत्नी/प्रेमिका	पुत्र/पुत्री
1. अगस्त्य	लोपामुद्रा	
2. वशिष्ठ	अरुन्धती	
3. विश्वामित्र	मेनका	शकुन्तला
4. मारीच	अदिति (दाक्षायणी)	इन्द्र
5. ययाति	शर्मिष्ठा, देवयानी	पुरु
6. अत्रि	अनसूया	दुर्वासा
7. इन्द्र	इन्द्राणी/शची/पौलोमी	जयन्त
8. ऋष्यशृङ्ग	शान्ता	
9. दुष्यन्त	शकुन्तला, हंसपदिका, वसुमती	भरत (सर्वदमन)
10. कालिदास	विद्योत्तमा	–
11. भर्तृहरि	पिङ्गला	–
12. भारवि	रसिकवती/रसिका	मनोरथ
13. पण्डितराजजगन्नाथ	(i) लवङ्गी (यवनी प्रेमिका) (ii) भामिनी (पत्नी)	
14. राम	सीता	कुश-लव
15. लक्ष्मण	उर्मिला	चन्द्रकेतु
16. भरत	माण्डवी	पुष्कल
17. शत्रुघ्न	श्रुतिकीर्ति	
18. नल	दमयन्ती	
19. पुरूरवा	उर्वशी	
20. चारुदत्त	धूता/वसन्तसेना	रोहसेन
21. नन्द	सुन्दरी	
22. अविमारक	कुरङ्गी	
23. भीम	हिडिम्बा	घटोत्कच
24. पञ्चपाण्डव	द्रौपदी	
25. अर्जुन	सुभद्रा	अभिमन्यु
26. धृतराष्ट्र	गान्धारी	दुर्योधन
27. पाण्डु	कुन्ती/माद्री	पञ्चपाण्डव
28. कृष्ण	रुक्मिणी/सत्यभामा	प्रद्युम्न
29. शर्विलक	मदनिका	
30. अग्निमित्र	मालविका	
31. उदयन	रत्नावली (सागरिका)	
32. उदयन	वासवदत्ता	
33. माधव	मालती	
34. मकरन्द	मदयन्तिका	
35. तारापीड	विलासवती	चन्द्रापीड
36. चन्द्रापीड	कादम्बरी	
37. पुण्डरीक	महाश्वेता	
38. हंस	गौरी	महाश्वेता
39. चित्ररथ	मदिरा	कादम्बरी
40. श्वेतकेतु	लक्ष्मी	पुण्डरीक

पति/प्रेमी	पत्नी/प्रेमिका	पुत्र/पुत्री	पति/प्रेमी	पत्नी/प्रेमिका	पुत्र/पुत्री
41. हेममाली (यक्ष)	विशालाक्षी (यक्षिणी)		**47. विष्णु**	लक्ष्मी	
42. कवि जयदेव (गीतगोविन्दकार)	पद्मावती		**48. अभिमन्यु**	उत्तरा	परीक्षित
			49. हिमालय	मैना	पार्वती
43. राजा दिलीप	सुदक्षिणा	रघु	**50. शुकनास**	मनोरमा	वैशम्पायन
44. अज	इन्दुमती	दशरथ	**51. राजशेखर**	अवन्तिसुन्दरी	
45. कामदेव	रति		**52. दुर्योधन**	भानुमती	
46. शिव	पार्वती	गणेश, कार्तिकेय	**53. गौतम**	अहल्या	शतानन्द
			54. याज्ञवल्क्य	मैत्रेयी	

संस्कृतवाङ्मय में गुरु-शिष्य-परम्परा

शिष्य	गुरु	शिष्य	गुरु
1. जनक	याज्ञवल्क्य, शतानन्द (पुरोहित)	**24. अभिनवगुप्त**	भट्टतौत
		25. प्रतिहारेन्दुराज	मुकुलभट्ट
2. भर्तृहरि	गोरखनाथ/वसुरात (बौद्धमत में)	**26. एकलव्य**	द्रोणाचार्य
3. भवभूति	ज्ञाननिधि	**27. शार्ङ्गरव, शारद्वत**	कण्व
4. वरदराज	भट्टोजिदीक्षित	**28. गालव**	मारीच
5. भट्टोजिदीक्षित	शेषकृष्ण	**29. कर्ण**	परशुराम
6. तुलसीदास	नरहर्यानन्द	**30. भीष्मपितामह**	परशुराम
7. राम	वशिष्ठ, विश्वामित्र, अगस्त्य	**31. दुर्योधनादि (कौरवों के)**	द्रोणाचार्य
8. श्रीकृष्ण	सान्दीपनी	**32. चन्द्रापीड**	शुकनाश (उपदेष्टा)
9. चन्द्रगुप्त	चाणक्य	**33. जैमिनि**	पराशर
10. देवताओं के	बृहस्पति	**34. पराशर**	व्यास
11. असुरों के	शुक्राचार्य	**35. मण्डनमिश्र**	कुमारिलभट्ट
12. लव, कुश, सौधातकि, दण्डायन	वाल्मीकि	**36. उम्बेक (भवभूति)**	कुमारिलभट्ट
		37. प्रभाकरमिश्र	कुमारिलभट्ट
13. दुष्यन्त	सोमरात (पुरोहित)	**38. शालिकनाथ**	प्रभाकरमिश्र
14. पाणिनि	वर्ष (उपवर्ष)	**39. आसुरि**	कपिलमुनि
15. मंखक	रुय्यक	**40. पञ्चशिख**	आसुरि
16. दाराशिकोह	पण्डितराज जगन्नाथ (संस्कृतशिक्षक)	**41. हस्तामलक**	शङ्कराचार्य
17. बाणभट्ट	भर्वु	**42. योगीन्द्र सदानन्द**	अद्वयानन्द
18. शिवाजी	समर्थगुरुरामदास, कोण्डदेव	**43. अरस्तू**	प्लेटो
19. कनिष्क	अश्वघोष	**44. प्लेटो**	सुकरात
20. अम्बिकादत्तव्यास	विश्वक्सेन	**45. सिकन्दर**	अरस्तू
21. अर्जुन (पञ्चपाण्डव)	द्रोणाचार्य	**46. नागेशभट्ट**	हरिदीक्षित
22. शङ्कराचार्य	आचार्य गौडपाद		
23. महेन्द्रपाल	राजशेखर		

संस्कृतवाङ्मय में वर्णित राजा और राजधानी

राजा	राजधानी	राजा	राजधानी
1. शूद्रक	विदिशा ('वेत्रवती' नदी के किनारे)	**2. तारापीड**	उज्जयिनी
3. दुष्यन्त	हस्तिनापुर	**4. राम**	अयोध्या (सरयूनदी के किनारे)
5. रावण	लङ्का ('समुद्र' तट पर)	**6. नल**	निषधदेश
7. कृष्ण	द्वारिका (समुद्र के किनारे)	**8. शिवाजी**	सतारा/रायगढ़
9. दुर्योधन (सुयोधन)	हस्तिनापुर	**10. युधिष्ठिर**	इन्द्रप्रस्थ/हस्तिनापुर
11. पुरु	हस्तिनापुर	**12. प्रद्योत**	उज्जयिनी
13. कुबेर	अलकापुरी	**14. उदयन**	कौशाम्बी/उज्जयिनी
15. भर्तृहरि	धारानगरी	**16. विक्रमादित्य**	उज्जयिनी
17. दुर्विनीत	कोंकण	**18. राजाभोज**	धारानगरी
19. हर्षवर्धन	थाणेश्वर	**20. जयचन्द्र**	कन्नौज
21. पृथ्वीराज	दिल्ली	**22. महमूदगजनवी**	गजनी
23. मुहम्मद गोरी	गोरदेश	**24. औरङ्गजेब**	दिल्ली
25. रन्तिदेव	दशपुर		

संस्कृत में वर्णित कुछ प्रसिद्ध आश्रम एवं नगर

आश्रम/नगर	नदी/पर्वत	आश्रम/नगर	नदी/पर्वत
1. कण्व आश्रम	मालिनी नदी	**8. जाबालि आश्रम**	पम्पासरोवर
2. विश्वामित्र आश्रम	गौतमी नदी	**9. महाश्वेता आश्रम**	अच्छोदसरोवर
3. वाल्मीकि आश्रम	गङ्गानदी/तमसानदी	**10. विदिशा**	वेत्रवती (बेतवा)
4. भारद्वाज आश्रम	प्रयाग का सङ्गमतट	**11. उज्जयिनी**	क्षिप्रा नदी
5. अगस्त्य आश्रम	गोदावरी/दण्डकवन	**12. शचीतीर्थ (अप्सरातीर्थ)**	गङ्गा नदी
6. मारीच आश्रम	हेमकूटपर्वत	**13. अयोध्या**	सरयू नदी
7. यक्ष का निवास	रामगिरिपर्वत (चित्रकूट)	**14. हरिद्वार (कनखल)**	गङ्गा नदी

संस्कृत ग्रन्थों का मङ्गलाचरण

रचना	मङ्गलाचरण/(छन्द)	देवता	प्रकार
1. रघुवंशम्	**वागर्थाविव सम्पृक्तौ......।** (अनुष्टुप्)	शिव-पार्वती	नमस्कारात्मक
2. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	**या सृष्टिः स्रष्टुराद्या.....।** (स्रग्धरा)	अष्टमूर्तिशिव	आशीर्वादात्मक
3. किरातार्जुनीयम्	**श्रियः कुरुणामधिपस्य पालनीम्** (वंशस्थ)	लक्ष्मी	वस्तुनिर्देशात्मक
4. शिशुपालवधम्	**श्रियः पतिः श्रीमति शासितुं जगत्...।** (वंशस्थ)	लक्ष्मी	वस्तुनिर्देशात्मक
5. नैषधीयचरितम्	**निपीय यस्य (वंशस्थ)**	–	वस्तुनिर्देशात्मक
6. मेघदूतम्	**कश्चित् कान्ता विरह गुरुणा....**(मन्दाक्रान्ता)	–	वस्तुनिर्देशात्मक
7. उत्तररामचरितम्	**इदं कविभ्यः पूर्वेभ्यो नमो वाकं प्रशास्महे** (अनुष्टुप्)	पूर्ववर्ती वाल्मीकि आदिकवि वाल्मीकि	नमस्कारात्मक
8. शिवराजविजयम्	**विष्णोर्माया भगवती..... (भा.)**	विष्णु	नमस्कारात्मक तथा वस्तुनिर्देशात्मक
9. कादम्बरी कथा	**रजोजुषे जन्मनि सत्त्ववृत्तये....।** (वंशस्थ)	ब्रह्म, विष्णु, शिव रूपी परब्रह्म की	नमस्कारात्मक
10. नीतिशतकम्	**दिक्कालाद्यनवच्छिन्ना.....।** (अनुष्टुप्)	परब्रह्म की	नमस्कारात्मक

संस्कृतग्रन्थों की श्लोकसंख्या

रचना	कुल श्लोक संख्या
1. मेघदूतम्	पूर्वमेघ 67 उत्तरमेघ 54 = 121 इसमें 6 श्लोक प्रक्षिप्त। कुल = 63 + 52 = 115 श्लोक (मल्लिनाथ के अनुसार)
2. उत्तररामचरितम्	लगभग 256 (तृतीय अङ्क में – 48)
3. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	लगभग 196 (चतुर्थ अङ्क में– 22)
4. किरातार्जुनीयम्	लगभग 1030 (कुछ विद्वानों के अनुसार– 1040) (प्रथमसर्ग में–46)
5. नीतिशतकम्	लगभग 111 (11 पद्धतियाँ)
6. शृङ्गारशतकम्	लगभग 103
7. वैराग्यशतकम्	लगभग–111
8. रघुवंशम्	लगभग 1569
9. वाल्मीकीयरामायणम् (चतुर्विंशतिसाहस्रीसंहिता)	लगभग–24000, (7 काण्ड, 500 सर्ग)
10. महाभारतम् (शतसाहस्रीसंहिता)	लगभग – एक लाख श्लोक, 18 पर्व
11. शिशुपालवधम्	लगभग 1650 (प्रथम सर्ग में – 75)
12. नैषधीयचरितम्	लगभग 2830 (प्रथम सर्ग में–145)
13. मृच्छकटिकम्	लगभग–380 (दश अङ्क)
14. गीता	लगभग–700, 18 अध्याय
15. भट्टिकाव्यम् (रावणवध)–भट्टि	लगभग–1624 श्लोक, 22 सर्ग
16. हरविजयम् (रत्नाकर)	4321 श्लोक, 50 सर्ग
17. राघवपाण्डवीय-कविराज	668 श्लोक, 13 सर्ग
18. भास के तेरह नाटक	1092 श्लोक
19. मालविकाग्निमित्रम्	96 श्लोक, 5 अङ्क
20. अनर्घराघवम्	567 श्लोक, 7 अङ्क
21. बालरामायणम्	741 पद्य, 10 अङ्क
22. ऋतुसंहारम्	144 श्लोक, 6 सर्ग

संस्कृतग्रन्थों के उपजीव्यग्रन्थ

रचना	उपजीव्यग्रन्थ
1. रघुवंशम् (कालिदास)	वाल्मीकीयरामायण एवं पद्मपुराण
2. मेघदूतम् (कालिदास)	ब्रह्मवैवर्तपुराण से कथानक तथा वाल्मीकि रामायण से दूत की कल्पना
3. किरातार्जुनीयम् (भारवि)	महाभारत का वनपर्व
4. **शिशुपालवधम्** (माघ)	(i) महाभारत का सभापर्व (सर्ग 33 से 45 तक) (ii) श्रीमद्भागवतपुराण (10 वाँ स्कन्ध, 74वाँ अध्याय)
5. नैषधीयचरितम् (श्रीहर्ष)	महाभारत के वनपर्व का नलोपाख्यान
6. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (कालिदास)	(i) महाभारत आदिपर्व का शकुन्तलोपाख्यान (अध्याय 67 से 74 तक) (ii) पद्मपुराण
7. उत्तररामचरितम् (भवभूति)	वाल्मीकीयरामायण का उत्तरकाण्ड (सर्ग 42 से 97 तक)
8. वेणीसंहारम् (भट्टनारायण)	महाभारत का सभापर्व
9. मृच्छकटिकम् (शूद्रक)	भासकृत 'चारुदत्तम्' नाटक
10. कादम्बरी (बाणभट्ट)	गुणाढ्य की 'बृहत्कथा' (सुमनस् वृत्तान्त)
11. शिवराजविजयम् (अम्बिकादत्त व्यास)	इतिहासप्रसिद्ध कथानक
12. बुद्धचरितम् (अश्वघोष)	'ललितविस्तर' बौद्धग्रन्थ, इतिहासप्रसिद्ध

रचना	उपजीव्यग्रन्थ
13. **कुमारसम्भवम्** (कालिदास)	श्रीमद्भागवतमहापुराण
14. **सौन्दरानन्द** (अश्वघोष)	इतिहासप्रसिद्ध
15. **स्वप्नवासवदत्तम्** (भास)	इतिहासप्रसिद्ध उदयनविषयक लोककथायें
16. **प्रतिमानाटकम्** (भास)	वाल्मीकीयरामायण (अयोध्याकाण्ड से रावणवध तक)
17. **अभिषेकनाटकम्** (भास)	वाल्मीकीयरामायणम्
18. **पञ्चरात्रम्** (भास)	महाभारतम्
19. **मध्यमव्यायोग** (भास)	महाभारतम्
20. **कर्णभारम्** (भास)	महाभारतम्
21. **दूतघटोत्कचम्** (भास)	महाभारतम्
22. **बालचरितम्** (भास)	महाभारतम्
23. **उरुभङ्ग** (भास)	महाभारतम्
24. **प्रतिज्ञायौगन्धरायण** (भास)	उदयनकथाश्रित
25. **मालविकाग्निमित्रम्** (कालिदास)	इतिहासप्रसिद्ध
26. **विक्रमोर्वशीयम्** (कालिदास)	ऋग्वेद एवं महाभारतम्
27. **रत्नावली** (हर्ष)	उदयनकथाश्रित/कविकल्पित इतिहासप्रसिद्ध
28. **महावीरचरितम्** (भवभूति)	वाल्मीकिरामायण
29. **प्रसन्नराघवम्** (जयदेव)	वाल्मीकिरामायण
30. **नलचम्पू** (त्रिविक्रमभट्ट)	महाभारत
31. **मुद्राराक्षस** (विशाखदत्त)	इतिहासप्रसिद्ध, विष्णुपुराण
32. **प्रियदर्शिका** (हर्ष)	कविकल्पनाप्रसूत
33. **मालतीमाधवम्** (भवभूति)	कविकल्पनाप्रसूत
34. **अनर्घराघवम्** (मुरारि)	वाल्मीकिरामायणम्
35. **प्रबोधचन्द्रोदय** (कृष्णमिश्र)	कविकल्पनाप्रसूत
36. **हर्षचरितम्** (बाण)	इतिहास प्रसिद्ध
37. **ऋतुसंहारम्** (कालिदास)	कविकल्पित
38. **भट्टिकाव्य/रावणवध** (भट्टि)	वाल्मीकिरामायण
39. **जानकीहरणम्** (कुमारदास)	वाल्मीकि रामायण
40. **हरविजयम्** (रत्नाकर)	शिशुपालवध का प्रभाव
41. **शारिपुत्रप्रकरणम्** (अश्वघोष)	इतिहासप्रसिद्ध

संस्कृतग्रन्थों में नायक-नायिका

रचना	नायक	नायिका
1. **स्वप्नवासवदत्तम्**	उदयन (धीरललित)	वासवदत्ता/पद्मावती
2. **मृच्छकटिकम्**	चारुदत्त (धीरप्रशान्त)	वसन्तसेना/धूता
3. **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**	दुष्यन्त (धीरोदात्त)	शकुन्तला
4. **कुमारसम्भवम्**	शिव	पार्वती
5. **उत्तररामचरितम्**	राम (धीरोदात्त)	सीता
6. **किरातार्जुनीयम्**	अर्जुन (नायक, धीरोदात्त) किरात (शिव, सहनायक) दुर्योधन (प्रतिनायक)	द्रौपदी
7. **मेघदूतम्**	यक्ष (हेममाली)	यक्षिणी (विशालाक्षी)
8. **शिशुपालवधम्**	श्रीकृष्ण (धीरोदात्त)	सत्यभामा/रुक्मिणी

रचना	नायक	नायिका
9. नैषधीयचरितम्	नल (धीरोदात्त)	दमयन्ती
10. रत्नावली (नाटिका)	उदयन (धीरललित)	रत्नावली (सागरिका)
11. कादम्बरी कथा	चन्द्रापीड (नायक, धीरोदात्त) वैशम्पायन (सहनायक)	कादम्बरी महाश्वेता (सहनायिका)
12. दशकुमारचरितम्	राजहंस (दस राजकुमार) राजवाहन	विलासवती अवन्तिसुन्दरी
13. वेणीसंहारम्	भीम (धीरोद्धत)	द्रौपदी
14. मालविकाग्निमित्रम्	अग्निमित्र (धीरोदात्त, कुछ विद्वानों के मत में धीरललित)	मालविका
15. विक्रमोर्वशीयम् (त्रोटक)	पुरूरवा (विक्रम)	उर्वशी
16. मुद्राराक्षसम्	चाणक्य और चन्द्रगुप्त	नायिका का अभाव
17. प्रियदर्शिका	राजा उदयन (धीरललित)	आरण्यिका (प्रियदर्शिका)
18. नागानन्द	जीमूतवाहन	मलयवती
19. मालतीमाधवम् (प्रकरण)	(i) माधव (ii) मकरन्द	(i) मालती (ii) मदयन्तिका
20. महावीरचरितम्	राम (धीरोदात्त)	सीता
21. बुद्धचरितम्	भगवान् बुद्ध	–
22. हर्षचरितम्	हर्षवर्धन	–
23. रघुवंशम्	श्रीराम (रघु)	सीता
24. कर्पूरमञ्जरी	चन्द्रपाल	कर्पूरमञ्जरी
25. प्रसन्नराघवम्	श्रीराम	सीता
26. प्रबोधचन्द्रोदय	प्रबोधचन्द्र	
27. ऊरुभङ्गम्	दुर्योधन/भीम	–

संस्कृत-ग्रन्थों में अङ्गी रस

रचना	प्रधान/मुख्य/अङ्गीरस	रचना	प्रधान/मुख्य/अङ्गीरस
1. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	शृङ्गार	**2. मेघदूतम्**	विप्रलम्भशृङ्गार
3. उत्तररामचरितम्	करुणरस	**4. किरातार्जुनीयम्**	वीररस
5. नैषधीयचरितम्	शृङ्गार	**6. शिशुपालवधम्**	वीरस
7. रघुवंशम्	वीररस	**8. बुद्धचरितम्**	शान्तरस
9. मृच्छकटिकम्	शृङ्गाररस	**10. कुमारसम्भवम्**	शृङ्गाररस
11. शिवराजविजयम्	वीररस	**12. स्वप्नवासवदत्तम्**	शृङ्गाररस
13. मालतीमाधवम् (प्रकरण)	शृङ्गाररस	**14. महावीरचरितम् (नाटक)**	वीररस
15. मालविकाग्निमित्रम्	शृङ्गाररस	**16. विक्रमोर्वशीयम्**	शृङ्गाररस
17. मुद्राराक्षसम्	वीररस	**18. प्रियदर्शिका**	शृङ्गाररस
19. रत्नावली	शृङ्गाररस	**20. नागानन्द**	शान्तरस/वीररस
21. वेणीसंहारम्	वीररस	**22. कुन्दमाला**	करुणरस
23. प्रबोधचन्द्रोदय	शान्तरस	**24. शृङ्गारशतकम्**	शृङ्गाररस
25. गीतगोविन्दम्	शृङ्गाररस	**26. रावणवध (भट्टिकाव्यम्)**	वीररस
27. जानकीहरणम्	शृङ्गाररस	**28. कर्पूरमञ्जरी**	शृङ्गाररस
29. शारिपुत्रप्रकरणम्	शान्तरस	**30. अनर्घराघवम्**	शृङ्गाररस
31. रामायणम्	करुणरस	**32. महाभारतम्**	शान्तरस

संस्कृत-ग्रन्थों में प्रयुक्त छन्द

ग्रन्थ	ग्रन्थों में प्रयुक्त प्रमुख छन्द
1. किरातार्जुनीयम् (प्रथम सर्ग)	वंशस्थ, 45वें में पुष्पिताग्रा, अन्तिम 46वें में–मालिनी (कुल प्रयुक्त छन्द–22)
2. शिशुपालवधम्	वंशस्थ, अनुष्टुप्, उपजाति (कुल प्रयुक्त छन्द – 25)
3. नैषधीयचरितम्	उपजाति (कुल प्रयुक्त छन्द–19)
4. मेघदूतम्	मन्दाक्रान्ता (सम्पूर्ण ग्रन्थ में)
5. रघुवंशम्	उपजाति, अनुष्टुप्
6. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	आर्या, वसन्ततिलका, अनुष्टुप् (कुल प्रयुक्त छन्द–24)
7. मृच्छकटिकम्	अनुष्टुप् (कुलप्रयुक्त छन्द–21)
8. उत्तररामचरितम्	अनुष्टुप् शिखरिणी (कुल प्रयुक्त छन्द 19)
9. बुद्धचरितम्	अनुष्टुप्, उपजाति
10. भट्टिकाव्यम् (रावणवधम्)	अनुष्टुप्, उपजाति, आर्या, और पुष्पिताग्रा आदि अनेक छन्द
11. मुद्राराक्षसम्	शार्दूलविक्रीडित, स्रग्धरा, शिखरिणी
12. वेणीसंहारम्	अनुष्टुप् (62), वसन्ततिलका (38) शार्दूलविक्रीडित (34) (कुलप्रयुक्त छन्द–18)
13. बालरामायणम्	शार्दूलविक्रीडित और स्रग्धरा।
14. प्रसन्नराघवम्	वसन्ततिलका, अनुष्टुप्, शार्दूलविक्रीडित, शिखरिणी।
15. अमरुकशतकम्	शार्दूलविक्रीडितम्
16. कुमारसम्भवम्	अनुष्टुप्
17. सौन्दरानन्द	अनुष्टुप्
18. जानकीहरणम्	अनुष्टुप्
19. हरविजय	शार्दूलविक्रीडित, मन्दाक्रान्ता

संस्कृत ग्रन्थों का विभाजन

ग्रन्थ-ग्रन्थकार	विभाजन
1. काव्यप्रकाश (मम्मट)	दश उल्लास, 142 कारिकायें, 604 उदाहरण।
2. साहित्य दर्पण (विश्वनाथ)	दश परिच्छेद
3. रसगङ्गाधर (जगन्नाथ)	चार आनन
4. दशरूपक (धनञ्जय)	चार प्रकाश
5. काव्यादर्श (दण्डी)	तीन परिच्छेद, 660 पद्य
6. शिवराजविजयम् (अम्बिकादत्तव्यास)	तीन विराम, 12 निःश्वास
7. महाकाव्य	सर्गों में विभक्त (8 से अधिक सर्ग)
8. नाटक	अङ्को में विभक्त (5 अङ्क या इससे अधिक)
9. मेघदूतम् (कालिदास)	दो खण्डों में–पूर्वमेघ, उत्तरमेघ
10. कादम्बरी कथा (बाणभट्ट)	दो भागों में–पूर्वभाग, उत्तरभाग
11. आख्यायिका	उच्छ्वासों में (हर्षचरितम् में 8 उच्छ्वास)
12. वक्रोक्तिजीवितम् (कुन्तक)	चार उन्मेष
13. वाल्मीकीयरामायणम् (वाल्मीकि)	7 काण्ड, 600 सर्ग, 24,000 श्लोक
14. महाभारतम् (वेदव्यासः)	18 पर्व, 1 लाख श्लोक
15. श्रीमद्भागवतपुराण (वेदव्यासः)	12 स्कन्ध, 18000 श्लोक
16. गीता (वेदव्यासः)	18 अध्याय, 700 श्लोक
17. व्यक्तिविवेक (महिमभट्ट)	तीन विमर्श
18. सरस्वतीकण्ठाभरण (भोजराज)	पाँच परिच्छेद

ग्रन्थ-ग्रन्थकार	विभाजन
19. शृङ्गारप्रकाश (भोजराज)	36 प्रकाश
20. कविकण्ठाभरण (क्षेमेन्द्र)	पाँच अध्याय 55 कारिकायें।
21. अभिधावृत्तिमात्रिका (मुकुलभट्ट)	15 कारिकायें
22. ध्वन्यालोक (आनन्दवर्धन)	4 उद्योत
23. काव्यालङ्कारसारसंग्रह (उद्भट)	6 वर्गों में
24. काव्यालङ्कार (रुद्रट)	16 अध्याय, 714 आर्यायें
25. काव्यालङ्कारसूत्र (वामन)	5 अधिकरण
26. काव्यालङ्कार (भामह)	6 परिच्छेद
27. काव्यमीमांसा (राजशेखर)	18 अध्याय
28. चन्द्रालोक (जयदेव)	10 मयूख
29. राजतरङ्गिणी (कल्हण)	8 तरङ्ग
30. ऋतुसंहार (कालिदास)	6 सर्ग, 144 श्लोक
31. नाट्यशास्त्र (भरत)	36 अध्याय
32. कथासरित्सागर (सोमदेव)	18 लम्बक, 124 तरङ्ग, 22000 पद्य।
33. हितोपदेश (नारायणपण्डित)	चार परिच्छेद, 43 कहानियाँ
34. पञ्चतन्त्र (विष्णुशर्मा)	पाँच तन्त्र, पाँच मुख्य कथायें, 1003 श्लोक, 75 उपकथायें।
35. कर्पूरमञ्जरी (राजशेखर)	4 जवनिका

संस्कृत ग्रन्थों में प्रमुख वर्णन

वर्णन	ग्रन्थ	वर्णन	ग्रन्थ
1. अच्छोदसरोवर	कादम्बरी	**5. इन्द्रकीलपर्वत**	किरातार्जुनीयम् सर्ग-5
2. पम्पासरोवर	कादम्बरी	**6. शरद्वर्णन**	किरातार्जुनीयम् सर्ग 4
3. शाल्मलीवृक्ष	कादम्बरी	**7. षड्ऋतु वर्णन**	(i) शिशुपालवधम् सर्ग-6
4. रैवतकपर्वत	शिशुपालवधम्-सर्ग 4		(ii) ऋतुसंहारम्

संस्कृतग्रन्थों के अपरनाम

मुख्यग्रन्थ	अपरनाम	मुख्यग्रन्थ	अपरनाम
1. किरातार्जुनीयम्	लक्ष्मीपदाङ्कमहाकाव्यम्	**4. नलचम्पू**	दमयन्तीकथा
2. शिशुपालवधम्	श्र्यङ्कमहाकाव्यम् ('श्री' पदाङ्कमहाकाव्य)	**5. अष्टाध्यायी**	अष्टक
3. नैषधीयचरितम्	आनन्दपदाङ्कमहाकाव्यम्		

संस्कृतवाङ्मय की दशत्रयी

1. बृहत्त्रयी

ग्रन्थ	कवि
1. किरातार्जुनीयम्	भारवि
2. शिशुपालवधम्	माघ
3. नैषधीयचरितम्	श्रीहर्ष

2. लघुत्रयी

ग्रन्थ	कवि
1. रघुवंशम्	कालिदासः
2. कुमारसम्भवम्	कालिदासः
3. मेघदूतम्	कालिदासः

3. गद्यबृहत्त्रयी / **4. उपजीव्यग्रन्थत्रयी**

कवि	ग्रन्थ	ग्रन्थः	कविः
1. सुबन्धु	वासवदत्ता	1. रामायणम्	वाल्मीकिः
2. बाणभट्ट	कादम्बरी	2 महाभारतम्	वेदव्यासः
3. दण्डी	दशकुमारचरितम्	3. भागवतपुराणम्	वेदव्यासः

5. पुरुषार्थत्रयी	6. पाषाणत्रयी	7. गुणत्रयी
1. धर्म	1. किरातार्जुनीयम् का प्रथम सर्ग	1. सत्त्वगुणः
2. अर्थ	2. किरातार्जुनीयम् का द्वितीय सर्ग	2. रजोगुणः
3. काम	3 किरातार्जुनीयम् का तृतीय सर्ग	3. तमोगुणः

8. मुनित्रयी / **9. प्रस्थानत्रयी** / **10. वेदत्रयी**

मुनिः	व्याकरणग्रन्थः	साहित्यिकग्रन्थः	9. प्रस्थानत्रयी	10. वेदत्रयी
1. पाणिनिः	अष्टाध्यायी	जाम्बवतीजयम्/पातालविजयम्	1. ब्रह्मसूत्र	1. ऋग्वेद
2. कात्यायनः	वार्तिकम्	स्वर्गारोहणम्	2. उपनिषद्	2. यजुर्वेद
3. पतञ्जलिः	महाभाष्यम्	महानन्दकाव्यम्	3. गीता	3. सामवेद

यज्ञ	यज्ञकर्ता	वीणा	स्वामी	ग्रन्थ
वाजपेय	महाकवि (भवभूति के पूर्वज)	महती	नारद	शिशुपालवधम्
राजसूय	युधिष्ठिर	कच्छपी	सरस्वती	–
पुत्रेष्टि	दशरथ	घोषवती	वासवदत्ता	स्वप्नवासवदत्तम्
अश्वमेध	राम			
गवालम्भ	राजा रन्तिदेव			

काव्यशास्त्रीय छः सम्प्रदाय

सम्प्रदाय	प्रवर्तक और प्रमुख आचार्य
1. रससम्प्रदाय	**भरत (प्रवर्तक)** भोजराज, भट्टनायक, विश्वनाथ, राजशेखर, केशवमिश्र, शारदातनय
2. अलङ्कारसम्प्रदाय	**भामह** (प्रवर्तक), दण्डी, उद्भट, प्रतिहारेन्दुराज रुद्रट, जयदेव, अप्पयदीक्षित।
3. रीतिसम्प्रदाय	**वामन** (प्रवर्तक)
4. ध्वनिसम्प्रदाय	**आनन्दवर्धन** (प्रवर्तक), रुय्यक, मम्मट, अभिनवगुप्त, जगन्नाथ
5. वक्रोक्तिसम्प्रदाय	**कुन्तक** (प्रवर्तक)
6. औचित्यसम्प्रदाय	**क्षेमेन्द्र** (प्रवर्तक)
चमत्कार सम्प्रदाय	कुछ आधुनिक काव्यशास्त्री

काव्यलक्षण–तालिका

ग्रन्थ	ग्रन्थकार	काव्यलक्षण
1. काव्यप्रकाश	**आचार्य मम्मट**	तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि–(का.प्र. प्रथमोल्लास)
2. साहित्यदर्पण	**आचार्य विश्वनाथ**	वाक्यं रसात्मकं काव्यम्
3. रसगङ्गाधर	**पण्डितराज जगन्नाथ**	रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्
4. काव्यालङ्कार	**भामह**	शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्
5. वक्रोक्तिजीवितम्	**कुन्तक**	वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्
6. काव्यालङ्कार सूत्र	**वामन**	रीतिरात्मा काव्यस्य

ग्रन्थ	ग्रन्थकार	काव्यलक्षण
7. ध्वन्यालोक	**आनन्दवर्धन**	काव्यस्यात्मा ध्वनिः
8. काव्यादर्श	**दण्डी**	शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली
9. औचित्यविचारचर्चा	**क्षेमेन्द्र**	औचित्यं रससिद्धस्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम्
10. अग्निपुराण	**व्यास**	संक्षेपाद्वाक्यमिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली/काव्यं स्फुरदलङ्कारं गुणवद् दोषवर्जितम्।।
11. शृङ्गारप्रकाश	**भोज**	अदोषं गुणवद्काव्यमलङ्कारैरलङ्कृतम् रसान्वितं कविः कुर्वन् कीर्तिं प्रीतिं च विन्दति।।

काव्यशास्त्र में अलङ्कारों की संख्या

ग्रन्थ–ग्रन्थकार	अलङ्कारों की संख्या	ग्रन्थ–ग्रन्थकार	अलङ्कारों की संख्या
1. नाट्यशास्त्र–भरत	उपमा, रूपक, दीपक और यमक कुल चार अलङ्कार		
2. अग्निपुराण	09 शब्दालङ्कार +	08 अर्थालङ्कार +	06 उभयालङ्कार = 23 अलङ्कार
3. विष्णुधर्मोत्तर पुराण	18 अलङ्कार		
4. काव्यालङ्कार–भामह	38 अलङ्कार		
5. काव्यादर्श–दण्डी	37 अलङ्कार		
6. काव्यालङ्कारसारसंग्रह–उद्भट	41 अलङ्कार		
7. काव्यालङ्कार–रुद्रट	68 अलङ्कार		
8. सरस्वतीकण्ठाभरण–भोजराज	24 शब्दालङ्कार +	24 अर्थालङ्कार +	24 उभयालङ्कार = 72 अलङ्कार
9. काव्यप्रकाश – मम्मट	06 शब्दालङ्कार +	61 अर्थालङ्कार = 67 अलङ्कार	
10. अलङ्कारसर्वस्व – रुय्यक	78 अलङ्कार		
11. साहित्यदर्पण–विश्वनाथ	78 अलङ्कार		
12. चन्द्रालोक–जयदेव	100 अलङ्कार		
13. कुवलयानन्द–अप्पयदीक्षित	120 अलङ्कार		

साहित्यशास्त्र में रसों की संख्या

रस	स्थायीभाव	वर्ण	देवता	रस	स्थायीभाव	वर्ण	देवता
1. शृङ्गार	**रति**	श्याम	विष्णु	**2. वीररस**	**उत्साह**	सुवर्णवत्	महेन्द्र
3. वीभत्सरस	**जुगुप्सा**	नील	महाकाल	**4. रौद्ररस**	**क्रोध**	रक्त	रुद्र
5. हास्यरस	**हास**	शुक्ल	प्रमथ	**6. अद्भुतरस**	**विस्मय**	पीत	गन्धर्व
7. भयानक रस	**भय**	कृष्ण	महाकाल	**8. करुणरस**	**शोक**	कपोत	यम
9. शान्तरस	**निर्वेद/शम**	कुन्दपुष्पवत्	श्रीनारायण				

- आचार्य भरत और धनञ्जय के अनुसार नाटक में आठरस माने गये हैं–**''अष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः''–(नाट्यशास्त्र)**
- अभिनव गुप्त एवं आचार्य मम्मट आदि ने 'शान्तरस' को नवम रस के रूप में स्वीकार किया है। **''शान्तोऽपि नवमो रसः''**
- **रुद्रट** ने **'प्रेयान्'** नामक दसवें रस की उद्भावना की है।
- **रूपगोस्वामी** ने **'भक्तिरस'** को प्रधानरस माना है।
- **विश्वनाथ** नवरस के अतिरिक्त **'वात्सल्य'** नामक रस को भी स्वीकार करते हैं।
- **भवभूति** ने **'करुणरस'** को ही एकमात्र मूलरस मानते हैं–**''एको रसः करुण एव''**

आचार्य भरत प्रतिपादित रससूत्र

- आचार्य भरत द्वारा 'नाट्यशास्त्र' में प्रतिपादित रससूत्र– **''विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः''** अर्थात् विभाव, अनुभाव और व्यभिचारिभाव के संयोग से 'रस' की निष्पत्ति होती है।

आचार्य भरत प्रतिपादित 'रससूत्र' के व्याख्याकार

व्याख्याकार	समय	मत	दर्शन
1. भट्टलोल्लट	नवमशताब्दी	उत्पत्तिवाद (उत्पाद्य-उत्पादक)	मीमांसा
2. शङ्कुक	नवमशताब्दी	अनुमितिवाद (अनुमाप्य-अनुमापक)	न्याय
3. भट्टनायक	11वीं शताब्दी	भुक्तिवाद (भोज्य-भोजक)	सांख्य
4. अभिनवगुप्त	11वीं शताब्दी	अभिव्यक्तिवाद (व्यङ्ग्य-व्यञ्जक)	शैव/वेदान्त

शंखों के नाम

देव	शंख
1. श्रीकृष्ण	पाञ्चजन्य
2. युधिष्ठिर	अनन्तविजय
3. भीम	पौण्ड्र
4. अर्जुन	देवदत्त
5. नकुल	सुघोष
6. सहदेव	मणिपुष्पक

नायकों की कोटियाँ

धीरोदात्त – राम, कृष्ण, अर्जुन, चन्द्रापीड, दुष्यन्त, शिवाजी।

धीरोद्धत – भीम, परशुराम, दुर्योधन आदि।

धीरललित – यक्ष, उदयन आदि।

धीरप्रशान्त – चारुदत्त आदि।

नायिकाओं की कोटियाँ

स्वकीया प्रौढा – सीता, द्रौपदी

स्वकीया मध्या – यक्षिणी

स्वकीया मुग्धा – शकुन्तला, कादम्बरी, महाश्वेता

संस्कृत-रूपकों के दशभेद

रूपक	अङ्क-संख्या	उदाहरणम्
1. नाटक	5 से 10 अङ्क	अभिज्ञानशाकुन्तलम्, स्वप्नवासवदत्तम्, उत्तररामचरितम्
2. प्रकरण	10 अङ्क	मृच्छकटिकम्, मालतीमाधवम्, शारिपुत्रप्रकरण पुष्पभूषित
3. भाण	1 अङ्क	लीलामधुकरम्, शृङ्गारशेखर, मर्कटमदलिका, धूर्तसमागम
4. व्यायोग	1 अङ्क	सौगन्धिकाहरणम्, जामदग्न्यजय
5. समवकार	3 अङ्क	समुद्रमन्थनम् (12 नायक), नवग्रहचरितम्
6. डिम	4 अङ्क	त्रिपुरदाह (16 नायक)
7. ईहामृग	4 अङ्क /1 अङ्क	कुसुमशेखरविजयम्
8. अङ्क (उत्सृष्टिकाङ्क)	1 अङ्क	शर्मिष्ठा-ययातिः
9. वीथी	1 अङ्क	मालविका
10. प्रहसन	1 अङ्क	कन्दर्पकेलिः/धूर्तचरितम्
• नाटिका	4 अङ्क	रत्नावली, प्रियदर्शिका
• सट्टक	4 अङ्क	कर्पूरमञ्जरी

संस्कृतनाटकों में विदूषक

नाटक	विदूषक	नाटक	विदूषक
1. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (कालिदास)	माढव्य/माधव्य	**6. स्वप्नवासवदत्तम् (भास)**	वसन्तक
2. विक्रमोर्वशीयम् (कालिदास)	माणवक	**7. मालतीमाधवम् (भवभूति)**	विदूषक का अभाव
3. मालविकाग्निमित्रम् (कालिदास)	गौतम	**8. महावीरचरितम् (भवभूति)**	विदूषक का अभाव
4. मृच्छकटिकम् (शूद्रक)	मैत्रेय	**9. उत्तररामचरितम् (भवभूति)**	विदूषक का अभाव
5. रत्नावली (श्रीहर्ष)	वसन्तक	**10. मुद्राराक्षसम् (विशाखदत्त)**	विदूषक का अभाव

संस्कृत नाटकों में कञ्चुकी

नाटक	कञ्चुकी का नाम	नाटक	कञ्चुकी का नाम
1. प्रतिज्ञायौगन्धरायण	बादरायण	**5. उत्तररामचरितम्**	गृष्टि
2. दूतवाक्यम्	बादरायण	**6. रत्नावली**	बाभ्रव्य
3. स्वप्नवासवदत्तम्	बादरायण	**7. वेणीसंहारम्**	जयन्धर (युधिष्ठिर का)
4. अभिज्ञानशाकुन्तलम्	वातायन		विनयन्धर (दुर्योधन का)

नाटकीय पञ्चीकरण

पञ्च अर्थप्रकृतियाँ	पञ्च कार्यावस्थायें	पञ्च सन्धियाँ	पञ्च अर्थोपक्षेपक	पञ्चनाटककार
1. बीज	1. आरम्भ	1. मुखसन्धि	1. विष्कम्भक	1. भास
2. बिन्दु	2. यत्न	2. प्रतिमुखसन्धि	2. चूलिका	2. कालिदास
3. पताका	3. प्राप्त्याशा	3. गर्भसन्धि	3. अङ्कास्य	3. शूद्रक
4. प्रकरी	4. नियताप्ति	4. अवमर्श/विमर्शसन्धि	4. अङ्कावतार	4. विशाखदत्त
5. कार्य	5. फलागम	5. उपसंहृति/निर्वहणसन्धि	5. प्रवेशक	5. भवभूति

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के अङ्कों के नाम

अङ्क	अङ्क का नाम	श्लोकसंख्या
प्रथम	**आश्रम प्रवेश**	34
द्वितीय	**आश्रमनिवेश**	18
तृतीय	**मिलन**	24
चतुर्थ	**विदा**	22
पञ्चम	**प्रत्याख्यान**	31
षष्ठ	**पश्चात्ताप**	32
सप्तम	**पुनर्मिलन**	35
	योग =	**196**

उत्तररामचरितम् के अङ्कों के नाम

अङ्क	अङ्क का नाम	श्लोकसंख्या
प्रथम	**चित्रदर्शन**	51
द्वितीय	**पञ्चवटीप्रवेश**	30
तृतीय	**छाया**	48
चतुर्थ	**कौशल्याजनकयोग**	29
पञ्चम	**कुमारविक्रम**	35
षष्ठ	**कुमारप्रत्यभिज्ञान**	42
सप्तम	**सम्मेलन**	21
	योग =	**256**

मृच्छकटिकम् के अङ्कों के नाम

अङ्क	अङ्क का नाम	श्लोक संख्या
प्रथम	**अलङ्कारन्यास**	58
द्वितीय	**द्यूतकरसंवाहक**	20
तृतीय	**सन्धिच्छेद**	30
चतुर्थ	**मदनिकाशर्विलक**	33
पञ्चम	**दुर्दिन**	52
षष्ठ	**प्रवहणविपर्यय**	27
सप्तम	**आर्यकापहरण**	09
अष्टम	**वसन्तसेनामोटन**	47
नवम	**व्यवहार** (न्यायालय)	43
दशम	**संहार** (उपसंहार)	61
	योग =	**380**

रत्नावली के अङ्कों के नाम

अङ्क	अङ्क का नाम	श्लोकसंख्या
प्रथम अङ्क	**मदनमहोत्सव**	26
द्वितीय अङ्क	**कदलीगृहम्**	21
तृतीय अङ्क	**सङ्केतक**	19
चतुर्थ अङ्क	**ऐन्द्रजालिक**	20
		86

छन्दों में वर्णों की संख्या

छन्द	वर्णों की संख्या	छन्द	वर्णों की संख्या
अनुष्टुप्	08 × 4 = 32	तोटक (त्रोटक)	12 × 4 = 48
इन्द्रवज्रा	11 × 4 = 44	भुजङ्गप्रयात	12 × 4 = 48
उपेन्द्रवज्रा	11 × 4 = 44	प्रहर्षिणी, अतिरुचिरा	13 × 4 = 52
उपजाति	11 × 4 = 44	वसन्ततिलका	14 × 4 = 56
रथोद्धता	11 × 4 = 44	मालिनी	15 × 4 = 60
शालिनी	11 × 4 = 44	पञ्चचामर	16 × 4 = 64
स्वागता	11 × 4 = 44	शिखरिणी, हरिणी, पृथ्वी, मन्दाक्रान्ता	17 × 4 = 68
वंशस्थ	12 × 4 = 48	शार्दूलविक्रीडित	19 × 4 = 76
द्रुतविलम्बित	12 × 4 = 48	स्रग्धरा	21 × 4 = 84

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख ग्रन्थों के विषय में विशेष कथन

रामायण - रम्या रामायणी कथा

श्रीमद्भागवत - विद्यावतां भागवते परीक्षा

काव्यप्रकाश - काव्यप्रकाशस्य कृता गृहे-गृहे,
टीकास्तथाप्येषः तथैव दुर्गमः

अभिज्ञानशाकुन्तलम्

1.कालिदासस्य सर्वस्वमभिज्ञानशाकुन्तलम्।

2. काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला।

उत्तररामचरितम्- उत्तररामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते

मेघदूत - मेघे माघे गतं वयः

किरातार्जुनीयम्

''वृत्तछत्रस्य सा काऽपि वंशस्थास्य विचित्रता।
प्रतिभा भारवेर्येन सच्छायेनाधिकीकृता।''

नैषधीयचरितम्

1. '' नैषधं विद्वदौषधम् ''

2. ''तावद् भा भारवेर्भाति यावन्माघस्य नोदयः।
उदिते नैषधे काव्ये क्व माघः क्व च भारविः।।''

3. ''नैषधे पदलालित्यम् ''

रावणवध (भट्टिकाव्य)

1. ''अष्टाध्यायी जगन्माताऽमरकोशो जगत्पिता।
भट्टिकाव्यं गणेशश्चत्रयीयं सुखदास्तु वः।।''

2. व्याकृत्या कोश- छन्दोभ्यालङ्कृत्या रसेन च।
पञ्चकेनान्वितं काव्यं भट्टिकाव्यं विराजते।।

जानकीहरणम्

जानकीहरणं कर्तुं रघुवंशे स्थिते सति।
कविः कुमारदासश्च रावणश्च यदि क्षमः।।

हरविजयम्

हरविजय-महाकवेः प्रतिज्ञां, शृणुत कृत्तप्रणयो मम प्रबन्धे।
अपि शिशुरकविः कविः प्रभावाद् भवित कविश्च महाकविः क्रमेण।।

सेतुबन्धमहाकाव्यम्

''महाराष्ट्राश्रयां भाषां प्राकृष्टं प्रकृतं विदुः।
सागरः सूक्तिरत्नानां सेतुबन्धादि यन्मयम्।।''

गाथासप्तशती

अविनाशिनमग्राम्यमकरोत्सातवाहनः।
विशुद्धजातिभिः कोषं रत्नैरिव सुभाषितैः।।

अमरुकशतक

''अमरुककवेरेकः श्लोकः प्रबन्धशतायते।''

वासवदत्ता

कवीनामगलद् दर्पो नूनं वासवदत्तया।
शक्त्येव पाण्डुपुत्राणां गतया कर्णगोचरम्।।

कादम्बरी

1. 'कादम्बरीरसज्ञानामाहारोऽपि न रोचते।'

2. कादम्बरी रसभरेण समस्त एव। मत्तो न किञ्चिदपि चेतयते जनोऽयम्।।

3. 'धिया निबद्धेयमतिद्वयी कथा।'

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख ग्रन्थों के अपरनाम

ग्रन्थ का नाम	अपरनाम
1. ऋग्वेद	दशतयी
2. शुक्ल यजुर्वेद	माध्यन्दिन संहिता, वाजसनेयी संहिता
सामवेद	उद्गातृ-वेद
अथर्ववेद	ब्रह्मवेद
ताण्ड्य ब्राह्मण	महाब्राह्मण, पंचविश, प्रौढ़
छान्दोग्य ब्राह्मण	उपनिषद् ब्राह्मण
छान्दोग्योपनिषद्	तण्डिनाम् उपनिषद्
केनोपनिषद्	तवल्कारोपनिषद्
शांखायन आरण्यक	कौषीतकि आरण्यक
आरण्यक	रहस्यग्रन्थ
ऋक् प्रातिशाख्य	पार्षद् (परिषद् सूत्र)
निरुक्त	शब्दव्युत्पत्तिशास्त्र, निर्वचन शास्त्र
ज्योतिष	प्रत्यक्षशास्त्र, कालविधानशास्त्र
हिरण्यकेशी गृह्यसूत्र	सत्याषाढ़ गृह्यसूत्र
कातन्त्रसूत्र	कालापव्याकरण
व्याकरण	शब्दशास्त्र
लघुपाराशरी	उडुदायप्रदीप
काठक गृह्यसूत्र	लौगाक्षि गृह्यसूत्र
बृहत्संहिता	वाराही संहिता
वेदान्तसूत्र	चतुर्लक्षणी
मीमांसासूत्र	द्वादशलक्षणी
ब्रह्मसूत्र	शारीरकसूत्र
ब्रह्मपुराण	आदिपुराण
अग्निपुराण	विश्वकोष
नारद पुराण	बृहन्नारदीय पुराण
श्रीमद्भागवत पुराण	दशलक्षणी पुराण
वायुपुराण	शिवपुराण
रामायण	चतुर्विंशतिसाहस्रीसंहिता, आदिमहाकाव्य आर्यभट्टाकाव्य
भुशुण्डिरामायण	महारामायण
योगवाशिष्ठ	आर्षरामायण
महाभारत	शतसाहस्रीसंहिता
सेतुबन्धमहाकाव्य	सूक्तिरत्नाकर
जाम्बवतीजय	पातालविजय
रावणवध	भट्टिकाव्य
काव्यशास्त्र	साहित्यविद्या
नाट्यशास्त्र	षट्साहस्री संहिता
कुमारपालितचरित	द्वयाश्रयमहाकाव्य
नैषधीयचरितम्	शास्त्रकाव्य, श्रयंक
प्रबन्धकोश	चतुर्विंशतिप्रबन्ध
नलचम्पू	हरचरणसरोजाङ्क
हनुमन्नाटक	महानाटक
गीतगोविन्द	शृंगारमहाकाव्य, संगीतरूपक,
संस्कृतमहाकोश	पीटर्सबर्ग कोश

संस्कृत में सर्वप्रथम/सर्वप्राचीन/सर्वश्रेष्ठ

प्राचीनतम वेद	ऋग्वेद
प्राचीनतम पुराण	ब्रह्मपुराण
स्मृतिग्रन्थों में प्राचीनतम	मनुस्मृति
प्राकृत काव्यों में प्राचीनतम	सेतुबन्ध
आर्य भाषाओं में प्राचीनतम	वैदिक संस्कृत
लोककथा प्राचीनतम संग्रह	बृहत्कथा
शिक्षा के प्राचीनतम ग्रन्थ	प्रातिशाख्य
भाषाशास्त्र का प्राचीनतम ग्रन्थ	निरुक्त
मनुस्मृति के प्राचीनतम टीकाकार	मेधातिथि
वेदाङ्ग के प्राचीनतम ग्रन्थ	कल्पसूत्र
अमरुकशतक के प्राचीनतम टीकाकार	अर्जुनवर्मदेव
सर्वश्रेष्ठ कर्म	यज्ञ
सर्वश्रेष्ठ वेदभाष्यकर्ता	आचार्य सायण
सर्वश्रेष्ठ गद्यकार	बाणभट्ट
सर्वश्रेष्ठ वैयाकरण	महर्षि पाणिनि
सर्वश्रेष्ठ नाटककार	कालिदास
सर्वश्रेष्ठ प्रतीकात्मक नाटक	प्रबोधचन्द्रोदय
सर्वश्रेष्ठ तान्त्रिक ग्रन्थ	तन्त्रालोक
संस्कृत के सर्वश्रेष्ठ कवि	कालिदास
कश्मीरी लेखकों में सर्वश्रेष्ठ	अभिनवगुप्त
शाकुन्तल का सर्वश्रेष्ठ अङ्क	चतुर्थ
रससूत्र के सर्वश्रेष्ठ भाष्यकार	अभिनवगुप्त
शङ्करभट्ट के अनुसार सर्वश्रेष्ठ निबन्धकार	विज्ञानेश्वर
संस्कृत साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कवि	कालिदास
राजशेखर के मत में सर्वश्रेष्ठ नाटक	स्वप्नवासवदत्तम्
शृङ्गाररस के सर्वश्रेष्ठ कवि	कालिदास
करुणरस के सर्वश्रेष्ठ कवि	भवभूति

संस्कृत गद्यसाहित्य की सर्वोकृष्ट रचना	कादम्बरी
ब्राह्मण ग्रन्थों में सर्वश्रेष्ठ देवता	प्रजापति
केरलीय राजाओं में सर्वश्रेष्ठ	रामवर्मा
सर्वप्रथम नाटककार	भास
मीमांसा के सर्वप्रथम भाष्यकार	शबर
चम्पू ग्रन्थों में सर्वप्रथम	नलचम्पू
कालिदास की प्रथम कृति	ऋतुसंहार
प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास (संस्कृत)	शिवराजविजय
सुभाषित संग्रह का प्रथम ग्रन्थ	गाथासप्तशती
प्रथम ऐतिहासिक काव्य	नवसाहसाङ्कचरित
समुपलब्ध प्रथम गद्यकार	दण्डी
प्रथम लौकिक खण्डकाव्य	मेघदूतम्
प्रथम बौद्ध नाटककार	अश्वघोष
संस्कृत का प्रथम महाकाव्य	जाम्बवतीविजय
अद्वैत के प्रथम आचार्य	गौडपादाचार्य
प्रस्थानत्रयी के प्रथम भाष्यकार	शङ्कराचार्य
बाणभट्ट की प्रथम रचना	हर्षचरितम्
काव्यप्रकाश की प्रथम टीका	संकेत (माणिक्यचन्द्र कृत)
जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर	ऋषभदेव
प्राकृत का प्रथम गीतिकाव्य	गाथासप्तशती
संस्कृत की प्रथम नाटिका	रत्नावली
कलापक्ष के प्रथम आचार्य	भारवि
उपलब्ध प्रथम प्रतीक नाटक	प्रबोधचन्द्रोदय
पुराणों में प्रथम	ब्रह्मपुराण
महाभारत के प्राचीन टीकाकार	देवबोध
भाषाविज्ञान के प्राचीन पण्डित	यास्क
सबसे प्राचीन धर्मसूत्र	गौतमधर्मसूत्र
सबसे प्राचीन शुल्बसूत्र	बोधायनशुल्बसूत्र
अथर्ववेद का प्राचीन नाम	अथर्वाङ्गिरस
काव्यशास्त्र का उपलब्ध सबसे प्राचीन ग्रन्थ	नाट्यशास्त्र
ज्योतिष का उपलब्ध प्राचीन ग्रन्थ	वेदाङ्गज्योतिष
उपजीव्यों में प्रमुख	रामायण, महाभारत
पाञ्चरात्र संहिताओं में प्रमुख	अर्हिबुध्न्यसंहिता
नास्तिक दर्शनों में सर्वप्राचीन	चार्वाक दर्शन
नीतिकथा साहित्य का सर्वप्राचीन ग्रन्थ	पञ्चतन्त्र
व्याकरण दर्शन का सर्वोत्तम ग्रन्थ	वाक्यपदीय
स्मृति ग्रन्थों में सर्वाधिक प्रसिद्ध	मनुस्मृति
वैष्णवपुराणों में सर्वप्रसिद्ध	श्रीमद्भागवतपुराण
काव्यों में सर्वाधिक रमणीय	नाटक
जैन पुराणों में सर्वाधिक प्रसिद्ध	आदिपुराण
सामवेद की लोकप्रिय शाखा	कौथुम शाखा
अथर्ववेद की लोकप्रिय शाखा	शौनक शाखा
दक्षिण भारत का लोकप्रिय स्तोत्र	नारायणीय स्तोत्र
संस्कृत का बृहत्तम महाकाव्य	हरविजय (50 सर्ग)
चम्पू काव्यों में बृहत्तम	वृन्दावनचम्पू
विश्वसाहित्य का बृहत्तम ग्रन्थ	महाभारत
अष्टविकृति पाठों में सबसे कठिन	घनपाठ
सबसे बड़ा शुल्बसूत्र	बोधायन
वेद व्याख्याकारों में अग्रगण्य	सायणाचार्य
ऐतिहासिक काव्यों में अग्रणी	राजतरंगिणी
सर्वाधिक विशाल पुराण	स्कन्दपुराण
सर्वाधिक बृहद् उपनिषद्	बृहदारण्यकोपनिषद्
ब्राह्मणग्रन्थों में सबसे छोटा	दैवत ब्राह्मण
सबसे छोटा उपनिषद्	माण्डूक्योपनिषद्
सबसे छोटा पुराण	मार्कण्डेय पुराण
अर्वाचीनतम ब्राह्मण ग्रन्थ	गोपथ ब्राह्मण
अर्वाचीन वेद	अथर्ववेद
आदिकाव्य	रामायण
ललित कलाओं के आदि आचार्य	भरतमुनि
ज्यामिति के आदि ग्रन्थ	शुल्बसूत्र

संस्कृतवाङ्मय के प्रमुख ग्रन्थांश

श्रीमद्भगवद्गीता	-	**महाभारत** (भीष्मपर्व -अध्याय - 25-42)
हरिवंशपुराण	-	**महाभारत** (महाभारत का खिलपर्व / हरिवंशपर्व)
रासपञ्चाध्यायी	-	**भागवतमहापुराण** (दशमस्कन्ध)
दुर्गासप्तशती	-	**मार्कण्डेयपुराण** (अध्याय-81-93)
हंसगीता	-	**विष्णुधर्मोत्तरपुराण** (तृतीयखण्ड- अध्याय 227-342)
अध्यात्म-रामायण	-	**ब्रह्माण्ड पुराण** (उत्तरखण्ड का एक भाग)
पराशर-गीता	-	**महाभारत** (शान्तिपर्व-अध्याय-290-98)
विष्णुसहस्रनामस्तोत्र	-	**महाभारत** (अनुशासन पर्व- अध्याय-149)
शिवसहस्रनामस्तोत्र	-	**महाभारत** (अनुशासनपर्व- अध्याय-17)
हंस-गीता	-	**महाभारत** (शान्तिपर्व -अध्याय-299)
शकुन्तलोपाख्यान	-	**महाभारत** (आदिपर्व - अध्याय-68-74)
नलोपाख्यान	-	**महाभारत** (वनपर्व-अध्याय-53-79)
रामोपाख्यान	-	**महाभारत** (वनपर्व- अध्याय-274-91)
सावित्र्युपाख्यान	-	**महाभारत** (वनपर्व-अध्याय -292-99)
शङ्करगीता	-	**विष्णुधर्मोत्तरपुराण** (प्रथमखण्ड, अध्याय-52-65)

संस्कृत के प्रमुख ग्रन्थों की विशेष संज्ञा

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद	-	**वेदत्रयी**
किरातार्जुनीयम् , शिशुपालवधम् , नैषधीयचरितम्	-	**संस्कृत साहित्य के बृहत्त्रयी**
ध्वन्यालोक, काव्यप्रकाश, रसगङ्गाधर	-	**काव्यशास्त्र के बृहत्त्रयी**
चरकसंहिता, सुश्रुतसंहिता, अष्टांगहृदय	-	**आयुर्वेद के बृहत्त्रयी**
कुमारसम्भवम् , रघुवंशम् ,मेघदूतम्	-	**संस्कृत साहित्य के लघुत्रयी**
उपनिषद् , गीता, ब्रह्मसूत्र	-	**प्रस्थानत्रयी**
पाणिनि, पतञ्जलि, कात्यायन	-	**व्याकरण के मुनित्रय**
वेदव्यास, पराशर, शुकदेव	-	**पुराणों के मुनित्रय**
शृंगारशतक, नीतिशतक, वैराग्यशतक	-	**शतकत्रय**
किरातार्जुनीय महाकाव्य के प्रथम तीन सर्ग	-	**पाषाणत्रय**
पञ्चास्तिकायसार, समयसार, प्रवचनसार	-	**जैन सम्प्रदाय के नाटकत्रयी**
विनयपिटक, सुत्तपिटक, अभिधम्मपिटक	-	**बौद्धदर्शन के त्रिपिटक**
खण्डनखण्डखाद्य, तत्त्वदीपिका, अद्वैतसिद्धि	-	**वेदान्तदर्शन के कठिनत्रयी**
उपनिषद् , गीता, ब्रह्मसूत्र, भागवत	-	**प्रस्थान चतुष्टयी**
गीता, विष्णुसहस्रनाम, अनुगीता, भीष्मस्तवराज, गजेन्द्रमोक्ष	-	**महाभारत के पञ्चरत्न**

प्रमुख ग्रन्थांशों की विशेष संज्ञा

शुक्लयजुर्वेद का 40वाँ अध्याय	-	**ईशावास्योपनिषद्**
तैत्तिरीयारण्यक का दशम प्रपाठक	-	**महानारायणोपनिषद्**
शतपथ ब्राह्मण के अन्तिम 6 अध्याय	-	**बृहदारण्यकोपनिषद्**
आपस्तम्बधर्मसूत्र का 8वाँ पटल	-	**अध्यात्मपटल**
गीता का 18वाँ अध्याय	-	**एकाध्यायीगीता**
किरातार्जुनीयम् का 15वाँ सर्ग	-	**चित्रकाव्य**

कवियों की स्वकाव्य विषयोक्त गर्वोक्तियाँ

प्रत्यक्षरश्लेषमयप्रबन्ध	-	**सुबन्धु अपने काव्य वासवदत्ता के विषय में** (सातवीं शताब्दी पूर्वार्द्ध)
लक्ष्मीपतेश्चरितकीर्तनमात्रचारु	-	**माघ अपने काव्य के विषय में** (सातवीं शताब्दी ई0)
शृङ्गारामृतशीतगुः	-	**श्रीहर्ष नैषधीयचरित के विषय में** (सातवीं शताब्दी पूर्वार्द्ध)
कविकुलादृष्टाध्वपान्थः	-	**श्रीहर्ष ने अपने काव्य शिशुपालवध को माना** (12 वीं. शताब्दी ई0)
चन्द्रार्धचूडचरिताश्रयचारु	-	**रत्नाकर अपने काव्य को** (बारहवीं शताब्दी ई0)
सन्दर्भशुद्धिं गिरां जानीते जयदेव एव	-	**जयदेव ने गीतगोविन्द के विषय में।** (बारहवीं शताब्दी ई0)

आनन्दवर्धन - आनन्दवर्धनः कस्य नासीदानन्दवर्धनः। (राजशेखर)

कालिदास - 1. कनिष्ठिकाधिष्ठित कालिदासः।
2. न कालिदासादपरस्य वाणी। (श्रीकृष्णकवेः)
3. काव्येषु माघः कविकालिदासः। (घटखर्परस्य)

गुणाढ्य - शश्वद् बाणद्वितीयेन नमदाकारधारिणा।
धनुषेव गुणाढ्येन निःशेषो रञ्जितो जनः।। (त्रिविक्रमभट्टस्य)

दण्डी - दण्डिप्रबन्धाश्च त्रिषु लोकेषु विश्रुताः। (राजशेखरस्य)

पाणिनिः - नमः पाणिनये तस्मै यस्मादाविरभूदिह।
आदौ व्याकरणं काव्यमनु जाम्बवतीजयम्।। (राजशेखरस्य)

बाणभट्ट - 1. वाणी बाणो बभूवेति। (गोवर्धनस्य)
2. बाणः कवीनामिह चक्रवर्ती (तत्रैव)
3. वाणी बाणस्य मधुरशीलस्य (धर्मदासस्य)
4. बाणस्तु पञ्चाननः। (श्रीचन्द्रदेवस्य)
5. यादृग् गद्यविधौ बाणः पद्यबन्धे च तादृशः। (भोजराजस्य)
6. भट्टबाणस्य भारतीम्। (कस्यापि)

❑❑

3. व्याकरण

वर्णविचार-स्वर व्यञ्जन

संस्कृत- सम् + कृ + क्त (सुट् का आगम)

'संस्कृत' शब्द का अर्थ है- शुद्ध, परिष्कृत, परिमार्जित, परिनिष्ठित। अतः संस्कृत भाषा का अर्थ है- शुद्ध एवं परिमार्जित भाषा।

व्याकरण- वि + आङ् + √कृ + ल्युट्

'व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते अनेन इति व्याकरणम्' जिसके माध्यम से शब्दों की व्युत्पत्ति या निष्पत्ति बतायी जाय, वह व्याकरण है। व्याकरण 'शब्दशास्त्र' या 'पदशास्त्र' है।

त्रिमुनि- संस्कृत व्याकरण के त्रिमुनि हैं-

1. पाणिनि 2. कात्यायन/वररुचि 3. पतञ्जलि

अष्टाध्यायी- व्याकरणशास्त्र का महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है- अष्टाध्यायी जो महर्षि पाणिनि की रचना है।

- अष्टाध्यायी में 8 अध्याय, प्रत्येक अध्याय में 4-4 पाद हैं, तो कुल मिलाकर 8×4 = 32 पाद हैं, तथा 3978 अर्थात् लगभग 4000 सूत्र हैं। इसीलिए पाणिनि को **'सूत्रकार'** कहा गया है।
- अष्टाध्यायी का प्रथम सूत्र- 'वृद्धिरादैच् (1.1.1) तथा अन्तिम सूत्र 'अ अ' (8.4.67) है।
- महर्षि कात्यायन या वररुचि ने अष्टाध्यायी के सूत्रों पर वार्तिक लिखा, इसीलिए इन्हें **'वार्तिककार'** कहते हैं।
- महर्षि पतञ्जलि ने अष्टाध्यायी के 4000 सूत्रों पर एक विस्तृत भाष्य लिखा; जिसे **'महाभाष्य'** कहते हैं। इसीलिए व्याकरण शास्त्र के **'भाष्यकार'** के रूप में पतञ्जलि प्रसिद्ध हैं। महाभाष्य में कुल 84 'आह्निक' हैं।
- भट्टोजिदीक्षित ने सूत्रों पर वृत्ति लिखी इसीलिए इन्हें **'वृत्तिकार'** के नाम से जानते हैं। 'सिद्धान्तकौमुदी' इनकी प्रसिद्ध रचना है।

वर्ण विचार

- **वर्ण अथवा अक्षर-** हम मुख से जिन ध्वनियों का उच्चारण करते हैं, उन्हें 'वर्ण' अथवा 'अक्षर' कहते हैं। वैसे तो 'न क्षरति इति अक्षरः' ऐसा 'अक्षर' शब्द का व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ है। अर्थात् जिनका क्षरण या विनाश न हो वे अक्षर हैं, जैसे- अ, इ, उ, क्, ख्, ग् आदि, परन्तु सामान्यतया 'वर्ण' या 'अक्षर' समानार्थी समझे जाते हैं। वर्ण दो प्रकार के होते हैं- (i) स्वर और (ii) व्यञ्जन

स्वर (अच्)

स्वर - 'स्वयं राजन्ते इति स्वराः' -

स्वर वे ध्वनियाँ हैं, जिनके उच्चारण के लिए किसी अन्य वर्ण की आवश्यकता नहीं होती। जैसे- 'अ' के उच्चारण में किसी अन्य स्वर या व्यञ्जन वर्णों की सहायता नहीं लेनी पड़ती इसीलिए 'अ' स्वर है। इसप्रकार अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ- ये सभी स्वर हैं।

1. स्वरों की संख्या- संस्कृत व्याकरणशास्त्र में स्वरों की संख्या 09 मानी गयी है।

जैसे- अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ। ये सभी स्वर 'अच्' प्रत्याहार के अन्तर्गत परिगणित हैं इसीलिए स्वरों को 'अच्' भी कहा जाता है।

2. मूल स्वर- मूल स्वर 05 हैं। अ, इ, उ, ऋ, ऌ यें पाँच मूलस्वर कहे जाते हैं।

3. संयुक्त स्वर- ए, ओ, ऐ, औ - ये चार संयुक्त या मिश्रित स्वर कहे जाते हैं।

जैसे- अ + इ = ए
अ + उ = ओ
अ + ए = ऐ
अ + ओ = औ

नोट- ऊकालोऽज्झस्वदीर्घप्लुतः (1.2.27) सूत्र से एकमात्रिक , द्विमात्रिक तथा त्रिमात्रिक स्वरों की क्रमशः ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत संज्ञा होती है।

स्वरों के भेद- स्वरों के मुख्यतया तीन भेद हैं-

1. ह्रस्व स्वर- जिन स्वरों के उच्चारण में एक मात्रा का समय लगे, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं-

जैसे- अ, इ, उ, ऋ, ऌ ये सभी ह्रस्व स्वर हैं।

2. दीर्घ स्वर- जिन स्वरों के उच्चारण में दो मात्रा का समय लगे, वे दीर्घस्वर कहे जाते हैं-

जैसे- आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ओ, ऐ, औ।

3. प्लुत स्वर- जिन स्वरों के उच्चारण में दो मात्रा से अधिक अर्थात् तीन मात्रा का समय लगे इन्हें प्लुतस्वर कहते हैं। प्लुतस्वरों की पहचान के लिए '३' यह चिह्न लगाया जाता है।

जैसे- अ-३, इ-३, उ-३ आदि।
'ओ३म्'- यह स्वर त्रैमात्रिक है, जिसका प्रयोग प्रायः वेदों में होता है। यहाँ 'ओ' प्लुतस्वर है।

- अ इ उ ऋ प्रत्येक वर्ण के 18 भेद होते हैं।
- ऌ, ए, ओ ऐ औ के 12 भेद होते हैं।
- ऋ एवं ऌ के कुल 30 भेद होते हैं।

वर्णों का उच्चारण काल

एकमात्रो भवेत् ह्रस्वो द्विमात्रो दीर्घ उच्यते।
त्रिमात्रस्तु प्लुतो ज्ञेयो व्यञ्जनं चार्धमात्रिकम्॥

अर्थात्- ह्रस्व स्वर की एकमात्रा, दीर्घस्वर की दो मात्रा एवं प्लुत स्वरों को त्रिमात्रिक समझना चाहिए। व्यञ्जन वर्णों की आधी मात्रा जाननी चाहिए।

एकमात्रिक स्वर- अ, इ, उ, ऋ, ऌ (ह्रस्व स्वर)।
द्विमात्रिक स्वर- आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ओ, ऐ, औ (दीर्घ स्वर)
त्रिमात्रिक स्वर- अ-३, इ-३, उ-३, ऋ-३ आदि। (प्लुत स्वर)
अर्द्धमात्रिक वर्ण- क् ख् ग् घ् ङ् च् छ् ज् (सभी व्यञ्जनवर्ण)।

मात्राकाल- पलक झपकने के समय को एकमात्राकाल कहते हैं।

व्यञ्जन (हल् वर्ण)

व्यञ्जन- 'अन्वग् भवति व्यञ्जनम्'
व्यञ्जन वे वर्ण हैं, जो स्वतन्त्र रूप से न बोले जा सकें; अर्थात् जिनका उच्चारण स्वर की सहायता के बिना नहीं हो सकता।

जैसे- क् + अ = क
ख् + अ = ख
ग् + अ = ग आदि।

- व्याकरण में जो शुद्ध व्यञ्जन वर्ण होंगे उन्हें हलन्त के साथ ही लिखा जाता है। जैसे- क् च् ट् त् प् आदि। इसीलिए इन्हें अर्धमात्रिक वर्ण कहा गया है। **'व्यञ्जनं चार्धमात्रिकम्'।**
- सभी व्यञ्जन वर्ण 'हल्' प्रत्याहार में समाहित होते हैं अतः व्यञ्जनों को **'हल्'** भी कहते हैं। कुल **व्यञ्जन वर्ण 33** माने गये हैं। जो कि माहेश्वर सूत्रों के 'हयवरट्' से लेकर 'हल्' तक 10 सूत्रों में कहे गये हैं।

व्यञ्जन के प्रकार- मुख्यरूप से व्यञ्जन के तीन प्रकार होते, हैं; जो माहेश्वरसूत्रों में गिने गये हैं।
1. स्पर्श व्यञ्जन 2. अन्तःस्थ व्यञ्जन 3. ऊष्म व्यञ्जन।
चतुर्थ प्रकार है 4. संयुक्त व्यञ्जन (जो माहेश्वर सूत्रों में परिगणित नहीं है)

(i) स्पर्श व्यञ्जन- जिन वर्णों के उच्चारण में मुख के विभिन्न अवयवों (भागों) - कण्ठ, तालु, मूर्धा आदि का स्पर्श होता है; उन्हें स्पर्श व्यञ्जन कहते हैं। इसकी संख्या 25 होती है- क से लेकर म तक के वर्ण स्पर्श व्यञ्जन हैं। ये वर्ण कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त आदि स्थानों को स्पर्श करने के बाद उच्चरित होते हैं इसीलिए **'स्पर्श'** हैं।

'कादयो मावसानाः स्पर्शाः'
क वर्ग- क् ख् ग् घ् ङ्
च वर्ग- च् छ् ज् झ् ञ्
ट वर्ग- ट् ठ् ड् ढ् ण्
त वर्ग- त् थ् द् ध् न्
प वर्ग- प् फ् ब् भ् म्

वर्ग- इनमें से 5-5 वर्णों के जो समूह बने हैं, इन समूहों का नाम है- वर्ग। ये वर्ग उच्चारणस्थान के आधार पर बने हैं।

जैसे- (i) क् ख् ग् घ् ङ् ये पाँच व्यञ्जन कण्ठ से बोले जाते हैं, अतः इन सबका एक वर्ग बनाया गया जिसका नाम रखा गया **'कवर्ग'**। कण्ठ से उच्चरित होने के कारण इन्हें **'कण्ठ्यवर्ण'** भी कहते हैं।

इसीप्रकार (ii) च् छ् ज् झ् ञ् ये पाँच व्यञ्जन तालु से बोले जाने के कारण **'तालव्यवर्ण'** कहे जाते हैं, इस वर्ग का नाम है- **'चवर्ग'**।

(iii) ट् ठ् ड् ढ् ण् - मूर्धा से उच्चारण होने के कारण **'मूर्धन्यवर्ण'** हैं। इस वर्ग का नाम है- **'टवर्ग'**।

(iv) त् थ् द् ध् न् - दन्त से उच्चारण होने के कारण **'दन्त्यवर्ण'** हैं। इस वर्ग को **'तवर्ग'** कहते हैं।

(v) प् फ् ब् भ् म् - ये पाँच व्यञ्जन ओष्ठ से बोले जाते हैं, अतः ये **'ओष्ठ्यवर्ण'** कहे जाते हैं, इस वर्ग का नाम **'पवर्ग'** है।

इसप्रकार कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग कुल **पाँच वर्ग** होते हैं, तथा प्रत्येक वर्ग के अन्तर्गत 5-5 वर्ण आते हैं अतः 5×5 = **25 वर्ण** वर्गाक्षर या वर्गीय व्यञ्जन, या स्पर्श व्यञ्जन कहे जाते हैं।

उदित् - 'कु चु टु तु पु एते उदितः'। इन्ही पाँच वर्गों का लघुनाम या दूसरा नाम कु चु टु तु पु भी है। इनमें 'उ' की इत् संज्ञा होती है, अतः ये उदित् कहलाते हैं।

संस्कृत व्याकरण में जब भी 'कु' कहा जाएगा तो उस का अर्थ होगा- कवर्ग अर्थात् क् ख् ग् घ् ङ्।
'चु' का मतलब चवर्ग अर्थात् - च् छ् ज् झ् ञ्।
'टु' का अर्थ होगा टवर्ग अर्थात् ट् ठ् ड् ढ् ण्
'तु' का अर्थ है- तवर्ग अर्थात् - त् थ् द् ध् न्।
'पु' का अर्थ है- पवर्ग अर्थात् - प् फ् ब् भ् म्।

जैसे-

(i) 'कुहोश्चुः' सूत्र में 'कु' का अर्थ 'कवर्ग' है और 'चु' का अर्थ चवर्ग है।

(ii) 'चुटू' सूत्र में 'चु' का अर्थ चवर्ग है और 'टु' का अर्थ टवर्ग है।
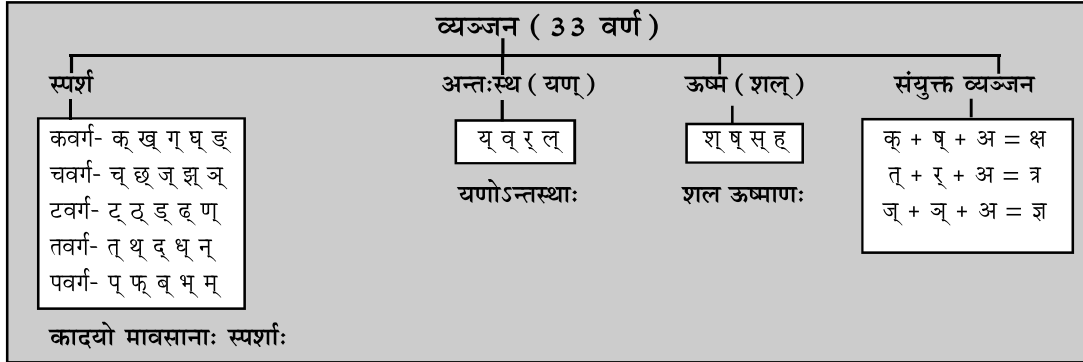
(ii) अन्तःस्थ व्यञ्जन- 'यणोऽन्तःस्थाः' यण् प्रत्याहार के अन्तर्गत आने वाले य् व् र् ल् ये चार वर्ण अन्तःस्थ व्यञ्जन कहे जाते हैं। इन्हीं वर्णों को **'अर्धस्वर'** भी कहा जाता है।

(iii) ऊष्म व्यञ्जन- 'शल ऊष्माणः' शल् प्रत्याहार के अन्तर्गत परिगणित श् ष् स् ह् ये चार वर्ण ऊष्म व्यञ्जन कहे जाते हैं।

(iv) मिश्रित या संयुक्त व्यञ्जन- दो व्यञ्जन वर्णों के मेल से जो वर्ण बनते हैं उन्हें संयुक्त या मिश्रित व्यञ्जन कहते हैं।

जैसे-　क् + ष् + अ = क्ष
　　　त् + र् + अ = त्र
　　　ज् + ञ् + अ = ज्ञ

अयोगवाह- वर्णमातृका (वर्णमाला) में पढे हुए वर्णों के अतिरिक्त चार वर्ण और भी हैं-

(i) अनुस्वार (ii) विसर्ग (iii) जिह्वामूलीय (iv) उपध्मानीय

- वर्णमाला तथा माहेश्वरसूत्रों में न पढे जाने के कारण ये अयोगवाह कहलाते हैं।

  ***अनुस्वार तथा विसर्ग-** "अं अः इत्यचः परावनुस्वारविसर्गौ" अं और अः ये अच् के बाद आने पर क्रमशः अनुस्वार और विसर्ग कहलाते हैं।
- बालकं रामं श्यामं आदि में मकार के बाद अकार के ऊपर जो बिन्दु (ं) है उसका नाम अनुस्वार है। इसका उच्चारणस्थान 'नासिका' है। **''नासिकाऽनुस्वारस्य''**
- रामः श्यामः ग्रामः आदि में मकारोत्तर अकार के बाद जो दो बिन्दु (ः) है, उसी को विसर्ग (ः) कहते हैं।
- विसर्ग का उच्चारणस्थान 'कण्ठ' है- **''अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः।''**

  *** जिह्वामूलीय-**"ᳵक, ᳵख इति कखाभ्यां प्रागर्धविसर्गसदृशो जिह्वामूलीयः"

  ᳵक, ᳵख के पहले जो आधे विसर्ग ᳵ के समान लिखा जाता है, उसे जिह्वामूलीय वर्ण कहते हैं।

यथा- बालक ᳵक्रीडति। बालक ᳵखेलति।

- इसका उच्चारण कण्ठ के भी नीचे 'जिह्वामूल' से होता है।- **''जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम्''**
- "कुप्वोः ᳵक ᳵपौ च" सूत्र से विसर्ग ही विकल्प से जिह्वामूलीय बन जाता है, नहीं तो विसर्ग भी रह सकता है।

***उपध्मानीय-** "ᳵप ᳵफ इति पफाभ्यां प्रागर्धविसर्गसदृश उपध्मानीयः"

- ᳵप ᳵफ के पहले जो आधे (ᳵ) विसर्ग के समान लिखा जाता है, उसे 'उपध्मानीय वर्ण' कहते हैं। जैसे- वृक्ष ᳵपतति। वृक्ष ᳵफलति। इसका उच्चारणस्थान ओष्ठ है। **''उपूपध्मानीयानाम् ओष्ठौ''**
- "कुप्वोः ᳵक ᳵपौ च" सूत्र से विसर्ग ही विकल्प से उपध्मानीय बन जाता है।

*** कार और इफ प्रत्यय-** "वर्णात्कारः" संस्कृत व्याकरण में वर्णों में 'कार' प्रत्यय लगाकर बोलना चाहिए।

यथा- अ + कार = अकार

क + कार = ककार, ख से खकार, ग से गकार आदि।

'र' में 'इफ' प्रत्यय (र + इफ) लगाकर 'रेफ' कहना चाहिए।

*** आनुपूर्वी या पदों का अन्तक्रम-** किसी भी शब्द में वर्ण जिस क्रम से व्यवस्थित रहते हैं; उस क्रम का नाम आनुपूर्वी होता है। जैसे 'बालक' शब्द में छह वर्ण हैं- ब् आ ल् अ क् अ।

'राम' शब्द में चार वर्ण हैं- र् आ म् अ।

- 'बालक' और 'राम' के अन्त में अकार है अतः ये अकारान्त शब्द हैं।
- इसीप्रकार हरि, कवि, रवि, ऋषि, कपि आदि इकारान्त हैं।
- भानु, गुरु, शिशु आदि उकारान्त शब्द हैं।
- पितृ, भ्रातृ, मातृ, जामातृ आदि ऋकारान्त शब्द हैं।
- राजन्, आत्मन् आदि नकारान्त हैं, मनस्, पयस्, यशस् आदि सकारान्त शब्द हैं, सरित्, जगत् आदि तकारान्त शब्द हैं।
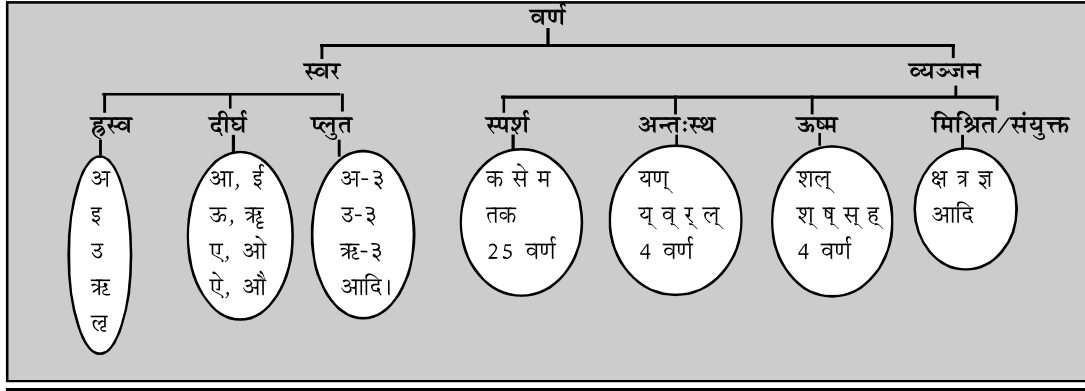
माहेश्वर सूत्र

महर्षि पाणिनि ने संस्कृत का व्याकरण बनाने की इच्छा से घोर तप करके भगवान् महेश्वर (शिव) को प्रसन्न किया। प्रसन्न होकर शिव ने नृत्य के साथ जो डमरू वादन किया उसी से महर्षि पाणिनि को ये 14 सूत्र सुनायी पड़े। भगवान् महेश्वर के डमरू से उत्पन्न होने के कारण इन्हें ''**माहेश्वर सूत्र**'' कहा जाता है।

नृत्तावसाने नटराजराजो ननाद ढक्कां नवपञ्चवारम्।
उद्धर्तुकामः सनकादिसिद्धान् एतद्विमर्शे शिवसूत्रजालम्॥

नटराजराज भगवान् शिव ने नृत्य के अवसान में सनकादि सिद्धों के उद्धार की कामना से चौदह बार डमरू बजाया जिसमें 14 शिवसूत्रों का ताना बाना निहित था।

- अइउण् ऋऌक् आदि ये चौदह सूत्र हैं इसलिए इन्हें ''**चतुर्दशसूत्र**'' कहते हैं।
- इन्हीं सूत्रों से प्रत्याहार बनाये जाते हैं, अतः इन्हें ''**प्रत्याहारसूत्र**'' भी कहते हैं।
- भगवान् शिव के डमरू से निकलकर पाणिनि को प्राप्त हुए हैं, अतः इन्हें ''**शिवसूत्र**'' या ''**माहेश्वरसूत्र**'' भी कहते हैं।
- इन सूत्रों में संस्कृत वर्णमाला है अतः इन्हें ''**वर्णसमाम्नायसूत्र**'' भी कहते हैं।

चतुर्दश माहेश्वर सूत्र

1. अइउण् 2. ऋऌक् 3. एओङ् 4. ऐऔच्
5. हयवरट् 6. लण् 7. ञमङणनम्
8. झभञ् 9. घढधष् 10. जबगडदश्
11. खफछठथचटतव् 12. कपय्
13. शषसर् 14. हल्

माहेश्वरसूत्रों के विषय में ज्ञातव्य तथ्य–

- माहेश्वरसूत्रों में सबसे पहिले स्वर हैं; उसके बाद अन्तःस्थ वर्ण य् व् र् ल् हैं। उसके बाद वर्गों के पञ्चम वर्ण, फिर चतुर्थ वर्ण, तदनन्तर तृतीयवर्ण फिर द्वितीय वर्ण तब प्रथमवर्ण, सबसे अन्त में श् ष् स् ह् ये चार ऊष्म वर्ण गिने गये हैं।
- इन चतुर्दशसूत्रों के अन्त में जो ण् क् ङ् च् आदि व्यञ्जन वर्ण हलन्त हैं उनका नाम 'इत्' है। ''**एषाम् अन्त्याः इतः**''
- इन इत्संज्ञक वर्णों का लोप हो जाता है। कुल 14 इत्संज्ञक वर्ण होते हैं। 'लण्' सूत्र का अकार भी इत्संज्ञक होने से इत्संज्ञक वर्ण 15 भी कहे जा सकते हैं। ''**लण्मध्ये तु इत्संज्ञकः**'' इत् को 'अनुबन्ध' भी कहा जाता है। अर्थात् 'अनुबन्ध' और 'इत्' पर्यायवाची हैं।
- प्रत्याहार बनाने में इत्संज्ञकवर्णों का प्रयोग किया जाता है किन्तु प्रत्याहार के अन्तर्गत वर्णों की गिनती में इन इत्संज्ञक वर्णों को नहीं गिना जाता है।
  जैसे- 'अच्' प्रत्याहार ''अइउण् ऋऌक् एओङ् ऐऔच्'' इन चार सूत्रों से बना है। यहाँ अइउण् के 'अ' से लेकर ऐऔच् के 'च्' के बीच आने वाले सभी वर्ण ''अच्'' प्रत्याहार में गिने जायेंगे किन्तु ''ण् क् ङ् और च्'' ये चार इत्संज्ञक वर्ण 'अच्' प्रत्याहार में नही गिने जायेंगे।
  अतः 'अच्' के अन्तर्गत- ''अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ'' ये 9 वर्ण आते हैं। जिसमें इत्संज्ञक वर्ण नहीं गिने गये हैं।
- माहेश्वरसूत्रों के पाँचवे सूत्र 'हयवरट्' में 'ह' वर्ण गिना गया है तथा चौदहवें सूत्र 'हल्' में भी 'ह' वर्ण गिना गया है। अतः माहेश्वरसूत्रों में हकार की दो बार गणना की गयी है।

- माहेश्वरसूत्रों में हकार का दो बार ग्रहण क्यों? 'अट्' और 'शल्' प्रत्याहार में 'ह' वर्ण को शामिल करने के लिए तथा 'अर्हेण' और 'अधुक्षत' आदि प्रयोगों की सिद्धि के लिए।
- माहेश्वरसूत्रों में 'ण्' इत्संज्ञक वर्ण दो बार आया है- एक बार अइउण् में दूसरी बार लण् में।

इत्संज्ञा करने वाला सूत्र-

- **हलन्त्यम् -** (1.3.3) उपदेशावस्था में जो अन्तिम हल् होता है, उसकी इत्संज्ञा होती है।

इत्संज्ञक वर्णों का लोप करने वाला सूत्र-

तस्य लोपः - जिस वर्ण की इत्संज्ञा होती है, उसका लोप हो जाता है। इसीलिए 'अइउण्' में जो 'ण्' है ऋऌक् में जो 'क्' है इनकी ''हलन्त्यम्'' सूत्र से इत्संज्ञा होकर ''तस्य लोपः'' सूत्र से लोप हो जाता है। अतएव प्रत्याहार वर्णों की गिनती में इन इत्संज्ञक वर्णों की गिनती नहीं की जाती।

उपदेश क्या है- ''उपदेश आद्योच्चारणम्''

पाणिनि कात्यायन एवं पतञ्जलि ने जिसका प्रथम उच्चारण या प्रथम पाठ किया, उसे व्याकरणशास्त्र में 'उपदेश' कहा जाता है। यहाँ 'अइउण् ऋऌक् आदि चौदह सूत्रों को महर्षि पाणिनि ने महेश्वर के डमरू की ध्वनि को प्रथम बार उच्चारण किया अतः ये 14 सूत्र भी 'उपदेश' कहलाये।

- भू आदि धातु, अइउण् आदि सूत्र, उणादि सूत्र, वार्तिक, लिङ्गानुशासन, आगम, प्रत्यय, और आदेश, ये उपदेश माने जाते हैं। कहा भी गया है-

  धातु-सूत्र-गणोणादि-वाक्यलिङ्गानुशासनम्।
  आगम-प्रत्ययादेशा उपदेशाः प्रकीर्तिताः॥

प्रत्याहार संज्ञा

- **प्रति + आङ् + हृ + घञ् = प्रत्याहारः**
- 'प्रत्याहार' शब्द का अर्थ है- संक्षेपीकरण।
- ''प्रत्याह्रियन्ते संक्षिप्यन्ते वर्णाः यत्र स प्रत्याहारः''
- जिनकी सहायता से कम से कम शब्दों में अधिकतम बात कही जा सके, उन्हें प्रत्याहार कहते हैं।

प्रत्याहार संज्ञा विधायक सूत्र- ''आदिरन्त्येन सहेता''

अन्त्य इत् वर्ण के साथ जो आदि वर्ण वह मध्यगामी सभी वर्णों का बोधक होता हुआ स्वयं का भी बोध कराता है। जैसे- अण् प्रत्याहार 'अइउण्' सूत्र के 'अ' से लेकर इत्संज्ञक वर्ण 'ण्' से मिलकर बना है जिसमें अ इ उ ये तीन वर्ण आते हैं।

- इसीप्रकार 'इक्' प्रत्याहार अइउण्, ऋऌक् इन दो सूत्रों से बना है। यहाँ इ से लेकर क् के बीच के सभी वर्ण इ उ ऋ ऌ इक् प्रत्याहार में गिने जाते हैं।

प्रत्याहारों की संख्या- संस्कृत व्याकरण में कुल **42 प्रत्याहार** हैं। कुछ विद्वान् 'रँ' और 'ञम्' प्रत्याहार भी मानते हैं अतः इनके अनुसार प्रत्याहार 43 अथवा 44 हो जाते हैं।

प्रत्याहारों के विषय में कुछ विशेष जानकारी

- 'अच्' प्रत्याहार में समस्त 9 स्वरवर्ण आते हैं, ये अइउण् से ऐऔच् तक के चार सूत्रों से बना है। इसीलिए स्वरों को **''अच्''** भी कहा जाता है।
- 'हल्' प्रत्याहार में समस्त 33 व्यञ्जन वर्ण आते हैं, जो हयवरट् से लेकर हल् तक के 10 सूत्रों से बना है। इसीलिए व्यञ्जनों को **''हल्''** भी कहा जाता है।
- 'झष्' प्रत्याहार में वर्गों के चौथे वर्ण (झ् भ् घ् ढ् ध्) आते हैं जो झभञ् और घढधष् इन दो सूत्रों से बना है।
- 'जश्' प्रत्याहार में वर्गों के तीसरे वर्ण (ज् ब् ग् ड् द्) आते हैं, जो 'जबगडदश्' सूत्र से बना है।
- 'चय्' प्रत्याहार में वर्गों के प्रथम वर्ण (च् ट् त् क् प्) आते हैं।
- 'शल्' प्रत्याहार में चारों ऊष्मवर्ण (श् ष् स् ह्) आते हैं। जो शषसर् और हल् इन दो सूत्रों से बना है।
- 'यण्' प्रत्याहार में चारों अन्तःस्थ वर्ण (य् व् र् ल्) आते हैं। जो हयवरट् और लण् इन दो सूत्रों से बना है।
- अइउण् ऋऌक् एओङ् ऐऔच् आदि 14 सूत्रों के अन्त में जो ण् क् ङ् च् आदि हल् वर्ण लगे हुए हैं; इनका प्रयोजन प्रत्याहार बनाना है। जैसा कि कहा गया है, **''णादयोऽणाद्यर्थाः--''**

माहेश्वर सूत्रों के इत्संज्ञक वर्णों से मिलकर बनने वाले 42 प्रत्याहार

सूत्र	इत्संज्ञकवर्ण	प्रत्याहार	प्रत्याहारों की संख्या
1. अइउण्	इसके 'ण्' से एक प्रत्याहार	अण्	1
2. ऋऌक्	इसके 'क्' से तीन प्रत्याहार	अक् इक् उक्	3
3. एओङ्	इसके 'ङ्' से एक प्रत्याहार	एङ्	1
4. ऐऔच्	इसके 'च्' से चार प्रत्याहार	अच् इच् एच् ऐच्	4
5. हयवरट्	इसके 'ट्' से एक प्रत्याहार	अट्	1
6. लण्	इसके 'ण्' से तीन प्रत्याहार	अण् इण् यण्	3
7. ञमङणनम्	इसके 'म्' से तीन प्रत्याहार	अम् यम् ङम्	3
8. झभञ्	इसके 'ञ्' से एक प्रत्याहार	यञ्	1
9. घढधष्	इसके 'ष्' से दो प्रत्याहार	भष् झष्	2
10. जबगडदश्	इसके 'श्' से छह प्रत्याहार	अश् हश् वश् जश् झश् बश्	6
11. खफछठथचटतव्	इसके 'व्' से एक प्रत्याहार	छव्	1
12. कपय्	इसके 'य्' से पाँच प्रत्याहार	यय् मय् झय् खय् चय्	5
13. शषसर्	इसके 'र्' से पाँच प्रत्याहार	यर् झर् खर् चर् शर्	5
14. हल्	इसके 'ल्' से छह प्रत्याहार	अल् हल् वल् रल् झल् शल्	6
			कुल-42

संस्कृतव्याकरण के 42 प्रत्याहार

क्र.	प्रत्याहारः	वर्णाः	कुलवर्णाः	सूत्रों में प्रत्याहार का प्रयोग
01.	**अण्**	अ, इ, उ	03 वर्ण	**उरण्** रपरः (1.1.51)
02.	**अक्**	अ, इ, उ,ऋ, ऌ	05 वर्ण	**अकः** सवर्णे दीर्घः (6.1.101)
03.	**अच्**	अ,इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ **(सम्पूर्ण स्वरवर्ण)**	09 वर्ण	**अचो**ऽन्त्यादि टि (1.1.64)
04.	**अट्**	अ,इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ, ह,य,व,र	13 वर्ण	शश्छो**ऽटि** (8.4.63)
05.	**अण्**	अ,इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ, ह,य,व,र,ल	14 वर्ण	**अणु**दित्सवर्णस्य चाऽप्रत्ययः (1.1.69)
06.	**अम्**	अ,इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ, ह,य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न	19 वर्ण	पुमः खय्य**म्**परे (8.3.6)
07.	**अश्**	अ,इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ, ह,य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न, झ,भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द	29 वर्ण	"भो भगो-अघो-अपूर्वस्य योऽशि" (8.3.17)

क्र.	प्रत्याहारः	वर्णाः	कुलवर्णाः	सूत्रों में प्रत्याहार का प्रयोग
08.	अल्	अ,इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ, ह,य,व,र,ल ञ,म,ङ,ण,न,झ,भ, घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द,ख,फ,छ,ठ, थ,च,ट,त,क,प,श,ष,स (ह) **(सम्पूर्ण वर्णमाला)**	42 वर्ण	**अलो**ऽन्त्यात्पूर्व उपधा (1.1.65)
09.	इक्	इ,उ,ऋ,ऌ	04 वर्ण	**इको** गुणवृद्धी (1.1.3)
10.	इच्	इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ	08 वर्ण	**इच** एकाचोऽम्प्रत्ययवच्च (6.3.68)
11.	इण्	इ,उ,ऋ,ऌ,ए,ओ,ऐ,औ, ह,य,व,र,ल	13 वर्ण	**इण्**कोः (8.3.57)
12.	उक्	उ,ऋ,ऌ	03 वर्ण	**उगि**तश्च (4.1.6)
13.	एङ्	ए,ओ **(गुणसंज्ञकवर्ण)**	02 वर्ण	**एङि** पररूपम् (6.1.94)
14.	एच्	ए,ओ,ऐ,औ	04 वर्ण	**एचो**ऽयवायावः (6.1.78)
15.	ऐच्	ऐ,औ **(वृद्धिसंज्ञकवर्ण)**	02 वर्ण	वृद्धिरा**दैच्** (1.1.1)
16.	हश्	ह,य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न, झ,भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द	20 वर्ण	**हशि** च (6.1.114)
17.	हल्	ह,य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न, झ,भ,घ,ढ, ध,ज,ब,ग,ड,द, ख,फ,छ,ठ,थ,च,ट, त,क, प,श,ष,स, (ह) **(सम्पूर्ण व्यञ्जनवर्ण)**	33 वर्ण	**हलो**ऽनन्तराः संयोगः (1.1.7)
18.	यण्	य,व,र,ल, **(अन्तःस्थवर्ण)**	04 वर्ण	इको **यण**चि (6.1.77)
19.	यम्	य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न	09 वर्ण	हलो **यमां** यमि लोपः (8.4.64)
20.	यञ्	य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न,झ,भ	11 वर्ण	अतो दीर्घो **यञि (** 7.3.101)
21.	यय्	य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न,झ, भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द,ख, फ,छ,ठ,थ,च,ट,त,क,प	29 वर्ण	अनुस्वारस्य **ययि** परसवर्णः (8.4.58)
22.	यर्	य,व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न,झ, भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द,ख, फ,छ,ठ,थ,च,ट,त,क,प,श,ष,स	32 वर्ण	**यरो**ऽनुनासिकेऽनुनासिको वा (8.4.45)
23.	वश्	व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न,झ,भ, घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द	18 वर्ण	नेड् **वशि** कृति (7.2.8)
24.	वल्	व,र,ल,ञ,म,ङ,ण,न,झ,भ, घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द,ख,फ,छ, ठ,थ,च,ट,त,क,प,श,ष,स,ह	32 वर्ण	लोपो व्यो**र्वलि (** 6.1.66)

क्र.	प्रत्याहार:	वर्णा:	कुलवर्णा:	सूत्रों में प्रत्याहार का प्रयोग
25.	रल्	र,ल,ञ,म,ङ,ण,न,झ,भ,घ,ढ, ध,ज,ब,ग,ड,द,ख,फ,छ,ठ, थ,च,ट,त,क,प,श,ष,स,ह	31 वर्ण	"**रलो** व्युपधाद्धलादेः सँश्च" (1.2.26)
26.	मय्	म,ङ,ण,न,झ,भ,घ,ढ,ध, ज,ब,ग,ड,द,ख,फ,छ,ठ, थ,च,ट,त,क,प	24 वर्ण	**मय** उञो वो वा (8.3.33)
27.	ङम्	ङ,ण,न	03 वर्ण	**ङमो** ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम् (8.3.32)
28.	झष्	झ,भ,घ,ढ,ध **(वर्गों के चतुर्थ वर्ण)**	05 वर्ण	एकाचो बशो भष् (8.2.37) **झष**न्तस्य स्ध्वोः
29.	झश्	झ,भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द	10 वर्ण	झलां जश् **झशि (** 8.4.53)
30.	झय्	झ,भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द, ख,फ,छ,ठ,थ,च,ट,त,क,प	20 वर्ण	**झयो** होऽन्यतरस्याम् (8.4.62)
31.	झर्	झ,भ,ध,ढ,ध,ज,ब,ग,ड,द, ख,फ,छ,ठ,थ,च,ट,त,क, प,श,ष,स,	23 वर्ण	**झरो** झरि सवर्णे (8.4.65)
32.	झल्	झ,भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ड, द,ख,फ,छ,ठ,थ,च,ट, त,क,प,श,ष,स,ह	24 वर्ण	**झलो** झलि (8.2.26)
33.	भष्	भ,घ,ढ,ध	04 वर्ण	एकाचो बशो **भष्** झषन्तस्य स्ध्वोः (8.2.37)
34.	जश्	ज,ब,ग,ड,द **(वर्गों के तृतीय अक्षर)**	05 वर्ण	झलां **जशो**ऽन्ते (8.2.39)
35.	बश्	ब,ग,ड,द	04 वर्ण	एकाचो **बशो** भष् झषन्तस्य स्ध्वोः (8.2.37)
36.	खय्	ख,फ,छ,ठ,थ,च,ट,त,क,प **(वर्गों के द्वितीय एवं प्रथम वर्ण)**	10 वर्ण	पुमः **खय्य**म्परे (8.3.6)
37.	खर्	ख,फ,छ,ठ,थ,च, ट,त,क,प,श,ष,स	13 वर्ण	**खरि** च (8.4.54)
38.	छव्	छ,ठ,थ,च,ट,त	06 वर्ण	नश्**छव्य**प्रशान् (8.3.7)
39.	चय्	च,ट,त,क,प **(वर्गों के प्रथम अक्षर)**	05 वर्ण	**चयोः द्वितीयाः शरि (** 8.4.47) पौष्करशादेः वार्त्तिक-
40.	चर्	च,ट,त,क,प,श,ष,स	08 वर्ण	अभ्यासे **चर्च (** 8.4.54)
41.	शर्	श,ष,स	03 वर्ण	वा **शरि (** 8.3.36)
42.	शल्	श,ष,स,ह **(ऊष्मवर्ण)**	04 वर्ण	"**शल** इगुपधादनिटः क्सः" (3.1.45)
*	रँ	र,ल	02 वर्ण	उरण् **रपरः** (1.1.51)
*	ञम्	ञ,म,ङ,ण,न **(वर्गों के पञ्चमवर्ण)**	05 वर्ण	**ञमन्ताड्डः** (उणादि.1.114)

वर्णों का उच्चारण स्थान

उच्चारणस्थान- मुख के जिस भाग से जिस वर्ण का उच्चारण किया जाता है, वही उस वर्ण का उच्चारण स्थान कहा जाता है।

क्र.	सूत्रम्	उच्चारित वर्ण (वर्णों के नाम)	उच्चारण स्थान
1.	**अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः**	अ, आ (18 प्रकार) कु = कवर्ग = क् ख् ग् घ् ङ् ह् और विसर्ग (ः) (कण्ठ्य वर्ण)	कण्ठ
2.	**इचुयशानां तालु**	इ, ई (18 प्रकार) चु अर्थात् चवर्ग = च् छ् ज् झ् ञ् य् और श् (तालव्य वर्ण)	तालु
3.	**ऋटुरषाणां मूर्धा**	ऋ, ॠ (18 प्रकार) टु अर्थात् टवर्ग = ट् ठ् ड् ढ् ण् र् और ष् (मूर्धन्यवर्ण)	मूर्धा
4.	**लृतुलसानां दन्ताः**	लृ (12 प्रकार) तु अर्थात् तवर्ग = त् थ् द् ध् न् ल् और स् (दन्त्यवर्ण)	दन्त
5.	**उपूपध्मानीयानाम् ओष्ठौ**	उ ऊ (18 प्रकार) पु अर्थात् पवर्ग = प् फ् ब् भ् म् उपध्मानीय ᳵप ᳵफ (ओष्ठ्य वर्ण)	ओष्ठौ
6.	**ञमङणनानां नासिका च**	ञ् म् ङ् ण् न् (अनुनासिक वर्ण)	नासिका भी
7.	**एदैतोः कण्ठतालु**	ए, ऐ (कण्ठतालव्य वर्ण)	कण्ठतालु
8.	**ओदौतोः कण्ठोष्ठम्**	ओ, औ (कण्ठोष्ठ्य वर्ण)	कण्ठ ओष्ठ
9.	**वकारस्य दन्तोष्ठम्**	व (दन्तोष्ठ्य वर्ण)	दन्तोष्ठ
10.	**जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम्**	ᳵक ᳵख (जिह्वामूलीय वर्ण)	जिह्वामूलम्
11.	**नासिकाऽनुस्वारस्य**	(ं) अनुस्वार (नासिक्य वर्ण)	नासिका

➢ उच्चारणस्थान और प्रयत्न को अष्टाध्यायी सूत्रों में नहीं बताया गया है अपितु पाणिनीय शिक्षा आदि ग्रन्थों में उच्चारणस्थान आठ प्रकार के माने गये हैं-

अष्टौ स्थानानि वर्णानाम् उरः कण्ठः शिरस्तथा।

जिह्वामूलं च दन्ताश्च नासिकोष्ठौ च तालु च।। (पाणिनीय शिक्षा -13)

वर्णों के उरः, कण्ठ, मूर्धा, जिह्वामूल, दन्त, नासिका, ओष्ठ और तालु ये आठ उच्चारण स्थान हैं।

❑❑

वर्णों का आभ्यन्तर एवं बाह्य प्रयत्न

प्रयत्न- वर्णों के उच्चारण करने की चेष्टा को प्रयत्न कहते हैं। प्रयत्न दो प्रकार का होता है-

(i) आभ्यन्तर प्रयत्न (ii) बाह्य प्रयत्न

''यत्नो द्विधा आभ्यन्तरो बाह्यश्च''

(i) आभ्यन्तर प्रयत्न- 'आभ्यन्तर' का अर्थ है भीतर/आभ्यन्तर प्रयत्न से तात्पर्य उस चेष्टा से है, जो वर्णों के उच्चारण के पूर्व मुख के अन्दर होती है।

आभ्यन्तर प्रयत्न पाँच प्रकार का होता है-

1. **स्पृष्ट-** इस आभ्यन्तर प्रयत्न में जिह्वा-कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त आदि उच्चारण स्थानों को स्पर्श करती है, इसलिए इन्हें **'स्पर्श वर्ण'** कहते हैं। इसमें क से म तक के **25 वर्ण** आते हैं। **''स्पृष्टं प्रयत्नं स्पर्शानाम्''**
2. **ईषत् स्पृष्ट-** ईषत् का अर्थ है- थोडा स्पृष्ट का अर्थ है- छुआ गया।
   इस प्रयत्न में जिह्वा उच्चारण स्थान को थोडा स्पर्श करती है। इसमें य् व् र् ल् (यण्) अन्तःस्थ वर्ण आते हैं। **''ईषत्स्पृष्टम् अन्तःस्थानाम्''**
3. **विवृत-** विवृत का अर्थ है- खुला हुआ। इनके उच्चारण में मुँह खोलना पड़ता है। यह प्रयत्न स्वरों का है। **''विवृतं स्वराणाम्''**

जैसे- अ, इ, उ, ऋ, ऌ ए ओ ऐ औ सभी स्वर विवृत हैं।

4. **ईषत् विवृत-** ईषत् का अर्थ है- थोडा विवृत का अर्थ है- खुला हुआ। इसमें जिह्वा को कम उठाना पडता है। शल् अर्थात् श् ष् स् ह् इन चार ऊष्म वर्णों का प्रयत्न ईषत्विवृत होता है।

''ईषत्विवृतम् ऊष्मणाम्''

5. **संवृत-** संवृत का अर्थ है- ढका हुआ या बन्द। इसमें वायु का मार्ग बन्द रहता है। प्रयोग करने अर्थात् उच्चारणावस्था में ह्रस्व 'अ' का प्रयत्न संवृत होता है।

''ह्रस्वस्य अवर्णस्य प्रयोगे संवृतम्''

किन्तु शास्त्रीय (साधनिका या प्रयोगसिद्धि) अवस्था में 'अ का प्रयत्न अन्य स्वरों की भाँति विवृत ही होता है-

''प्रक्रियादशायां तु विवृतमेव''
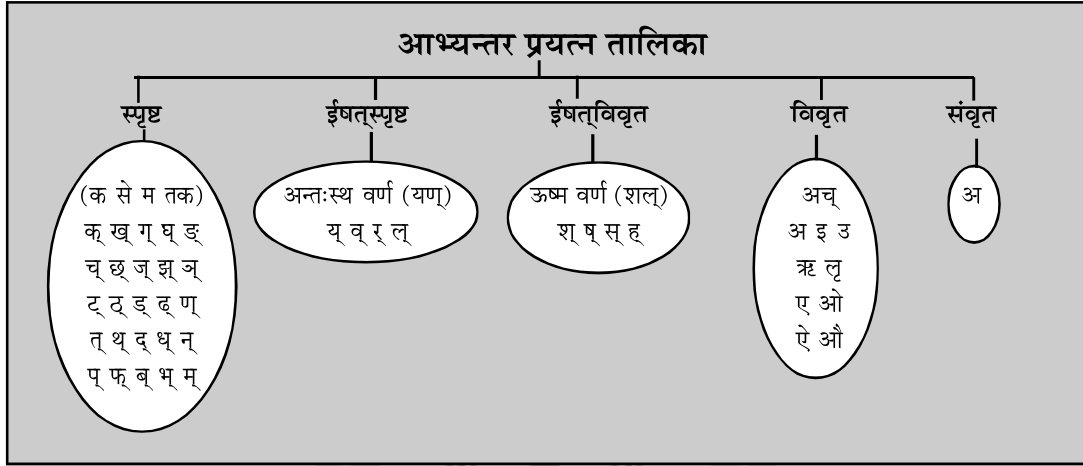
बाह्य प्रयत्न- मुख से जब वर्ण बाहर निकलने लगते हैं उस समय उच्चारण की जो चेष्टा होती है, उसे बाह्य प्रयत्न कहते हैं। बाह्य प्रयत्न 11 प्रकार का होता है- **''बाह्यप्रयत्नस्तु एकादशधा''**

1. विवार 2. संवार 3. श्वास 4. नाद 5. घोष 6. अघोष 7. अल्पप्राण 8. महाप्राण 9. उदात्त 10. अनुदात्त 11. स्वरित।

विवार श्वास अघोष- खर् प्रत्याहार (ख् फ् छ् ठ् थ् च् ट् त् क् प् श् ष् स्) के अन्तर्गत आने वाले वर्णों का बाह्यप्रयत्न विवार, श्वास और अघोष होगा। **''खरो विवाराः श्वासा अघोषाश्च''**

विवार श्वास अघोष
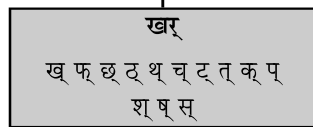
संवार नाद घोष- हश् प्रत्याहार (ह् य् व् र् ल् ञ् म् ङ् ण् न् झ् भ् घ् ढ् ध् ज् ब् ग् ड् द्) के अन्तर्गत आने वाले सभी व्यञ्जनवर्णों का बाह्यप्रयत्न संवार नाद घोष होगा। - **''हशः संवारा नादा घोषाश्च''** इसे संक्षेप में ''संनाघो हशः'' भी कह सकते हैं।

संवार नाद घोष

हश्
ह् य् व् र् ल् ञ् म् ङ् ण् न् झ् भ्
घ् ढ् ध् ज् ब् ग् ड् द्

अल्पप्राण- अल्प का अर्थ है- थोड़ा। 'प्राण' का अर्थ होता है- वायु। जिस वर्ण से बोलने के लिए भीतर से कम वायु फेंकना पड़े उसे 'अल्पप्राण' कहते हैं।

- वर्गों के प्रथम, तृतीय और पञ्चम वर्ण और यण् (य् व् र् ल्) का बाह्यप्रयत्न अल्पप्राण होगा।

''वर्गाणां प्रथम-तृतीय-पञ्चमा यणश्च अल्पप्राणाः''

अल्पप्राण वर्ण
कवर्ग - क ग ङ
चवर्ग - च ज ञ
टवर्ग - ट ड ण
तवर्ग - त द न
पवर्ग - प ब म
यण् - य व र ल

- इसप्रकार 19 व्यञ्जनवर्णों का बाह्यप्रयत्न अल्पप्राण होगा।

महाप्राण-

महा का अर्थ है- अधिक या ज्यादा, प्राण का अर्थ हुआ-वायु। जिस वर्ण को बोलने के लिए भीतर से अधिक वायु फेंकना पड़े उसे महाप्राण कहते हैं।

महाप्राण- वर्गों के द्वितीय, चतुर्थ और शल् (श् ष् स् ह्) वर्णों का बाह्यप्रयत्न महाप्राण होगा।

''वर्गाणां द्वितीय-चतुर्थौ शलश्च-महाप्राणाः''

महाप्राण वर्ण
कवर्ग - ख घ
चवर्ग - छ झ
टवर्ग - ठ ढ
तवर्ग - थ ध
पवर्ग - फ भ
शल् - श ष स ह

इस प्रकार कुल 14 व्यञ्जनवर्णों का बाह्यप्रयत्न महाप्राण होगा।

ध्यान दें- किसी भी वर्ण का चार बाह्यप्रयत्न होगा। यदि वर्ण हश् प्रत्याहार का हैं तो संवार नाद घोष के साथ-साथ अल्पप्राण और महाप्राण में से कोई एक होगा और यदि वर्ण खर् प्रत्याहार का है तो विवार श्वास अघोष के साथ-साथ अल्पप्राण और महाप्राण में से कोई एक होगा। जैसे-

ह- संवार नाद घोष महाप्राण **ख-** विवार श्वास अघोष महाप्राण

य- संवार नाद घोष अल्पप्राण **क-** विवार श्वास अघोष अल्पप्राण

उदात्त- उच्चैरुदात्तः (1.2.29) मुख के भीतर जो कण्ठ तालु आदि उच्चारण स्थान हैं उनमें ऊर्ध्व भाग से बोले जाने वाले अच् (स्वर) की उदात्त संज्ञा होगी।

अनुदात्त- नीचैरनुदात्तः (1.2.30) कण्ठ तालु आदि उच्चारणस्थानों के निम्न (अधोभाग) भाग से उच्चरित अच् (स्वर) की अनुदात्त संज्ञा होती है।

स्वरित- समाहारः स्वरितः (1.2.31) जहाँ उदात्त और अनुदात्त दोनों का समाहार होता है, उस अच् (स्वर) की स्वरित संज्ञा होगी।

- उदात्त अनुदात्त और स्वरित प्रयत्न केवल स्वरों के होते हैं।
- उदात्त अनुदात्त और स्वरित को समझने के लिए वैदिकग्रन्थों में विशेष चिह्नों का प्रयोग किया गया है-
- अनुदात्त अक्षर के नीचे पड़ी लाइन, स्वरित के ऊपर खड़ी लाइन होती है जबकि उदात्त के लिए कोई चिह्न नहीं होता।

जैसे- **स नः॑ पि॒तेव॑ सू॒नवे, अग्ने॑ सूपाय॒नो भ॑व।**
(ऋग्वेद 1.1.9)

बाह्यप्रयत्न बोधक तालिका

विवार श्वास अघोष	संवार नाद घोष	अल्पप्राण	महाप्राण	उदात्त अनुदात्त स्वरित
खर्	**हश्**	**वर्गों के प्रथम तृतीय और पञ्चम वर्ण और यण्**	**वर्गों के द्वितीय चतुर्थ वर्ण और शल्**	अ इ उ
क ख	ग घ ङ			ऋ ऌ
च छ	ज झ ञ			ए ओ
ट ठ	ड ढ ण	क ग ङ	ख घ	ऐ औ
त थ	द ध न	च ज ञ	छ झ	
प फ	ब भ म	ट ड ण	ठ ढ	
श ष स	ह य व र ल	त द न	थ ध	
		प ब म	फ भ	
		य व र ल	श ष स ह	

❑❑❑

व्याकरणशास्त्र की प्रमुख संज्ञायें एवं परिभाषायें

1. वृद्धि संज्ञा

सूत्र- वृद्धिरादैच् (1.1.1)

पदच्छेद- वृद्धिः आत् ऐच्
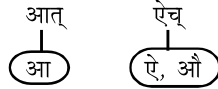
सूत्रार्थ- आ, ऐ, औ- इन तीन वर्णों की **वृद्धिसंज्ञा** होती है। जैसे- त्यागः में **आ**, सदैव में **ऐ**, महौषधि में **औ** वृद्धिसंज्ञक वर्ण हैं।

2. गुण संज्ञा

सूत्र- अदेङ् गुणः (1.1.2)

पदच्छेद- अत् एङ् गुणः

अ   ए ओ
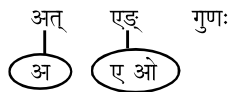
सूत्रार्थ- अ, ए, ओ- इन तीन वर्णों की **गुणसंज्ञा** होती है।

उदाहरण- रमेशः में 'ए', सूर्योदयः में 'ओ', महर्षि में 'अ' (र्) गुणसंज्ञक वर्ण हैं।

3. संयोग संज्ञा

सूत्र- हलोऽनन्तराः संयोगः (1.1.7)

पदच्छेद- हलः अनन्तराः संयोगः

सूत्रार्थ- ऐसे दो या दो से अधिक व्यञ्जन जिनके बीच में कोई स्वर न आया हो, उसे **संयोग** कहते हैं।

उदाहरण- (i) पुष्प में ष् + प् का संयोग है।
(ii) अग्नि में ग् + न् का संयोग है।
(iii) राष्ट्र में ष् + ट् + र् का संयोग है।
(iv) बुद्धि में द् + ध् का संयोग है।

4. अनुनासिक संज्ञा

सूत्र- मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः (1.1.8)

पदच्छेद- मुख-नासिका-वचनः अनुनासिकः

सूत्रार्थ- जो वर्ण मुख तथा नासिका दोनों की सहायता से बोले जाते हों, उसकी **अनुनासिक संज्ञा** होती है।

उदाहरण- अँ, ङ्, ञ्, ण्, न्, म् आदि वर्ण अनुनासिक हैं।

नोट- जो वर्ण नासिका के साथ नहीं बोले जाते वे अननुनासिक या निरनुनासिक कहे जाते हैं। जैसे- क, ख, ग, घ, च, छ, ज आदि।

5. सवर्णसंज्ञा

सूत्र- ''तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्'' (1.1.9)

पदच्छेद- तुल्य-आस्य-प्रयत्नं सवर्णम्

सूत्रार्थ- जिन दो या दो से अधिक वर्णों के कण्ठ तालु आदि उच्चारणस्थान तथा आभ्यन्तरप्रयत्न दोनों समान हों, वे परस्पर सवर्णी (सवर्णसंज्ञक) होते हैं।

उदाहरण- अ-आ, इ-ई, उ-ऊ आदि परस्पर सवर्णी हैं।
रमा + अपि = रमापि।   मुनि + ईशः = मुनीशः
भानु + उदयः = भानूदयः   पितृ + ऋणम् = पितॄणम्

- उच्चारणस्थान और प्रयत्न का साम्य होने पर भी स्वर और व्यञ्जन की परस्पर सवर्णसंज्ञा नहीं होती है- ''नाज्झलौ''

यथा- दण्ड हस्तः, दधि शीतम्।

- **''ऋलृवर्णयोः मिथः सावर्ण्यं वाच्यम्''** इस वार्तिक से ऋ और लृ वर्ण आपस में सवर्णी हैं।

6. प्रगृह्य संज्ञा

सूत्र- ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम् (1.1.11)

पदच्छेद- ईत् ऊत् एत् द्विवचनं प्रगृह्यम्

सूत्रार्थ- द्विवचनान्त ई ऊ ए की **प्रगृह्यसंज्ञा** होती है।

उदाहरण- (i) हरी एतौ (ii) विष्णू इमौ (iii) गङ्गे अमू (iv) अग्नी इति (v) वायू इति (vi) माले इति (vii) पचेते इति

7. 'घ' संज्ञा

सूत्र- तरप्तमपौ घः (1.1.21)

पदच्छेद- तरप् - तमपौ घः

सूत्रार्थ- तरप् और तमप् - ये दो प्रत्यय **'घ' संज्ञक** होते हैं।

उदाहरण- कुमारितरा, कुमारितमा

8. निष्ठा संज्ञा

सूत्र- क्तक्तवतू निष्ठा (1.1.25)

पदच्छेद- क्त - क्तवतू निष्ठा

सूत्रार्थ- क्त तथा क्तवतु दोनों प्रत्ययों की **निष्ठा संज्ञा** होती है।

उदाहरण- भुक्तः, भुक्तवान्, पठितः, पठितवान् आदि।

9. सर्वनामसंज्ञा

सूत्र- सर्वादीनि सर्वनामानि (1.1.26)

पदच्छेद- सर्व-आदीनि सर्वनामानि

सूत्रार्थ- सर्व, विश्व, यत् , तद्, एतत्, इदम्, अदस्, अस्मद्, युष्मद् आदि शब्दों की **सर्वनामसंज्ञा** होती है।

10. अव्यय संज्ञा

सूत्र- स्वरादिनिपातमव्ययम् (1.1.36)

पदच्छेद- स्वरादि-निपातम् अव्ययम्

सूत्रार्थ- स्वरादिगण में पठित शब्दों की तथा निपात शब्दों की अव्यय संज्ञा होती है।

उदाहरण- स्वरादि- स्वर्, प्रातर् इत्यादि

निपात- च, वा, ह इत्यादि

- क्त्वा, ल्यप्, तुमुन् प्रत्ययान्त पद भी अव्ययसंज्ञक होते हैं- **यथा-** पठित्वा, प्रपठ्य, पठितुम् आदि।
- कुछ तद्धित प्रत्ययान्त शब्दों की भी अव्ययसंज्ञा होती है। जैसे- ततः, तत्र, तदा, विना आदि।
- अव्ययीभाव समास की अव्ययसंज्ञा होती है। जैसे- अधिहरि, अध्यात्मम्, उपगङ्गम्, यथाशक्ति आदि।

11. विभाषा संज्ञा

सूत्र- न वेति विभाषा (1.1.43)

पदच्छेद- न वा इति विभाषा

सूत्रार्थ- न का अर्थ है- निषेध। 'वा' का अर्थ है- विकल्प। निषेध तथा विकल्प इन दो अर्थों की **विभाषा संज्ञा** होती है।

12. सम्प्रसारण संज्ञा

सूत्र- इग्यणः सम्प्रसारणम् (1.1.44)

पदच्छेद- इक् यणः सम्प्रसारणम्

सूत्रार्थ- यण् के स्थान पर होने वाले इक् की **सम्प्रसारण संज्ञा** होती है।

यण् -	य्	व्	र्	ल्
इक् -	इ	उ	ऋ	ऌ

उदाहरण- (i) यज् + क्त = इष्टः

(ii) वप् + क्त = उप्तः

13. टि संज्ञा

सूत्र- अचोऽन्त्यादि टि (1.1.63)

पदच्छेद- अचः अन्त्य आदि टि

सूत्रार्थ- अचों के मध्य में जो अन्तिम अच् होता है, वह आदि में हो जिसके उस वर्णसमुदाय की **टि संज्ञा** होती है।

व्याख्या- किसी शब्द में जो अन्तिम स्वर होगा वही टिसंज्ञक वर्ण होगा, उस अन्तिम स्वर के बाद जो व्यञ्जन वर्ण होंगे वे भी टिसंज्ञक होंगे।

जैसे-

(i) मनस् = म् अ न् अ स्
यहाँ अन्तिम स्वर है 'नकार' में विद्यमान अ । 'अ' के बाद 'स्' व्यञ्जन वर्ण भी टिसंज्ञा में गिना जाएगा अतः 'मनस्' में **'अस्'** की टिसंज्ञा होगी।

(ii) राजन् में **'अन्'** इस वर्णसमुदाय की टिसंज्ञा होगी।

(iii) 'राम' में **'अ'** टिसंज्ञक वर्ण है। क्योंकि यहाँ अन्तिम स्वर अकार के बाद कोई व्यञ्जन वर्ण नहीं है।

(iv) 'दधि' में **'इ'** टिसंज्ञक वर्ण है।

नोट-

(i) अन्तिम स्वर तथा उसके बाद आने वाले स्वर रहित व्यञ्जन वर्ण टिसंज्ञक होंगे। जैसे- 'आत्मन्' में अन्।

(ii) यदि अन्तिम स्वर के बाद व्यञ्जन वर्ण नहीं होगा तो केवल शब्द का अन्तिम स्वर ही टिसंज्ञक होगा। जैसे- दधि में टिसंज्ञक वर्ण हैं- **'इ'**।

14. उपधा संज्ञा

सूत्र- अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा (1.1.64)

पदच्छेद- अलः अन्त्यात् पूर्वः उपधा

सूत्रार्थ- अन्तिम वर्ण से पूर्व में रहने वाले वर्ण की **उपधा संज्ञा** होती है।

व्याख्या- किसी शब्द या धातु में जो अन्त्य वर्ण होगा, उसके ठीक पहले वाले वर्ण की उपधा संज्ञा होती है।

जैसे-

(i) राम- र् आ म् अ - यहाँ अन्तिम वर्ण है 'अ' तो अकार के ठीक पहले वाले वर्ण 'म्' की उपधा संज्ञा होगी।

(ii) 'गम्' में अन्तिम वर्ण मकार के पूर्व 'अकार' की उपधा संज्ञा होगी।

(iii) इसीप्रकार भिद् में 'इ' की, मुच् में 'उ' की, वृध् में 'ऋ' की उपधा संज्ञा होगी।

नोट- Second Last वर्ण उपधासंज्ञक होगा। वह वर्ण स्वर भी हो सकता है और व्यञ्जन भी।

15. नदी संज्ञा

सूत्र- यू स्त्र्याख्यौ नदी (1.4.3)

पदच्छेद- यू स्त्री आख्यौ नदी

सूत्रार्थ- 'यू' = (ई + ऊ) का अर्थ है ईकारान्त और ऊकारान्त

- **'स्त्र्याख्यौ'** का अर्थ है- नित्य स्त्रीलिङ्ग शब्द

इसप्रकार ईकारान्त तथा ऊकारान्त नित्यस्त्रीलिङ्ग शब्दों की नदी संज्ञा होती है।

उदाहरण- नदी, गौरी, वधू आदि नदीसंज्ञक पद हैं।

16. घि संज्ञा

सूत्र- शेषो घ्यसखि (1.4.7)

पदच्छेद- शेषः घि असखि

सूत्रार्थ- जिनकी नदी संज्ञा नहीं है, ऐसे ह्रस्व इकारान्त और ह्रस्व उकारान्त शब्दों की **घि संज्ञा** होती है। 'सखि' शब्द को छोड़कर।

उदाहरण- हरिः, भानुः, वारि, मधु आदि घिसंज्ञक हैं।

नोट- (i) 'पति' शब्द समास होने पर ही घिसंज्ञक होता है- जैसे- भूपतिः, सीतापतिः आदि। **'पतिः समास एव'**

17. पद संज्ञा

सूत्र- सुप्तिङन्तं पदम् (1.4.14)

पदच्छेद- सुप् तिङ् अन्तम् पदम्

सूत्रार्थ- सुबन्त (सुप् अन्त वाला) तथा तिङन्त (तिङ् अन्त वाला) शब्द की **पद संज्ञा** होती है।

व्याख्या-

(i) प्रातिपदिकों में प्रथमा से सप्तमी तक सु औ जस् आदि सुप् विभक्तियाँ लगाकर जो रामः, रामौ, रामाः आदि शब्दरूप बनते हैं, वे **सुबन्त पद** कहलाते हैं।

(ii) धातुओं से विभिन्न लकारों में तिप् तस् झि तथा त आताम् झ आदि 18 तिङ् प्रत्यय लगाकर जो पठति पठतः पठन्ति आदि धातुरूप बनते हैं, वे **तिङन्त पद** कहलाते हैं।

नोट- पद दो प्रकार के होते हैं-

(i) सुबन्त पद (शब्दरूप) रामः, हरिः, गुरुः आदि।

(ii) तिङन्त पद (धातुरूप) पठति, लभते, जानाति आदि।

18. संहिता संज्ञा

सूत्र- परः सन्निकर्षः संहिता (1.4.108)

पदच्छेद- परः सन्निकर्षः संहिता

सूत्रार्थ- वर्णों के अत्यधिक सामीप्य की **संहिता संज्ञा** होती है।

उदाहरण- मधु + अरिः = मध्वरिः (उ + अ)
रमा + ईशः = रमेशः (आ + ई)

19. सत् संज्ञा

सूत्र- तौ सत् (3.2.127)

सूत्रार्थ- शतृ एवं शानच् - इनकी **सत् संज्ञा** होती है।

20. प्रातिपदिक संज्ञा

सूत्र- अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् (1.2.45)

पदच्छेद- अर्थवत् अधातुः अप्रत्ययः प्रातिपदिकम्

सूत्रार्थ- धातुरहित, प्रत्ययान्तरहित सार्थक शब्दस्वरूप की प्रातिपदिक संज्ञा होती है।

उदाहरण- राम, कृष्ण, लता आदि।

नोट- कृत्तद्धितसमासाश्च (1.2.46) कृत् प्रत्ययान्त, तद्धितप्रत्ययान्त तथा समास भी प्रातिपदिक संज्ञक होते हैं।

जैसे- कारकः (कृत्), शालीयः (तद्धित), राजपुरुषः (समास) आदि।

21. प्रत्ययसंज्ञा

प्रत्यय- धातु और प्रातिपदिक (शब्द) के बाद जो जुड़ते हैं, उनकी प्रत्यय संज्ञा होती है।

यथा-

(i) भवति में 'भू' धातु है 'तिप्' प्रत्यय है।

(ii) पाठकः में पठ् धातु है 'ण्वुल्' प्रत्यय है।

(iii) रामस्य में राम प्रातिपदिक है 'ङस्' प्रत्यय है।

➢ धातु के अन्त में लगने वाले प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं-

1. **कृत् प्रत्यय -** क्त, क्तवतु, तुमुन् आदि।
2. **तिङ् प्रत्यय -** तिप्, तस्, झि आदि 18 प्रत्यय।

➢ प्रातिपदिक (शब्दों) से लगने वाले प्रत्यय हैं-

1. **सुप् प्रत्यय -** सु औ जस् आदि 21 प्रत्यय।
2. **स्त्रीप्रत्यय -** टाप्, ङीप्, ङीष् आदि।
3. **तद्धितप्रत्यय -** मतुप्, अण्, इनि आदि।

कृत् प्रत्यय- कृत् प्रत्यय धातु के अन्त में लगते हैं, और वे दो प्रकार के शब्द बनाते हैं।

1. अव्यय- क्त्वा, ल्यप्, तुमुन् आदि।

2. विशेषण- तव्यत्, अनीयर्, यत्, ण्यत्, क्यप्, शतृ, शानच्, क्त, क्तवतु आदि।

उदाहरण- पठ् + क्त = पठितः, पठ् + अनीयर् = पठनीयम्

तिङ् प्रत्यय- दसों लकारों के प्रत्ययों को तिङ्प्रत्यय कहा जाता है। ये दो प्रकार के हैं- परस्मैपदी और आत्मनेपदी।

परस्मैपदी तिङ् प्रत्यय- (9)

प्रथम पुरुष	तिप्	तस्	झि
मध्यम पुरुष	सिप्	थस्	थ
उत्तम पुरुष	मिप्	वस्	मस्

आत्मनेपदी तिङ् प्रत्यय- (9)

प्रथम पुरुष	त	आताम्	झ
मध्यम पुरुष	थास्	आथाम्	ध्वम्
उत्तम पुरुष	इट्	वहि	महिङ्

- इस प्रकार ये 18 प्रत्यय तिङ् कहलाते हैं। तिप् के 'ति' से लेकर महिङ् के 'ङ्' तक 'तिङ्' कहा गया।

सुप् प्रत्यय- सुप् प्रत्यय प्रातिपदिक से जुड़कर पद बनाते हैं। जैसे- 'राम' प्रातिपदिक से 'सु' लगेगा तो 'रामः' यह पद बनेगा।

- सुप् प्रत्यय 21 होते हैं।

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सु	औ	जस्
द्वितीया	अम्	औट्	शस्
तृतीया	टा	भ्याम्	भिस्
चतुर्थी	ङे	भ्याम्	भ्यस्
पञ्चमी	ङसि	भ्याम्	भ्यस्
षष्ठी	ङस्	ओस्	आम्
सप्तमी	ङि	ओस्	सुप्

स्त्रीप्रत्यय- पुंलिङ्ग शब्द को स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए जिन प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें स्त्रीप्रत्यय कहा जाता है।
जैसे- टाप्, डाप्, चाप्, ङीप्, ङीष्, ङीन्, ऊङ्, ति आदि।
उदाहरण-

अज + टाप् = अजा
छात्र + टाप् = छात्रा
राजन् + ङीप् = राज्ञी
कुमार + ङीप् = कुमारी
नर्तक + ङीष् = नर्तकी
गौर + ङीष् = गौरी
नृ + ङीन् = नारी
युवन् + ति = युवतिः आदि।

तद्धित प्रत्यय- शब्द के अन्त में लगने वाले प्रत्यय तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

यथा- मतुप्, इनि, त्व, तल्, ष्यञ्, तसिल् आदि।

उदाहरण- बुद्धि + मतुप् = बुद्धिमत् (बुद्धिमान्)
महत् + त्व = महत्त्वम्

22. स्थानी और आदेश

किसी वर्ण को या शब्द को हटाकर जब उसकी जगह, कोई दूसरा वर्ण या शब्द आकर बैठ जाता है, तब जिसे हटाया जाता है, उसे **'स्थानी'** कहते हैं।

- जो स्थानी की जगह आकर बैठ जाता है, उसे आदेश कहते हैं। व्याकरणशास्त्र में आदेश को शत्रु के समान कहा गया है- **''शत्रुवदादेशः''**

जैसे- प्रति + एकः = प्रत्येकः
यहाँ 'इ' को हटाकर उसके स्थान पर 'य्' बैठ गया है, अतः 'इ' स्थानी है तथा 'य्' आदेश है।

23. निमित्त

एक वर्ण को हटाकर उसकी जगह दूसरे वर्ण का आदेश जिसके कारण होता है, उसे **निमित्त** कहा जाता है।
जैसे- प्रति + एकः = प्रत्येकः में 'इ' स्थानी के स्थान पर 'य्' आदेश 'ए' स्वर (अच्) के कारण हुआ है अतः 'ए' निमित्त है।

24. आगम

जो वर्ण किसी वर्ण को हटाये बिना आकर बैठ जाता है, तो उसे हम **'आगम'** कहते हैं। **''मित्रवदागमः''** अर्थात् मित्र की तरह आगमन आगम कहा जाता है। ''सम् + सुट् + कृ + क्त'' = **संस्कृत** यहाँ सुट् का आगम हुआ है।

25. उपसर्ग संज्ञा

सूत्र- ''उपसर्गाः क्रियायोगे'' (1.4.59)
सूत्रार्थ- प्रादि जब किसी क्रिया के साथ लगते हैं तब इनकी उपसर्ग संज्ञा होती है।

- उपसर्गों की संख्या 22 है-

प्र परा अप सम् अनु अव निस् निर् दुस् दुर् वि आङ् नि अधि अपि अति सु उत् अभि प्रति परि उप।

26. कारक

कारक- कृ + ण्वुल् = कारकम् अर्थात् क्रियां करोति इति कारकम्।

- जिनका क्रिया के साथ सीधा सम्बन्ध होता है, या जो क्रिया की सिद्धि में सहायक होते हैं, उन्हें **'कारक'** कहा जाता है। **''क्रियाजनकत्वं कारकत्वम्''**, **''क्रियान्वयित्वं कारकत्वम्''**
- कारक छः होते हैं- 1. कर्ता 2. कर्म 3. करण 4. सम्प्रदान 5. अपादान 6. अधिकरण।

कर्ता कर्म च करणं सम्प्रदानं तथैव च।
अपादानाधिकरणे इत्याहुः कारकाणि षट्॥

➢ संस्कृत व्याकरण में सम्बन्ध और सम्बोधन को कारक नहीं माना जाता।

27. विभक्तियाँ

विभक्ति- जिसके द्वारा कारकों और संख्याओं को विभक्त किया जाता है, उसे विभक्ति कहते हैं। इसीलिए सुप् और तिङ् को भी विभक्ति कहते हैं।

➢ संस्कृत व्याकरण में **विभक्तियाँ सात** होती हैं-

1. प्रथमा 2. द्वितीया 3. तृतीया 4. चतुर्थी 5. पञ्चमी 6. षष्ठी 7. सप्तमी

➢ सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति होती है।

28. पुरुष

संस्कृत में तीन पुरुष होते हैं-

1. प्रथमपुरुष या अन्य पुरुष- उत्तम पुरुष के अहं, आवां, वयम् और मध्यम पुरुष के त्वम्, युवां, यूयम् इन छह शब्दों को छोड़कर संस्कृत वाङ्मय के सभी कर्तृपद प्रथम पुरुष के अन्तर्गत गिने जाते हैं।

यथा- भवान् , भवती, बालकः, बालिका, सः, सा, नरः, वानरः, पिता, पुत्रः, इत्यादि।

और इन सभी कर्तृ पदों के साथ प्रथम पुरुष की क्रिया 'पठति, पठतः, पठन्ति' आदि क्रियाओं का ही प्रयोग होता है।

2. मध्यम पुरुष- जिससे बात कही जाय, वह मध्यम पुरुष है। इसमें 'त्वम्, युवाम्, यूयम्' कर्तृपद आते हैं। इनके साथ मध्यमपुरुष की क्रिया क्रमशः **त्वम्** के साथ पठसि **युवां** के साथ पठथः तथा **यूयं** के साथ पठथ का प्रयोग होगा।

3. उत्तम पुरुष- जो बात को कहता है; वह उत्तम पुरुष है। इसके अन्तर्गत 'अहं, आवाम्, वयम्' कर्तृपद आते हैं। इनके साथ उत्तम पुरुष की क्रिया क्रमशः **अहं** के साथ 'पठामि' **आवां** के साथ पठावः **वयं** के साथ 'पठामः' का प्रयोग होता है।

29. वचन

'वचन' का अर्थ होता है- संख्या।

संस्कृत में तीन वचन होते हैं-

1. **एकवचन-** एक वस्तु या एक व्यक्ति का बोध कराने के लिए एकवचन का प्रयोग होता है, जैसे- बालकः, हरिः, गुरुः, विद्यालयः आदि।
2. **द्विवचन-** दो व्यक्तियों या दो वस्तुओं के लिए द्विवचन का प्रयोग होता है। जैसे- बालकौ, हरी, गुरू, विद्यालयौ, पुस्तके आदि।
3. **बहुवचन-** तीन या तीन से अधिक व्यक्तियों या वस्तुओं का बोध कराने के लिए बहुवचन का प्रयोग किया जाता है। **''बहुषु बहुवचनम्''**

जैसे- बालकाः, हरयः, गुरवः, विद्यालयाः, पुस्तकानि आदि।

30. लिङ्ग

➢ 'लिङ्ग' शब्द का अर्थ है- चिह्न, लक्षण या पहचान।

संस्कृत में तीन लिङ्ग होते हैं-

1. पुंलिङ्ग- जिससे पुरुष जाति का बोध होता है।

जैसे- छात्रः, बालकः, मुनिः, विद्यालयः, काकः, व्याघ्रः आदि।

2. स्त्रीलिङ्ग- जिससे स्त्रीजाति का बोध होता है।

जैसे- छात्रा, बालिका, गौरी, नदी आदि।

3. नपुंसकलिङ्ग- जिससे न पुरुष जाति का बोध हो और न स्त्री जाति का बोध हो, उसे नपुंसकलिङ्ग कहते हैं।

जैसे- फलम्, जलम्, गृहम्, पुष्पम्, नेत्रम्, वारि, दधि, मधु आदि।

31. लकार

संस्कृत में दस लकार होते हैं-

1. **लट्लकार -** (वर्तमान काल) वर्तमान काल को सूचित करने के लिए लट्लकार का प्रयोग होता है।
2. **लिट्लकार-** (अनद्यतन परोक्षभूतकाल) परोक्षभूतकाल अर्थात् बहुत प्राचीनकाल को सूचित करने के लिए लिट्लकार की क्रिया का प्रयोग होता है।
3. **लुट्लकार-** (अनद्यतन भविष्यत् काल) आज के पश्चात् भविष्यकाल को सूचित करने के लिए लुट्लकार का प्रयोग होता है।
4. **लृट् -** (सामान्य भविष्यत् काल)
5. **लेट्लकार -** (संशय अर्थ में) लेट्लकार का प्रयोग वेदों में होता है, लौकिक संस्कृत में नहीं।
6. **लोट्लकार -** (प्रेरणा तथा आज्ञा अर्थ में)
7. **लङ्लकार -** (अनद्यतन भूतकाल) अब से पहले के भूतकाल को सूचित करने के लिए लङ् लकार का प्रयोग किया जाता है।
8. **लिङ् लकार-** इसके दो भेद हैं-

(i) विधिलिङ् - (विधि, निमन्त्रण, आमन्त्रण, सम्प्रश्न, प्रार्थना, चाहिए अर्थ में)

(ii) आशीर्लिङ् - (आशीर्वाद अर्थ में)

9. **लुङ्लकार -** (सामान्यभूत) सामान्यभूतकाल को सूचित करने के लिए।
10. **लृङ्लकार-** (हेतु हेतुमद्भाव भूत) जहाँ एक क्रिया का कारण दूसरी क्रिया हो।

32. धातुसंज्ञा

सूत्र- भूवादयो धातवः (1.3.1)

क्रियावाचक भू आदि की धातुसंज्ञा होती है। ये सभी धातुयें पाणिनीय धातुपाठ में दी गयी हैं। इनकी संख्या 1970 अर्थात् लगभग 2000 है।

➢ धातुओं के तीन प्रकार से रूप चलते हैं-

(i) परस्मैपदी √पठ्- पठति, पठतः, पठन्ति आदि।

(ii) आत्मनेपदी √लभ- लभते, लभेते, लभन्ते आदि।

(iii) उभयपदी √ज्ञा- जानाति, जानीतः, जानन्ति जानीते, जानाते, जानते।

33. गण (धातुओं के विभाग)

संस्कृत में दस गण होते हैं। संस्कृत व्याकरणशास्त्र में लगभग 2000 धातुयें हैं; प्रत्येक धातु किसी न किसी गण में ही परिगणित है।

गण	धातुयें
1. भ्वादिगण	1035 धातुयें
2. अदादिगण	72 धातुयें
3. जुहोत्यादिगण	24 धातुयें
4. दिवादिगण	140 धातुयें
5. स्वादिगण	35 धातुयें
6. तुदादिगण	157 धातुयें
7. रुधादिगण	25 धातुयें
8. तनादिगण	10 धातुयें
9. क्र्यादिगण	61 धातुयें
10. चुरादिगण	411 धातुयें
कुल धातुयें –	1970

भ्वाद्यदादि जुहोत्यादिर्दिवादिः स्वादिरेव च।
तुदादिश्च रुधादिश्च तनादिक्रीचुरादयः॥

➢ **भ्वादिगण की प्रमुख धातुएँ-** भू (होना), हस् (हँसना), पठ् (पढ़ना), रक्ष् (रक्षा करना), वद् (बोलना), पच् (पकाना), नम् (झुकना), गम् (जाना), दृश् (देखना), सद् (बैठना), स्था (रुकना), पा (पीना), घ्रा (सूँघना), स्मृ (स्मरण करना), जि (जीतना), श्रु (सुनना), वस् (रहना), सेव् (सेवा करना), लभ (पाना), वृध् (बढ़ना), मुद् (प्रसन्न होना), सह् (सहन करना), याच् (माँगना), नी (ले जाना) आदि।

➢ **अदादिगण की प्रमुख धातुएँ-** अद् (खाना), अस् (होना), ब्रू (कहना), दुह् (दुहना), रुद् (रोना), स्वप् (सोना), हन् (मारना), इ (जाना), आस् (बैठना), शी (सोना) आदि।

➢ **जुहोत्यादिगण की प्रमुख धातुएँ-** हु (हवन करना), भी (डरना), दा (देना), धा (धारण), करना आदि।

➢ **दिवादिगण की प्रमुख धातुएँ-** दिव् (चमकना), नृत् (नाचना), नश् (नष्ट होना), भ्रम् (घूमना), युध् (लड़ना), जन् (उत्पन्न होना) आदि।

➢ **स्वादिगण की प्रमुख धातुएँ-** सु (स्नान करना या रस निकालना), आप् (पाना), शक् (सकना) आदि।

➢ **तुदादिगण की प्रमुख धातुएँ-** तुद् (दुःख देना), इष् (चाहना), स्पृश् (छूना), प्रच्छ् (पूँछना), लिख् (लिखना), मृ (मरना), मुच् (छोड़ना) आदि।

➢ **रुधादिगण की प्रमुख धातुएँ-** रुध् (ढकना, रोकना), भुज् (पालन करना, भोजन करना), आदि।

➢ **तनादिगण की प्रमुख धातुएँ-** तन् (फैलाना), कृ (करना) आदि।

➢ **क्र्यादिगण की प्रमुख धातुएँ-** क्री (मोल लेना), ग्रह (पकड़ना), ज्ञा (जानना) आदि।

➢ **चुरादिगण की प्रमुख धातुएँ-** चुर् (चुराना), चिन्त् (सोचना), कथ् (कहना), भक्ष् (खाना) आदि।

सन्धिः

- सम् + √धा + कि = सन्धिः (पुँल्लिङ्ग)
- 'सन्धि' शब्द का अर्थ है- मेल या योग अर्थात् मिलना।
- **''वर्णानां परस्परं विकृतिमत् सन्धानं सन्धिः''** अर्थात् वर्णों का आपस में विकारसहित मिलना 'सन्धि' कहलाता है। 'विकृति' का मतलब है- वर्णपरिवर्तन।
- इसप्रकार दो वर्णों के मेल से जो विकार (परिवर्तन) उत्पन्न होता है, उसे 'सन्धि' कहते हैं।
  जैसे-

(i) रमा + ईशः = रमेशः
(ii) रम् आ ईशः (आ + ई का मेल)
(iii) रम् ए शः (आ + ई = 'ए' हो गया)
(iv) रमेशः (गुण सन्धि)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त उदाहरण में रमा के 'मा' में विद्यमान 'आ' तथा ईशः का 'ई' मिलकर 'ए' (वर्णपरिवर्तन) हो गया।
यह वर्णविकार या वर्णपरिवर्तन ही सन्धि है।

- **संहिता-** 'सन्धि' के लिए अनिवार्य तत्त्व है- संहिता।

सूत्र - ''परः सन्निकर्षः संहिता''
अर्थात् दो वर्णों का अत्यन्त सन्निकट हो जाना ही 'संहिता' है।

- 'संहिता' के विषय में व्याकरणशास्त्र में एक नियम प्रसिद्ध है कि-

संहितैकपदे नित्या नित्या धातूपसर्गयोः।
नित्या समासे वाक्ये तु सा विवक्षामपेक्षते॥

(i) संहिता (सन्धि) एक पद में नित्य होती है।
जैसे-
नै + अकः = नायकः
पौ + अकः = पावकः
भो + अनम् = भवनम्

(ii) उपसर्ग और धातु में संहिता नित्य (अनिवार्य) होती है-
जैसे-
नि + अवसत् = न्यवसत्
प्र + ऋच्छति = प्रार्च्छति
अधि + आगच्छति = अध्यागच्छति

(iii) सामासिक पदों में संहिता अनिवार्य (नित्य) होगी-
जैसे-
देवस्य आलयः (सामासिक विग्रह)
देव + आलयः = देवालयः
कृष्णस्य अस्त्रम् (सामासिक विग्रह)
कृष्ण + अस्त्रम् = कृष्णास्त्रम्

(iv) वाक्य में संहिता (सन्धि) विवक्षाधीन होती है अर्थात् आपकी इच्छा के अधीन है कि आप चाहें तो सन्धि करें या चाहें तो न करें-
जैसे-

☆ रामः गच्छति वनम्। (सन्धि नहीं हुई)
रामो गच्छति वनम्। (सन्धि कार्य हुआ)
☆ अत्र कः अस्ति। (सन्धि नहीं हुई)
अत्र कोऽस्ति (सन्धि हुई)
☆ द्वाविंशे एव वर्षे इन्दुमती अधिजगाम स्वर्गम्। (सन्धि नहीं हुई)

- **सन्धि विच्छेद-** सन्धि युक्त वर्णों को अलग-अलग करना ही सन्धि विच्छेद है।

सन्धि = मिलना **विच्छेद** = अलग करना।
जैसे- गणेशः का सन्धिविच्छेद होगा = गण + ईशः।
'विद्यार्थी' का विच्छेद होगा = विद्या + अर्थी।

- **सन्धि में क्या होगा-----?**

1. दो वर्णों के स्थान पर एक नया वर्ण हो जाता है-
जैसे-
रवि + ईशः = रवीशः (इ+ई=ई)
सुर + इन्द्रः = सुरेन्द्रः (अ+इ=ए)
सदा + एव = सदैव (आ+ए=ऐ)

एकः पूर्वपरयोः (6.1.84) पूर्व और पर दोनों वर्णों के स्थान पर एक आदेश होगा।

2. दो वर्णों के निकट आने से केवल पूर्व वर्ण में ही विकार (परिवर्तन) होता है।
जैसे-
इति + आदिः = इत्यादिः (इ के स्थान पर य्)
मधु + अरिः = मध्वरिः (उ के स्थान पर व्)
ने + अनम् = नयनम् (ए के स्थान पर अय्)

'एकस्थाने एकादेशः' - एक के स्थान पर एक आदेश होगा।

3. दो वर्णों में से किसी वर्ण का लोप हो जाता है-
जैसे- रामः आगच्छति = राम आगच्छति (विसर्ग का लोप)
दोषो अस्ति = दोषोऽस्ति (अकार का लोप)

4. दो वर्णों में से किसी एक वर्ण का द्वित्व हो जाना।
जैसे- एकस्मिन् + अवसरे = एकस्मिन्नवसरे

5. कभी कभी दोनों वर्णों में साथ-साथ परिवर्तन होगा–
जैसे- तत् + शिवः = तच्छिवः
वाक् + हरिः = वाग्घरिः
यहाँ 'त् + श्' वर्णों में सन्धि हुई तो त् को 'च्' तथा श् को 'छ्' हो गया।

6. कभी कभी दोनों वर्णों के बीच कोई तीसरा वर्ण चला आएगा–
जैसे- वृक्ष + छाया = वृक्षच्छाया
यहाँ 'क्ष' एव 'छ' के बीच 'च्' के रूप में एक नया वर्ण आ गया।

सन्धि के प्रकार

सन्धि तीन प्रकार की होती है-

(1) स्वर सन्धि (अच् सन्धि)

- स्वर + स्वर = स्वरसन्धि
- जब दो स्वरों के निकट आने से जो परिवर्तन (विकार) होता है उसे स्वर सन्धि कहते हैं।
- संक्षेप में स्वर के स्थान पर होने वाले आदेश को ही स्वर सन्धि कहेंगे।

(i) इति + अलम् = **इत्यलम्** (इ+अ)
(ii) कवि + इन्द्रः = **कवीन्द्रः** (इ+इ)
(iii) नर + ईशः = **नरेशः** (अ+ई)
(iv) तव + एव = **तवैव** (अ +ए)
(v) पो + इत्रम् = **पवित्रम्** (ओ+इ)

- अर्थात् स्वर वर्ण का स्वर वर्ण के साथ मेल स्वर सन्धि है।
- स्वर सन्धि को **अच् सन्धि** भी कहा जाता है; क्योंकि 'अच्' प्रत्याहार के अन्तर्गत ही सभी स्वर आते हैं।

(2) व्यञ्जन सन्धि (हल् सन्धि)

- व्यञ्जन + स्वर = व्यञ्जन सन्धि
  व्यञ्जन + व्यञ्जन = व्यञ्जन सन्धि
- व्यञ्जन के बाद स्वर या व्यञ्जन वर्णों के आने पर जो विकार (परिवर्तन) उत्पन्न होगा, उसे व्यञ्जन सन्धि कहते हैं।
- संक्षेप में व्यञ्जन (हल्) के स्थान पर होने वाले आदेश को ही व्यञ्जन सन्धि कहेंगे।
  जैसे- वाक् + ईशः = **वागीशः** (हल् + अच् = क् + ई)
  जगत् + ईशः = **जगदीशः** (हल् + अच् = त् + ई)
  तत् + लयः = **तल्लयः** (हल् + हल् = त् + ल्)
  सत् + जनः = **सज्जनः** (हल् + हल् = त् + ज्)
  स्पष्ट है कि उपर्युक्त उदाहरणों में व्यञ्जन के बाद स्वर तथा व्यञ्जन के बाद व्यञ्जन वर्ण आये हैं; अतः यहाँ व्यञ्जन सन्धि है।

(3) विसर्ग सन्धि

: + स्वर = विसर्ग सन्धि।
: + व्यञ्जन = विसर्ग सन्धि।

- जब विसर्ग के बाद कोई स्वर या व्यञ्जन वर्ण आये तो विसर्ग के स्थान पर जो विकार (परिवर्तन) होगा, वह विसर्ग सन्धि कही जायेगी। विसर्ग के बाद विसर्ग नहीं आएगा क्योंकि विसर्ग से किसी शब्द का प्रारम्भ नहीं होता।
- संक्षेप में ऐसा कह सकते हैं कि- विसर्ग के स्थान पर होने वाले आदेश को ही विसर्ग सन्धि कहेंगे।

जैसे-
बालकः + गच्छति = **बालको गच्छति।** (: + व्यञ्जन)
नमः + करोति = **नमस्करोति** (: + व्यञ्जन)
अलिः + अयम् = **अलिरयम्** (: + स्वर)
यहाँ विसर्ग के बाद स्वर या व्यञ्जन आ रहा है अतः विसर्ग सन्धि है।

1. स्वर सन्धि (अच् सन्धि) -

- पूर्व तथा पर स्वरों के मिलने से जो परिवर्तन होता है, उसे स्वरसन्धि कहेंगे। जैसे-
  हिम + आलयः = हिमालयः (अ + आ)
  उप + इन्द्रः = उपेन्द्रः (अ + इ)
  स्पष्टीकरण- यहाँ पूर्व वर्ण है हिम के 'म' में विद्यमान - 'अ' तथा पर वर्ण है आलयः का 'आ'।
  इसीप्रकार दूसरे उदाहरण में - उप के प में विद्यमान 'अ' पूर्ववर्ण है तथा इन्द्रः का 'इ' परवर्ण है। अतः यहाँ स्वर सन्धि हो रही है।

स्वरसन्धि के प्रमुख भेद

1. दीर्घ सन्धि-

सूत्र- अकः सवर्णे दीर्घः (6.1.101)

सूत्र विश्लेषण-

अकः - 'अक्' एक प्रत्याहार है जिसमें पाँच वर्ण आते हैं- अ इ उ ऋ ऌ इसी प्रत्याहार से इनके दीर्घ वर्णों (आ ई ऊ ॠ) का भी बोध होगा।

सवर्णे - सवर्ण अक् (अ इ उ ऋ ऌ) आने पर।

दीर्घः - दीर्घ आदेश (आ ई ऊ ॠ) हो जाता है।

'ऌ' वर्ण का दीर्घ नहीं होता अतः उसका सवर्णी 'ॠ' हो जाता है।

संक्षेप में- अक् + अक् = दीर्घ

अकः (पूर्व वर्ण)	सवर्णे (पर वर्ण)	दीर्घः (आदेश वर्ण)
अ आ	अ आ	आ
इ ई	इ ई	ई
उ ऊ	उ ऊ	ऊ
ऋ ॠ	ऋ ॠ	ॠ

- दीर्घ सन्धि में केवल पाँच वर्णों (अ, इ, उ, ऋ ऌ) में ही सन्धि कार्य होगा।
- ह्रस्व और दीर्घ स्वरों का मिलना चार प्रकार से हो सकता है-
  (i) अ + अ = आ। जैसे- अद्य + अपि = **अद्यापि**
  (ii) आ + आ = आ। जैसे- विद्या + आलयः = **विद्यालयः**
  (iii) अ + आ = आ। जैसे- हिम + आलयः = **हिमालयः**
  (iv) आ + अ = आ। जैसे- विद्या + अर्थी = **विद्यार्थी**
  इसीप्रकार इ, उ, ऋ, ऌ में भी चार प्रकार से दीर्घ सन्धि हो सकती है।

दीर्घ सन्धि के उदाहरण

1. हिम + आलयः (सन्धि विच्छेद)
   हिम् अ + आलयः (वर्ण विच्छेद)
   हिम् आ लयः (दो वर्णों के स्थान पर दीर्घ 'आ' आदेश)
   हिमालयः (सन्धियुक्त पद)

- उपर्युक्त उदाहरण में 'हिम' के म में विद्यमान 'अ' आलयः के 'आ' से मिलकर दीर्घ 'आ' हो गया।

2. पुस्तक + आलयः (अ + आ = आ)
   पुस्तक् अ + आलयः
   पुस्तक् आ लयः
   = पुस्तकालयः
3. रवि + इन्द्रः (इ + इ = ई)
   रव् इ + इन्द्रः
   रव् ई न्द्रः
   = रवीन्द्रः
4. भानु + उदयः (उ + उ = ऊ)
   भान् उ + उदयः
   भान् ऊ दयः
   = भानूदयः
5. मातृ + ऋणम् (ऋ + ऋ = ॠ)
   मात् ऋ + ऋणम्
   मात् ॠ णम्
   मातॄणम्

अ + अ = आ

वाचन + आलयः = **वाचनालयः** देव + आलयः = **देवालयः**
शस्त्र + आगारः = **शस्त्रागारः** विद्या + आलयः = **विद्यालयः**

इ + इ = ई

कपि + ईशः = **कपीशः** इति + इव = **इतीव**
गौरी + ईशः = **गौरीशः** नदी + ईशः = **नदीशः**
मुनि + इन्द्रः = **मुनीन्द्रः** परि + ईक्षा = **परीक्षा**
श्री + ईशः = **श्रीशः** हरि + ईशः = **हरीशः**
मही + इन्द्रः = **महीन्द्रः** भूमि + ईशः = **भूमीशः**
गिरि + ईशः = **गिरीशः** पृथ्वी + ईशः = **पृथ्वीशः**

उ + उ = ऊ

वधू + उत्सवः = **वधूत्सवः** सु + उक्तिः = **सूक्तिः**
लघु + ऊर्मिः = **लघूर्मिः** भू + ऊर्ध्वम् = **भूर्ध्वम्**
विधु + उदयः = **विधूदयः** विष्णु + उदयः = **विष्णूदयः**
गुरु + उपदेशः = **गुरूपदेशः** गुरु + उत्साहः = **गुरूत्साहः**
साधु + उक्तम् = **साधूक्तम्** साधु + उदयः = **साधूदयः**
भू + ऊर्जा = **भूर्जा** वधू + उल्लासः = **वधूल्लासः**

ऋ + ऋ = ॠ

मातृ + ऋणम् = **मातॄणम्** मातृ + ऋकारः = **मातृकारः**
पितृ + ऋणम् = **पितॄणम्** पितृ + ऋषभः = **पितृषभः**
होतृ + ऋकारः = **होतृकारः** मातृ + ऋद्धिः = **मातृद्धिः**
होतृ + ऌकारः = **होतृकारः** कृ + ऋकारः = **कृकारः**

2. गुण सन्धि

सूत्र- आद्गुणः (6.1.87)
सूत्रार्थ- अ या आ के बाद ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ, ऌ, आयें तो दोनों के स्थान पर क्रमशः ए, ओ, अर्, अल् हो जाता है।
संक्षेप में कहें तो - आत् + अचि = गुण

पूर्ववर्ण + परवर्ण = सन्धिवर्ण
(i) अ/आ + इ/ई = ए
(ii) अ/आ + उ/ऊ = ओ
(iii) अ/आ + ऋ/ॠ = अर्
(iv) अ/आ + ऌ = अल्

गुण सन्धि के उदाहरण

1. उप + इन्द्रः (सन्धि विच्छेद)
   उप् अ + इन्द्रः (वर्ण विच्छेद)
   उप् ए न्द्रः (अ + इ = ए)
   उपेन्द्रः (गुणसन्धि)

2. हित + उपदेशः
हित् अ + उपदेशः
हित् ओ पदेशः
हितोपदेशः

3. देव + ऋषिः
देव् अ + ऋषिः
देव् अर् षिः (अ + ऋ = अर्)
देवर्षिः

4. तव + ऌकारः
तव् अ + ऌकारः
तव् अल् कारः
तवल्कारः

गुणसन्धि के कुछ प्रसिद्ध उदाहरण

अ + इ = ए

सुर + ईशः = **सुरेशः** कमल + ईशः = **कमलेशः**
राजा + इन्द्रः = **राजेन्द्रः** गङ्गा + ईशः = **गङ्गेशः**
रमा + ईशः = **रमेशः** दिन + ईशः = **दिनेशः**
गण + ईशः = **गणेशः** महा + ईश्वरः = **महेश्वरः**
महा + इन्द्रः = **महेन्द्रः** न + इयम् = **नेयम्**
उमा + ईशः = **उमेशः** अम्बिका + ईशः = **अम्बिकेशः**

अ + उ = ओ

महा + उत्सवः = **महोत्सवः** गङ्गा + उदयः = **गङ्गोदयः**
पीन + ऊरुः = **पीनोरुः** जल + ऊर्मिः = **जलोर्मिः**
गङ्गा + ऊर्मिः = **गङ्गोर्मिः** नर + उत्तमः = **नरोत्तमः**
सूर्य + उदयः = **सूर्योदयः** पर + उपदेशः = **परोपदेशः**
सूर्य + ऊष्मा = **सूर्योष्मा** नील + उत्पलम् = **नीलोत्पलम्**

अ + ऋ = अर्

महा + ऋषिः = **महर्षिः** सप्त + ऋषिः = **सप्तर्षिः**
ग्रीष्म + ऋतुः = **ग्रीष्मर्तुः** हेमन्त + ऋतुः = **हेमन्तर्तुः**
वसन्त + ऋतुः = **वसन्तर्तुः** शीत + ऋतुः = **शीतर्तुः**
वर्षा + ऋतुः = **वर्षर्तुः** वेद + ऋचः = **वेदर्चः**

अ + ऌ = अल्

तव + ऌकारः = **तवल्कारः** मम + ऌकारः = **ममल्कारः**

शंका 1- अ के बाद इ आने पर 'ए' ही क्यों होता है?

समाधान

(i) क्योंकि 'अदेङ् गुणः' सूत्र से ''अ, ए, ओ'' ये तीन वर्ण ही गुणसंज्ञक हैं इसलिए -

(ii) अ का उच्चारणस्थान है- कण्ठ
इ का उच्चारणस्थान है- तालु
इसीलिए अ+इ=ए हुआ क्योंकि 'ए' का उच्चारणस्थान है- कण्ठतालु
''एदैतोः कण्ठतालु''

शंका 2- अ के बाद उ आने पर 'ओ' ही क्यों होता है--?

समाधान- चूँकि गुणसंज्ञक वर्ण तीन ही होते हैं- अ, ए, ओ। गुणसन्धि में गुणवर्ण ही होंगे। इसका भी जवाब पहले जैसा ही है।
अ का उच्चारणस्थान है- कण्ठ
उ का उच्चारणस्थान है- ओष्ठ
इसीलिए अ+उ=ओ होगा क्योंकि 'ओ' का उच्चारणस्थान हैं- कण्ठोष्ठ। **'ओदौतोः कण्ठोष्ठम्'**

- इसीप्रकार अ+ऋ के बाद अ होगा। 'अ' गुण वर्ण है। परन्तु एक सूत्र है **''उरण् रपरः''** जो कहता है कि यदि ऋ या ऌ के स्थान पर अ, इ, उ आदेश होगा तो रेफ या लकार के साथ होगा। अतः यहाँ जो अ+ऋ के स्थान पर 'अ' आदेश है पर रेफ के साथ मिलकर 'अर्' हो जाएगा।

इसीप्रकार अ+ऌ = अल् हो आएगा।

3. वृद्धि सन्धि

सूत्र- वृद्धिरेचि (6.1.88)

परिभाषा- जब अ या आ के बाद ए या ऐ आये तो = **ऐ** और ओ या औ वर्ण के आने पर = **औ** हो जाता है।

संक्षेप में -

आत् + एचि = वृद्धि
अ/आ + ए/ऐ = ऐ
अ/आ + ओ/औ = औ

- ''वृद्धिरादैच्'' सूत्र से वृद्धिसंज्ञक तीन वर्ण बताये गये हैं- आ, ऐ, औ। अतः वृद्धि सन्धि में पूर्व और पर दोनों वर्णों के मिलने से वृद्धि (आ, ऐ, औ) वर्ण ही होंगे।

वृद्धि सन्धि का सूत्र है- वृद्धिरेचि। इस सूत्र का अर्थ करने के लिए 'आद्गुणः' से 'आत्' पद ले लेंगे।
तो अर्थ होगा- **आत् + एचि = वृद्धिः।**

अ/आ + ए ओ ऐ औ = ऐ औ

वृद्धि सन्धि के उदाहरण -

अ/आ + ए/ऐ = ऐ

(i) सदा + एव (सन्धि विच्छेद)
(ii) सद् आ + एव (वर्ण विच्छेद)
(iii) सद् ऐ व (आ + ए = ऐ)
(iv) **सदैव** (सन्धियुक्त पद)

अ आ + ओ औ = औ

(i) जल + ओघः　　(सन्धि विच्छेद)

(ii) जल् अ + ओघः

(iii) जल्　औ घः　　(अ + ओ = औ)

(iv) **जलौघः**　　(सन्धि पद)

वृद्धि सन्धि के कुछ प्रसिद्ध उदाहरण

अ आ + ए ऐ = ऐ

न + एवम् = **नैवम्**　　अद्य + एव = **अद्यैव**

या + एवम् = **यैवम्**　　अत्र + एव = **अत्रैव**

लता + एषा = **लतैषा**　　एक + एकम् = **एकैकम्**

देव + ऐश्वर्यम् = **देवैश्वर्यम्**　　तथा + एव = **तथैव**

मत + ऐक्यम् = **मतैक्यम्**　　तदा + एव = **तदैव**

धन + एषणा = **धनैषणा**　　मम + एव = **ममैव**

पञ्च + एते = **पञ्चैते**　　न + एतत् = **नैतत्**

विद्या + ऐश्वर्यम् = **विद्यैश्वर्यम्**　　तत्र + एव = **तत्रैव**

अ आ + ओ औ = औ

वन + औषधिः = **वनौषधिः**　　परम + औषधिः = **परमौषधिः**

देव + औदार्यम् = **देवौदार्यम्**　　महा + ओजस्वी + **महौजस्वी**

महा + औषधिः = **महौषधिः**　　गङ्गा + ओघः = **गङ्गौघः**

वन + ओकसः = **वनौकसः**　　उष्ण + ओदनम् = **उष्णौदनम्**

पुष्प + ओकः = **पुष्पौकः**　　कृष्ण + औत्कण्ठ्यम् = **कृष्णौत्कण्ठ्यम्**

कन्या + ओदनम् = **कन्यौदनम्**　　यमुना + ओघः = **यमुनौघः**

4. यण् सन्धि

सूत्र- इको यणचि (6.1.77)

इस सूत्र में तीनों पद प्रत्याहार हैं-

इक् = इ उ ऋ ऌ

यण् = य् व् र् ल्

अच् = अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ

सूत्रार्थ- यदि ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ, ऌ इक् के बाद कोई भी असमान अच् (स्वर) आये तो इ के स्थान पर य्, उ के स्थान पर व्, ऋ के स्थान पर 'र्', 'ऌ' के स्थान पर 'ल्' हो जाता है।

संक्षेप में कहें तो-

इक् + अच् = यण्

इ/ई + स्वर = य्
उ/ऊ + स्वर = व्
ऋ/ॠ + स्वर = र्
ऌ + स्वर = ल्

नोट- ध्यान रहे पूर्व और पर दोनों वर्णों के स्थान पर एकादेश नहीं होगा केवल इक् (इ उ ऋ ऌ) के स्थान पर क्रमशः यण् (य् व् र् ल्) होगा।

यण् सन्धि के उदाहरण

इ ई + अच् = य्

(1) इति + आदिः (सन्धि विच्छेद)
　इत् इ + आदिः (वर्ण विच्छेद)
　इत् य् + आदिः (इ + अच् = य्)
　इत्यादिः (सन्धियुक्त पद)

(2) मधु + अरिः
　मध् उ + अरिः
　मध् व् अरिः
　मध्वरिः

(3) पितृ + आदेशः
　पित् ऋ + आदेशः
　पित् र् आदेशः
　पित्रादेशः

(4) ऌ + आकृतिः
　ल् + आकृतिः
　लाकृतिः

(5) घस्ऌ + आदेशः = **घस्लादेशः**

(6) ऌ + आदेशः = **लादेशः**

(7) ऌ + आकारः = **लाकारः**

यण् सन्धि के कुछ प्रसिद्ध उदाहरण

इ/ई के स्थान पर 'य्'

यदि + अपि = **यद्यपि**　　अति + अधिकम् = **अत्यधिकम्**

सुधी + उपास्यः = **सुध्युपास्यः**　　अति + अन्तम् = **अत्यन्तम्**

नदी + ऊर्मिः = **नद्यूर्मिः**　　अति + आचारः = **अत्याचारः**

अभि + उदयः = **अभ्युदयः**　　अति + उत्तमः = **अत्युत्तमः**

उ/ऊ के स्थान पर 'व्'

सु + आगतम् = **स्वागतम्**　　अनु + अयः = **अन्वयः**

वधू + आदेशः = **वध्वादेशः**　　गुरु + आदेशः = **गुर्वादेशः**

ऋ / ॠ के स्थान पर र्

धातृ + अंशः = **धात्रंशः**　　मातृ + आज्ञा = **मात्राज्ञा**

पितृ + आज्ञा = **पित्राज्ञा**　　मातृ + उपदेशः = **मात्रुपदेशः**

5. अयादि सन्धि (अयवायाव सन्धि)

सूत्र- 'एचोऽयवायावः' (6.1.78)

सूत्र विश्लेषण- 'एचः' यह प्रत्याहार है, जिसमें ए, ओ, ऐ, औ- ये चार वर्ण आते हैं।

- अय् अव् आय् आव् - ये चार आदेश वर्ण हैं।
- इसप्रकार ए ओ ऐ औ (एच्) के बाद कोई स्वर वर्ण (अच्) आयें तो 'ए' के स्थान पर **'अय्'** ओ के स्थान पर **'अव्'** 'ऐ' के स्थान पर **'आय्'** औ के स्थान पर **'आव्'** होगा।

संक्षेप में- **एच् + अचि = अयवायावः**
ए + अच् = अय्
ओ + अच् = अव्
ऐ + अच् = आय्
औ + अच् = आव्

ध्यान दें- ए + अच् दोनों के स्थान पर 'अय्' आदेश नहीं हो रहा है; केवल 'ए' के स्थान पर 'अय्' होगा।

अयादि सन्धि के उदाहरण-

ए + अच् = अय्

1.चे + अनम् (सन्धिविच्छेद)
च् ए + अनम् (वर्ण विच्छेद)
च् अय् अनम् (ए के स्थान पर 'अय्')
चयनम् (सन्धियुक्त पद)

2. ने + अनम् = **नयनम्**　　कवे + ए = **कवये**
3. शे + अनम् = **शयनम्**　　शे + आनः = **शयानः**
4. हरे + ए = **हरये**　　हरे + इह = **हरयिह**
5. मुने + ए = **मुनये**　　क्रे + अनम् = **क्रयणम्**

ओ + अच् = अव्

1. पवनः
सन्धिविच्छेद- पो + अनः
वर्णविच्छेद- प् ओ + अनः
'ओ' के स्थान पर 'अव्' - प् अव् + अनः
सन्धियुक्त पद = पवनः

2. भो + अनम् = **भवनम्**　　गो + ईश्वरः = **गवीश्वरः**
3. साधो + ए = **साधवे**　　गो + ईशः = **गवीशः**
4. श्रो + अनम् = **श्रवणम्**　　वटो + ऋक्षः = **वटवृक्षः**
5. लो + अनम् = **लवणम्**　　स्तो + अनम् = **स्तवनम्**
6. गुरो + ए = **गुरवे**　　गो + इच्छा = **गविच्छा**
7. भो + अति = **भवति**　　गो + उदयः = **गवुदयः**
8. गो + एषणा = **गवेषणा**　　श्रो + अनः = **श्रवणः**
9. पो + इत्रम् = **पवित्रम्**　　लो + इत्रम् = **लवित्रम्**

ऐ + अच् = आय्

1. (i) सन्धि विच्छेद = नै + अकः
(ii) वर्ण विच्छेद = न् ऐ + अकः
(iii) 'ऐ' के स्थान पर 'आय्' = न् आय् अकः
(iv) सन्धियुक्त पद = **नायकः**

2. गै + इका = **गायिका**　　नै + इका = **नायिका**
3. शै + अकः = **शायकः**　　श्रियै + उत्सुकः = **श्रियायुत्सुकः**
4. दै + अकः = **दायकः**　　गै + अति = **गायति**
5. गै + अनम् = **गायनम्**　　गै + अन्ति = **गायन्ति**
6. गै + अकः = **गायकः**　　ग्लै + अति = **ग्लायति**

औ + अच् = आव्

1. पौ + अकः　　सन्धिविच्छेद
प् औ + अकः　　वर्णविच्छेद
प् आव् + अकः　　औ के स्थान पर 'आव्' आदेश
पावकः　　सन्धियुक्त पद

2. एतौ + अपि = **एतावपि**　　अग्नौ + इह = **अग्नाविह**
3. द्वौ + एव = **द्वावेव**　　उभौ + एतौ = **उभावेतौ**
4. बालकौ + अपि = **बालकावपि**　　तौ + अपि = **तावपि**
5. पौ + अनः = **पावनः**　　द्वौ + अपि = **द्वावपि**
6. भौ + उकः = **भावुकः**　　तौ + अत्र = **तावत्र**
7. नौ + इकः = **नाविकः**　　करौ + एतौ = **करावेतौ**

6.पूर्वरूप सन्धि

सूत्र- एङः पदान्तादति (6.1.109)

सूत्र विश्लेषण- एङ् = ए, ओ (यह एक प्रत्याहार है)
पदान्तात् = पद के अन्त में
अति = ह्रस्व 'अ' के आने पर

परिभाषा- जब पदान्त ए या ओ के बाद ह्रस्व 'अ' आये तो 'अ' को पूर्वरूप हो जाता है।

पूर्वरूप- अपने रूप को छोड़कर पूर्व वर्ण जैसा हो जाना-पूर्वरूप है। अर्थात् 'अ' वर्ण ए या ओ में जाकर मिल जायेगा,

और ह्रस्व 'अ' की जगह अवग्रह (ऽ) का चिह्न लग जाता है।

संक्षेप में - पदान्त एङ् + अ = पूर्वरूप

ए ओ + अ = ऽ

पूर्वरूप सन्धि के उदाहरण

हरे + अव (सन्धिविच्छेद)

हर् ए + अव (वर्ण विच्छेद)

हर् ए + ऽव ('अ' जाकर पूर्ववर्ण 'ए' में मिल गया)

हरेऽव (सन्धियुक्त पद)

विष्णो + अव (सन्धिविच्छेद)

विष्ण् ओ + अव (वर्ण विच्छेद)

विष्ण् ओ ऽ व ('अ' जाकर पूर्ववर्ण 'ओ' मे मिल गया)

विष्णोऽव (सन्धियुक्त पद)

ए + अ = ऽ

रमे + अत्र = **रमेऽत्र** ते + अद्य = **तेऽद्य**

वने + अत्र = **वनेऽत्र** बालके + अपि = **बालकेऽपि**

ओ + अ = ऽ

को + अपि = **कोऽपि** नमो + अस्तु = **नमोऽस्तु**

बालको + अपि = **बालकोऽपि** को + अयम् = **कोऽयम्**

को + अवादीत् = **कोऽवादीत्** प्रभो + अहम् = **प्रभोऽहम्**

बालो + अवदत् = **बालोऽवदत्** गुरो + अत्र = **गुरोऽत्र**

7. पररूप सन्धि

सूत्र- एङि पररूपम् (6.1.94)

परिभाषा- अकारान्त उपसर्ग के बाद ए या ओ (एङ्) से प्रारम्भ होने वाली धातुओं के आने पर पररूप हो जाता है।

पररूप- पर (बाद) वाले वर्ण के समान हो जाना ही पररूप है।

पूर्ववर्ण	परवर्ण	सन्धियुक्तवर्ण
अवर्णान्त उपसर्ग +	ए ओ से प्रारम्भ होने वाले धातुरूप	पररूप (ए, ओ के समान रूप)

पररूप सन्धि के उदाहरण

(1) प्र + एजते (सन्धि विच्छेद)

प्र् अ + एजते (वर्ण विच्छेद)

प्र् अ + एजते (परवर्ण 'ए' में 'अ' मिल गया)

प्रेजते

(2) उप + ओषति (सन्धि विच्छेद)

उप् अ + ओषति (वर्ण विच्छेद)

उप् अ + ओषति ('अ' जाकर परवर्ण 'ओ' में मिल गया)

उपोषति (सन्धियुक्त पद)

(3) प्र + ओषति = **प्रोषति** (4) अव + एहि = **अवेहि**

8. प्रकृतिभाव सन्धि

सूत्र- प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम् (5.1.125)

सूत्रार्थ- प्लुत और प्रगृह्य वर्णों को प्रकृतिभाव होता है, यदि बाद में स्वर वर्ण आयें तो।

प्रकृतिभाव- प्रकृतिभाव का अर्थ है- कोई भी सन्धि न होना अर्थात् ज्यों का त्यों रहना।

संक्षेप में- प्लुत/प्रगृह्य + अच् = प्रकृतिभाव

उदाहरण- हरी + एतौ = **हरी एतौ**

विष्णू + इमौ = **विष्णू इमौ**

गङ्गे + अमू = **गङ्गे अमू**

पचेते + इमौ = **पचेते इमौ**

भानू + एतौ = **भानू एतौ**

आगच्छ कृष्ण३ अत्र गौश्चरति

इ + इन्द्रः = **इ इन्द्रः**

अहो + ईशाः = **अहो ईशाः**

विशेष- दीर्घ ईकारान्त ऊकारान्त, एकारान्त द्विवचन की प्रगृह्य संज्ञा होती है। अतः **हरी, विष्णू, गङ्गे** की प्रगृह्यसंज्ञा है। प्रगृह्यसंज्ञा होने के कारण यहाँ प्रकृतिभाव हुआ।

नहीं तो हरी +एतौ = हर्येतौ बन जाता यण् सन्धि से।

स्वरसन्धि तालिका

सन्धि का नाम	सन्धिसूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरण
1. यण् सन्धि	इको यणचि	**इक् + अच् = यण्**	
		इ/ई + अच् (असमान) =य्	यदि + अपि = यद्यपि
		उ/ऊ + अच् (असमान) = व्	मधु + अरिः = मध्वरिः
		ऋ ॠ + अच् (असमान) = र्	पितृ + आदेशः = पित्रादेशः
		ऌ + अच् (असमान) = ल्	ऌ + आकृतिः = लाकृतिः
2. अयादि सन्धि	एचोऽयवायावः	**एच् + अच् = अयवायाव**	
		ए + अच् = अय्	ने + अनम् = नयनम्
		ओ + अच् = अव्	पो + अनः = पवनः
		ऐ + अच् = आय्	नै + अकः = नायकः
		औ + अच् = आव्	पौ + अकः = पावकः
3. गुण सन्धि	आद्गुणः	**आत् + अच् = गुण**	
		अ/आ + इ/ई = ए	रमा + ईशः = रमेशः
		अ/आ + उ/ऊ = ओ	हित + उपदेशः = हितोपदेशः
		अ/आ + ऋ/ॠ = अर्	देव + ऋषिः = देवर्षिः
		अ/आ + ऌ = अल्	तव + ऌकारः = तवल्कारः
4. वृद्धि सन्धि	वृद्धिरेचि	**आत् + एच् = वृद्धि**	
		अ/आ + ए/ऐ = ऐ	सदा + एव = सदैव
			महा + ऐश्वर्यम् = महैश्वर्यम्
		अ/आ + ओ/औ = औ	जल + ओघः = जलौघः
			महा + औषधिः = महौषधिः
5. दीर्घ सन्धि	अकः सवर्णे दीर्घः	**अक् + अक् = दीर्घः**	
		अ/आ + अ/आ = आ	हिम + आलयः = हिमालयः
		इ/ई + इ/ई = ई	रवि + इन्द्रः = रवीन्द्रः
		उ/ऊ + उ/ऊ = ऊ	भानु + उदयः = भानूदयः
		ऋ ॠ + ऋ/ॠ = ॠ	मातृ + ऋणम् = मातॄणम्
6. पूर्वरूप सन्धि	एङः पदान्तादति	**एङ् + अ = पूर्वरूप**	
		ए + अ = (ऽ) पूर्वरूप	हरे + अव = हरेऽव
		ओ + अ = (ऽ) पूर्वरूप	विष्णो + अव = विष्णोऽव
7. पररूप सन्धि	एङि पररूपम्	**अवर्णान्त उपसर्ग + एङादिधातु = पररूप**	प्र + एजते = प्रेजते
		प्र, उप + ए, ओ धातु = पररूप	उप + ओषति = उपोषति
8. प्रकृतिभाव	प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्	प्लुत/प्रगृह्य + अच् = प्रकृतिभाव	हरी + एतौ = हरी एतौ
			विष्णू + इमौ = विष्णू इमौ
			गङ्गे + अमू = गङ्गे अमू

स्वरसन्धि के कुछ अपवाद सूत्र/वार्तिक

(1) अक्षादूहिन्यामुपसंख्यानम् (वा.) 'अक्ष' शब्द के बाद 'ऊहिनी' शब्द के आने पर पूर्व और पर दोनों के (अ+ऊ) स्थान पर वृद्धिसंज्ञक 'औ' वर्ण आदेश होता है।

अक्ष + ऊहिनी

अक्ष् अ + ऊहिनी

अक्ष् औ हिनी

अक्षौहिणी

नोट- पूर्वपदात्संज्ञायामगः (8.4.3) सूत्र से 'नकार' के स्थान पर 'णकार' आदेश होकर 'अक्षौहिणी' प्रयोग सिद्ध हो जाता है।

➢ अक्षौहिणी सेना होती है, जिसमें 21870 रथ, 21870 हाथी, 65610 घोड़े और 109350 पैदल सैनिक होते हैं।

(2) प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु (वा.) - 'प्र' उपसर्ग के बाद ऊहः, ऊढः, ऊढिः, एषः, और एष्यः पद आयें तो पूर्व और पर दोनों के स्थान पर वृद्धिसंज्ञक वर्ण आदेश होते हैं।

(i) प्र + ऊहः

प्र् अ + ऊहः

प्र् औ हः

प्रौहः (उत्तम अर्थ करने वाला)

(ii) प्र + ऊढः

प्र् अ + ऊढः

प्र औ ढः

प्रौढः (परिपक्व)

(iii) प्र + ऊढिः

प्र् अ + ऊढिः

प्र् औ ढिः

प्रौढिः (परिपक्वता, प्रौढता)

उपर्युक्त उदाहरणों में गुण सन्धि हो रही थी, किन्तु यहाँ गुण को बाधकर वृद्धिसन्धि हो रही है।

(iv) प्र + एषः

प्र् अ + एषः

प्र् ऐ षः

प्रैषः (प्रेरणा)

(v) प्र + एष्यः

प्र् अ + एष्यः

प्र् ऐ ष्यः

प्रैष्यः (प्रेरणीय/सेवक आदि)

नोट- इन दोनों उदाहरणों में वृद्धि सन्धि तो हो रही थी किन्तु ''एङि पररूपम्'' सूत्र से पररूप भी प्राप्त हो रहा था। यदि पररूप हो जाता तो प्रेषः, प्रेष्यः ऐसे अशुद्ध रूप बन जाते।

(3) ऋते च तृतीयासमासे (वा.) - यदि पूर्व में अवर्ण हो और बाद में 'ऋत' शब्द हो और दोनों शब्दों में तृतीया तत्पुरुष समास हुआ हो तो पूर्व और पर दोनों वर्णों के स्थान पर वृद्धिसंज्ञक वर्ण हो जाता है।

सुखेन ऋतः = **सुखार्तः** (तृतीया तत्पुरुष समास)

सुख + ऋतः = **सुखार्तः** (सुख से युक्त) - वृद्धिसन्धि

दुःख + ऋतः = **दुःखार्तः** (दुःख से युक्त) - वृद्धिसन्धि

कष्ट + ऋतः = **कष्टार्तः** (कष्ट से युक्त) - वृद्धिसन्धि

किन्तु परमश्चासौ ऋतः = परमर्तः यहाँ वृद्धि नहीं हुई क्योंकि यहाँ तृतीया तत्पुरुष समास नहीं, बल्कि कर्मधारय समास है।

परम + ऋतः = परमर्तः (गुण सन्धि)

4. प्रवत्सतरकम्बलवसनार्णदशानामृणे (वार्तिक)- प्र, वत्सतर, कम्बल, वसन, ऋण तथा दश- इन छह शब्दों के बाद यदि 'ऋण' शब्द आये तो पूर्व और पर दोनों के स्थान पर वृद्धिसंज्ञक वर्ण हो जाता है।

(i) प्र + ऋणम्

प्र् अ + ऋणम्

प्र आर् णम्

प्रार्णम् (अधिक ऋण)

(ii) वत्सतर + ऋणम् = **वत्सतरार्णम्** (बछड़े के लिए ऋण)

(iii) कम्बल + ऋणम् = **कम्बलार्णम्** (कम्बल के लिए ऋण)

(iv) वसन + ऋणम् = **वसनार्णम्** (वस्त्र के लिए ऋण)

(v) ऋण + ऋणम् = **ऋणार्णम्** (ऋण चुकाने के लिए ऋण)

(vi) दश + ऋणम् = **दशार्णम्** (दस प्रकार के जल वाला देश)

5. उपसर्गादृति धातौ- अवर्णान्त उपसर्ग के बाद 'ऋ' से प्रारम्भ होने वाली धातु हो तो पूर्व और पर के स्थान पर वृद्धिसंज्ञक एक आदेश होता है।

जैसे-

प्र + ऋच्छति = **प्रार्च्छति**

उप + ऋच्छति = **उपार्च्छति**

प्र + ऋणोति = **प्रार्णोति**

प्र + ऋञ्जते = **प्रार्ञ्जते**

(6) शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम् (वार्तिक)- शकन्धु आदि गण में टिसंज्ञक पूर्व और पर वर्णों के स्थान पर पररूप सन्धि होती है।

जैसे-

(i) शक + अन्धुः = **शकन्धुः** (शक नामक देश का कूप)

(ii) कर्क + अन्धुः = **कर्कन्धुः** (कर्क नामक राजा का कूप)

(iii) मनस् + ईषा = **मनीषा** (बुद्धि)

(iv) मार्त + अण्डः = **मार्तण्डः** (सूर्य)

(v) पतत् + अञ्जलिः = **पतञ्जलिः** (पतञ्जलि)

(7) स्वादीरेरिणोः (वार्तिक)- जब 'स्व' शब्द के बाद 'ईर' और 'ईरिन्' आदि शब्द आयें तो 'स्व' के अकार 'ईर्' और 'ईरिन्' के ईकार के स्थान में ''ऐ'' वृद्धि हो जाता है।

जैसे-

स्व + ईरः = **स्वैरः** (स्वेच्छाचारी)

स्व + ईरिणी = **स्वैरिणी** (स्वेच्छाचारिणी)

स्व + ईरम् = **स्वैरम्** (स्वेच्छाचारिता)

स्व + ईरी = **स्वैरी** (स्वेच्छाचारी)

व्यञ्जन (हल्) सन्धि

व्यञ्जन सन्धि- व्यञ्जन के बाद स्वर या व्यञ्जन आने पर जो विकार होता है, उसे व्यञ्जन सन्धि कहते हैं।
जैसे-

(i) वाक् + ईशः = वागीशः (व्यञ्जन + स्वर)

(ii) सत् + चित् = सच्चित् (व्यञ्जन + व्यञ्जन)

स्पष्टीकरण- यहाँ प्रथम उदाहरण में 'क्' व्यञ्जन के बाद 'ई' स्वर है तथा दूसरे उदाहरण में 'त्' व्यञ्जन के बाद 'च्' व्यञ्जन है। इससे स्पष्ट होता है कि व्यञ्जन वर्णों के बाद स्वर आये चाहे व्यञ्जन दोनों ही स्थितियों में व्यञ्जन सन्धि होगी।

1. श्चुत्व सन्धि

सूत्र- स्तोः श्चुना श्चुः

सूत्र विश्लेषण-

स्तु - सकार तवर्ग = स् त् थ् द् ध् न्

श्चु - शकार चवर्ग = श् च् छ् ज् झ् ञ्

सूत्रार्थ- सकार या तवर्ग (त् थ् द् ध् न्) के पहले या बाद में शकार या चवर्ग (च् छ् ज् झ् ञ्) का योग होने पर स् के स्थान पर श् तथा तवर्ग के स्थान पर चवर्ग हो जाता है।

स्थानी	आदेश	योग
स्	श्	श् या
त्	च्	चवर्ग का
थ्	छ्	योग पहले हो
द्	ज्	या बाद में।
ध्	झ्	
न्	ञ्	

उदाहरण-

रामस् + शेते = **रामश्शेते**

स्पष्टीकरण- इस उदाहरण में 'रामस्' में विद्यमान सकार के स्थान पर शकार हो गया; क्योंकि 'शेते' में शकार आ रहा था इसलिए।

ध्यान दें- इस सूत्र में सकार के बाद शकार आये ऐसा नहीं कहा गया है; अपितु योग होने पर कहा गया है। 'योग' का अर्थ है- 'मिलना'। तात्पर्य यह हुआ कि- 'स्तु' (सकार तवर्ग) पहले हो श्चु बाद में हो या श्चु (शकार चवर्ग) पहले हो 'स्तु' बाद में हो, बदलेगा 'स्तु' ही। जैसे-

(i) सत् + चित् = **सच्चित्**

(ii) याच् + ना = **याच्ञा**

- उपर्युक्त उदाहरण में 'सत्' के त् का 'चित्' के 'च्' से योग होने पर 'सत्' के 'त्' के स्थान पर 'च्' होकर 'सच्चित्' बन गया।
- दूसरे उदाहरण में 'याच्' के 'च्' का 'ना' के 'न्' से योग होने पर 'न्' के स्थान पर चवर्ग का 'ञ्' हो गया। जबकि 'ना' परवर्ण है तब भी।
- इससे सिद्ध हुआ कि सकार और तवर्ग चाहे पूर्व में हो चाहे पर में उनके स्थान पर ही शकार या चवर्ग आदेश के रूप में होंगे।

अवश्य देखें- श्चुत्व सन्धि में हमेशा-

स् के स्थान पर **श्**
त् के स्थान पर **च्**
थ् के स्थान पर **छ्**
द् के स्थान पर **ज्**
ध् के स्थान पर **झ्**
न् के स्थान पर **ञ्** होगा।

स्तु (सकार तवर्ग) स्थानी हैं, श्चु (शकार चवर्ग) आदेश हैं।

अन्य उदाहरण- सद् + जनः = **सज्जनः**
कस् + चित् = **कश्चित्**
शाङ्गिन् + जयः = **शार्ङ्गिञ्जयः**
बृहद् + झरः = **बृहज्झरः**
दुस् + चरित्रः = **दुश्चरित्रः**
उद् + ज्वलः = **उज्ज्वलः**
उत् + चारणम् = **उच्चारणम्**

2. ष्टुत्व सन्धि

सूत्र- 'ष्टुना ष्टुः' (8.4.41)

सूत्रार्थ- स्तु (सकार तवर्ग) के स्थान पर 'ष्टु' (षकार टवर्ग) होता है, 'ष्टु' के योग में।

स्तु = सकार तवर्ग- स् त् थ् द् ध् न्

ष्टु = षकार टवर्ग- ष् ट् ठ् ड् ढ् ण्

अर्थात् सकार या तवर्ग के पहले या बाद में षकार या टवर्ग (ट् ठ् ड् ढ् ण्) का योग होने पर स् को ष् तथा तवर्ग को टवर्ग हो जाता है।

स्थानी	आदेश	योग
स्	ष्	षकार या
त्	ट्	टवर्ग का योग
थ्	ठ्	होने पर
द्	ड्	
ध्	ढ्	
न्	ण्	

ध्यान रहे- सकार तवर्ग के पहले या सकार तवर्ग के बाद में षकार टवर्ग होने पर **स्** के स्थान पर **'ष्'**।

'त्' के स्थान पर **'ट्'**। **'थ्'** के स्थान पर **'ठ्'**।

'द्' के स्थान पर **'ड्'**। **'ध्'** के स्थान पर **'ढ्'**।

'न्' के स्थान पर **'ण्'** होता है।

उदाहरण-

1. तत् + टीका
   तट् + टीका (त् के स्थान पर ट्)
   तट्टीका
2. रामस् + षष्ठः
   रामष् + षष्ठः (स् के स्थान पर ष्)
   रामष्षष्ठः
3. उद् + डयनम्
   उड् + डयनम् (द् के स्थान पर ड्)
   उड्डयनम्
4. कृष् + नः
   कृष् + णः (न् के स्थान पर ण्)
   कृष्णः
5. दुष् + तः
   दुष् + टः (त् के स्थान पर ट्)
   दुष्टः
6. चक्रिन् + ढौकसे
   चक्रिण् + ढौकसे (न् के स्थान पर ण्)
   चक्रिण्ढौकसे
7. विष् + नुः
   विष् + णुः (न् के स्थान पर ण्)
   विष्णुः
8. पेष् + ता
   पेष् + टा (त् के स्थान पर ट्)
   पेष्टा

3.1 जश्त्व सन्धि

सूत्र- झलां जशोऽन्ते (8.2.39)

सूत्रविवरण- पदान्त झल् के स्थान पर 'जश् ' आदेश होता है।

➢ 'झल्' एक प्रत्याहार है जिसमें - वर्णों के पहले, दूसरे, तीसरे, चौथे और ऊष्म वर्ण आते हैं-

झल् =
झ भ घ ढ ध
ज ब ग ड द
ख फ छ ठ थ
च ट त क प
श ष स ह

जश् = ज ब ग ड द (वर्गों के तीसरे अक्षर)

स्थानी (झल्)	आदेश (जश्)
(i) च् छ् ज् झ् श्	ज्
(ii) प् फ् ब् भ्	ब्
(iii) क् ख् ग् घ् ह्	ग्
(iv) ट् ठ् ड् ढ् ष्	ड्
(v) त् थ् द् ध् स्	द्

ध्यान रहे- झल् प्रत्याहार के बाद अच् हो, या हल् हो, या कोई वर्ण हो या न हो तो भी जश् होगा।

नोट- जश्त्व सन्धि दो प्रकार की होती है-

(i) पदान्त जश्त्व सन्धि

(ii) अपदान्त जश्त्व सन्धि

उदाहरण-

1. अच् + अन्तः
   अज् + अन्तः
   अजन्तः
2. वाक् + ईशः
   वाग् + ईशः
   वागीशः

3. षट् + आननः
षड् + आननः
षडाननः

4. दिक् + अम्बरः
दिग् + अम्बरः
दिगम्बरः

5. एतत् + मुरारिः
एतद् + मुरारिः
एतद् मुरारिः

6. सुप् + ईशः
सुब् + ईशः
सुबीशः

7. जगत् + ईशः
जगद् + ईशः
जगदीशः

8. वाक् + अत्र
वाग् + अत्र
वागत्र

9. दिक् + गजः
दिग् + गजः
दिग्गजः

10. चित् + आनन्दः
चिद् + आनन्दः
चिदानन्दः

11. सुप् + अन्तः
सुब् + अन्तः
सुबन्तः

12. कृत् + अन्तः
कृद् + अन्तः
कृदन्तः

13. तिप् + अन्तः
तिब् + अन्तः
तिबन्तः

14. अप् + जम्
अब् + जम्
अब्जम्

15. महत् + दानम्
महद् + दानम्
महद्दानम्

3.2 अपदान्त जश्त्व सन्धि

सूत्र- झलां जश् झशि (8.4.53)

सूत्रविश्लेषण- झलाम् - झल् वर्णों के स्थान पर

जश् - जश् वर्ण होते हैं

झशि - झश् वर्णों के (बाद) में आने पर

सूत्रार्थ- झल् वर्णों के बाद झश् वर्णों के आने पर झल् के स्थान पर जश् होगा।

(i) 'झल्' एक प्रत्याहार है, जिसमें वर्गों के 1,2,3,4 और श् ष् स् ह् आते हैं।

झल् = झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द
ख फ छ ठ थ च ट त क प
श ष स ह

(ii) 'जश्' एक प्रत्याहार है, जिसमें वर्गों के तीसरे वर्ण आते हैं

जश् = ज ब ग ड द।

(iii) 'झश्' भी एक प्रत्याहार है जिसमें वर्गों के तीसरे और चौथे वर्ण आते हैं।

झश् = झ भ घ ढ ध
ज ब ग ड द

स्थानी (झल्)	आदेश (जश्)
क् ख् ग् घ् ह्	ग्
च् छ् ज् झ् श्	ज्
ट् ठ् ड् ढ् ष्	ड्
त् थ् द् ध् स्	द्
प् फ् ब् भ्	ब्

ध्यान दें- 'स्थानेऽन्तरतमः' की सहायता से उच्चारणस्थान की साम्यता को लेकर ज् ब् ग् ड् द् (जश्) आदेश होता है।

उदाहरण-

(1) क्रुध् + धः
क्रुद् + धः
क्रुद्धः

(2) शुध् + धः
शुद् + धः
शुद्धः

(3) युध् + धः
युद् + धः
युद्धः

(4) लभ् + धः
लब् + धः
लब्धः

(5) दुह् + धम्
दुग् + धम्
दुग्धम्

(6) वृध् + धिः
वृद् + धिः
वृद्धिः

(7) रुणध् + धिः
रुणद् + धिः
रुणद्धिः

(8) बोध् + धा
बोद् + धा
बोद्धा

4. चर्त्व सन्धि

सूत्र- खरि च (8.4.55)

सूत्रार्थ- यदि झल् के बाद खर् आये तो झल् के स्थान पर 'चर्' होगा।

➢ 'झल्' एक प्रत्याहार है जिसमें वर्गों के प्रथम, द्वितीय, तृतीय चतुर्थ, एवं श ष स ह वर्ण आते हैं।

➢ **झल्** = झ् भ् घ् ढ् ध्
ज् ब् ग् ड् द्
ख् फ् छ् ठ् थ्
च् ट् त् क् प्
श् ष् स् ह्

➢ 'खर्' एक प्रत्याहार है जिसमें वर्गों के प्रथम, द्वितीय वर्ण और श् ष् स् आते हैं।

खर् = ख् फ् छ् ठ् थ्
च् ट् त् क् प्
श् ष् स्

➢ 'खरि च' सूत्र का सम्पूर्ण अर्थ करने के लिए 'झलाम्' और 'चर्' की अनुवृत्ति आती है।

स्थानी (झल्)	आदेश (चर्)	साम्य (उच्चारण स्थान)	परवर्ण (खर्)
क् ख् ग् घ्	क्	कण्ठ	ख् फ् छ्
च् छ् ज् झ्	च्	तालु	ठ् थ् च्
ट् ठ् ड् ढ्	ट्	मूर्धा	ट् त् क्
त् थ् द् ध्	त्	दन्त	प् श् ष्
प् फ् ब् भ्	प्	ओष्ठ	स्

➢ श् ष् स् के स्थान पर श् ष् स् आदेश होगा

उदाहरण-

(1) सद् + कारः → सत् + कारः → **सत्कारः**

(2) सद् + पात्रम् → सत् + पात्रम् → **सत्पात्रम्**

(3) दिग् + पालः → दिक् + पालः → **दिक्पालः**

(4) भेद् + तुम् → भेत् तुम् → **भेत्तुम्**

(5) छेद् + तव्यम् → छेत् + तव्यम् → **छेत्तव्यम्**

(6) लिभ् + सा → लिप् + सा → **लिप्सा**

5. अनुस्वार सन्धि

सूत्र- मोऽनुस्वारः (8.3.23)

सूत्रार्थ- पदान्त 'म्' के बाद कोई भी व्यञ्जन (हल्) आये तो 'म्' के स्थान पर अनुस्वार (ं) हो जाता है।

पूर्ववर्ण	परवर्ण	सन्धिवर्ण
पदान्त मकार	हल्	ं अनुस्वार

उदाहरण-

(i) हरिम् + वन्दे = **हरिं वन्दे**

(ii) त्वम् + करोषि = **त्वं करोषि**

(iii) रामम् + भजामि = **रामं भजामि**

(iv) जलम् + वहति = **जलं वहति**

(v) धनम् + यच्छ = **धनं यच्छ**

(vi) दुःखम् + सहते = **दुःखं सहते**

6. तोर्लि सन्धि

सूत्र- तोर्लि (8.4.60)

सूत्रविश्लेषण- तोः - तवर्ग के बाद

लि - ल् वर्ण हो तो

➢ **परसवर्ण -** परसवर्ण 'ल्' हो जाता है।

➢ 'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' से 'परसवर्ण' की अनुवृत्ति।

सूत्रार्थ- यदि तवर्ग (त् थ् द् ध् न्) के बाद 'ल्' वर्ण आये तो तवर्ग के स्थान पर 'ल्' हो जाता है।

पूर्ववर्ण	परवर्ण	सन्धिवर्ण
त् थ् द् ध् न्	ल्	ल्

उदाहरण-

(i) उद् + लिखितम् → उल् + लिखितम् → **उल्लिखितम्**

(ii) तद् + लीनः → तल् + लीनः → **तल्लीनः**

(iii) उद् + लेखः → उल् + लेखः → **उल्लेखः**

(iv) विद्वान् + लिखति → विद्वाल्ँ + लिखति → **विद्वाँल्लिखति**

(v) तद् + लयः → तल् + लयः → **तल्लयः**

(vi) महान् + लाभः → महाल्ँ + लाभः → **महाँल्लाभः**

(vii) विपद् + लीनः → विपल् + लीनः → **विपल्लीनः**

(viii) जगद् + लीयते → जगल् + लीयते → **जगल्लीयते**

(ix) यद् + लक्षणम्
यल् + लक्षणम्
यल्लक्षणम्

(x) विद्युद् + लेखा
विद्युल् + लेखा
विद्युल्लेखा

(xi) धनवान् + लुनीते
धनवाल्ँ लुनीते
धनवाँल्लुनीते

7. परसवर्ण सन्धि

सूत्र- अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः (8.4.58)

सूत्रविश्लेषण-

अनुस्वारस्य- अनुस्वार (ं) के स्थान पर

परसवर्णः - परसवर्ण होता है।

ययि - 'यय्' प्रत्याहार का वर्ण बाद में आये तो।

सूत्रार्थ- अपदान्त अनुस्वार के बाद यदि यय् प्रत्याहार का कोई भी व्यञ्जन आये तो अनुस्वार को परसवर्ण हो जाता है।

- **परसवर्ण-** परस्य सवर्णः परसवर्णः। परसवर्ण का अर्थ है- पर = (बाद) में जो वर्ण हैं उसके सवर्णियों में से आदेश होना।
- अर्थात् अनुस्वार के बाद किसी भी वर्ग का कोई भी व्यञ्जन आने पर अनुस्वार के स्थान पर उस वर्ग का पञ्चम वर्ण हो जाता है।

यय् - 'यय्' एक प्रत्याहार है जिसमें श् ष् स् ह् को छोड़कर सभी व्यञ्जन वर्ण आते हैं।

यय् =
य् व् र् ल्
ञ् म् ङ् ण् न्
झ् भ् घ् ढ् ध्
ज् ब् ग् ड् द्
ख् फ् छ् ठ् थ्
च् ट् त् क् प्।

पूर्ववर्ण (अनुस्वार)	परवर्ण (यय्)	सन्धिवर्ण (परसवर्ण)
अनुस्वार (ं)	क् ख् ग् घ् ङ्	ङ्
अनुस्वार (ं)	च् छ् ज् झ् ञ्	ञ्
अनुस्वार (ं)	ट् ठ् ड् ढ् ण्	ण्
अनुस्वार (ं)	त् थ् द् ध् न्	न्
अनुस्वार (ं)	प् फ् ब् भ् म्	म्

उदाहरण-

(1) गं + गा = **गङ्गा/गङ्गा**
(2) शं + खः = **शङ्खः/शङ्खः**
(3) अं + कः = **अङ्कः/अङ्कः**
(4) अं + कितः = **अङ्कितः**
(5) लं + घनम् = **लङ्घनम् / लङ्घनम्**
(6) अं + चितः = **अञ्चितः**
(7) मं + चः = **मञ्चः**
(8) झं + झा = **झञ्झा**
(9) खं + जः = **खञ्जः**
(10) लां + छनम् = **लाञ्छनम्**
(11) कुं + ठितः = **कुण्ठितः**
(12) घं + टा = **घण्टा**
(13) मुं + डा = **मुण्डा**
(14) दं + डः = **दण्डः**
(15) खं + ड = **खण्डः**
(16) शां + त = **शान्तः**
(17) मं + दः = **मन्दः**
(18) बं + धनम् = **बन्धनम्**
(19) मं + थनम् = **मन्थनम्**
(20) नं + दति = **नन्दति**
(21) कं + पनम् = **कम्पनम्**
(22) गुं + फितः = **गुम्फितः**
(23) लं + बः = **लम्बः**
(24) स्तं + भः = **स्तम्भः**
(25) पं + पा = **पम्पा**

- **विशेष-** अनुस्वार तभी अनुस्वार रह सकता है, जब उसके बाद य् व् र् ल् या श् ष् स् ह् हों। जैसे-
  संयमः, संवारः, संरम्भः, संलापः, संयोगः, संशयः, संसारः, संहारः आदि।
- **वा पदान्तस्य-** पदान्त अनुस्वार के स्थान पर परसवर्ण विकल्प से होता है, यय् प्रत्याहार के वर्ण बाद में आयें तो।

अर्थात् पदान्त अनुस्वार में यह नियम वैकल्पिक है। जैसे-

(i) कार्यं करोति = **कार्यं करोति / कार्यङ्करोति।**

(ii) किं करोषि = **किं करोषि / किङ्करोषि**

(iii) किं चित् = **किंचित् / किञ्चित्**

(iv) कथं चलसि = **कथं चलसि / कथञ्चलसि।**

(v) त्वं करोषि = **त्वं करोषि / त्वङ्करोषि**

8. अनुनासिक सन्धि

सूत्र- यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा (8.4.45)

सूत्र विश्लेषण- यरः = पदान्त यर् के स्थान पर

अनुनासिके = अनुनासिक वर्ण बाद में आये तो

अनुनासिकः = अनुनासिक वर्ण होगा।

वा = विकल्प से।

सूत्रार्थ- अनुनासिक वर्ण यदि बाद में आयें तो पदान्त यर् वर्णों के स्थान पर विकल्प से अनुनासिक आदेश होता है।

➢ **अनुनासिक होने का अर्थ है-** उसी वर्ग का पञ्चमाक्षर हो जाना

यर् - यर् एक प्रत्याहार है जिसमें ह को छोड़कर सभी व्यञ्जन (हल्) वर्ण आते हैं।

पूर्ववर्ण पदान्त यर्	परवर्ण अनुनासिक वर्ण	सन्धिवर्ण अनुनासिक
क् ख् ग् घ् ङ्	ङ् ञ् ण् न् म्	ङ्
च् छ् ज् झ् ञ्	में से कोई भी	ञ्
ट् ठ् ड् ढ् ण्	अनुनासिक वर्ण	ण्
त् थ् द् ध् न्	बाद में आये	न्
प् फ् ब् भ् म्		म्

जैसे-

(i) प्राक् + मुखः → प्राङ् + मुखः → **प्राङ्मुखः**

(ii) षट् + मासाः → षण् + मासाः → **षण्मासाः**

(iii) षट् + मुखः → षण् + मुखः → **षण्मुखः**

(iv) सद् + मतिः → सन् + मतिः → **सन्मतिः**

(v) दिक् + नागः → दिङ् + नागः → **दिङ्नागः**

(vi) जगत् + नाथः → जगन् + नाथः → **जगन्नाथः**

(vii) तत् + मित्रम् → तन् + मित्रम् → **तन्मित्रम्**

(viii) एतद् + मुरारिः → एतन् + मुरारिः → **एतन्मुरारिः**

ध्यान रहे- यह सन्धि वैकल्पिक है, सन्धि न होने पर जो सन्धि विच्छेद है, वही रूप रहेगा।

प्रत्यये भाषायां नित्यम् - (वार्तिक)

अनुनासिक वर्णों से प्रारम्भ होने वाले प्रत्ययों के बाद में आने पर पदान्त यर् के स्थान पर नित्य से अनुनासिक होता है।

(i) तत् + मात्रम् → तन् मात्रम् **= तन्मात्रम्**

(ii) चित् + मयम् → चिन् + मयम् **= चिन्मयम्**

(iii) वाक् + मयम् → वाङ् मयम् **= वाङ्मयम्**

व्यञ्जन सन्धि तालिका

सन्धि का नाम	सन्धिसूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरण
1.श्चुत्वसन्धि	स्तोः श्चुना श्चुः	स् तवर्ग + श् चवर्ग = श् चवर्ग	रामस् + चिनोति = रामश्चिनोति सत् + चित् = सच्चित्
2.ष्टुत्व सन्धि	ष्टुना ष्टुः	स् तवर्ग + ष् टवर्ग = ष् टवर्ग	रामस् + षष्ठः = रामष्षष्ठः रामस् + टीकते = रामष्टीकते तत् + टीका = तट्टीका
3.जश्त्व सन्धि	झलां जशोऽन्ते	झल् को जश् आदेश	जगत् + ईशः = जगदीशः षट् + आननः = षडाननः
4. चर्त्व सन्धि	खरि च	झल् + खर् = चर्	छेद् + ता = छेत्ता लिभ् + सा = लिप्सा
5.अनुस्वार सन्धि	मोऽनुस्वारः	पदान्त म् + हल् = अनुस्वार (ं)	हरिम् + वन्दे = हरिं वन्दे त्वम् करोषि = त्वं करोषि
6.तोर्लि सन्धि	तोर्लि	तवर्ग + ल् = ल्	उद् + लेख = उल्लेखः तद् + लीनः = तल्लीनः
7.परसवर्ण सन्धि	अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः	अनुस्वार + यय् = परसवर्ण (पञ्चमाक्षर)	गं + गा = गङ्गा मं + चः = मञ्चः
8.अनुनासिकसन्धि	यरोऽनुनासिकेऽनु-नासिको वा	यर् + अनुनासिक = अनुनासिक	जगत् + नाथः = जगन्नाथः दिक् + नागः = दिङ्नागः

विसर्ग सन्धि

विसर्ग सन्धि- विसर्ग के बाद स्वर या व्यञ्जन वर्णों के आने पर विसर्ग (:) में जो विकार या परिवर्तन होता है, उसे **विसर्ग सन्धि** कहते हैं।

जैसे- मनः + रथः = मनोरथः

➢ विसर्ग हमेशा किसी न किसी स्वर के बाद ही आता है। जैसे- 'रामः' में 'अ' के बाद, हरिः में 'इ' के बाद, गुरुः में 'उ' के बाद विसर्ग आया है।

➢ विसर्ग सन्धि में विसर्ग से पहले आने वाले स्वर तथा विसर्ग के बाद आने वाले स्वर और व्यञ्जन दोनों का ही ध्यान रखा जाता है।

1. सत्व सन्धि

विसर्जनीयस्य सः (8.3.34) - यदि विसर्ग के आगे कोई खर् प्रत्याहार का वर्ण आये तो विसर्ग के स्थान पर 'स्' हो जाता है।

विसर्ग (:) + खर् = स्

खर् - खर् एक प्रत्याहार है जिसमें वर्गों के प्रथम, द्वितीय अक्षर और श ष स आते हैं। खर् में कुल 13 वर्ण आते हैं।

खर् = क ख, च छ, ट ठ, त थ, प फ, श ष स।

ध्यान रखें-

इस नियम को समझने के लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक है-

(i) यदि विसर्ग के बाद च् या छ् आये तो ''विसर्जनीयस्य सः'' सूत्र से विसर्ग के स्थान पर 'स्' होता है और इस 'स्' को ''स्तोः श्चुना श्चुः'' सूत्र से 'श्' हो जाता है।

जैसे-

☆ रामः + चलति
रामस् + चलति
रामश्चलति

☆ निः + छलम्
निस् + छलम्
निश्छलम्

☆ निः + चलम्
निस् + चलम्
निश्चलम्

☆ गौः + चरति
गौस् + चरति
गौश्चरति

☆ कः + चित्
कस् + चित्
कश्चित्

☆ बालः + चलति
बालस् + चलति
बालश्चलति

☆ निः + चयः
निस् + चयः
निश्चयः

☆ पूर्णः + चन्द्रः
पूर्णस् + चन्द्रः
पूर्णश्चन्द्रः

☆ हरिः + छलति
हरिस् + छलति
हरिश्छलति

☆ हरिः + चलति
हरिस् + चलति
हरिश्चलति

(ii) यदि विसर्ग के बाद ट् या ठ् हो तो ''**विसर्जनीयस्य सः**'' सूत्र से विसर्ग के स्थान पर 'स्' होता है, और उस 'स्' को ''ष्टुना ष्टुः'' सूत्र से 'ष्' हो जाता है—

जैसे-

☆ रामः + टीकते
रामस् + टीकते
रामष्टीकते।

☆ धनुः + टङ्कारः
धनुस् + टङ्कारः
धनुष्टङ्कारः

☆ रामः + ठकारः
रामस् + ठकारः
रामष्ठकारः

(iii) यदि विसर्ग के बाद त् और थ् आये तो ''**विसर्जनीयस्य सः**'' सूत्र से विसर्ग के स्थान पर 'स्' हो जाता है और वह 'स्' जैसा का तैसा रहता है अर्थात् 'स्' ही रहता है। जैसे-

☆ हरिः + त्राता — **हरिस्त्राता**

☆ विष्णुः + तत्र — **विष्णुस्तत्र**

☆ बालः + तिष्ठति — **बालस्तिष्ठति**

☆ विष्णुः + त्रायते — **विष्णुस्त्रायते**

☆ इतः + ततः — **इतस्ततः**

☆ कृतः + तथा — **कृतस्तथा**

☆ गजाः + तिष्ठन्ति — **गजास्तिष्ठन्ति**

☆ विष्णुः + त्राता — **विष्णुस्त्राता**

☆ बालकः + थुडति — **बालकस्थुडति**

☆ मनः + तापः — **मनस्तापः**

☆ नमः + ते — **नमस्ते**

(iv) यदि विसर्ग के बाद क् या ख् आये तो विसर्ग के स्थान पर विसर्ग ही रहता है अथवा ''**कुप्वोः ≍क ≍पौ च**'' (8.3.37) सूत्र से विकल्प से जिह्वामूलीय हो जाता है।

विसर्ग को 'स्' नहीं होता है जैसे-

☆ बालकः क्रीडति अथवा बालक≍ क्रीडति।

☆ बालकः खेलति अथवा बालक≍ खेलति।

नोट-

☆ जिह्वामूलीय वर्णों को कण्ठ के भी नीचे जिह्वामूल से बोला जाता है।

☆ जिह्वामूलीय को आधे विसर्ग≍ के समान लिखा जाता है।

(v) यदि विसर्ग के बाद प या फ आये तो विसर्ग के स्थान पर विसर्ग ही रहता है अथवा "**कुप्वोः ᳲक ᳲपौ च**" (8.3.37) सूत्र से विसर्ग के स्थान पर उपध्मानीय होता है। विसर्ग को 'स्' नहीं होता। जैसे-

वृक्षः पतति = वृक्षᳲ पतति।

वृक्षः फलति = वृक्षᳲ फलति।

नोट-

☆ उपध्मानीय वर्ण का उच्चारण 'ओष्ठ' से होता है।

☆ उपध्मानीय को भी आधे विसर्ग ᳲ के समान लिखा जाता है।

(vi) यदि विसर्ग के बाद शर् (श् ष् स्) आये तो "**वा शरि**" (8.3.36) सूत्र से विसर्ग को विसर्ग ही रहता है अथवा विसर्ग के स्थान पर 'स्' होकर परवर्ण श् ष् स् की तरह हो जाता है। जैसे-

☆ हरिः + शेते
हरिस् + शेते
हरिश्शेते
हरिःशेते (विकल्प से)

☆ रामः + षष्ठः
रामस् + षष्ठः
रामष्षष्ठः/रामःषष्ठः (विकल्प से)

☆ निः + सन्देहम्
निस् + सन्देहम्
निस्सन्देहम्
निःसन्देहम् (विकल्प से)

☆ वायुः + सरति
वायुस् + सरति
वायुस्सरति
वायुःसरति (विकल्प से)

☆ बालकः + शयानः
बालकस् शयानः
बालकश्शयानः
बालकः शयानः (विकल्प से)

☆ मुनिः + शेते - मुनिस् + शेते = मुनिश्शेते

☆ कृष्णः + सर्पः - कृष्णस् + सर्पः = कृष्णस्सर्पः

2. रुत्व सन्धि

सूत्र - ससजुषो रुः (8.2.66)

☆ पदान्त सकार और 'सजुष्' के षकार के स्थान पर 'रु' आदेश होता है।

☆ 'रु' में 'उ' की इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है 'र्' शेष बचता है।

☆ जब 'रु' (र्) के ठीक पहले ह्रस्व 'अ' न हो और रु (र्) के ठीक बाद में खर् न हो, तो यह 'र्', 'र्' ही रहता है। इसे ही 'रुत्वसन्धि' कहते हैं।

☆ कविस् + अयम्
कवि रु + अयम्
कवि र् अयम्
कविरयम्

☆ हरेस् + इदम्
हरे रु + इदम्
हरे र् + इदम्
हरेरिदम्

☆ गौस् + अयम्
गौ रु + अयम्
गौ र् + अयम्
गौरयम्

☆ प्रातस् + अहम्
प्रात रु + अहम्
प्रात र् + अहम्
प्रातरहम्

☆ पाशैस् + बद्धः
पाशै रु + बद्धः
पाशै र् + बद्धः
पाशैर्बद्धः

☆ पितुस् + आज्ञा
पितु रु + आज्ञा
पितु र् + आज्ञा
पितुराज्ञा

☆ निस् + धनम्
नि रु + धनम्
नि र् + धनम्
निर्धनम्

☆ ऋषिस् + वदति
ऋषि रु + वदति
ऋषि र्+ वदति
ऋषिर्वदति

☆ मातुस् + आज्ञा
मातु रु + आज्ञा
मातु र् आज्ञा
मातुराज्ञा

☆ भानोस् + अयम्
भानो रु + अयम्
भानो र् अयम्
भानोरयम्

☆ मुनिस् आगच्छति
मुनि रु आगच्छति
मुनि र् आगच्छति
मुनिरागच्छति

☆ हरिस् + जयति
हरि रु + जयति
हरि र्+ जयति
हरिर्जयति

☆ कैस् + उक्तम्
कै रु + उक्तम्
कै र्+ उक्तम्
कैरुक्तम्

☆ साधुस् + गच्छति
साधु रु + गच्छति
साधु र् + गच्छति
साधुर्गच्छति

☆ भानुस् + उदेति
भानु रु + उदेति
भानु र् + उदेति
भानुरुदेति

☆ हरिस् + अवदत्
हरि रु + अवदत्
हरि र् + अवदत्
हरिरवदत्

☆ लक्ष्मीस् + इयम्
लक्ष्मी रु + इयम्
लक्ष्मी र् + इयम्
लक्ष्मीरियम्

☆ पितुस् + इच्छा
पितु रु + इच्छा
पितु र् + इच्छा
पितुरिच्छा

☆ गुरोस् + भाषणम्
गुरो रु + भाषणम्
गुरो र् + भाषणम्
गुरोर्भाषणम्

अन्य उदाहरण-

☆ कविस् + आगच्छति = **कविरागच्छति**
☆ मुनिस् + इव = **मुनिरिव**
☆ निस् + दयः = **निर्दयः**
☆ पतिस् + उवाच = **पतिरुवाच**
☆ हरेस् + जन्म = **हरेर्जन्म**
☆ गुरोस् + आगमनम् = **गुरोरागमनम्**
☆ मुनिस् + गच्छति = **मुनिर्गच्छति**
☆ भानुस् + उदेति = **भानुरुदेति**
☆ प्रातस् + एव = **प्रातरेव**
☆ मातृस् + आदेशः = **मातृरादेशः**

3. उत्व सन्धि

अतो रोरप्लुतादप्लुते (6.1.13)

यदि 'रु' के ठीक पहले 'ह्रस्व अ' हो और 'रु' के ठीक बाद में पुनः 'ह्रस्व अ' हो, तो ऐसे दो ह्रस्व अ के बीच बैठे 'रु' (र्) को 'उ' हो जाता है। इसे ही **उत्व सन्धि** कहते हैं।

➢ ध्यान रहे कि 'रु' के स्थान पर 'उ' नही होता, किन्तु उकार की इत्संज्ञा होकर लोप होने पर शेष बचे 'र्' के स्थान पर ही 'उ' होता है। सूत्र में 'रु' के कथन का यह तात्पर्य है कि 'रुँ' के 'र्' को ही उत्व हो, अन्य 'र्' को नहीं।

जैसे-

☆ शिवस् + अर्च्यः
शिव रु + अर्च्यः ('ससजुषो रुः' से 'रु')
शिव र् + अर्च्यः ('रु' के 'उ' का लोप)
शिव उ + अर्च्यः (अतो रोरप्लुतादप्लुते से 'उ')
शिवो + अर्च्यः (आद् गुणः से अ+उ = ओ गुण)
शिवोऽर्च्यः (''एङः पदान्तादति'' से पूर्वरूप)

☆ देवस् + अपि (पदान्त सकार)
देव रु + अपि ('ससजुषो रुः' से स् को 'रु' आदेश)
देव र्+ अपि ('रु' के 'उ' का लोप, 'र्' शेष)
देव उ + अपि (अतो रोरप्लुतादप्लुते से 'र्' को 'उ')
देवो + अपि (आद्गुणः से 'ओ' गुण)
देवोऽपि (''एङः पदान्तादति'' सूत्र से पूर्वरूप)

☆ शिवस् + अत्र = **शिवोऽत्र**
☆ सस् + अहम् = **सोऽहम्**
☆ सस् + अपि = **सोऽपि**
☆ रामस् + अयम् = **रामोऽयम्**
☆ रामस् + अवदत् = **रामोऽवदत्**
☆ देवस् + अधुना = **देवोऽधुना**
☆ कस् + अयम् = **कोऽयम्**
☆ सस् + अयम् = **सोऽयम्**
☆ रामस् + अस्ति = **रामोऽस्ति**
☆ सस् + अवदत् = **सोऽवदत्**

''हशि च'' (6.1.114) - यदि 'रु' (र्) के पूर्व ह्रस्व 'अ' हो और बाद में हश् प्रत्याहार के वर्ण आयें तो रु (र्) के स्थान पर 'उ' हो जाता है फिर अ+उ में गुण सन्धि हो जाती है। यह भी उत्व सन्धि है।

➢ हश् प्रत्याहार में वर्णो के तीसरे, चौथे और पाँचवे वर्ण तथा य व र ल ह वर्ण आते हैं।

जैसे-

☆ शिवस् + वन्द्यः (पदान्त सकार)
शिव रु + वन्द्यः (''ससजुषो रुः'' से 'रु' आदेश)
शिव र् + वन्द्यः ('रु' के 'उ' का लोप 'र्' शेष)
शिव उ + वन्द्यः (''हशि च'' से 'र्' के स्थान पर 'उ' आदेश)
शिवो + वन्द्यः (अ + उ = ओ गुण हुआ)
शिवो वन्द्यः (उत्व सन्धि)

☆ मनस् + रथः
मन रु + रथः
मन र् + रथः
मन उ + रथः
मनो + रथः
मनोरथः

☆ रामस् + नमति = **रामो नमति**
☆ रामस् + हसति = **रामो हसति**
☆ मृगस् + धावति = **मृगो धावति**

☆ मेघस् + गर्जति = **मेघो गर्जति**

☆ सरस् + वरः = **सरोवरः**

☆ पयस् + धरः = **पयोधरः**

☆ रामस् + जयति = **रामो जयति**

☆ बालकस् + हसति = **बालको हसति**

☆ वीरस् + गच्छति = **वीरो गच्छति**

☆ पुरुषस् + वदति = **पुरुषो वदति**

☆ अधस् + गतिः = **अधोगतिः**

☆ यशस् + दा = **यशोदा**

☆ मनस् + भावः = **मनोभावः**

4. रलोप सन्धि

सूत्र- रो रि (8.3.14)

सूत्रार्थ- 'र्' के बाद 'र्' आये तो पूर्व 'र्' का लोप होता है।

जैसे-

☆ बालकास् + रमन्ते (पदान्त सकार)

बालका रु + रमन्ते ('ससजुषो रुः' से 'स्' के स्थान पर रु')

बालका र् + रमन्ते (''रो रि'' से पूर्व रेफ का लोप)

बालका रमन्ते (र लोप सन्धि)

☆ गौस् + रम्भते (पदान्त सकार)

गौरु + रम्भते (ससजुषो रुः)

गौर् + रम्भते (रो रि)

गौ रम्भते (र लोप सन्धि)

सूत्र- ढ्लोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः (6.3.111)

'ढ् ' या 'र्' का लोप हुआ हो तो उससे पूर्ववर्ती अण् (अ इ उ) को दीर्घ हो जाता है। जैसे-

☆ लिढ् + ढः = लीढः

☆ पुनर् + रमते = पुनारमते

☆ हरिर् + रम्यः = हरी रम्यः

☆ शम्भुर् + राजते = शम्भू राजते

☆ गुरुर् + रुष्टः = गुरू रुष्टः

☆ निर् + रोगः = नीरोगः

☆ निर् + रसः = नीरसः

☆ अन्तर् + राष्ट्रियः = अन्ताराष्ट्रियः

5. रेफ को विसर्ग

सूत्र- खरवसानयोर्विसर्जनीयः (8.3.15) -

सूत्रार्थ- पदान्त रेफ (र्) के स्थान पर विसर्ग आदेश होता है यदि खर् प्रत्याहार के वर्ण बाद में आयें तो अथवा अवसान (विराम) हो तो-

र् + खर् = विसर्ग (:)

र् + ----- = विसर्ग (:)

➢ 'खर्' एक प्रत्याहार है जिसमें - क ख, च छ, ट ठ, त थ, प फ, तथा श ष स आते हैं।

➢ **अवसान में पदान्त 'र्' को विसर्ग-**

☆ पुनर् = पुनः

☆ शनैर् = शनैः

☆ उच्चैर् = उच्चैः

☆ नीचैर् = नीचैः

➢ **'खर्' बाद में आये तो पदान्त 'र्' को विसर्ग-**

☆ रामर् + खादति = रामः खादति

पुनर् + पृच्छति = पुनः पृच्छति

☆ रामस् + करोति (पदान्त स्)

राम रु + करोति (ससजुषो रुः)

राम र् + करोति (रु को 'र्')

रामः + करोति ('र्' को विसर्ग)

☆ वृक्षर् + फलति = वृक्षः फलति

☆ गुरु र् + पाठयति = गुरुः पाठयति

❑❑

समास

- **समासः -** सम् √अस् + घञ् = समासः
- **'अनेकपदानाम् एकपदीभवनं समासः'** अर्थात् अनेकपदों का एकपद हो जाना 'समास' कहलाता है।
- **'समसनं समासः'** अर्थात् संक्षेपीकरण को समास कहते हैं। 'समास' का अर्थ है- संक्षिप्त। जब दो या दो से अधिक पद परस्पर मिलकर नया शब्द बनाते हैं; तो उनके बीच की विभक्तियाँ लुप्त हो जाती हैं, और बना हुआ शब्द 'समास' कहलाता है।

  विभक्तिर्लुप्यते यत्र तदर्थस्तु प्रतीयते।
  पदानां चैकपद्यं च समासः सोऽभिधीयते॥

  अर्थात् जहाँ विभक्तियों का लोप हो जाता है, परन्तु उनका अर्थ प्रतीत होता रहता है, और अनेक पद मिलकर एकपद बन जाता है, उसे 'समास' कहते हैं।

  जैसे- दशरथस्य पुत्रः = **दशरथपुत्रः**
  पीतम् अम्बरं यस्य सः = **पीताम्बरः**
- **विग्रह- ''वृत्त्यर्थावबोधकं वाक्यं विग्रहः''** समासवृत्ति के अर्थ का बोध कराने के लिए जो वाक्य होता है, उसे 'विग्रह' कहते हैं।

  जैसे- 'पीताम्बरः' इस सामासिक पद का अर्थ बताने के लिए ''पीतम् अम्बरं यस्य सः'' यह जो वाक्य है यही विग्रह कहा जाता है।

समास विग्रह- विग्रह दो प्रकार का होता है-
(i) लौकिक विग्रह (ii) अलौकिक विग्रह

(i) लौकिक विग्रह- लोक के समझने लायक विग्रह को 'लौकिक विग्रह' कहते हैं।
जैसे- 'दशरथपुत्रः' इस सामासिक पद का लौकिक विग्रह होगा- दशरथस्य पुत्रः।

(ii) अलौकिक विग्रह- जो व्याकरणशास्त्र की प्रक्रिया दर्शाने हेतु अर्थात् शास्त्रीय प्रक्रिया के लिए विग्रह होता है, उसे 'अलौकिक विग्रह' कहते हैं।
जैसे- 'दशरथ ङस् पुत्र सु' यह ''दशरथपुत्रः'' इस सामासिक पद का अलौकिक विग्रह होगा।

समस्त पद या **सामासिक पद-** समास होने पर जो शब्द बनता है, उसे 'समस्तपद' या 'सामासिक पद' कहते हैं।
जैसे- अधिगोपम्, चन्द्रशेखरः, त्रिभुवनम्, रामकृष्णौ आदि ये समस्तपद या सामासिकपद कहें जायेंगे।

समास के भेद

'लघुसिद्धान्तकौमुदी' के लेखक वरदराज ने समास के पाँच प्रकार बताये हैं- **'समासः पञ्चधा'**। किन्तु माध्यमिक शिक्षा परिषद् की पाठ्यपुस्तकों में **समास के छह भेद** बताये गये हैं; अतः आप सभी UP-TET के परीक्षार्थियों के लिए समास के छह भेद ही मानना चाहिए।

समास के प्रमुख रूप से छह भेद हैं-
1. अव्ययीभाव समास
2. तत्पुरुष समास
3. कर्मधारय समास
4. द्विगु समास
5. द्वन्द्व समास
6. बहुव्रीहि समास

नोट- भट्टोजिदीक्षित सिद्धान्तकौमुदी में तत्पुरुष का भेद कर्मधारय और कर्मधारय का भेद द्विगु समास को बताते हैं अतः इनके अनुसार समास चार प्रकार का ही होता है।

1. अव्ययीभाव समास

अव्ययीभाव- 'पूर्वपदार्थप्रधानोऽव्ययीभावः' अर्थात् जिस समास में पूर्वपद का अर्थ प्रधान/मुख्य हो, उसे 'अव्ययीभाव' समास कहते हैं। इस समास में पूर्वपद प्रायः अव्यय होता है।

ध्यान दें- समास में सामान्यतया दो पद होते हैं। इनमें पहले आने वाला पद 'पूर्वपद' और उसके बाद आनेवाला पद 'उत्तरपद' होता है। 'उत्तर' पद का एक अर्थ 'बाद में' या 'बाद वाला' भी है।

जैसे-

समास	पूर्वपद	उत्तरपद
उपनदम्	उप	नदम्

विशेष ध्यान रखें- अव्ययीभाव समास होने पर सामासिक पद अव्यय बन जाता है, तथा नपुंसकलिङ्ग एकवचन में प्रयोग किया जाता है।

'अनव्ययम् अव्ययः सम्पद्यते इति अव्ययीभावः' अर्थात् जो शब्द समास होने के पूर्व तो अव्यय न हो, किन्तु समास होने पर 'अव्यय' हो जाय, वही अव्ययीभाव समास है।

जैसे- शक्तिम् अनतिक्रम्य = यथाशक्ति।

यहाँ 'शक्ति' शब्द अव्यय नहीं है किन्तु 'यथा' इस अव्यय के साथ

समास होने के कारण 'यथाशक्ति' यह पूरा पद अव्यय हो गया; और नपुंसकलिङ्ग एकवचन में प्रयुक्त है।

अव्ययीभाव समास करने वाला सूत्र-

''अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्धि-अर्थाभाव-अत्यय-असम्प्रति-शब्दप्रादुर्भाव-पश्चात्-यथा-आनुपूर्व्य-यौगपद्य-सादृश्य-सम्पत्ति-साकल्य-अन्तवचनेषु'' (2.1.6)

सूत्र का अर्थ- विभक्ति, समीप, समृद्धि, व्यृद्धि (वृद्धि का अभाव), अर्थाभाव, अत्यय (नष्ट होना), असम्प्रति (अब युक्त न होना), शब्दप्रादुर्भाव (शब्द और सादृश्य), पश्चात्, यथा, आनुपूर्व्य (क्रमशः), यौगपद्य (एक साथ होना), सादृश्य (समान), सम्पत्ति, साकल्य (सम्पूर्णता) और अन्त (समाप्ति) अर्थों में विद्यमान अव्यय का समर्थ सुबन्त पदों के साथ नित्य से समास होता है।

अव्ययीभाव समास के उदाहरण-

1. 'विभक्ति' के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त (पद) के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

समास विग्रह		समस्त पद (अर्थ सहित)
हरौ इति	=	**अधिहरि** (हरि में)
आत्मनि इति	=	**अध्यात्मम्** (आत्मा में)
गोपि इति	=	**अधिगोपम्** (गोप में)

यहाँ 'अधि' अव्यय सप्तमी विभक्ति के अर्थ में है।

2. 'समीप' अर्थ में विद्यमान 'उप' आदि अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

समास विग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
गङ्गायाः समीपम्	=	**उपगङ्गम्** (गङ्गा नदी के समीप)
नगरस्य समीपम्	=	**उपनगरम्** (नगर के समीप)
कृष्णस्य समीपम्	=	**उपकृष्णम्** (कृष्ण के समीप)
कूलस्य समीपम्	=	**उपकूलम्** (किनारे के समीप)
तटस्य समीपम्	=	**उपतटम्** (तट के समीप)

उपर्युक्त उदाहरणों में 'उप' यह अव्यय समीप अर्थ में है। जिसका गङ्गा आदि समर्थ सुबन्त पदों के साथ अव्ययीभाव समास हुआ है। समास होने के बाद उपगङ्गम्, उपनगरम् आदि पूरा पद अव्यय हो जाता है।

3. 'समृद्धि' के अर्थ में अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

समास विग्रह		समस्त पद (अर्थसहित)
मद्राणां समृद्धिः	=	**सुमद्रम्** (मद्रदेशवासियों की समृद्धि)
भिक्षाणां समृद्धिः	=	**सुभिक्षम्** (भिक्षाटन की समृद्धि)

4. व्यृद्धि (दुर्गति या वृद्धि का अभाव) के अर्थ में विद्यमान अव्यय पदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

यवनानां व्यृद्धिः	=	**दुर्यवनम्** (यवनों की दुर्गति)
भिक्षाणां व्यृद्धिः	=	**दुर्भिक्षम्** (भिक्षा का न मिलना)
शकानां व्यृद्धिः	=	**दुःशकम्** (शकों की दुर्गति)
राक्षसाणां व्यृद्धिः	=	**दुर्राक्षसम्** (राक्षसों की अवनति)

5. 'अर्थाभाव' के अर्थ में विद्यमान अव्यय पदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

मक्षिकाणाम् अभावः	=	**निर्मक्षिकम्** (मक्खियों का अभाव)
प्राणानाम् अभावः	=	**निष्प्राणम्** (प्राणों का अभाव)
विघ्नानाम् अभावः	=	**निर्विघ्नम्** (विघ्नों का अभाव)
मशकानाम् अभावः	=	**निर्मशकम्** (मच्छरों का अभाव)
जनानाम् अभावः	=	**निर्जनम्** (मनुष्यों का अभाव)
दोषाणाम् अभावः	=	**निर्दोषम्** (दोषों का अभाव)

उपर्युक्त उदाहरणों में 'निर्' आदि अव्ययपदों का 'मक्षिका' आदि समर्थ सुबन्तों के साथ अव्ययीभाव समास हुआ है। यहाँ 'निर्' अव्यय का अर्थ है- अर्थाभाव।

6. अत्यय (ध्वंस या नाश) के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

हिमस्य अत्ययः	=	**अतिहिमम्** (हिम का नाश)
रोगस्य अत्ययः	=	**अतिरोगम्** (रोग का नाश)
शीतस्य अत्ययः	=	**अतिशीतम्** (शीतलता का नाश)

उपर्युक्त उदाहरणों में 'अति' इस अव्यय पद का अर्थ है- अत्यय (नाश) अतः 'अति' इस अव्यय पद के साथ 'हिम' आदि समर्थ सुबन्तों का अव्ययीभाव समास हुआ है।

7. असम्प्रति (अनौचित्य) के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

समास विग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
निद्रा सम्प्रति न युज्यते	=	**अतिनिद्रम्** (इस समय नींद उचित नहीं)
स्वप्नः सम्प्रति न युज्यते	=	**अतिस्वप्नम्** (इस समय स्वप्न उचित नहीं)
कम्बलं सम्प्रति न युज्यते	=	**अतिकम्बलम्** (इस समय कम्बल उचित नहीं)

उपर्युक्त उदाहरणों में 'अति' यह अव्यय असम्प्रति अर्थ में है, जिसका 'निद्रा' आदि समर्थ पदों के साथ अव्ययीभाव समास हुआ है।

8. शब्दप्रादुर्भाव (शब्द का प्रकाश) के अर्थ में विद्यमान अव्यय पदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

हरिशब्दस्य प्रकाशः = **इतिहरि** ('हरि' शब्द का प्रकट होना)
विष्णुशब्दस्य प्रकाशः = **इतिविष्णु** ('विष्णु' शब्द का प्रकट होना)
पाणिनिशब्दस्य प्रकाशः = **इतिपाणिनि** ('पाणिनि' शब्द का प्रकट होना)
ज्ञानशब्दस्य प्रकाशः = **इतिज्ञानम्** ('ज्ञान' शब्द का प्रकट होना)

9. 'पश्चात्' (पीछे) के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

विष्णोः पश्चात् = **अनुविष्णु** (विष्णु के पीछे)
रामस्य पश्चात् = **अनुरामम्** (राम के पीछे)
रथस्य पश्चात् = **अनुरथम्** (रथ के पीछे)
शिष्यस्य पश्चात् = **अनुशिष्यम्** (शिष्य के पीछे)
गोपालस्य पश्चात् = **अनुगोपालम्** (गोपाल के पीछे)

10. 'यथा' के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। 'यथा' के चार अर्थ होते हैं-
(क) योग्यता अथवा लायक या अनुकूलता
(ख) वीप्सा अथवा दुहराया जाना
(ग) पदार्थानतिवृत्ति अथवा पदार्थों की सीमा के बाहर नहीं जाना
(घ) सादृश्य अथवा समानता

(क) योग्यता-

रूपस्य योग्यम् = **अनुरूपम्** (रूप के योग्य)
गुणस्य योग्यम् = **अनुगुणम्** (गुण के योग्य)

(ख) वीप्सा-

अक्षम् अक्षम् प्रति = **प्रत्यक्षम्** (प्रत्यक्ष)
एकम् एकं प्रति = **प्रत्येकम्** (प्रत्येक)
गृहं गृहं प्रति = **प्रतिगृहम्** (घर-घर)
दिनं दिनं प्रति = **प्रतिदिनम्** (प्रतिदिन)
अर्थम् अर्थं प्रति = **प्रत्यर्थम्** (प्रत्येक अर्थ)
जनं जनं प्रति = **प्रतिजनम्** (प्रत्येक जन)
छात्रं छात्रं प्रति = **प्रतिच्छात्रम्** (प्रत्येक छात्र)
दिशं दिशं प्रति = **प्रतिदिशम्** (प्रत्येक दिशा)

(ग) पदार्थानतिवृत्ति-

शक्तिम् अनतिक्रम्य = **यथाशक्ति** (शक्ति के अनुसार)
बलम् अनतिक्रम्य = **यथाबलम्** (बल के अनुसार)
समयम् अनतिक्रम्य = **यथासमयम्** (समय के अनुसार)
बुद्धिम् अनतिक्रम्य = **यथाबुद्धि** (बुद्धि के अनुसार)
ज्ञानम् अनतिक्रम्य = **यथाज्ञानम्** (ज्ञान के अनुसार)

(घ) सादृश्य-

हरेः सादृश्यम् = **सहरि** (हरि की समानता)
रूपस्य सादृश्यम् = **सरूपम्** (रूप की समानता)

11. आनुपूर्व्य (क्रम) के अर्थ में विद्यमान अव्यय पदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

ज्येष्ठस्य आनुपूर्व्येण = **अनुज्येष्ठम्** (ज्येष्ठ के क्रम से)
वर्णस्य आनुपूर्व्येण = **अनुवर्णम्** (वर्ण के क्रमानुसार)

12. यौगपद्य (साथ होना) के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

चक्रेण युगपत् = **सचक्रम्** (चक्र के साथ)
हर्षेण युगपत् = **सहर्षम्** (हर्ष के साथ)

13. सादृश्य (जैसा) के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव होता है। जैसे-

सदृशः सख्या = **ससखि** (मित्र के जैसा)
सदृशः वर्णेन = **सवर्णम्** (वर्ण के समान)

14. सम्पत्ति के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थसुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

क्षत्राणां सम्पत्तिः = **सक्षत्रम्** (राजाओं की सम्पत्ति)

15. साकल्य (सम्पूर्णता) के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

तृणम् अपि अपरित्यज्य = **सतृणम्** (तिनके को भी छोड़े बिना सब खाता है)

16. अन्तवचन (तक) के अर्थ में अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

अग्निग्रन्थपर्यन्तम् = **साग्नि** (अग्नि ग्रन्थ की समाप्ति तक पढ़ता है)
बालकाण्डपर्यन्तम् = **सबालकाण्डम्** (बालकाण्ड तक)

➢ **आङ्मर्यादाभिविध्योः** अर्थात् मर्यादा और अभिविधि (तक) के अर्थ में 'आङ्' अव्यय पद का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

आ मरणात् = **आमरणम्** (मरने तक)
आ जीवनात् = **आजीवनम्** (जीवन भर)

➢ **नदीभिश्च** (2.1.20) नदी वाची शब्दों के साथ संख्यावाची शब्दों का समास होता है, और वह अव्ययीभाव समास कहलाता है। जैसे-

पञ्चानां गङ्गानां समाहारः = **पञ्चगङ्गम्** (पाँच गङ्गाओं का समाहार)
द्वयोः यमुनयोः समाहारः = **द्वियमुनम्** (दो यमुनाओं का समाहार)
सप्तानां नर्मदानां समाहारः = **सप्तनर्मदम्**

उपर्युक्त उदाहरणों में 'पञ्च' आदि संख्यावाची पदों का गङ्गा आदि नदीवाचक पदों के साथ अव्ययीभाव समास हुआ है।

➢ **अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः (5.4.107)**
अव्ययीभाव समास में शरद् आदि शब्दों से समासान्त 'टच्' प्रत्यय होता है। 'टच्' प्रत्यय में 'ट्' और 'च्' का लोप हो जाता है केवल 'अ' शेष बचता है। जैसे-
शरदः समीपम् = **उपशरदम्** (शरद् के समीप)
विपाशं विपाशं प्रति = **प्रतिविपाशम्** (विपाशा नदी के सम्मुख)

➢ **अनश्च (5.4.108)** - जिस अव्ययीभाव समास के अन्त में 'अन्' होता है, वह अन्नन्त अव्ययीभाव है। उससे समासान्त 'टच्' प्रत्यय होता है। जैसे-
राज्ञः समीपम् = **उपराजम्** (राजा के समीप)

➢ **नपुंसकादन्यतरस्याम् (5.4.109)** - 'अन्' अन्तवाला जो नपुंसकलिङ्ग शब्द है, उस अव्ययीभाव समास के अन्त में विकल्प से 'टच्' प्रत्यय होता है। जैसे-
चर्मणः समीपम् = **उपचर्मम्** (चर्म के समीप) 'टच्'प्रत्यय हुआ
चर्मणः समीपम् = **उपचर्म** (चर्म के समीप) 'टच्' नहीं हुआ।

तत्पुरुष समास

तत्पुरुष- 'प्रायेण उत्तरपदार्थप्रधानः तत्पुरुषः'
अर्थात् जिस समास में उत्तरपद का अर्थ प्रधान होता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं।
जैसे- 'गङ्गाजलम् आनय'। यहाँ 'आनय' इस क्रिया पद के साथ 'जलम्' का ही साक्षात् सम्बन्ध है। अतः 'जल' इस उत्तरपद का अर्थ ही प्रधान होने के कारण यहाँ तत्पुरुषसमास है।

तत्पुरुष समास के भेद

तत्पुरुष समास के मुख्यतः दो भेद होते हैं- 1. समानाधिकरण तत्पुरुष 2. व्यधिकरण तत्पुरुष

1. समानाधिकरण तत्पुरुष- समानाधिकरण को 'समविभक्तिक' भी कह सकते हैं। इस तत्पुरुष समास के पूर्वपद एवं उत्तरपद दोनों में समान विभक्ति (प्रथमा) लगी रहती है। समान अधिकरण (विभक्ति) वाला तत्पुरुष कर्मधारय समास होता है- **''तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः''**

2. व्यधिकरण तत्पुरुष- जिस तत्पुरुष समास में पूर्वपद तथा उत्तरपद दोनों में अलग-अलग विभक्तियाँ लगी हों, वह व्यधिकरण तत्पुरुष होता है। वि = विषय और 'अधिकरण' = विभक्ति वाले तत्पुरुष को व्यधिकरण तत्पुरुष कहते हैं। पूर्वपद में जो विभक्तियाँ लगी होती हैं, उनके आधार पर ही तत्पुरुष के प्रमुख भेद किये जाते हैं। जैसे यदि पूर्वपद में द्वितीया विभक्ति हो तो द्वितीया तत्पुरुष, यदि पूर्व पद में तृतीया विभक्ति लगी हो तो तृतीया तत्पुरुष आदि। इसप्रकार **व्यधिकरण तत्पुरुष के छह भेद किये गये हैं-**
1. द्वितीया तत्पुरुष 2. तृतीया तत्पुरुष 3. चतुर्थी तत्पुरुष
4. पञ्चमी तत्पुरुष 5. षष्ठी तत्पुरुष 6. सप्तमी तत्पुरुष।

तत्पुरुष समास के उपभेद

समानाधिकरण तथा व्यधिकरण समास के अतिरिक्त तत्पुरुष के अन्य उपभेद भी इसप्रकार हैं-
(i) नञ् तत्पुरुष समास - अनश्वः, अब्राह्मणः, अनिच्छा आदि।
(ii) प्रादि तत्पुरुष समास - कुपुरुषः, प्राचार्यः आदि।
(iii) उपपद तत्पुरुष समास - कुम्भकारः, धर्मज्ञः आदि।
(iv) अलुक् तत्पुरुष समास - युधिष्ठिरः, सरसिजम्, अभ्यासादागतः आदि।

द्वितीया तत्पुरुष समास

जिस तत्पुरुष समास का पूर्वपद द्वितीया विभक्ति में हो, ऐसे द्वितीयान्त सुबन्त पद का 'श्रित' आदि शब्दों के साथ द्वितीया तत्पुरुष समास होता है।

सूत्र- ''द्वितीया श्रित-अतीत-पतित-गत-अत्यस्त-प्राप्त-आपन्नैः'' (2.1.24)

समास विग्रह	सामासिक पद (अर्थ सहित)
कृष्णं श्रितः	**कृष्णाश्रितः** (कृष्ण का आश्रय लिया हुआ)
शरणम् आगतः	**शरणागतः** (शरण में आया हुआ)
लोकम् अतीतः	**लोकातीतः** (लोक से परे)
भयम् आपन्नः	**भयापन्नः** (भय को प्राप्त)
रामम् आश्रितः	**रामाश्रितः** (राम के आश्रित)
सुखं प्राप्तः	**सुखप्राप्तः** (सुख को प्राप्त हुआ)
अश्वम् आरूढः	**अश्वारूढः** (घोड़े पर आरूढ़)
स्वर्गं गतः	**स्वर्गगतः** (स्वर्ग को गया हुआ)
दुःखम् अतीतः	**दुःखातीतः** (दुःख को पार किया हुआ)

कूपं पतितः **कूपपतितः** (कुयें में गिरा हुआ)
ग्रामं गतः **ग्रामगतः** (गाँव को गया हुआ)
जीवनं प्राप्तः **जीवनप्राप्तः** (जीवन को प्राप्त किया हुआ)
सुखम् आपन्नः **सुखापन्नः** (सुख को पाया हुआ)

तृतीया तत्पुरुष समास

जिस तत्पुरुष समास का पूर्वपद तृतीया विभक्ति में हो, ऐसे तृतीयान्त सुबन्त पद का तत्कृत (उसके द्वारा किये गए) गुणवाचक शब्द के साथ तथा 'अर्थ' शब्द के साथ तृतीया तत्पुरुष समास होता है।

सूत्र- ''तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन'' (2.1.30)

जैसे-

शङ्कुलया खण्डः = **शङ्कुलाखण्डः** (सरौते से किया गया टुकड़ा)
धान्येन अर्थः = **धान्यार्थः** (अन्न से प्रयोजन)
दानेन अर्थः = **दानार्थः** (दान से प्रयोजन)

➢ तृतीयान्त सुबन्त पदों का 'पूर्व' आदि शब्दों के साथ तृतीया तत्पुरुष समास होता है।

सूत्र- ''पूर्व-सदृश-समोनार्थ-कलह-निपुण-मिश्र-श्लक्ष्णैः'' (2.1.30)

समास विग्रह	सामासिक पद (अर्थ सहित)
मासेन पूर्वः	= **मासपूर्वः** (महीने से पहले)
पित्रा सदृशः	= **पितृसदृशः** (पिता के समान)
मात्रा सदृशः	= **मातृसदृशः** (माता के समान)
भ्रात्रा समः	= **भ्रातृसमः** (भाई के बराबर)
माषेण ऊनम्	= **माषोणम्** (मासा भर कम)
ज्ञानेन हीनः	= **ज्ञानहीनः** (ज्ञान से हीन)
नेत्राभ्यां हीनः	= **नेत्रहीनः** (नेत्रों से रहित)
वाचा कलहः	= **वाक्कलहः** (बातचीत से झगड़ा)
आचारेण निपुणः	= **आचारनिपुणः** (आचार में निपुण)
गुडेन मिश्रः	= **गुडमिश्रः** (गुड़ से मिला हुआ)
आचारेण श्लक्ष्णः	= **आचारश्लक्ष्णः** (आचरण में सहज)
घृतेन पक्वम्	= **घृतपक्वम्** (घी से पकाया हुआ)
पादेन खञ्जः	= **पादखञ्जः** (पैर से लँगड़ा)

➢ कर्ता और करणकारक में तृतीयान्त पद का कृदन्त के साथ तृतीया तत्पुरुष समास होता है- **''कर्तृकरणे कृता बहुलम्'' (2.1.32)**

जैसे-

हरिणा त्रातः = **हरित्रातः** (हरि के द्वारा रक्षित)
नखैः भिन्नः = **नखभिन्नः** (नखों से फाड़ा गया)
नखैः निर्भिन्नः = **नखनिर्भिन्नः** (नखों से फाड़ा गया)
धर्मेण रक्षितः = **धर्मरक्षितः** (धर्म से रक्षित)
बाणेन विद्धः = **बाणविद्धः** (बाण से घायल)

चतुर्थी तत्पुरुष समास

जिस तत्पुरुष समास में पूर्वपद चतुर्थी विभक्ति में हो तथा चतुर्थ्यन्त पदों का अर्थ, बलि, हित, सुख, रक्षित आदि पदों के साथ समास होता है। उसे चतुर्थी तत्पुरुष समास कहते हैं।

''चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः'' (2.1.36)

जैसे-

समास विग्रह	सामासिक पद (अर्थ सहित)
यूपाय दारु	= **यूपदारु** (यज्ञ के खम्भे के लिए लकड़ी)
कुम्भाय मृत्तिका	= **कुम्भमृत्तिका** (घड़े के लिए मिट्टी)
भूतेभ्यः बलिः	= **भूतबलिः** (जीव के लिए बलि)
गोभ्यः हितम्	= **गोहितम्** (गाय के लिए हितकारी)
ब्राह्मणाय हितम्	= **ब्राह्मणहितम्** (ब्राह्मण के लिए हितकर)
गोभ्यः सुखम्	= **गोसुखम्** (गाय के लिए सुखकारी)
गोभ्यः रक्षितम्	= **गोरक्षितम्** (गाय के लिए रक्षित)
धनाय कामना	= **धनकामना** (धन के लिए इच्छा)

विशेष नियम- अर्थ शब्द के साथ चतुर्थी का नित्यसमास होता है, और अर्थ शब्दान्त शब्द का लिङ्ग विशेष्य के अनुसार होता है-

जैसे-

पुँल्लिङ्ग - द्विजाय अयम् = **द्विजार्थः सूपः** (ब्राह्मण के लिए दाल)
स्त्रीलिङ्ग - द्विजाय इयम् = **द्विजार्था यवागूः** (ब्राह्मण के लिए लप्सी)
नपुंसकलिङ्ग - द्विजाय इदम् = **द्विजार्थं पयः** (ब्राह्मण के लिए दूध)

धनाय इदम् = **धनार्थम्** (धन के लिए)
सुखाय इदम् = **सुखार्थम्** (सुख के लिए)
रक्षाय इदम् = **रक्षार्थम्** (रक्षा के लिए)

पञ्चमी तत्पुरुष समास

जिस तत्पुरुष समास का पूर्वपद पञ्चमी विभक्ति में हो, ऐसे पञ्चम्यन्त पदों का भय आदि शब्दों के साथ पञ्चमी तत्पुरुष समास होता है। **''पञ्चमी भयेन'' (2.1.37)**

जैसे-

समास विग्रह	सामासिक पद (अर्थ सहित)
चोरात् भयम्	= **चोरभयम्** (चोर से डरा हुआ)
व्याघ्रात् भयम्	= **व्याघ्रभयम्** (बाघ से डरा हुआ)
सिंहात् भीतः	= **सिंहभीतः** (सिंह से भय)
वृकात् भीतिः	= **वृकभीतिः** (भेड़िये से भय)

सर्पात् भीः	=	**सर्पभीः** (सर्प से डर)
राज्ञः भयम्	=	**राजभयम्** (राजा से डर)

➢ पञ्चम्यन्त शब्दों का 'अपेत, अपोढ, मुक्त, पतित' आदि पदों के साथ पञ्चमी तत्पुरुष समास होता है। जैसे -

समासविग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
सुखात् अपेतः	=	**सुखापेतः** (सुख से रहित)
कल्पनायाः अपोढः	=	**कल्पनापोढः** (कल्पना से शून्य)
बन्धनात् मुक्तः	=	**बन्धनमुक्तः** (बन्धन से मुक्त)
मार्गात् भ्रष्टः	=	**मार्गभ्रष्टः** (मार्ग से भ्रष्ट हुआ)
अश्वात् पतितः	=	**अश्वपतितः** (घोड़े से गिरा हुआ)
वृक्षात् पतितः	=	**वृक्षपतितः** (वृक्ष से गिरा हुआ)
स्वर्गात् पतितः	=	**स्वर्गपतितः** (स्वर्ग से पतित)

षष्ठी तत्पुरुष समास

जिस तत्पुरुष समास का पूर्वपद षष्ठी विभक्ति में हो, ऐसे षष्ठ्यन्त पदों का समर्थ सुबन्त के साथ षष्ठी तत्पुरुष समास होता है।

सूत्र- ''षष्ठी'' (2.2.8)

जैसे-

समासविग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
नराणां पतिः	=	**नरपतिः** (मनुष्यों का स्वामी)
विद्यायाः आलयः	=	**विद्यालयः** (विद्या का घर)
हिमस्य आलयः	=	**हिमालयः** (हिम का घर)
राज्ञः सेवकः	=	**राजसेवकः** (राजा का सेवक)
राज्ञः पुरुषः	=	**राजपुरुषः** (राजा का पुरुष)
राज्ञः कुमारः	=	**राजकुमारः** (राजा का कुमार)
राज्ञः पुत्रः	=	**राजपुत्रः** (राजा का पुत्र)
राज्ञः माता	=	**राजमाता** (राजा की माता)
दशरथस्य पुत्रः	=	**दशरथपुत्रः** (दशरथ का पुत्र)
देवस्य पूजा	=	**देवपूजा** (देव की पूजा)
रामस्य अनुजः	=	**रामानुजः** (राम का भाई)
कृष्णस्य सखा	=	**कृष्णसखः** (कृष्ण का सखा)
नन्दस्य नन्दनः	=	**नन्दनन्दनः** (नन्द का नन्दन)
ईश्वरस्य भक्तः	=	**ईश्वरभक्तः** (ईश्वर का भक्त)
गङ्गायाः जलम्	=	**गङ्गाजलम्** (गङ्गा का जल)
देवस्य मन्दिरम्	=	**देवमन्दिरम्** (देवों का मन्दिर)
राष्ट्रस्य पतिः	=	**राष्ट्रपतिः** (राष्ट्र का स्वामी)
प्रजायाः पतिः	=	**प्रजापतिः** (प्रजा का स्वामी)
सीतायाः पतिः	=	**सीतापतिः** (सीता का पति)
पशूनां पतिः	=	**पशुपतिः** (पशुओं का स्वामी)
पाठस्य शाला	=	**पाठशाला** (पठन का घर)
देवानां भाषा	=	**देवभाषा** (देवों की भाषा)
काल्याः दासः	=	**कालिदासः** (काली का दास)

सप्तमी तत्पुरुष

सूत्र - ''सप्तमी शौण्डैः''

जिस तत्पुरुष समास का पूर्वपद सप्तमी विभक्ति में हो, ऐसे सप्तम्यन्त सुबन्तों का शौण्डादिगण में पठित शब्दों के साथ सप्तमी तत्पुरुष समास होता है। जैसे-

समास विग्रह		सामासिकपद (अर्थ सहित)
अक्षेषु शौण्डः	=	**अक्षशौण्डः** (पासों में चतुर)
कार्ये कुशलः	=	**कार्यकुशलः** (कार्य में कुशल)
रणे कुशलः	=	**रणकुशलः** (रण में कुशल)
मुनिषु श्रेष्ठः	=	**मुनिश्रेष्ठः** (मुनियों में श्रेष्ठ)
पुरुषेषु उत्तमः	=	**पुरुषोत्तमः** (पुरुषों में श्रेष्ठ)
गुरौ भक्तिः	=	**गुरुभक्तिः** (गुरु में भक्ति)
युद्धे निपुणः	=	**युद्धनिपुणः** (युद्ध में निपुण)
नरेषु उत्तमः	=	**नरोत्तमः** (नरों में श्रेष्ठ)
विद्यायां प्रवीणः	=	**विद्याप्रवीणः** (विद्या में कुशल)

तत्पुरुष समास के उपभेद

(i) नञ् तत्पुरुष समास

सूत्र- ''नञ्'' (2.2.6) 'नञ्' इस अव्यय का समर्थ सुबन्त के साथ नञ् तत्पुरुष समास होता है। अर्थात् जिस समास का पूर्वपद 'नञ्' हो तथा उत्तरपद कोई संज्ञा या विशेषण हो तो वहाँ नञ् समास होगा।

➢ 'नञ्' के बाद यदि व्यञ्जन वर्ण आते हैं तो 'नञ्' के स्थान पर 'अ' और यदि 'नञ्' के बाद स्वरवर्ण आये तो 'नञ्' के स्थान पर 'अन्' हो जाता है। जैसे-

न स्वस्थः	=	**अस्वस्थः** (बीमार)
न अश्वः	=	**अनश्वः** (घोड़ा नहीं)

नञ् समास के उदाहरण

समास विग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
न कृतम्	=	**अकृतम्** (जो किया न हो)
न इच्छा	=	**अनिच्छा** (इच्छा न हो)
न आगतम्	=	**अनागतम्** (जो आया न हो)
न गजः	=	**अगजः** (जो गज न हो)
न उक्तः	=	**अनुक्तः** (जो उक्त न हो)
न मोघः	=	**अमोघः** (अव्यर्थ)
न सिद्धः	=	**असिद्धः** (असफल)
न ब्राह्मणः	=	**अब्राह्मणः** (अब्राह्मण)
न ईश्वरः	=	**अनीश्वरः** (जो ईश्वर न हो)

न अर्थः = **अनर्थः** (अनर्थ)
न उचितः = **अनुचितः** (जो उचित नहीं)

(ii) गति समास या प्रादि तत्पुरुष समास

जिस तत्पुरुष समास के पूर्वपद में कु आदि शब्द, ऊरी आदि गतिसंज्ञक शब्द, प्र आदि शब्द आयें तो इनका समर्थ सुबन्तों के साथ नित्य समास होता है, ऐसे समास को **गति तत्पुरुष** या **प्रादि तत्पुरुष** समास कहते हैं। जैसे-

कुत्सितः पुत्रः = **कुपुत्रः** (बुरा पुत्र)
सुन्दरः देशः = **सुदेशः** (सुन्दर देश)
कुत्सितः पुरुषः = **कुपुरुषः** (निन्दित पुरुष)
कुत्सितः राजा = **कुराजा** (बुरा राजा)
प्रगतः आचार्यः = **प्राचार्यः** (श्रेष्ठ आचार्य)
विरुद्धः पक्षः = **विपक्षः** (जो पक्ष में न हो)
शोभनः पुरुषः = **सुपुरुषः** (सुन्दर पुरुष)
प्रकृष्टो वीरः = **प्रवीरः** (प्रकृष्ट वीर)
ऊरी कृत्वा = **ऊरीकृत्य** (स्वीकार करके)
अशुक्लं शुक्लं कृत्वा = **शुक्लीकृत्य** (सफेद करके)
पटत् पटत् इति कृत्वा = **पटपटाकृत्य** (पटत् पटत् इसप्रकार शब्द करके)

(iii) उपपद तत्पुरुष समास

कृदन्त सुबन्तों के साथ उपपदों का समास ही उपपदसमास कहलाता है। इस समास में पूर्वपद उपपद तथा उत्तरपद कृत् प्रत्ययान्त समर्थ पद होता है। अर्थात् उपपद सुबन्त का तिङ् रहित धातु के साथ समास होता है। जैसे-

कुम्भं करोति इति = **कुम्भकारः** (कुम्हार)
धर्मं जानाति इति = **धर्मज्ञः** (जो धर्म जानता है)
सामं गायति इति = **सामगः** (जो सामवेद को जानता है)
आसने तिष्ठति इति= **आसनस्थः** (जो आसन पर बैठता है)
धनं ददाति इति = **धनदः** (जो धन देता है)
भारं हरति इति = **भारहारः** (भार ढोने वाला, कुली)
दिनं करोति इति = **दिनकरः** (सूर्य)
शं करोति इति = **शङ्करः** (महादेव)
भिक्षां चरति इति = **भिक्षाचरः** (भिखारी)
निशायां चरति इति = **निशाचरः** (रात्रि में विचरण करने वाला, राक्षस)
उरसा गच्छति इति = **उरगः** (छाती के बल चलने वाला, साँप)
विहायसा गच्छति इति = **विहगः** (आकाशमार्ग से चलने वाला, पक्षी)
पङ्के जायते इति = **पङ्कजः** (कमल)
मर्म जानाति इति = **मर्मज्ञः** (मर्म को जानने वाला)
कम्बलं ददाति इति = **कम्बलदः** (कम्बल देने वाला)
प्रभां करोति इति = **प्रभाकरः** (सूर्य)

(iv) अलुक् तत्पुरुष समास

- 'अलुक्' का अर्थ है न लुक् अर्थात् 'लोप' का न होना। जिस समास में विभक्ति का लोप नहीं होता उसे अलुक् समास कहते हैं।
- सामान्यतया समास में सामासिक पदों की विभक्ति का लोप हुआ करता है, किन्तु कुछ शब्दों में समास होने पर भी विभक्ति का लोप (लुक्) नहीं होता, उसे 'अलुक्' तत्पुरुष समास कहते हैं।

अलुक् तत्पुरुष समास के उदाहरण

समासविग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
आत्मने पदम्	=	**आत्मनेपदम्** (अपने लिए पद)
परस्मै पदम्	=	**परस्मैपदम्** (दूसरे के लिए पद)
युधि स्थिरः	=	**युधिष्ठिरः** (युद्ध में स्थिर)
कृच्छ्रात् आगतः	=	**कृच्छ्रादागतः** (कठिनाई से आया हुआ)
अभ्यासात् आगतः	=	**अभ्यासादागतः** (अभ्यास से आया हुआ)
सरसि जातम्	=	**सरसिजम्** (तालाब में उत्पन्न)
खे चरति	=	**खेचरः** (आकाश में विचरण करने वाला पक्षी)
वाचः पतिः	=	**वाचस्पतिः** (बृहस्पति)
शरदि जायते	=	**शरदिजः** (शरद् में होने वाला)
प्रावृषि जायते	=	**प्रावृषिजः** (बरसात में होने वाला)
देवानां प्रियः	=	**देवानाम्प्रियः** (मूर्ख)

कर्मधारय समास

तत्पुरुष समास के समानाधिकरण भेद को कर्मधारय समास कहते हैं। अर्थात् समान अधिकरण (विभक्ति) वाला तत्पुरुष, कर्मधारय होता है।

''तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः'' (1.2.42)

तात्पर्य यह है कि पूर्वपद एवं उत्तरपद, दोनों में समान विभक्ति (प्रथमा) लगी रहती है। जैसे- कृष्णः सर्पः = कृष्णसर्पः

- कर्मधारय अथवा समानाधिकरण तत्पुरुष में पूर्वपद विशेषण एवं उत्तरपद विशेष्य होता है। कहीं कहीं दोनों पद विशेष्य होते हैं।

सूत्र- ''विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'' (2.1.57) अर्थात् समान विभक्ति वाले विशेषण का विशेष्य के साथ बहुलता से समास होता है।

कर्मधारय समास के भेद

कर्मधारय समास के कुछ प्रमुख भेद निम्नवत् हैं-

(i) विशेषण पूर्वपद कर्मधारय

कर्मधारय समास में यदि प्रथम पद विशेषण तथा द्वितीय पद विशेष्य होता है, तो उसे विशेषण पूर्वपद कर्मधारय कहते हैं। यथा-

समास विग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
कृष्णः सर्पः	=	**कृष्णसर्पः** (काला साँप)
महान् चासौ देवः	=	**महादेवः** (महादेव)
महान् चासौ राजा	=	**महाराजः** (महान् राजा)
महान् चासौ आत्मा	=	**महात्मा** (महान् आत्मा)
श्रेष्ठः पुरुषः	=	**श्रेष्ठपुरुषः** (श्रेष्ठ पुरुष)
महान् चासौ पुरुषः	=	**महापुरुषः** (महान् पुरुष)
महान् चासौ ऋषिः	=	**महर्षिः** (महान् ऋषि)
महान् कविः	=	**महाकविः** (महान् कवि)
महान् चासौ रथी	=	**महारथी** (महान् रथी)
महत् काव्यम्	=	**महाकाव्यम्** (महान् काव्य)
श्वेतं च तत् वस्त्रम्	=	**श्वेतवस्त्रम्** (सफेद वस्त्र)
श्वेतः च असौ अश्वः	=	**श्वेताश्वः** (सफेद घोड़ा)
सुन्दरः च असौ बालकः	=	**सुन्दरबालकः** (सुन्दर बालक)
मधुरं च तत्फलम्	=	**मधुरफलम्** (मधुरफल)
नीलः आकाशः	=	**नीलाकाशः** (नीला आकाश)
रक्तं च तत् उत्पलम्	=	**रक्तोत्पलम्** (लाल कमल)
गौरः बालकः	=	**गौरबालकः** (गोरा बालक)
नीलम् उत्पलम्	=	**नीलोत्पलम्** (नीला कमल)
नीलं कमलम्	=	**नीलकमलम्** (नीलकमल)
प्रियः सखा	=	**प्रियसखः** (प्रिय मित्र)
महती नदी	=	**महानदी** (बड़ी नदी)

(ii) उपमानपूर्वपद कर्मधारय

''उपमानानि सामान्यवचनैः'' (2.1.55) - जब उपमानवाचक शब्द का सामान्यवाचक शब्द के साथ समास होता है, तो उसे उपमानपूर्वपद कर्मधारय कहते हैं।

समासविग्रह		सामासिक पद (अर्थसहित)
घन इव श्यामः	=	**घनश्यामः** (घनश्याम)
विद्युत् इव चञ्चला	=	**विद्युच्चञ्चला** (बिजली सी चञ्चल)
नवनीतम् इव कोमलम्	=	**नवनीतकोमलम्** (नवनीत के समान कोमल)
चन्द्रः इव उज्ज्वलः	=	**चन्द्रोज्ज्वलः** (चन्द्रमा सा उज्ज्वल)
चन्द्रः इव मुखम्	=	**चन्द्रमुखम्** (चन्द्रमा के समान मुख)
नरः शार्दूल इव	=	**नरशार्दूलः** (नरों में चीते के समान)
पुरुषः सिंह इव	=	**पुरुषसिंहः** (सिंह के समान पुरुष)
नरः सिंह इव	=	**नरसिंहः** (मनुष्य सिंह के समान)
चन्द्र इव आह्लादकः	=	**चन्द्राह्लादकः** (चन्द्र के समान कोमल)
कमलम् इव कोमलम्	=	**कमलकोमलम्** (कमल के समान कोमल)
पुरुषः व्याघ्र इव	=	**पुरुषव्याघ्रः** (व्याघ्र के समान पुरुष)
दुग्धम् इव धवलम्	=	**दुग्धधवलम्** (दूध के समान सफेद)
नीरदः इव श्यामः	=	**नीरदश्यामः** (बादल के समान काला)

(iii) रूपक कर्मधारय

उपमान और उपमेय के एकरूप होने से, उपमान उपमेय पद के समास को रूपक कर्मधारय समास कहते हैं। जैसे-

समासविग्रह		सामासिक पद (अर्थ सहित)
शोक एव अग्निः	=	**शोकाग्निः** (शोकरूपी अग्नि)
विद्या एव धनम्	=	**विद्याधनम्** (विद्यारूपी धन)
मुखमेव कमलम्	=	**मुखकमलम्** (मुखरूपी कमल)
परीक्षा एव पयोधिः	=	**परीक्षापयोधिः** (परीक्षारूपी सागर)

(iv) उभयपद विशेषण कर्मधारय

इस समास में पूर्वपद और उत्तरपद दोनों विशेषण होते हैं। जैसे-

समासविग्रह		सामासिकपद (अर्थ सहित)
पीतः चासौ कृष्णः	=	**पीतकृष्णः** (पीला और काला)
श्वेतः चासौ कृष्णः	=	**श्वेतकृष्णः** (श्वेत और काला)
चरं च अचरं च	=	**चराचरम्** (चराचर)
पूर्वं सुप्तः पश्चात् उत्थितः	=	**सुप्तोत्थितः** (पहले सोया फिर उठा)
कृतं च अकृतं च	=	**कृताकृतम्** (किया हुआ और न किया हुआ)
शीतं च उष्णम्	=	**शीतोष्णम्** (ठण्डा-गरम)
रक्तश्च पीतश्च	=	**रक्तपीतः** (लाल-पीला)

नोट - परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः (2.426)
द्वन्द्व और तत्पुरुष का लिङ्ग उस समास के बाद वाले पद के समान होता है।

द्विगु समास

''संख्यापूर्वो द्विगुः'' (2.1.52) - अर्थात् जिस समास में पूर्वपद संख्यावाचक हो, वह द्विगु समास कहलाता है। यह कर्मधारय समास का उपभेद है, पर अपने प्रकृति वैशिष्ट्य के कारण स्वतन्त्र समास के रूप में स्वीकृत है।

द्विगु समास के उदाहरण-

समास विग्रह	सामासिकपद (अर्थ सहित)
पञ्चानां गवां समाहारः	= **पञ्चगवम्** (पाँच गायों का समूह)
पञ्चानां वटानां समाहारः	= **पञ्चवटी** (पाँच वटों/वृक्षों का समूह)
पञ्चानां पात्राणां समाहारः	= **पञ्चपात्रम्** (पाँच पात्रों का समूह)
पञ्चानाम् अमृतानां समाहारः	= **पञ्चामृतम्** (पाँच अमृतों का समूह)
पञ्चानां दिनानां समाहारः	= **पञ्चदिनम्** (पाँच दिनों का समूह)
त्रयाणां लोकानां समाहारः	= **त्रिलोकी** (तीन लोकों का समाहार)
त्रयाणां भुवनानां समाहारः	= **त्रिभुवनम्** (तीनों भुवनों का समाहार)
चतुर्णां फलानां समाहारः	= **चतुर्फलम्** (चार फलों का समाहार)
अष्टानाम् अध्यायानां समाहारः	= **अष्टाध्यायी** (आठ अध्यायों का समाहार)
त्रयाणां फलानां समाहारः	= **त्रिफला** (तीन फलों का समाहार)
शतानाम् अब्दानां समाहारः	= **शताब्दी** (सौ वर्षों का समूह)
चतुर्णां भुजानां समाहारः	= **चतुर्भुजम्** (चार भुजाओं का समूह)
तिसृणां वेणीनां समाहारः	= **त्रिवेणी** (तीन वेणियों का समूह)
चतुर्णां युगानां समाहारः	= **चतुर्युगम्** (चार युगों का समूह)
सप्तानां शतानां समाहारः	= **सप्तशती** (सात सैकड़ों का समूह)
सप्तानाम् अह्नाम् समाहारः	= **सप्ताहः** (सात अह्नों/दिनों का समाहार)
नवानां रात्रीणां समाहारः	= **नवरात्रम्** (नव रात्रियों का समूह)

द्वन्द्व समास

''उभयपदार्थप्रधानः द्वन्द्वः'' अर्थात् जिस समास में उभयपद (दोनों पद) या सभी पदों की प्रधानता होती है, उसे द्वन्द्वसमास कहते हैं। जैसे- रामश्च कृष्णश्च = **रामकृष्णौ**
यहाँ 'राम' और 'कृष्ण' दोनों पद प्रधान हैं, अतः इसमें द्वन्द्वसमास है।

द्वन्द्व समास के भेद- द्वन्द्व समास के मुख्यतः दो ही भेद होते हैं किन्तु एकशेष को शामिल करके इसके कुल तीन भेद हो जाते हैं-

(i) इतरेतर द्वन्द्व- जब समास में प्रयुक्त होने वाले शब्द के अर्थ अपनी-अपनी प्रधानता अलग-अलग प्रदर्शित करते हैं, उसे इतरेतर द्वन्द्व कहते हैं। इसका लिङ्ग निर्धारण उत्तरपद के अनुसार होता है।
जैसे- 'रामश्च लक्ष्मणश्च = रामलक्ष्मणौ' - यहाँ राम तथा लक्ष्मण का अलग-अलग अस्तित्व है। अतः यहाँ 'रामलक्ष्मणौ' में इतरेतर द्वन्द्व समास है।

(ii) समाहार द्वन्द्व- जिस द्वन्द्व समास में आये हुए पद अपना अर्थ बतलाने के साथ-साथ समूह या समाहार अर्थ का भी बोध कराते हैं, उसे 'समाहार द्वन्द्व' कहते हैं। यह समास नित्य नपुंसकलिङ्ग में होता है।
यथा- पाणिपादम् = पाणी च पादौ च तेषां समाहारः (हाथ और पैर का समूह)

(iii) एकशेष द्वन्द्व- जिस द्वन्द्व समास में दो या दो से अधिक पदों में से केवल एक पद शेष रहता है, उसे 'एकशेष द्वन्द्व' कहते हैं। जैसे- दुहिता च दुहिता च = दुहितरौ।

➢ यदि समास में पुँल्लिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग दोनों प्रकार के शब्द हों तो पुँल्लिङ्ग शब्द ही शेष बचेगा। जैसे-

माता च पिता च = **पितरौ**
मयूरी च मयूरः च = **मयूरौ**

द्वन्द्व समास करने वाला सूत्र

''चार्थे द्वन्द्वः'' (2.2.29) इस सूत्र से 'च' (और) के अर्थ में विद्यमान अनेक सुबन्तों का द्वन्द्व समास होता है।

इतरेतर द्वन्द्व समास के उदाहरण

सीता च रामश्च	= **सीतारामौ** (सीता और राम)
रामः च कृष्णः च	= **रामकृष्णौ** (राम और कृष्ण)
देवश्च असुरश्च	= **देवासुरौ** (देवता और असुर)
धर्मश्च अर्थश्च	= **धर्मार्थौ** (धर्म और अर्थ)
कृष्णश्च अर्जुनश्च	= **कृष्णार्जुनौ** (कृष्ण और अर्जुन)
वाणी च विनायकश्च	= **वाणीविनायकौ** (वाणी और विनायक)
पार्वती च परमेश्वरश्च	= **पार्वतीपरमेश्वरौ** (पार्वती और परमेश्वर महादेव)

सूर्यश्च चन्द्रश्च = **सूर्यचन्द्रौ** (सूर्य और चन्द्र)
शिवश्च केशवश्च = **शिवकेशवौ** (शिव और केशव)
रामश्च लक्ष्मणश्च = **रामलक्ष्मणौ** (राम और लक्ष्मण)
भीमश्च अर्जुनश्च = **भीमार्जुनौ** (भीम और अर्जुन)
सज्जनश्च दुर्जनश्च = **सज्जनदुर्जनौ** (सज्जन और दुर्जन)
ईशश्च कृष्णश्च = **ईशकृष्णौ** (ईश और कृष्ण)
पिता च पुत्रश्च = **पितापुत्रौ** (पिता और पुत्र)
हरिश्च हरश्च = **हरिहरौ** (हरि और हर)
बालश्च वृद्धश्च = **बालवृद्धौ** (बालक और वृद्ध)
नरश्च नारी च = **नरनार्यौ** (नर और नारी)
जाया च पतिश्च = **जायापती/जम्पती/दम्पती** (पति और पत्नी)

नोट- इतरेतर द्वन्द्व समास में दो या दो से अधिक पदों का योग होता है। दो पदों के लिए द्विवचन और दो से अधिक पदों का समास होने पर बहुवचन का प्रयोग होता है। लिङ्ग अन्तिम पद के समान प्रयोग किया जाता है। जैसे-

☆ हरिश्च हरश्च गुरुश्च = **हरिहरगुरवः**
☆ रामश्च भरतश्च लक्ष्मणश्च शत्रुघ्नश्च = **रामभरतलक्ष्मणशत्रुघ्नाः**

यहाँ दो से अधिक पदों का समास हुआ है, अतः बहुवचन का प्रयोग हुआ है।

समाहार द्वन्द्व के उदाहरण

समास विग्रह	सामासिकपद (अर्थ सहित)
पाणी च पादौ च तेषां समाहारः	= **पाणिपादम्** (हाथ और पैर का समूह)
रथिकः च अश्वारोही च	= **रथिकाश्वारोहम्** (रथी और घुड़सवार)
भेरी च पटहश्च	= **भेरीपटहम्** (भेरी और पटह का समूह)
अहिश्च नकुलश्च	= **अहिनकुलम्** (साँप और नेवला)
अहश्च रात्रिश्च	= **अहोरात्रम्** (रात और दिन)
रथाश्च अश्वाश्च तेषां समाहारः	= **रथाश्वम्** (रथ और घोड़े)

संज्ञा च परिभाषा च अनयोः समाहारः = **संज्ञापरिभाषम्** (संज्ञा और परिभाषा का समूह)

नोट- जिस समास में अनेक पदों के समूह का बोध होता है, उसे समाहार द्वन्द्व कहते हैं। समाहार द्वन्द्व में समास के बाद **नपुंसकलिङ्ग एकवचन** का प्रयोग होता है।

एकशेष द्वन्द्व समास के उदाहरण

समास विग्रह	सामासिक पद (अर्थ सहित)
माता च पिता च	= **पितरौ** (माता और पिता)
पुत्रश्च पुत्री च	= **पुत्रौ** (पुत्र और पुत्री)
रामश्च रामश्च	= **रामौ** (दो राम)
हंसश्च हंसी च	= **हंसौ** (हंस और हंसी)
युवा च युवती च	= **युवानौ** (युवक और युवती)
दुहिता च दुहिता च	= **दुहितरौ** (दो पुत्रियाँ)
मयूरी च मयूरः च	= **मयूरौ** (मयूरी और मयूर)
भ्राता च स्वसा च	= **भ्रातरौ** (भाई और बहन)
श्वश्रूः च श्वसुरश्च	= **श्वसुरौ** (सास और ससुर)

द्वन्द्व समास के अन्य उदाहरण

(i) एकः च दश च = **एकादश**
(ii) द्वौ च दश च = **द्वादश**
(iii) त्रयः च दश च = **त्रयोदश**
(iv) अष्टौ च दश च = **अष्टादश** इत्यादि में भी द्वन्द्व समास है।

बहुव्रीहि समास

''अन्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहिः'' अर्थात् जिस समास में सामासिक पदों से भिन्न किसी अन्य पद का अर्थ प्रधान होता है, उसे 'बहुव्रीहि' समास कहते हैं। अर्थात् बहुव्रीहि में जितने भी पद होते हैं वे सभी मिलकर किसी दूसरे पद के विशेषण होते हैं।

जैसे- लम्बम् उदरं यस्य सः = **लम्बोदरः**।

यहाँ लम्बम् उदरं दोनों विशेषण विशेष्य तो है लेकिन वे किसी अन्य पद 'गणेश' की विशेषता बता रहे हैं। अतः यहाँ बहुव्रीहि समास है।

बहुव्रीहि समास विधायक सूत्र- अनेकमन्यपदार्थे (2.2.24)

अन्य पद के अर्थ में वर्तमान अनेक प्रथमान्त पदों का विकल्प से बहुव्रीहि समास होता है।

बहुव्रीहि समास के भेद-

(क) समानाधिकरण बहुव्रीहि- इसके दोनों पदों में समान विभक्ति होती है।

समास विग्रह	सामासिक पद (अर्थ सहित)
पीतम् अम्बरं यस्य सः	= **पीताम्बरः** (श्रीकृष्ण) पीले वस्त्र वाला
लम्बम् उदरं यस्य सः	= **लम्बोदरः** (गणेश) लम्बा है उदर जिसका
नीलः कण्ठः यस्य सः	= **नीलकण्ठः** (शिव) नीला है कण्ठ जिसका

श्वेतम् अम्बरं यस्य सः = **श्वेताम्बरः** (साधु) सफेद है वस्त्र जिसका
दाम उदरं यस्य सः = **दामोदरः** (श्रीकृष्ण) रस्सी है उदर पर जिसके
जितानि इन्द्रियाणि येन सः = **जितेन्द्रियः** (मुनि) जीत ली है इन्द्रियाँ जिसने
शुक्लम् अम्बरं यस्याः सा = **शुक्लाम्बरा** (सरस्वती)
दश आननानि यस्य सः = **दशाननः** (रावण)
चत्वारि आननानि यस्य सः = **चतुराननः** (ब्रह्मा)
दिक् अम्बरं यस्य सः = **दिगम्बरः** (शिव)
प्राप्तम् उदकं यं सः = **प्राप्तोदकः**(जल जिसे प्राप्त है।)
महान् आशयः यस्य सः = **महाशयः** (सभ्य व्यक्ति)
यशः एव धनं यस्य सः = **यशोधनः** (राजा) यश ही है धन जिसका
लब्धा प्रतिष्ठा येन सः = **लब्धप्रतिष्ठः** (विद्वान्)
नीलम् अम्बरं यस्य सः = **नीलाम्बरः** (बलराम)
दिव्यम् अम्बरं यस्य सः = **दिव्याम्बरः** (दिव्य हैं वस्त्र जिसका, वह)
पञ्च आननानि यस्य सः = **पञ्चाननः** (शिव)
नीलं कण्ठं यस्य सः = **नीलकण्ठः** (शिव)
गज इव आननं यस्य सः = **गजाननः** (गणेश)
कमलम् आसनं यस्य सः = **कमलासनः** (ब्रह्मा)
लम्बौ कर्णौ यस्य सः = **लम्बकर्णः** (लम्बे हैं कान जिसके, वह)

(ख) व्यधिकरण बहुव्रीहि

इसके दोनों पद अलग-अलग विभक्तियों में होते हैं। जैसे-

चक्रं पाणौ यस्य सः = **चक्रपाणिः** (विष्णु)
वीणा पाणौ यस्याः सा = **वीणापाणिः** (सरस्वती)
धनुः पाणौ यस्य सः = **धनुष्पाणिः** (श्रीराम)
चन्द्रः शेखरे यस्य सः = **चन्द्रशेखरः** (शिव)
पीयूषं पाणौ यस्य सः = **पीयूषपाणिः** (वैद्य)
मृगस्य नयने इव नयने यस्याः सा = **मृगनयनी** (स्त्री) (मृग के नयनों के समान हैं नयन जिसके)
शूलं पाणौ यस्य सः = **शूलपाणिः** (शूल है हाथ में जिसके, वह)
शीतिः कण्ठे यस्य सः = **शीतिकण्ठः** (शिव) (नीलिमा है जिसके कण्ठ में, वह)
चन्द्रस्य कान्तिः इव कान्तिः यस्य सः = **चन्द्रकान्तिः** (चन्द्र की कान्ति के समान कान्ति है जिसकी, वह)
गदा पाणौ यस्य सः = **गदापाणिः** (विष्णु)

(ग) व्यतिहार बहुव्रीहि

युद्ध लड़ाई आदि का ज्ञान कराने वाले सप्तम्यन्त तथा तृतीयान्त पदों में जो समास होता है, उसे व्यतिहार बहुव्रीहि कहते हैं। यथा-

☆ केशेषु केशेषु गृहीत्वा इदं युद्धं प्रवृत्तम् = **केशाकेशि** (बालों को पकड़कर प्रारम्भ होने वाला युद्ध)
☆ हस्ताभ्यां हस्ताभ्यां प्रवृत्तं युद्धम् = **हस्ताहस्ति** (हाथों से प्रवृत्त हुआ युद्ध)
☆ दण्डैश्च दण्डैश्च प्रहृत्य इदं युद्धं प्रवृत्तम् = **दण्डादण्डि** (परस्पर लाठियों से मार-मार कर युद्ध में प्रवृत्त हुआ)
☆ मुष्टिभिश्च मुष्टिभिश्च प्रहृत्य इदं युद्धं प्रवृत्तम् = **मुष्टामुष्टि** (परस्पर मुक्कों से मार-मार कर यह लड़ाई लड़ी गयी)

(घ) तुल्य योग बहुव्रीहि

जब बहुव्रीहि समास में साथ अर्थ वाले 'सह' का समास होता है, तब तुल्ययोग बहुव्रीहि समास होता है। 'सह' को विकल्प से 'स' हो जाता है। जैसे-

अर्जुनेन सह = **सार्जुनः** (अर्जुन के साथ)
राधिकया सह इति = **सराधिकः** (कृष्ण) राधिका के साथ
भार्यया सह = **सभार्यः** (स्त्री सहित)
कलाभिः समम् = **सकलम्** (कलाओं से युक्त)
सीतया सह = **ससीतः** (राम, सीता के साथ)
पुत्रेण सह = **सपुत्रः** (पुत्र के साथ)
परिवारेण सह = **सपरिवारः** (परिवार के साथ)
अनुजेन सह = **सानुजः** (अनुज के साथ)

बहुव्रीहि समास के कुछ अन्य उदाहरण-

☆ द्वौ वा त्रयो वा = **द्वित्राः** (दो या तीन)
☆ त्रयः वा चत्वारो वा = **त्रिचतुराः** (तीन-चार)
☆ पञ्च वा षट् वा = **पञ्चषाः** (पाँच या छह)
☆ युवतिः जाया यस्य सः = **युवजानिः** (जिसकी स्त्री युवती है, वह)
☆ सीता जाया यस्य सः = **सीताजानिः** (जिसकी स्त्री सीता है, वह राम)
☆ पठितुं कामं यस्य सः = **पठितुकामः** (पढ़ने की इच्छा वाला)
☆ अविद्यमानो पुत्रः यस्य सः = **अपुत्रः** (नहीं है पुत्र जिसके, वह)
☆ चित्रा गावो यस्य सः = **चित्रगुः** (चितकबरी गायों वाला व्यक्ति)

❑❑

कारक तथा विभक्ति

- **कृ + ण्वुल् = कारक**
- **'क्रियां करोति इति कारकम्'** क्रिया को करने वाला कारक है।
- **'क्रियाजनकत्वं कारकत्वम्'** क्रिया का जो जनक होता है, वह कारक है।
- **'क्रियान्वयित्वं कारकत्वम्'** क्रिया के साथ जिसका सीधा सम्बन्ध (अन्वय) होता है, उसे कारक कहते हैं।

जैसे- वन से आकर राम ने सीता के लिए लंका में रावण को बाण से मारा था।

वनात् आगत्य रामः सीतायै लङ्कायां रावणं बाणेन जघान।

स्पष्टीकरण-

(i) इस वाक्य में 'मारना' क्रिया को सम्पादित करने वाला 'राम' है, अतः 'राम' कर्ताकारक है।

(ii) क्रिया का प्रभाव जिस पर पड़ता है वह कर्म है। 'मारना' क्रिया का प्रभाव 'रावण' पर पड़ता है, अतः 'रावण' कर्म है।

(iii) क्रिया के सम्पन्न करने में अत्यधिक सहायक 'करण' कहलाता है, यहाँ 'मारने' की क्रिया में अत्यधिक सहायक 'बाण' है अतः 'बाण' करण कारक है।

(iv) सीता के लिए रावण मारा गया, अतः 'सीता' सम्प्रदान है।

(v) 'वन' अपादान कारक है।

(vi) मारने की क्रिया लंका में पूर्ण हुई थी, अतः लंका अधिकरण कारक है।

इसप्रकार इस वाक्य में 'राम, सीता, रावण, वन, बाण, लंका' इन सभी शब्दों का 'मारना' (जघान) क्रिया से सम्बन्ध है, अतः उपर्युक्त ये सभी शब्द कारक हैं।

कारकों की संख्या

कारक छह हैं- **1. कर्ता 2. कर्म 3. करण 4. सम्प्रदान 5. अपादान 6. अधिकरण**

कर्ता कर्म च करणं सम्प्रदानं तथैव च।
अपादानाधिकरणे इत्याहुः कारकाणि षट्।।

- जिनका क्रिया के साथ सीधा सम्बन्ध नहीं होता या जो क्रिया की सिद्धि में सहायक नहीं होते, उन्हें कारक नहीं कहा जा सकता। इसीलिए सम्बन्ध और सम्बोधन कारक नहीं माने जाते क्योंकि क्रिया के साथ इनका साक्षात् सम्बन्ध नहीं होता।

कारक चिह्न

विभक्ति	कारक	चिह्न
प्रथमा/तृतीया	कर्ता	ने
द्वितीया	कर्म	को
तृतीया	करण	से/द्वारा
चतुर्थी	सम्प्रदान	के लिए
पञ्चमी	अपादान	से (अलग होना)
षष्ठी	सम्बन्ध	का, के, की, रा, रे, री
सप्तमी	अधिकरण	में, पै, पर
प्रथमा	सम्बोधन	हे, भो, अरे

प्रथमा विभक्ति

1. स्वतन्त्रः कर्ता- क्रिया करने में जिसकी स्वतन्त्रता मानी जाय, वही कर्ता होता है। यह सूत्र 'कर्तृसंज्ञा' करने वाला संज्ञा सूत्र है। जैसे- मोहनः पठति। यहाँ 'मोहन' पठन क्रिया करने में स्वातन्त्र्येण विवक्षित है, अतः 'मोहन' कर्ता है।

- वाक्य में कर्ता की स्थिति के अनुसार संस्कृत में वाक्य तीन प्रकार के होते हैं-

(क) कर्तृवाच्य- मोहनः पुस्तकं पठति। - यहाँ कर्ता की प्रधानता होती है, और कर्ता में प्रथमा विभक्ति होती है।

(ख) कर्मवाच्य- मोहनेन पुस्तकं पठ्यते। यहाँ 'कर्म' की प्रधानता होती है और कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है।

(ग) भाववाच्य- रामेण भूयते। यहाँ भाव (क्रिया) की प्रधानता होती है, और कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है।

2. प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा

प्रातिपदिकार्थ मात्र में, लिङ्गमात्र के आधिक्य में, परिमाण मात्र के आधिक्य में तथा वचनमात्र के आधिक्य में प्रथमा विभक्ति होती है।

- किसी प्रातिपदिक के उच्चारण से स्वार्थ, द्रव्य, लिङ्ग, संख्या और कारक- इन पाँचों में, जिसका ज्ञान निश्चित रूप से हो, उसे प्रातिपदिकार्थ कहते हैं।

उदाहरण- उच्चैः, नीचैः, कृष्णः, श्रीः, ज्ञानम्।

लिङ्गमात्राधिक्ये प्रथमा- जिन शब्दों के लिङ्ग निश्चित नहीं हैं, उन शब्दों से लिङ्गमात्राधिक्य में प्रथमा विभक्ति होती है।
जैसे- **तटः** (पुंलिङ्ग), **तटी** (स्त्रीलिङ्ग), **तटम्** (नपुंसकलिङ्ग)
परिमाणमात्राधिक्ये प्रथमा- परिमाण (वजन, माप, तौल) मात्रा का बोध कराने के लिए प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे- **द्रोणो व्रीहिः।**
वचनमात्रे प्रथमा- वचन अर्थात् संख्यामात्र का बोध कराने के लिए प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा- **एकः, द्वौ, बहवः।**
3. सम्बोधने च - सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति होती है- जैसे- **हे राम! अत्र आगच्छ!** यहाँ हे राम! में सम्बोधन होने से प्रथमा विभक्ति प्रयुक्त है।
4. उक्ते कर्तरि प्रथमा- कर्तृवाच्य में जहाँ कर्ता उक्त या 'कहा गया' रहता है, उसमें प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे- रामः गृहं गच्छति।
➢ यहाँ 'राम' कर्तृवाच्य का कर्ता है जो कि उक्त है अतः 'रामः' में प्रथमा विभक्ति है।
इसप्रकार प्रातिपदिकार्थमात्र में, लिङ्गमात्र में, परिमाणमात्र में, वचनमात्र में, सम्बोधन में, उक्त कर्ता में प्रथमा विभक्ति होगी।

द्वितीया विभक्ति (कर्मकारक)

1. कर्तुरीप्सिततमं कर्म- कर्ता अपनी क्रिया के द्वारा जिसे विशेष रूप से प्राप्त करना चाहता है उसकी कर्मसंज्ञा होती है। जैसे- **रामः लेखन्या पत्रं लिखति।**
यहाँ 'राम' रूपी कर्ता अपनी लेखन रूपी क्रिया से सबसे ज्यादा 'पत्र' लिखना चाह रहा है अतः 'पत्र' यहाँ कर्म होगा।
2. कर्मणि द्वितीया- कर्म में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे-
1. रामः **गृहं** गच्छति।
2. छात्रः **विद्यालयं** गच्छति।
3. अहं **जलं** पिबामि।
4. बालकाः **फलानि** खादन्ति।
5. सः **नगरं** गच्छति।
6. भक्तः **हरिं** भजति।

उपर्युक्त वाक्यों में 'गृह, विद्यालय, जल, फल, नगर, हरि' इन सभी की कर्मसंज्ञा है, अतः सभी पदों में कर्म होने के कारण 'कर्मणि द्वितीया' से **द्वितीया विभक्ति** हुई है।
3. अकथितं च- अपादान, सम्प्रदान, करण आदि कारकों के द्वारा अविवक्षित कारक कर्मसंज्ञक होता है। दुह् आदि (बारह) एवं नी आदि (चार) कुल 16 धातुओं के कर्म से जिसका सम्बन्ध होता है, वह अकथित कहा जाता है।
सोलह द्विकर्मक धातुयें- दुह्, याच्, पच्, दण्ड्, रुध्, प्रच्छ्, चि, ब्रू, शास्, जि, मथ्, मुष् -12
नी, हृ, कृष्, वह् = 4 ये सोलह द्विकर्मक धातुयें हैं।
इन सोलह धातुओं एवं इनके समानार्थक धातुओं के योग में अपादान, सम्प्रदान, करण आदि कारकों की कर्मसंज्ञा होती है, और उनमें द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है।

द्विकर्मक धातुओं के योग में अपादान आदि का कर्म होना

	धातु	प्रयोग	अर्थ
1.	**दुह्** (दुहना)	ग्वालः धेनुं दुग्धं दोग्धि।	ग्वाला गाय से दूध दुहता है।
2.	**याच्** (माँगना)	हरिः बलिं वसुधां याचते।	हरि बलि से पृथ्वी माँगते हैं।
		सः नृपं क्षमां याचते।	वह राजा से क्षमा माँगता है।
3.	**पच्** (पकाना)	माता तण्डुलान् ओदनं पचति।	माता चावलों से भात पकाती है।
4.	**दण्ड्** (दण्ड देना)	राजा चौरं शतं दण्डयति।	राजा चोर से 100 रुपये दण्ड लेता है।
5.	**रुध्** (रोकना)	राजा शत्रून् दुर्गं रुणद्धि।	राजा शत्रुओं को किले में रोकता है।
6.	**प्रच्छ्** (पूछना)	गुरुः शिष्यं प्रश्नं पृच्छति।	गुरु शिष्य से प्रश्न पूछता है।
7.	**चि** (चुनना)	बालकः वृक्षं फलानि अवचिनोति।	बालक वृक्ष से फल चुनता है।
8.	**ब्रू** (बोलना)	गुरुः शिष्यं धर्मं ब्रूते।	गुरु शिष्य से धर्म बताता है।
9.	**शास्** (उपदेश देना)	गुरुः शिष्यं धर्मं शास्ति।	गुरु शिष्य को धर्म का उपदेश देता है।
10.	**जि** (जीतना)	सः देवदत्तं शतं जयति।	वह देवदत्त से सौ रुपये जीतता है।
11.	**मथ्** (मथना)	सुधां क्षीरनिधिं मथ्नाति।	अमृत के लिए समुद्र को मथता है।
12.	**मुष्** (चुराना)	यज्ञदत्तं शतं मुष्णाति।	यज्ञदत्त से सौ रुपये चुराता है।

13. **नी** (ले जाना)	कृषकः धेनुं ग्रामं नयति।	किसान गाय को गाँव ले जाता है।
14. **हृ** (हरना)	कृषकः धेनुं ग्रामं हरति।	किसान गाय को गाँव ले जाता है।
15. **कृष्** (खींचना)	कृषकः धेनुं ग्रामं कर्षति।	किसान गाय को गाँव तक खींचकर ले जाता है।
16. **वह्** (ले जाना)	कृषकः धेनुं ग्रामं वहति।	किसान गाय को ग्राम तक वहन करता है।

4. अधिशीङ्स्थासां कर्म- (1.4.46) **शी** (सोना), **स्था** (ठहरना), **आस्** (बैठना) - इन तीन धातुओं के पहले यदि 'अधि' उपसर्ग जुड़ा हो तो इनके आधार की कर्मसंज्ञा होती है, और कर्म में द्वितीया विभक्ति होगी। जैसे-

1. राजा **सिंहासनम्** अधितिष्ठति। (राजा सिंहासन पर बैठता है)
2. हरिः **वैकुण्ठम्** अध्यास्ते। (हरि वैकुण्ठ में बैठते हैं)
3. शिष्यः **आसनम्** अधितिष्ठति। (शिष्य आसन पर बैठता है)
4. मुनिः **शिलाम्** अधिशेते। (मुनि शिला पर सोते हैं)
5. सः **पर्यङ्कम्** अधिशेते (वह पलंग पर सोता है)

उपर्युक्त वाक्यों में सिंहासन, वैकुण्ठ, आसन, शिला, पर्यङ्क ये सभी आधार हैं। यहाँ सभी क्रिया पदों में 'अधि' उपसर्ग के साथ शीङ्, स्था, आस्, धातुओं का प्रयोग है। अतः आधार की कर्मसंज्ञा होकर द्वितीया विभक्ति हो गयी।

5. अभिनिविशश्च- (1.4.47) 'अभि' और 'नि' इसी क्रम से ये दोनों ही उपसर्ग यदि 'विश्' धातु के पूर्व में आयें तो आधार की कर्मसंज्ञा हो जाती है। कर्म में द्वितीया विभक्ति होगी।

जैसे- **सन्तः सन्मार्गम् अभिनिविशते।**
(सज्जन सन्मार्ग में प्रवेश करते हैं)

➢ यहाँ 'अभिनिविशते' में 'अभि' एवं 'नि' उपसर्ग के साथ 'विश्' धातु का प्रयोग हुआ है अतः 'सन्मार्गम्' इस आधार की कर्मसंज्ञा होकर द्वितीया विभक्ति हो गयी है।

6. उपान्वध्याङ्वसः - (1.4.48) उप, अनु, अधि या आङ् इनमें से कोई उपसर्ग यदि वस् धातु के पूर्व में आये तो आधार की कर्मसंज्ञा होकर द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होगा।

जैसे- राजा **नगरम्** उपवसति। (राजा नगर में रहता है)
राजा **नगरम्** अनुवसति।
राजा **नगरम्** अधिवसति।
राजा **नगरम्** आवसति।

➢ यहाँ 'वस्' धातु के पूर्व उप, अनु, अधि एवं आङ् उपसर्ग का प्रयोग हुआ है अतः आधार 'नगर' की कर्मसंज्ञा हो गयी और उसमें द्वितीया विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

7. अन्तराऽन्तरेण युक्ते- (2.3.4) 'अन्तरा' (मध्य में) और 'अन्तरेण' (बिना) इन अव्ययों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है।

(i) अन्तरा **ग्रामं** नदी प्रवहति। (दो गाँवों के बीच नदी बहती है)
(ii) **संस्कृतम्** अन्तरेण न किमपि जानामि। (संस्कृत के सिवाय और कुछ नहीं जानता)

8. अभितः - परितः - समया - निकषा - हा - प्रति-योगेऽपि-

अभितः (दोनों ओर या आस पास) **परितः** (चारों ओर) **समया** (समीप) **निकषा** (निकट) **हा** (शोक) **प्रति** (ओर) इन शब्दों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे-

(i) **ग्रामम्** अभितः वनम् अस्ति। (गाँव के आस-पास वन है)
(ii) **आश्रमम्** अभितः वृक्षाः सन्ति। (आश्रम के दोनों ओर वृक्ष हैं)
(iii) **विद्यालयं** परितः वृक्षाः सन्ति। (विद्यालय के चारों ओर वृक्ष हैं)
(iv) **ग्रामं** परितः उपवनानि सन्ति। (गाँव के चारों ओर उपवन हैं)
(v) **लङ्कां** समया सागरः अस्ति। (लङ्का के समीप सागर है)
(vi) **लङ्कां** निकषा हनिष्यति (लङ्का के समीप मारेगा)
(vii) हा **कृष्णाभक्तम्** (कृष्ण के अभक्त के लिए खेद है)
(viii) **बुभुक्षितं** न प्रतिभाति किञ्चित् (भूखे को कुछ भी अच्छा नहीं लगता)
(ix) छात्रः **गुरुं** प्रति श्रद्धधाति। (छात्र की गुरु के प्रति श्रद्धा है)
(x) सः **नगरं** प्रति गच्छति। (वह नगर की ओर जाता है)

9. उभसर्वतसोः कार्या धिगुपर्यादिषु त्रिषु।
द्वितीयाऽऽम्रेडितान्तेषु ततोऽन्यत्रापि दृश्यते॥

उभयतः, सर्वतः, धिक्, उपर्युपरि, अध्यधि, अधोऽधः पदों के योग होने पर द्वितीया विभक्ति होगी। जैसे-

(i) उभयतः **नदीं** वृक्षाः सन्ति। (नदी के दोनों ओर वृक्ष हैं)
(ii) मार्गम् **उभयतः** वृक्षाः सन्ति। (मार्ग के दोनों ओर पेड़ हैं)
(iii) नगरं **सर्वतः** प्राकारः अस्ति। (नगर के चारों ओर परकोटा है)
(iv) धिक् **कृष्णाभक्तम्।** (कृष्ण के अभक्त को धिक्कार है)
(v) उपर्युपरि **लोकं** हरिः। (इस लोक के ठीक ऊपर हरि हैं)
(vi) अध्यधि **लोकं** हरिः। (हरि लोक के पास हैं)
(vii) अधोऽधः **लोकं** हरिः। (पाताल लोक के ठीक नीचे हरि हैं)

10. कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे (2.3.5)

➢ यदि किसी काल में कोई क्रिया लगातार हो तो ऐसे कालवाची पद में द्वितीया विभक्ति होगी।
➢ इसी तरह यदि अध्व (मार्ग की दूरी) में कोई वस्तु लगातार हो तो उस अध्ववाचक = मार्गवाचक शब्दों में द्वितीया विभक्ति

होती है। जैसे-

(i) मार्गवाचक- **छात्रः क्रोशम् अधीते**
(छात्र कोश भर लगातार पढ़ता है)

(ii) मार्गवाचक- **क्रोशं गिरिः वर्तते।** (कोश भर विस्तृत पर्वत है)

(iii) मार्गवाचक- **क्रोशं कुटिला नदी** (कोश भर नदी टेढ़ी है)

(iv) कालवाचक-**सः मासम् अधीते रामायणम्** (वह महीने भर रामायण पढ़ता है)

(v) कालवाचक - **सः सप्ताहं पठिष्यति** (वह सप्ताह भर पढ़ता है)

(vi) कालवाचक- **छात्रः मासम् अधीते**
(छात्र महीने भर लगातार पढ़ता है)

तृतीया विभक्ति (करण कारक)

1. साधकतमं करणम् - क्रिया की सिद्धि में जो सबसे अधिक उपकारक होता है, उसे करण कहते हैं।

'क्रियासिद्धौ प्रकृष्टोपकारकं करणसंज्ञं स्यात्'।

यथा- सः हस्तेन मिष्टान्नं वितरति।

यहाँ- मिष्टान्न वितरण रूपी कार्य को करने में हाथ सबसे अधिक सहायक है, अतः 'हाथ' करण है।

2. कर्तृकरणयोस्तृतीया (2.3.18) - अनुक्त कर्ता अर्थात् (कर्मवाच्य और भाववाच्य के कर्ता) और करण में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे-

(i) सः **कुठारेण** वृक्षं छिनत्ति। (वह कुल्हाड़ी से वृक्ष को काटता है) - करण में तृतीया

(ii) **रामेण** बालिः हतः (राम के द्वारा बाली मारा गया) - कर्ता में तृतीया

(iii) बालकः **दण्डेन** सर्पं हन्ति। (बालक डण्डे से साँप को मारता है) - करण में तृतीया

(iv) त्वं **कलमेन** पत्रं लिख। (तू कलम से पत्र लिख) - करण में तृतीया

(v) मोहनः **दात्रेण** लुनाति। (मोहन हसियें से काटता है) - करण में तृतीया

(vi) **रामेण बाणेन** हतो बाली। (राम के बाण द्वारा बाली मारा गया) - कर्ता (रामेण) और करण (बाणेन) दोनों में तृतीया।

3. सहयुक्तेऽप्रधाने (2.3.19) -

सह, साकम्, सार्धम्, समम् आदि सहार्थक शब्दों के योग में अप्रधान में तृतीया विभक्ति होती है।

जैसे-

(i) पुत्रेण सह आगतः पिता। (पुत्र के साथ पिता आया)

(ii) पिता पुत्रेण सह मेरठनगरं गतः (पिता पुत्र के साथ मेरठनगर को गया)

(iii) रामः जानक्या साकं गच्छति। (राम जानकी के साथ जाते हैं)

(iv) मोहनः गुरुणा सार्धं विद्यालयं गच्छति। (मोहन गुरु के साथ विद्यालय जाता है।)

(v) लक्ष्मणेन समं रामः गच्छति। (लक्ष्मण के साथ राम जाते हैं)

4. येनाङ्गविकारः - (2.3.20) शरीर के जिस अङ्ग के विकार से शरीरधारी का विकार समझा जाय, उस अङ्गवाचक शब्द में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे-

(i) अक्ष्णा काणः (आँख से काना)

(ii) हस्तेन लुञ्जः (हाथ से लुञ्जा)

(iii) शिरसा खल्वाटः (शिर से गंजा)

(iv) कर्णाभ्यां बधिरः (कानों से बहरा)

(v) पादेन खञ्जः (पैर से लँगड़ा)

(vi) पृष्ठेन कुब्जः (पीठ से कुबड़ा)

यहाँ 'आँख से' काना दिखायी पड़ रहा है, इसलिए 'अक्ष्णा' में तृतीया विभक्ति हुई। इसीप्रकार 'हाथ से' लुंजा है अतः 'हस्तेन' इस अङ्गवाची पद में तृतीया विभक्ति हुई।

5. पृथग्विनानानाभिस्तृतीयान्यतरस्याम् -

- पृथक्, विना, नाना शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति का प्रयोग विकल्प से होता है। तृतीया न हो तो पञ्चमी अथवा द्वितीया विभक्ति होती है।
- 'नाना' शब्द अनेकार्थक है लेकिन यहाँ 'विना' के अर्थ में प्रयुक्त है।

जैसे-

(i) **जलेन** विना न जीवति कमलम्।
(जल के विना कमल जीवित नहीं रहता)

(ii) **ग्रामं** पृथक् या **ग्रामेण** पृथक् या **ग्रामात्** पृथक्
(गाँव से अलग)

(iii) **रामं** विना या **रामेण** विना या **रामात्** विना (राम के विना)

(iv) नाना **रामेण** या नाना **रामात्** या नाना **रामम्**
(राम के विना)

चतुर्थी विभक्ति (सम्प्रदान कारक)

1. कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् (1.4.32) - कर्ता दान कर्म के द्वारा जिसे अभिप्रेत करता है; अर्थात् कर्ता जिसे कुछ देता है, या जिसके लिए कुछ करता है, वह 'सम्प्रदान' कहलाता है।

सम्प्रदान- 'सम्यक् प्रदीयते अस्मै तत् सम्प्रदानम्' (जिसे कुछ दिया जाय, परन्तु उस वस्तु को वापस न लिया जाय, वह सम्प्रदान होता है)

2. चतुर्थी सम्प्रदाने (2.3.13) - सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे-

(i) राजा **ब्राह्मणाय** गां ददाति। (राजा ब्राह्मण को गाय देता है)

(ii) माता **बालकाय** फलं ददाति। (माता बालक को फल देती है)

(iii) **उपाध्यायाय** गां ददाति (उपाध्याय के लिए गाय देता है)

(iv) **ब्राह्मणाय** भूमिं ददाति। (ब्राह्मण को भूमि देता है)

➢ काले मोटे अक्षरों में लिखे गये शब्द सम्प्रदान कारक हैं, जिसमें चतुर्थी विभक्ति लगी है।

3. रुच्यर्थानां प्रीयमाणः (1.4.33)

रुच् (अच्छा लगना, पसन्द आना) तथा इसी अर्थ की अन्य धातुओं के प्रयोग में जो प्रीयमाण अर्थात् जो प्रसन्न होता है, या जिसको पसन्द होता है उस कारक की सम्प्रदान संज्ञा होती है, और उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे-

(i) **हरये** रोचते भक्तिः। (हरि को भक्ति अच्छी लगती है)

(ii) **सुरेशाय** दुग्धं रोचते। (सुरेश को दूध अच्छा लगता है)

(iii) **मह्यं** मोदकं रोचते। (मुझे लड्डू पसन्द है)

(iv) **मह्यम्** ओदनं रोचते। (मुझे भात अच्छा लगता है)

यहाँ 'हरि' को भक्ति पसन्द है, सुरेश को दूध पसन्द है, मुझे लड्डू पसन्द है, मुझे ओदन (भात) पसन्द है, तो जिसे पसन्द है वो प्रीयमाण है, और जो प्रीयमाण है उसी की सम्प्रदानसंज्ञा होगी, और सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होगी, इसीलिए ''हरये, सुरेशाय, मह्यम्'' में चतुर्थी विभक्ति लगी है।

4. ''क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः'' (1.4.37)

क्रुध् (क्रोध करना), द्रुह् (द्रोह करना), ईर्ष्य् (ईर्ष्या करना), असूय् (जलन करना) इन धातुओं तथा इन्हीं अर्थों की अन्य धातुओं के प्रयोग में भी जिसके प्रति क्रोध किया जाता है उसकी **सम्प्रदान संज्ञा** होती है, और उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे-

(i) पिता **पुत्राय** क्रुध्यति। (पिता पुत्र पर क्रोध करता है)

(ii) दुष्टाः **सज्जनाय** द्रुह्यन्ति (दुष्ट सज्जनों से द्रोह करते हैं)

(iii) कंसः **कृष्णाय** ईर्ष्यति (कंस कृष्ण से ईर्ष्या करता है)

(iv) दैत्याः **देवेभ्यः** असूयन्ति (दैत्य देवों से जलते हैं)

(v) तनुश्रीदत्ता **नानापाटेकराय** क्रुध्यति (तनुश्रीदत्ता नानापाटेकर पर क्रोध करती है)

(vi) रावणः **रामाय** असूयति (रावण राम से द्वेष करता है)

यहाँ पिता अपने पुत्र पर क्रोध करता है, इसलिए जिस पर क्रोध किया जाय उसकी सम्प्रदानसंज्ञा होती है और उसमें चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है इसीलिए 'पुत्राय' में चतुर्थी विभक्ति लगी है।

5. स्पृहेरीप्सितः (1.4.36)

स्पृह् (चाहना) धातु के प्रयोग में जिस वस्तु की चाह, इच्छा या अभीप्सा होती है उसकी सम्प्रदानसंज्ञा होती है और उसमें चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे-

(i) सा **पुरुषेभ्यः** स्पृहयति। (वह पुरुषों को चाहती है)

(ii) रमा **पुष्पेभ्यः** स्पृहयति (रमा फूलों की चाह करती है)

(iii) बालिकाः **फलेभ्यः** स्पृहयन्ति (लड़कियाँ फलों की चाह करती हैं)

(iv) अहं **संस्कृताय** स्पृहयामि (मैं संस्कृत चाहता हूँ)

6. ''नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधाऽलंवषट्योगाच्च'' (2.3.16)

नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलं, वषट् - इन शब्दों के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है; यथा-

(i) **गणेशाय** नमः (गणेश के लिए नमस्कार है)

(ii) **शिवाय** नमः (शिव को नमस्कार है)

(iii) **देवेभ्यः** नमः (देवताओं को नमस्कार है)

(iv) **विष्णवे** नमः (विष्णु को नमस्कार है)

(v) **तुभ्यम्** स्वस्ति (तुम्हारा कल्याण हो)

(vi) **बालकाय** स्वस्ति (बालक का कल्याण हो)

(vii) **इन्द्राय** स्वाहा (इन्द्र के लिए स्वाहा)

(viii) **अग्नये** स्वाहा (अग्नि के लिए स्वाहा)

(ix) **पितृभ्यः** स्वधा (पितरों को स्वधा)

(x) **दैत्येभ्यः** हरिः अलम् (दैत्यों के लिए हरि पर्याप्त हैं)

पञ्चमी विभक्ति (अपादान कारक)

1. ध्रुवमपायेऽपादानम् (1.4.24)

अपाय (अलग होना) अर्थ में जो ध्रुव हो, जिससे कोई वस्तु अलग हो रही हो, उसे 'अपादान' कहते हैं। जैसे-

वृक्षात् पत्रं पतति। (वृक्ष से पत्ता गिरता है)

इस वाक्य में पत्ता 'वृक्ष' से अलग हो रहा है अतः वृक्ष 'अपादान' है।

2. अपादाने पञ्चमी (2.3.28)

अपादान में पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे-

(i) सः **ग्रामात्** गच्छति। (वह गाँव से जाता है)

(ii) **वृक्षात्** पत्राणि पतन्ति (वृक्ष से पत्ते गिरते हैं)

(iii) महेशः **आसनात्** उत्तिष्ठति (महेश आसन से उठता है)

(iv) गङ्गा **हिमालयात्** प्रभवति। (गंगा हिमालय से निकलती है)

(v) बालकः **सोपानात्** पतति (बालक सीढ़ी से गिरता है)

(vi) सर्वे **विमानात्** अवतरन्ति (सभी विमान से उतरते हैं)

3. जुगुप्सा-विराम-प्रमादार्थानामुपसंख्यानम् (वा.)

वार्तिकार्थ- जुगुप्सा (घृणा, निन्दा), विराम (रुकना), प्रमाद (आलस्य) इन अर्थ वाली धातुओं के प्रयोग में जिससे जुगुप्सा, विराम अथवा प्रमाद किया जाय, उसकी अपादान संज्ञा होती है, और उसमें पञ्चमी विभक्ति होगी। जैसे-

(i) **पापात्** जुगुप्सते। (पाप से घृणा करता है)

(ii) सः **कार्यात्** विरमति (वह कार्य से रुकता है)

(iii) सः **पठनात्** प्रमाद्यति। (वह पढ़ने से प्रमाद करता है)

(iv) सः **धर्मात्** प्रमाद्यति। (वह धर्म से प्रमाद करता है)

(v) **स्वाध्यायात्** मा प्रमदः (स्वाध्याय से प्रमाद मत कर)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वाक्यों में जुगुप्सा, विराम और प्रमाद अर्थ वाली धातुओं का प्रयोग है तथा पाप, कार्य, पठन, धैर्य और स्वाध्याय से जुगुप्सा, विराम या प्रमाद किया जा रहा है इसलिए इनकी अपादान संज्ञा होकर पञ्चमी विभक्ति हो गयी है।

4. भीत्रार्थानां भयहेतुः (1.4.25)

सूत्रार्थ- भय (डर) अर्थवाली और त्राण (रक्षा) अर्थवाली धातुओं के योग में जिससे भय हो या जिससे रक्षा की जाय, उसकी अपादान संज्ञा होती है। जैसे-

(i) **चोरात्** बिभेति (चोर से डरता है)

(ii) वृकः **सिंहात्** बिभेति (भेड़िया सिंह से डरता है)

(iii) शिशुः **सर्पात्** बिभेति (बच्चा साँप से डरता है)

(iv) पिता पुत्रं **सिंहात्** रक्षति (पिता पुत्र की सिंह से रक्षा करता है)

(v) माता पुत्रम् **अग्नेः** रक्षति (माता पुत्र की आग से रक्षा करती है)

(vi) **पापात्** त्रायते (पाप से रक्षा करता है)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त उदाहरणों में भयार्थक 'भी' (बिभेति) धातु तथा त्राणार्थक 'रक्ष्' (रक्षति) धातु का प्रयोग है, तथा चोर, सिंह, सर्प, अग्नि, पाप आदि से डर या रक्षा हो रही है, इसीलिए इनमें अपादानसंज्ञा होकर पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

5. आख्यातोपयोगे (1.4.29)

जिससे नियमपूर्वक विद्या पढ़ी जाय या कुछ सीखा जाय ऐसे व्याख्याता/प्रवक्ता/शिक्षक/पढ़ाने वाले की अपादान संज्ञा होगी, और अपादान में पञ्चमी विभक्ति होगी। जैसे-

(i) **उपाध्यायात्** अधीते। (उपाध्याय से पढ़ता है)

(ii) छात्रः **गुरोः** अधीते (छात्र गुरु जी से पढ़ता है)

(iii) रविः **शिक्षकात्** सङ्गीतं शिक्षते (रवि शिक्षक से संगीत सीखता है)

(iv) बालकः **अध्यापकात्** संस्कृतं पठति (बालक अध्यापक से संस्कृत पढ़ता है)

(v) वटुः **गुरोः** कर्मकाण्डं जानाति। (वटु गुरु से कर्मकाण्ड जानता है)

6. "अन्यारादितरर्तेदिक्शब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते" (2.3.29)

अन्य, भिन्न, इतर, ऋते, पूर्व, प्राक्, प्रत्यक्, बहिः, आरभ्य, प्रभृति आदि शब्दों के योग में पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे-

(i) अन्यः कृष्णात् (कृष्ण से भिन्न)

(ii) भिन्नः कृष्णात् (कृष्ण से भिन्न)

(iii) इतरः कृष्णात् (कृष्ण से भिन्न)

(iv) ऋते कृष्णात् (कृष्ण के विना)

(v) पूर्वो ग्रामात् (गाँव से पूर्व)

(vi) प्राक् ग्रामात् (गाँव से पूर्व)

(vii) प्रत्यक् ग्रामात् (गाँव के बाद)

(viii) भवात् प्रभृति हरिः सेव्यः। (जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त हरि सेव्य हैं)

(ix) ग्रामाद् बहिः उद्यानम् अस्ति। (गाँव के बाहर बगीचा है)

षष्ठी विभक्ति (सम्बन्ध)

1. षष्ठी शेषे (2.3.50) - कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, अधिकरण कारकों में तथा प्रातिपदिकार्थ में विभक्तियों का विधान कर चुके हैं। इसके अतिरिक्त जो बच गया हो, वही 'शेष' है। इसप्रकार कारक और प्रातिपदिकार्थ से अतिरिक्त स्व-स्वामिभाव, जन्यजनकभाव, कार्यकारणभाव आदि सम्बन्ध शेष है। उस शेष की विवक्षा में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे-

(i) राज्ञः पुरुषः (राजा का पुरुष)

(ii) गङ्गायाः जलम् (गङ्गा का जल)

(iii) दशरथस्य पुत्रः (दशरथ का पुत्र)

(iv) पाञ्चालानां भूमिः (पाञ्चालों की भूमि)

2. षष्ठी हेतुप्रयोगे (2.3.36)

सूत्रार्थ- यदि किसी वस्तु की हेतुता (कारणता) प्रकट करनी हो, और 'हेतु' शब्द का साक्षात् प्रयोग हो तो उस वस्तु या कारण तथा 'हेतु' शब्द - दोनों में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे-

(i) छात्रः **अध्ययनस्य हेतोः** प्रयागे वसति।
(छात्र अध्ययन के लिए प्रयाग में रहता है)

(ii) सः **धनस्य हेतोः** सेवते। (वह धन के हेतु सेवा करता है)

(iii) सः **अन्नस्य हेतोः** वसति। (वह अन्न के कारण रहता है)

(iv) सुमना **गृहस्य हेतोः** यतते। (सुमन घर के लिए प्रयास कर रही है)

स्पष्टीकरण- यहाँ कोई छात्र 'अध्ययन के लिए' प्रयाग में रहता है, अतः उसके रहने का कारण 'अध्ययन' है इसलिए अध्ययन में षष्ठी विभक्ति हुई और वाक्य में 'हेतु' शब्द का प्रयोग हुआ है अतः 'हेतु' में भी षष्ठी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

3. क्तस्य च वर्तमाने (2.3.67) - वर्तमान अर्थ में होने वाले 'क्त' प्रत्ययान्त शब्दों के योग में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे-

(i) **राज्ञां** पूजितः विद्वान् (वह विद्वान्, जो राजाओं द्वारा पूजा जाता है)

(ii) **सर्वेषाम्** आदृतः गुरुः (वह गुरु, जिसका सब आदर करते हैं)

(iii) **राज्ञां** मतः बुद्धः पूजितः वा (राजा मानते हैं, जानते हैं अथवा पूजते हैं)

4. षष्ठी चानादरे (2.3.38) - अनादर अर्थ प्रकट करने के लिए षष्ठी और सप्तमी दोनों विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा-

(i) बालकानां चन्दनः दुष्टः (बालकों में चन्दन दुष्ट है)

(ii) खगानां काकः धूर्तः (पक्षियों में कौआ धूर्त होता है)

(iii) पशूनां शृगालः मूर्खः (पशुओं में गीदड़ मूर्ख होता है)

(iv) रुदतः पुत्रस्य पिता वनं गतः (रोते हुए पुत्र को छोड़कर पिता वन चला गया)

(v) रुदति पुत्रे सः प्रव्राजीत् (पुत्र के रोते रहने पर भी उसे छोड़कर संन्यास ले लिया)

सप्तमी विभक्ति (अधिकरण कारक)

1. आधारोऽधिकरणम् (1.4.45) - आधार को **'अधिकरण'** कहते हैं। अधिकरण उसे कहते हैं, जो कर्ता और कर्म का आधार होता है।

आधार के भेद

आधार तीन प्रकार का होता है-

(i) औपश्लेषिक आधार - कटे आस्ते।

(ii) वैषयिक आधार - मोक्षे इच्छा अस्ति।

(iii) अभिव्यापक आधार - तिलेषु तैलम्, पयसि घृतम्, सर्वस्मिन् आत्मा अस्ति।

2. सप्तम्यधिकरणे च (2.3.36) - अधिकरण में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे-

(i) वयं **गेहे** वसामः (हम घर में रहते हैं)

(ii) **गङ्गायां** निर्मलं जलम् अस्ति। (गङ्गा में निर्मल जल है)

(iii) **क्षेत्रेषु** अन्नम् उत्पद्यते (खेतों में अन्न उत्पन्न होता है)

(iv) **वनेषु** सिंहाः वसन्ति (वनों में सिंह रहते हैं)

3. 'कुशल' तथा 'निपुण' शब्दों के योग में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे-

(i) सः **शास्त्रे** कुशलः अस्ति (वह शास्त्र में कुशल है)

(ii) विद्वान् **वेदेषु** निपुणः अस्ति (विद्वान् वेदों में निपुण हैं)

4. साध्वसाधुप्रयोगे च (वा.)

'साधु' और 'असाधु' शब्दों के प्रयोग में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे-

(i) कृष्णः **मातरि** साधुः (कृष्ण माता के विषय में साधु हैं)

(ii) कृष्णः **मातुले** असाधुः। (कृष्ण मामा के विषय में असाधु हैं)

➢ यहाँ साधु शब्द के प्रयोग होने से 'मातरि' में सप्तमी तथा 'असाधु' शब्द के प्रयोग होने से 'मातुले' में सप्तमी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

5. यतश्च निर्धारणम् (2.3.41) - निर्धारण में समुदाय वाचक शब्द से षष्ठी या सप्तमी विभक्ति होती है।

➢ यदि किन्हीं वस्तुओं या व्यक्तियों के समुदाय में से किसी एक वस्तु या व्यक्ति को किसी विशेषता के आधार पर सबसे उत्कृष्ट या निकृष्ट बताया जाय तो वही 'निर्धारण' कहलाता है।

अथवा

निर्धारण- जाति, गुण, क्रिया या संज्ञा के द्वारा किसी समुदाय से उसके एकदेश का उत्कर्ष या अपकर्ष बताने के लिए अलग निर्देश करना 'निर्धारण' कहलाता है।

उदाहरण-

(i) **कविषु** कालिदासः श्रेष्ठः। (कवियों में कालिदास श्रेष्ठ हैं)
कवीनां कालिदासः श्रेष्ठः।

(ii) **नदीषु** गङ्गा पवित्रतमा। (नदियों में सबसे पवित्र गङ्गा हैं)
नदीनां गङ्गा पवित्रतमा।

(iii) **बालकेषु** रविः श्रेष्ठः। (बालकों में रवि सबसे अच्छा हैं)
बालकानां रविः श्रेष्ठः।

(iv) **पर्वतानां** हिमालयः उच्चतमः।
पर्वतेषु हिमालयः उच्चतमः। (पर्वतों में हिमालय सबसे ऊँचा हैं)

(v) **नृणां** ब्राह्मणः श्रेष्ठः (मनुष्यों में ब्राह्मण श्रेष्ठ हैं)
नृषु ब्राह्मणः श्रेष्ठः

(vi) **गवां** कृष्णा बहुक्षीरा
गोषु कृष्णा बहुक्षीरा (गायों में काली गाय बहुत दूध देती है)

(vii) **गच्छतां** धावन् शीघ्रः।
गच्छत्सु धावन् शीघ्रः (चलने वालों में दौड़ने वाला शीघ्र पहुँचता है)

❑❑

प्रत्यय

प्रत्यय- प्रति + √अय् + अच् अर्थात् जो वर्णसमूह किसी धातु या शब्द के अन्त में जुड़कर नए अर्थ की प्रतीति कराते हैं, उस वर्णसमूह को प्रत्यय कहते हैं।

➢ मुख्य रूप से प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं-

1. कृत् प्रत्यय 2. तद्धित प्रत्यय

➢ धातु के अन्त में लगने वाले प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं-

(i) कृत् प्रत्यय- क्त्वा, ल्यप्, तुमुन्, तव्यत्, अनीयर् आदि।

(ii) तिङ् प्रत्यय- तिप्, तस्, झि आदि 18 प्रत्यय।

➢ शब्दों से लगने वाले प्रत्यय हैं-

(i) सुप् प्रत्यय- सु औ जस् आदि 21 प्रत्यय।

(ii) स्त्रीप्रत्यय- टाप्, ङीप्, ङीष्, ङीन् आदि।

(iii) तद्धित प्रत्यय- मतुप्, अण्, इनि आदि।

➢ कृत् प्रत्यय (कृदन्त)

कृत् प्रत्यय धातुओं से जोड़े जाते हैं, और इनसे बने पद को 'कृदन्त' कहते हैं। कृत् प्रत्ययों से तीन प्रकार के शब्द निर्मित होते हैं- अव्यय, विशेषण और संज्ञा।

1. क्त्वा प्रत्यय

जब एक ही कर्ता द्वारा एक कार्य की समाप्ति के बाद दूसरी क्रिया की जाती है, तो समाप्ति क्रिया में क्त्वा प्रत्यय का प्रयोग होता है। इस प्रत्यय से बने हुए शब्द को पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं।

जैसे- छात्रः पठित्वा गृहं गच्छति। (छात्र पढ़कर घर जाता है)

इस वाक्य में 'छात्र' रूपी कर्ता दो क्रियायें करता है- (i) पढ़ता है (ii) घर जाता है। इन दो क्रियाओं में पढ़ने की क्रिया पूर्वकाल में हुई अतः यह पूर्वकालिक क्रिया होगी जिसमें 'क्त्वा' प्रत्यय लगकर 'पठित्वा' रूप बना है। अतः 'क्त्वा' पूर्वकालिक कृदन्त है।

➢ 'क्त्वा' प्रत्यय के 'क्' की ''लशक्वतद्धिते'' सूत्र से इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है केवल 'त्वा' शेष रहता है। कुछ धातुओं में 'इट्' का आगम होता है तो 'इत्वा' लगता है।

जैसे- बालकः पठित्वा गृहं गच्छति।

यहाँ 'पठ्' धातु में 'इट्' का आगम होकर 'क्त्वा' प्रत्यय लगा है, इसीलिए 'पठित्वा' बना है।

धातु + प्रत्यय		क्त्वा-प्रत्ययान्त रूप
1. कृ + क्त्वा	=	**कृत्वा** (करके)
2. दा + क्त्वा	=	**दत्त्वा** (देकर)
3. पा + क्त्वा	=	**पीत्वा** (पीकर)
4. गम् + क्त्वा	=	**गत्वा** (जाकर)
5. हस् + क्त्वा	=	**हसित्वा** (हँसकर)
6. जि + क्त्वा	=	**जित्वा** (जीतकर)
7. स्था + क्त्वा	=	**स्थित्वा** (ठहरकर)
8. श्रु + क्त्वा	=	**श्रुत्वा** (सुनकर)
9. ज्ञा + क्त्वा	=	**ज्ञात्वा** (जानकर)
10. पत् + क्त्वा	=	**पतित्वा** (गिरकर)
11. स्ना + क्त्वा	=	**स्नात्वा** (स्नानकर)
12. दृश् + क्त्वा	=	**दृष्ट्वा** (देखकर) Imp.
13. पठ् + क्त्वा	=	**पठित्वा** (पढ़कर)
14. लभ् + क्त्वा	=	**लब्ध्वा** (प्राप्तकर) Imp.
15. भू + क्त्वा	=	**भूत्वा** (होकर)
16. त्यज् + क्त्वा	=	**त्यक्त्वा** (त्यागकर)
17. कथ् + क्त्वा	=	**कथयित्वा** (कहकर)
18. क्री + क्त्वा	=	**क्रीत्वा** (खरीदकर)
19. खेल + क्त्वा	=	**खेलित्वा** (खेलकर)
20. नी + क्त्वा	=	**नीत्वा** (लेकर)
21. प्रच्छ् + क्त्वा	=	**पृष्ट्वा** (पूँछकर) Imp.
22. ग्रह् + क्त्वा	=	**गृहीत्वा** (लेना)

2. ल्यप् प्रत्यय

➢ जब धातु से पहले कोई उपसर्ग होता है तो 'क्त्वा' प्रत्यय के स्थान पर 'ल्यप्' आदेश हो जाता है।

➢ 'ल्यप्' में 'ल्' और 'प्' की इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है, केवल 'य' शेष बचता है। **''लशक्वतद्धिते''** सूत्र से 'ल्' की तथा **''हलन्त्यम्''** सूत्र से 'प्' की इत्संज्ञा।

➢ 'क्त्वा' और 'ल्यप्' प्रत्ययों से बनने वाले शब्द अव्यय होते हैं और दोनों प्रत्यय 'पूर्वकालिक कृदन्त' है।

➢ **समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप्** (7.1.37) सूत्र से 'ल्यप्' प्रत्यय का विधान होता है।

➢ 'ल्यप्' प्रत्ययान्त पदों का भी वही अर्थ है जो 'क्त्वा' प्रत्यय का है। **जैसे-** अनुभूय (अनुभव करके), आगम्य (आकर), प्रणम्य (प्रणाम करके) आदि।

(i) छात्रः **आगत्य** पठति (छात्र आकर पढ़ता है)

(ii) मनुष्यः सर्वं **विस्मृत्य** सुखी भवति (मनुष्य सब कुछ भूलकर सुखी होता है)

उपसर्ग + धातु + प्रत्यय = प्रत्ययान्त रूप (अर्थसहित)

1. अनु + भू + ल्यप् = **अनुभूय** (अनुभव करके)
2. आङ् + गम् + ल्यप् = **आगम्य/आगत्य** (आकर)
3. वि + नी + ल्यप् = **विनीय** (लेकर)
4. आङ् + प्रच्छ् + ल्यप् = **आपृच्छ्य** (पूँछकर)
5. प्र + कृ + ल्यप् = **प्रकृत्य** (करके)
6. प्र + आप् + ल्यप् = **प्राप्य** (प्राप्तकर)
7. वि + चि + ल्यप् = **विचित्य** (चुनकर)
8. वि + रम् + ल्यप् = **विरम्य/विरत्य** (रुककर)
9. प्र + नम् + ल्यप् = **प्रणत्य/प्रणम्य** (प्रणाम करके)
10. उत् + तृ + ल्यप् = **उत्तीर्य** (तैरकर, पारकर)
11. आ + दा + ल्यप् = **आदाय** (लेकर)
12. उप + गम् + ल्यप् = **उपगम्य** (समीप जाकर)
13. वि + हा + ल्यप् = **विहाय** (छोड़कर)
14. नि + पा + ल्यप् = **निपीय** (पानकर)
15. वि + स्मृ + ल्यप् = **विस्मृत्य** (भूलकर)
16. अव + तृ + ल्यप् = **अवतीर्य** (उतरकर)
17. सम् + श्रु + ल्यप् = **संश्रुत्य** (सुनकर)
18. आ + नी + ल्यप् = **आनीय** (लाकर)
19. प्र + स्था + ल्यप् = **प्रस्थाय** (चलकर)
20. उत् + लिख् + ल्यप् = **उल्लिख्य** (ऊपर लिखकर)
21. वि + ज्ञा + ल्यप् = **विज्ञाय** (अच्छी तरह से जानकर)
22. सम् + भू + ल्यप् = **सम्भूय** (मिलकर, इकट्ठा होकर)
23. प्र + पठ् + ल्यप् = **प्रपठ्य** (पढ़कर)
24. आङ् + पा + ल्यप् = **आपीय** (पूरी तरह से पीकर)
25. अनु + श्रु + ल्यप् = **अनुश्रूय** (सुन-सुनकर)
26. उप + कृ + ल्यप् = **उपकृत्य** (उपकार करके)
27. प्र + कुप् + ल्यप् = **प्रकुप्य** (अत्यधिक क्रोधित होकर)
28. अव + मुच् + ल्यप् = **अवमुच्य** (छोड़कर)
29. उप + भुज् + ल्यप् = **उपभुज्य** (खाकर)
30. सम् + दृश् + ल्यप् = **सन्दृश्य** (अच्छी तरह से देखकर)
31. उप + लभ् + ल्यप् = **उपलभ्य** (प्राप्त करके)

3. तुमुन् प्रत्यय

- **तुमुन्ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम्** (3.3.10) इस सूत्र से 'तुमुन्' प्रत्यय का विधान किया जाता है।
- 'के लिए' यह अर्थ बताना हो तो धातुओं से 'तुमुन्' प्रत्यय लगाया जाता है। जैसे- **पठितुम्** (पढ़ने के लिए) **गन्तुम्** (जाने के लिए), **क्रेतुम्** (खरीदने के लिए) आदि।
- इसीलिए 'तुमुन्' प्रत्यय को **'हेतु कृदन्त'** कहते हैं अर्थात् धातु के अर्थ के साथ 'के लिए' जोड़ देने पर तुमुनन्त पदों का अर्थ निकल आता है। जैसे- 'पठ्' धातु का अर्थ है- पढ़ना। इसमें 'तुमुन्' जोड़ने से बनेगा- **पठितुम्**, जिसका अर्थ है- पढ़ने के लिए।
- 'तुमुन् ' प्रत्यय से बने शब्द अव्यय होते हैं, अतः इनके रूप नहीं चलते।
- कर्ता जिस कार्य के निमित्त कोई क्रिया करता है उसे निमित्तार्थक क्रिया कहते हैं, निमित्तार्थक क्रिया में ही 'तुमुन्' प्रत्यय लगाया जाता है।

जैसे- **बालकः पठितुं विद्यालयं गच्छति।** (बालक पढ़ने के लिए विद्यालय जाता है)

- यहाँ बालक रूपी कर्ता पढ़ने के निमित्त विद्यालय जाता है; अतः निमित्तार्थक क्रिया 'पठ्' में तुमुन् प्रत्यय लगकर 'पठितुम्' बना। बालक की गमन क्रिया पढ़ने के निमित्त हो रही है।
- 'तुमुन्' प्रत्यय में नकार की 'हलन्त्यम्' से और उकार की ''उपदेशेऽजनुनासिक इत्'' से इत्संज्ञा होकर लोप होने पर 'तुम्' शेष रहता है।

तुमुन् प्रत्ययान्त पदों की सूची

धातु + प्रत्यय	=	तुमुनन्त पद (अर्थ सहित)
1. भू + तुमुन्	=	**भवितुम्** (होने के लिए)
2. पा + तुमुन्	=	**पातुम्** (पीने के लिए)
3. पठ् + तुमुन्	=	**पठितुम्** (पढ़ने के लिए)
4. गम् + तुमुन्	=	**गन्तुम्** (जाने के लिए)
5. स्था + तुमुन्	=	**स्थातुम्** (बैठने के लिए)
6. दृश् + तुमुन्	=	**द्रष्टुम्** (देखने के लिए) Imp.
7. दा + तुमुन्	=	**दातुम्** (देने के लिए)
8. लभ् + तुमुन्	=	**लब्धुम्** (पाने के लिए) Imp.
9. ज्ञा + तुमुन्	=	**ज्ञातुम्** (जानने के लिए)
10. हन् + तुमुन्	=	**हन्तुम्** (मारने के लिए)
11. कृ + तुमुन्	=	**कर्तुम्** (करने के लिए) Imp.
12. जि + तुमुन्	=	**जेतुम्** (जीतने के लिए) Imp.
13. श्रु + तुमुन्	=	**श्रोतुम्** (सुनने के लिए)
14. प्रच्छ् + तुमुन्	=	**प्रष्टुम्** (पूँछने के लिए) Imp.
15. त्यज् + तुमुन्	=	**त्यक्तुम्** (छोड़ने के लिए)
16. स्ना + तुमुन्	=	**स्नातुम्** (नहाने के लिए)
17. गै (गा) + तुमुन्	=	**गातुम्** (गाने के लिए)
18. खाद् + तुमुन्	=	**खादितुम्** (खाने के लिए)
19. क्रीड् + तुमुन्	=	**क्रीडितुम्** (खेलने के लिए)

20. वन्द् + तुमुन् = **वन्दितुम्** (वन्दना करने के लिए)
21. भुज् + तुमुन् = **भोक्तुम्** (खाने के लिए)
22. शीङ् + तुमुन् = **शयितुम्** (सोने के लिए)
23. वच् + तुमुन् = **वक्तुम्** (बोलने के लिए)
24. ग्रह् + तुमुन् = **ग्रहीतुम्** (लेने के लिए)
25. अस् + तुमुन् = **भवितुम्** (होने के लिए)
26. क्षिप् + तुमुन् = **क्षेप्तुम्** (फेंकने के लिए)
27. क्री + तुमुन् = **क्रेतुम्** (खरीदने के लिए)
28. चि + तुमुन् = **चेतुम्** (चुनने के लिए)
29. कुप् + तुमुन् = **कोपितुम्** (क्रोध करने के लिए)
30. मुच् = तुमुन् = **मोक्तुम्** (छोड़ने के लिए)

4. यत् प्रत्यय

➢ **''अचो यत्''** (3.1.97) सूत्र से 'यत्' प्रत्यय का विधान किया जाता है। अर्थात् अच् (स्वर) वर्ण जिन धातुओं के अन्त में होते हैं, उनसे 'यत्' प्रत्यय होता है।

➢ 'चाहिए' या 'योग्य' अर्थ को बताने वाले 'यत्' प्रत्यय के 'त्' की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा होकर लोप होने पर केवल 'य' शेष बचता है।

➢ 'यत्' प्रत्यय जुड़ने के बाद धातु के स्वर को गुण हो जाता है।

	नपुंसकलिङ्ग	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
चि + यत्	= **चेयम्** (चयन करने योग्य)	**चेयः**	चेया
पा + यत्	= **पेयम्** (पीने योग्य)	**पेयः**	पेया
नी + यत्	= **नेयम्** (ले जाने योग्य)	**नेयः**	नेया
जि + यत्	= **जेयम्** (जीतने योग्य)	**जेयः**	जेया
श्रु + यत्	= **श्रव्यम्** (सुनने योग्य)	**श्रव्यः**	श्रव्या
दा + यत्	= **देयम्** (देने योग्य)	**देयः**	देया
गै + यत्	= **गेयम्** (गाने योग्य)	**गेयः**	गेया
भू + यत्	= **भव्यम्** (होने योग्य)	**भव्यः**	भव्या
भी + यत्	= **भेयम्** (डरने योग्य)	**भेयः**	भेया
लभ् + यत्	= **लभ्यम्** (प्राप्त करने योग्य)	**लभ्यः**	लभ्या
शक् + यत्	= **शक्यम्** (होने योग्य)	**शक्यः**	शक्या
हन् + यत्	= **वध्यम्** (वधयोग्य)	**वध्यः**	वध्या

➢ **पोरदुपधात् (3.1.98) -** इस सूत्र से पवर्ग अन्त में हो अथवा ह्रस्व अकार उपधा में हो, ऐसी धातुओं से 'यत्' प्रत्यय होता है जैसे- लभ् + यत् = **लभ्यम्**
शप् + यत् = **शप्यम्**

5. क्तिन् प्रत्यय

➢ **स्त्रियां क्तिन्** (3.3.94) सूत्र से भाव अर्थ में स्त्रीत्व की विवक्षा होने पर धातु से 'क्तिन्' प्रत्यय होता है।

➢ 'क्तिन्' में ककार और नकार की इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है केवल 'ति' शेष बचता है। ''लशक्वतद्धिते'' से 'क्' की तथा ''हलन्त्यम्'' से 'न्' की इत्संज्ञा होती है।

➢ 'क्तिन्' प्रत्यय से बने शब्द सदैव स्त्रीलिङ्ग में होंगे।

जैसे- कृतिः, गतिः, भूतिः, धृतिः आदि।

उदाहरण-

(1) कृ + क्तिन् = **कृतिः**
(2) नी + क्तिन् = **नीतिः**
(3) गम् + क्तिन् = **गतिः**
(4) धृ + क्तिन् = **धृतिः**
(5) भू + क्तिन् = **भूतिः**
(6) नम् + क्तिन् = **नतिः**
(7) स्तु + क्तिन् = **स्तुतिः**
(8) श्रु + क्तिन् = **श्रुतिः**
(9) स्मृ + क्तिन् = **स्मृतिः**
(10) दृश् + क्तिन् = **दृष्टिः**
(11) मन् + क्तिन् = **मतिः**
(12) भज् + क्तिन् = **भक्तिः**
(13) बुध् + क्तिन् = **बुद्धिः**
(14) मुच् + क्तिन् = **मुक्तिः**
(15) शम् + क्तिन् = **शान्तिः**
(16) गै + क्तिन् = **गीतिः**
(17) पुष् + क्तिन् = **पुष्टिः**

6. ल्युट् प्रत्यय

➢ **''नपुंसके भावे क्तः''** (3.3.114) **''ल्युट् च''** (3.3.115) सूत्र से भाववाचक अर्थ में नपुंसकत्व में 'ल्युट्' प्रत्यय लगता है।

➢ ल्युट् प्रत्यय से बने शब्द नपुंसकलिङ्ग में ही होते हैं।

जैसे- पठनम्, लेखनम्, दानम्, लेखनम् आदि।

➢ 'ल्युट्' प्रत्यय के 'ल्' और 'ट्' की इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है, 'यु' शेष रहता है। तथा 'यु' को ''युवोरनाकौ'' सूत्र से 'अन' आदेश हो जाता है।

उदाहरण-

1. लिख् + ल्युट् = **लेखनम्**
2. दा + ल्युट् = **दानम्**
3. अर्च् + ल्युट् = **अर्चनम्**
4. कथ् + ल्युट् = **कथनम्**
5. पठ् + ल्युट् = **पठनम्**
6. ज्ञा + ल्युट् = **ज्ञानम्**
7. कृ + ल्युट् = **करणम्**
8. नी + ल्युट् = **नयनम्**

9. ग्रह् + ल्युट् = **ग्रहणम्**
10. गम् + ल्युट् = **गमनम्**
11. भू + ल्युट् = **भवनम्**
12. दृश् + ल्युट् = **दर्शनम्**
13. हन् + ल्युट् = **हननम्**
14. अधि + इङ् + ल्युट् = **अध्ययनम्**
15. श्रु + ल्युट् = **श्रवणम्**
16. स्मृ + ल्युट् = **स्मरणम्**
17. हृ + ल्युट् = **हरणम्**
18. कथ् + ल्युट् = **कथनम्**
19. शीङ् + ल्युट् = **शयनम्**
20. चि + ल्युट् = **चयनम्**
21. यच् + ल्युट् = **याचनम्**

7. तव्यत् और अनीयर् प्रत्यय

➢ ''**तव्यत्तव्यानीयरः**'' (3.1.96) सूत्र से धातु के बाद तव्यत् और अनीयर् प्रत्यय होते हैं।

➢ तव्यत् के त् का लोप होकर 'तव्य' एवं 'अनीयर्' प्रत्यय के 'र्' का लोप होकर 'अनीय' शेष बचता है।

➢ तव्यत् और अनीयर् प्रत्ययों का प्रयोग 'चाहिए' या 'योग्यता' अर्थ में होता है।

जैसे-पठितव्यम् (पढ़ना चाहिए)
पठनीयम् (पढ़ना चाहिए)

➢ इन प्रत्ययों का प्रयोग कर्मवाच्य और भाववाच्य में होता है; कर्तृवाच्य में नहीं।

जैसे- मया पठनीयम्।
मया पठितव्यम्।

'अनीयर्' प्रत्यय के उदाहरण

	धातु प्रत्यय		नपुंसकलिङ्ग		पुंलिङ्ग		स्त्रीलिङ्ग
1.	कथ् + अनीयर्	=	कथनीयम्	-	कथनीयः	-	कथनीया
2.	भू + अनीयर्	=	भवनीयम्	-	भवनीयः	-	भवनीया
3.	दृश् + अनीयर्	=	दर्शनीयम्	-	दर्शनीयः	-	दर्शनीया
4.	पठ् + अनीयर्	=	पठनीयम्	-	पठनीयः	-	पठनीया
5.	पा + अनीयर्	=	पानीयम्	-	पानीयः	-	पानीया
6.	कृ + अनीयर्	=	करणीयम्	-	करणीयः	-	करणीया
7.	गम् + अनीयर्	=	गमनीयम्	-	गमनीयः	-	गमनीया
8.	रम् + अनीयर्	=	रमणीयम्	-	रमणीयः	-	रमणीया
9.	हस् + अनीयर्	=	हसनीयम्	-	हसनीयः	-	हसनीया
10.	घ्रा + अनीयर्	=	घ्राणीयम्	-	घ्राणीयः	-	घ्राणीया
11.	स्था + अनीयर्	=	स्थानीयम्	-	स्थानीयः	-	स्थानीया
12.	वच् + अनीयर्	=	वचनीयम्	-	वचनीयः	-	वचनीया
13.	लिख् + अनीयर्	=	लेखनीयम्	-	लेखनीयः	-	लेखनीया
14.	श्रु + अनीयर्	=	श्रवणीयम्	-	श्रवणीयः	-	श्रवणीया
15	दा + अनीयर्	=	दानीयम्	-	दानीयः	-	दानीया

तव्यत् प्रत्यय के उदाहरण

	धातु प्रत्यय		नपुंसकलिङ्ग		पुंलिङ्ग		स्त्रीलिङ्ग
1.	कृ + तव्यत्	=	कर्तव्यम्	-	कर्तव्यः	-	कर्तव्या
2.	गम् + तव्यत्	=	गन्तव्यम्	-	गन्तव्यः	-	गन्तव्या
3.	पच् + तव्यत्	=	पक्तव्यम्	-	पक्तव्यः	-	पक्तव्या
4.	दृश् + तव्यत्	=	द्रष्टव्यम्	-	द्रष्टव्यः	-	द्रष्टव्या
5.	प्रच्छ् + तव्यत्	=	प्रष्टव्यम्	-	प्रष्टव्यः	-	प्रष्टव्या
6.	भू + तव्यत्	=	भवितव्यम्	-	भवितव्यः	-	भवितव्या

	धातु प्रत्यय		नपुंसकलिङ्ग		पुंलिङ्ग		स्त्रीलिङ्ग
7.	स्था + तव्यत्	=	स्थातव्यम्	-	स्थातव्यः	-	स्थातव्या
8.	रुद् + तव्यत्	=	रोदितव्यम्	-	रोदितव्यः	-	रोदितव्या
9.	नृत् + तव्यत्	=	नर्तितव्यम्	-	नर्तितव्यः	-	नर्तितव्या
10.	पठ् + तव्यत्	=	पठितव्यम्	-	पठितव्यः	-	पठितव्या
11.	लिख् + तव्यत्	=	लेखितव्यम्	-	लेखितव्यः	-	लेखितव्या
12.	स्मृ + तव्यत्	=	स्मर्तव्यम्	-	स्मर्तव्यः	-	स्मर्तव्या
13.	श्रु + तव्यत्	=	श्रोतव्यम्	-	श्रोतव्यः	-	श्रोतव्या
14.	जि + तव्यत्	=	जेतव्यम्	-	जेतव्यः	-	जेतव्या
15.	दा + तव्यत्	=	दातव्यम्	-	दातव्यः	-	दातव्या
16.	पा + तव्यत्	=	पातव्यम्	-	पातव्यः	-	पातव्या
17.	ज्ञा + तव्यत्	=	ज्ञातव्यम्	-	ज्ञातव्यः	-	ज्ञातव्या

8. क्त और क्तवतु प्रत्यय

- क्तक्तवतू निष्ठा (1.1.26)- क्त और क्तवतु प्रत्यय निष्ठासंज्ञक होते हैं।
- निष्ठा (3.2.102)- सूत्र से क्त और क्तवतु प्रत्यय भूतकाल अर्थ में सभी धातुओं से लगाये जाते हैं।
- 'क्त' प्रत्यय में 'क्' की इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है केवल 'त' शेष बचता है। यह प्रत्यय भाववाच्य एवं कर्मवाच्य में प्रयुक्त होता है।
- क्त और क्तवतु प्रत्ययों से बने पदों का रूप तीनों लिङ्गों में होता है-

जैसे- **पठितः** (पुं.) **पठिता** (स्त्री.) **पठितम्** (नपु.) - क्त प्रत्ययान्तपद

पठितवान् (पु.) **पठितवती** (स्त्री.) **पठितवत्** (नपुं.) - क्तवतु प्रत्ययान्तपद

'क्त' प्रत्ययान्त पदों की सूची

	धातु प्रत्यय		पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
1.	गम् + क्त	=	गतः	गता	गतम्
2.	कृ + क्त	=	कृतः	कृता	कृतम्
3.	पठ् + क्त	=	पठितः	पठिता	पठितम्
4.	प्रच्छ् + क्त	=	पृष्टः	पृष्टा	पृष्टम्
5.	लिख् + क्त	=	लिखितः	लिखिता	लिखितम्
6.	कथ् + क्त	=	कथितः	कथिता	कथितम्
7.	कम्प् + क्त	=	कम्पितः	कम्पिता	कम्पितम्
8.	चिन्त् + क्त	=	चिन्तितः	चिन्तिता	चिन्तितम्
9.	जि + क्त	=	जितः	जिता	जितम्
10.	पूज् + क्त	=	पूजितः	पूजिता	पूजितम्
11.	विद् + क्त	=	विदितः	विदिता	विदितम्
12.	नश् + क्त	=	नष्टः	नष्टा	नष्टम्
13.	शक् + क्त	=	शक्तः	शक्ता	शक्तम्
14.	शिक्ष् + क्त	=	शिक्षितः	शिक्षिता	शिक्षितम्
15.	भू + क्त	=	भूतः	भूता	भूतम्

धातु प्रत्यय		पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
16. शोभ् + क्त	=	शोभितः	शोभिता	शोभितम्
17. प्रविश् + क्त	=	प्रविष्टः	प्रविष्टा	प्रविष्टम्
18. भाष् + क्त	=	भाषितः	भाषिता	भाषितम्
19. मिल् + क्त	=	मिलितः	मिलिता	मिलितम्
20. पा + क्त	=	पीतः	पीता	पीतम्
21. अधि + इङ् + क्त	=	अधीतः	अधीता	अधीतम्
21. आङ् + हु + क्त	=	आहूतः	आहूता	आहूतम्
22. ज्वल् + क्त	=	ज्वलितः	ज्वलिता	ज्वलितम्
23. जीव् + क्त	=	जीवितः	जीविता	जीवितम्
24. रुच् + क्त	=	रुचितः	रुचिता	रुचितम्

क्तवतु प्रत्ययान्त पदों की सूची

धातु प्रत्यय		पुँल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
1. कृ + क्तवतु	=	कृतवान्	कृतवती	कृतवत्
2. गम् + (जाना)	=	गतवान्	गतवती	गतवत्
3. श्रु (सुनना)	=	श्रुतवान्	श्रुतवती	श्रुतवत्
4. पूज् (पूजा करना)	=	पूजितवान्	पूजितवती	पूजितवत्
5. लिख् (लिखना)	=	लिखितवान्	लिखितवती	लिखितवत्
6. ज्ञा (जानना)	=	ज्ञातवान्	ज्ञातवती	ज्ञातवत्
7. अर्च् (पूजा करना)	=	अर्चितवान्	अर्चितवती	अर्चितवत्
8. आ दिश् (आज्ञा देना)	=	आदिष्टवान्	आदिष्टवती	आदिष्टवत्
9. आप् (प्राप्त करना)	=	आप्तवान्	आप्तवती	आप्तवत्
10. आ + रुह् (चढ़ना)	=	आरूढवान्	आरूढवती	आरूढवत्
11. उप् + विश् (बैठना)	=	उपविष्टवान्	उपविष्टवती	उपविष्टवत्
12. कथ् (कहना)	=	कथितवान्	कथितवती	कथितवत्
13. क्री (खरीदना)	=	क्रीतवान्	क्रीतवती	क्रीतवत्
14. पत् (गिरना)	=	पतितवान्	पतितवती	पतितवत्
15. त्यज् (त्यागना)	=	त्यक्तवान्	त्यक्तवती	त्यक्तवत्
16. लभ् (प्राप्त करना)	=	लब्धवान्	लब्धवती	लब्धवत्
17. सृज् (सृष्टि करना)	=	सृष्टवान्	सृष्टवती	सृष्टवत्
18. ग्रह् (ग्रहण करना)	=	गृहीतवान्	गृहीतवती	गृहीतवत्
19. पा (पीना)	=	पीतवान्	पीतवती	पीतवत्
20. भू (होना)	=	भूतवान्	भूतवती	भूतवत्
21. स्ना (स्नान करना)	=	स्नातवान्	स्नातवती	स्नातवत्

9. णमुल् प्रत्यय

- **''आभीक्ष्ण्ये णमुल् च''** (3.4.22) सूत्र से समान कर्ता वाले दो धातुओं से पूर्वकालिक धातु से 'णमुल्' प्रत्यय होता है; बार-बार होना अर्थ द्योतित होने पर।
- यदि किसी क्रिया का बार-बार लगातार (आभीक्ष्ण्य) अर्थ में प्रयोग करना होता है तो वहाँ 'णमुल्' प्रत्यय जोड़ा जाता है। 'णमुल्' में 'अम्' शेष रहता है।
- णमुल् प्रत्यय से बने शब्द अव्यय होते हैं, इनके रूप नहीं चलते।

'णमुल्' प्रत्ययान्त पदों की सूची

(1)	तड् + णमुल्	=	ताडं ताडम् (मार मारकर)
(2)	दा + णमुल्	=	दायं दायम् (दे-देकर)
(3)	पा + णमुल्	=	पायं पायम् (पी-पीकर)
(4)	गम् + णमुल्	=	गामं गामम् (जा-जाकर)
(5)	वृ + णमुल्	=	वारं वारम् (बार-बार)
(6)	छिद् + णमुल्	=	छेदं छेदम् (छेद-छेदकर)
(7)	नम् + णमुल्	=	नामं नामम् (झुक-झुककर)
(8)	पठ् + णमुल्	=	पाठं पाठम् (पढ़-पढ़कर)
(9)	रुद् + णमुल्	=	रोदं रोदम् (रो-रोकर)
(10)	भिद् + णमुल्	=	भेदं भेदम् (फोड़-फोड़कर)
(11)	पच् + णमुल्	=	पाचं पाचम् (पका पकाकर)
(12)	दृश् + णमुल्	=	दर्शं दर्शम् (बार बार देखकर)
(13)	नश् + णमुल्	=	नाशं नाशम् (नष्ट कर करके)
(14)	लभ् + णमुल्	=	लाभं लाभम् (बार बार प्राप्त करके)
(15)	ग्रह् + णमुल्	=	ग्राहं ग्राहम् (बार बार पकडकर)

10. शतृ प्रत्यय और शानच् प्रत्यय

- **लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे (3.2.124)** सूत्र से शतृ और शानच् प्रत्ययों का विधान होता है।
- शतृ और शानच् - दोनों प्रत्यय वर्तमानकालिक कृदन्त के अन्तर्गत गिने जाते हैं।
- **''तौ सत्''** सूत्र से शतृ और शानच् - दोनों प्रत्ययों की 'सत् संज्ञा' होती है।
- 'लगातार कार्य का होना' इस अर्थ को बताने के लिए इन दोनों प्रत्ययों का प्रयोग होता है।
- शतृ प्रत्यय में 'अत्' और 'शानच्' में 'आन' शेष बचता है।
- परस्मैपदी धातुओं से 'शतृ' एवं आत्मनेपदी धातुओं से 'शानच्' प्रत्यय का विधान किया जाता है। किन्तु उभयपदी धातुओं से दोनों प्रत्यय होते हैं।
- 'शतृ' और 'शानच्' प्रत्ययान्त शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों और सातों विभक्तियों में चलते हैं-

(i) पठ् + शतृ = **पठन्** (पुं.), **पठन्ती** (स्त्री.), **पठत्** (नपु.)

(ii) कम्प् + शानच् = **कम्पमानः** (पु.), **कम्पमाना** (स्त्री.), **कम्पमानम्** (नपु.)

- ये प्रत्यय कर्ता के विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं।

जैसे- **पठन् बालकः गच्छति।** (पढ़ता हुआ बालक जाता है)

भाषमाणः शिक्षकः लिखति। (बोलता हुआ शिक्षक लिखता है)

शतृ प्रत्ययान्त शब्दों की सूची

	धातु (अर्थ सहित)	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
1.	पठ् (पढ़ना)	पठन्	पठन्ती	पठत्
2.	लिख् (लिखना)	लिखन्	लिखन्ती	लिखत्
3.	क्रीड् (खेलना)	क्रीडन्	क्रीडन्ती	क्रीडत्
4.	कृ (करना)	कुर्वन्	कुर्वती	कुर्वत्
5.	धाव् (दौड़ना)	धावन्	धावन्ती	धावत्
6.	श्रु (सुनना)	शृण्वन्	शृण्वती	शृण्वत्
7.	आप् (पाना)	आप्नुवन्	आप्नुवती	आप्नुवत्
8.	गम् (जाना)	गच्छन्	गच्छन्ती	गच्छत्
9.	गर्ज् (गरजना)	गर्जन्	गर्जन्ती	गर्जत्
10.	दृश् (देखना)	पश्यन्	पश्यन्ती	पश्यत्
11.	कथ् (कहना)	कथयन्	कथयन्ती	कथयत्

12. अर्च् (पूजना)	अर्चन्	अर्चन्ती	अर्चत्
13. क्री (खरीदना)	क्रीणन्	क्रीणती	क्रीणत्
14. गै (गाना)	गायन्	गायन्ती	गायत्
15. छिद् (काटना)	छिन्दन्	छिन्दन्ती	छिन्दत्
16. शक् (सकना)	शक्नुवन्	शक्नुवन्ती	शक्नुवत्
17. स्वप् (सोना)	स्वपन्	स्वपन्ती	स्वपत्
18. स्मृ (स्मरण करना)	स्मरन्	स्मरन्ती	स्मरत्
19. हृ (हरण करना)	हरन्	हरन्ती	हरत्
20. हस् (हँसना)	हसन्	हसन्ती	हसत्
21. अस् (होना)	सन्	सती	सत्
22. खाद् (खाना)	खादन्	खादन्ती	खादत्
23. चल् (चलना)	चलन्	चलन्ती	चलत्
24. ज्ञा (जानना)	जानन्	जानती	जानत्
25. भू (होना)	भवन्	भवन्ती	भवत्
26. कथ् (कहना)	कथयन्	कथयन्ती	कथयत्

शानच् प्रत्ययान्त पदों की सूची

	धातु (अर्थ सहित)	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
1.	भाष्	भाषमाणः	भाषमाणा	भाषमाणम्
2.	एध्	एधमानः	एधमाना	एधमानम्
3.	कृ	कुर्वाणः	कुर्वाणा	कुर्वाणम्
4.	यज्	यजमानः	यजमाना	यजमानम्
5.	लभ्	लभमानः	लभमाना	लभमानम्
6.	याच्	याचमानः	याचमाना	याचमानम्
7.	नी	नयमानः	नयमाना	नयमानम्
8.	वृध्	वर्धमानः	वर्धमाना	वर्धमानम्
9.	वृत् (होना)	वर्तमानः	वर्तमाना	वर्तमानम्
10.	शी (सोना)	शयानः	शयाना	शयानम्
11.	कम्प् (काँपना)	कम्पमानः	कम्पमाना	कम्पमानम्
12.	आस् (बैठना)	आसीनः	आसीना	आसीनम्
13.	जन् (पैदा होना)	जायमानः	जायमाना	जायमानम्
14.	त्वर् (जल्दी करना)	त्वरमाणः	त्वरमाणा	त्वरमाणम्
15.	सेव् (सेवा करना)	सेवमानः	सेवमाना	सेवमानम्
16.	सह् (सहन करना)	सहमानः	सहमाना	सहमानम्
17.	कथ् (कहना)	कथयमाणः	कथयमाणा	कथयमाणम्

तद्धितप्रत्यय

तद्धितप्रत्यय- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण एवम् अव्ययपदों से जोड़े जाने वाले प्रत्यय तद्धित प्रत्यय हैं। तद्धितप्रत्यय के योग से बने शब्द '**तद्धितान्त**' कहे जाते हैं।

1. मतुप् प्रत्यय

(i) **तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् (5.2.94)** सूत्र से 'वह इसका है' 'वह इसमें है' - इन अर्थों में 'मतुप्' प्रत्यय होता है।

(ii) 'मतुँप्' के पकार एवं उकार का योग होकर 'मत्' शेष बचता है।

(iii) 'मतुँप्' प्रत्ययान्त पद विशेषण होते हैं अतः विशेष्य के अनुसार इनका लिङ्ग, वचन और विभक्ति निर्धारित होती है।

मतुप् प्रत्ययान्त पदों की सूची

1. गो + मतुप् = **गोमत् (गोमान्)** गौ वाला
2. मति + मतुप् = **मतिमत् (मतिमान्)** बुद्धि वाला
3. श्री + मतुप् = **श्रीमत् (श्रीमान्)** श्री से युक्त
4. धी + मतुप् = **धीमत् (धीमान्)** बुद्धि वाला
5. आयुस् + मतुप् = **आयुष्मत् (आयुष्मान्)** दीर्घायु

(1) मतुप् (मत्) का 'म' बदलकर 'व' हो जाता है, यदि अकारान्त या आकारान्त हो; जैसे-

(i) बल + मतुप् = **बलवत्** (बलवान्)
(ii) विद्या + मतुप् = **विद्यावत्** (विद्यावान्)
(iii) धन + मतुप् = **धनवत्** (धनवान्)
(iv) दया + मतुप् = **दयावत्** (दयावान्)
(v) गुण + मतुप् = **गुणवत्** (गुणवान्)
(vi) भग + मतुप् = **भगवत्** (भगवान्)

(2) ऐसा शब्द, जिसके अन्तिम स्वर के पहले 'म्' हो-
लक्ष्मी + मतुप् = लक्ष्मीवान्

(3) ऐसा शब्द, जिसके अन्तिम व्यञ्जन के पहले 'अ' या 'आ' हो। जैसे-
यशस् + मतुप् = **यशस्वत्** (यशस्वान्)
भास् + मतुप् = **भास्वत्** (भास्वान्)

(4) जिस शब्द के अन्त में वर्गों के प्रथम चार वर्णों में से कोई हो। जैसे-
विद्युत् + मतुप् = **विद्युत्वत्** (विद्युत्वान्)
सुहृद् + मतुप् = **सुहृद्वत्** (सुहृद्वान्)

मतुप् प्रत्ययान्त पदों की सूची

शब्द + प्रत्यय	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
1. धन् + मतुप् =	धनवान्	धनवती	धनवत्
2. रूप + मतुप् =	रूपवान्	रूपवती	रूपवत्
3. बल + मतुप् =	बलवान्	बलवती	बलवत्
4. गुण + मतुप् =	गुणवान्	गुणवती	गुणवत्
5. रस + मतुप् =	रसवान्	रसवती	रसवत्
6. धी + मतुप् =	धीमान्	धीमती	धीमत्
7. श्री + मतुप् =	श्रीमान्	श्रीमती	श्रीमत्

2. इनि प्रत्यय

(1) **अत इनिठनौ (5.2.115)** अर्थात् अकारान्त शब्दों से 'इनि' और 'ठन्' प्रत्यय होते हैं।

(2) 'इनि' प्रत्यय के अन्त में विद्यमान 'इ' का लोप हो जाता है अतः केवल 'इन्' शेष बचता है।

(3) यह प्रत्यय भी 'वाला' अर्थ में प्रयुक्त होता है। जैसे-
धन + इनि = धनिन् (धनी) = धन वाला।

इनि (इन्) प्रत्ययान्त पदों की सूची

1.	चक्र + इनि	=	चक्रिन् /चक्री
2.	धन + इनि	=	धनिन् / धनी
3.	बल + इनि	=	बलिन् / बली
4.	दुःख + इनि	=	दुःखिन् / दुःखी
5.	गुण + इनि	=	गुणिन् / गुणी
6.	कर + इनि	=	करिन् / करी
7.	हस्त + इनि	=	हस्तिन् / हस्ती
8.	दण्ड + इनि	=	दण्डिन् / दण्डी
9.	शिखा + इनि	=	शिखिन् / शिखी
10.	सुख + इनि	=	सुखिन् / सुखी
11.	कर्म + इनि	=	कर्मिन् / कर्मी
12.	प्रणय + इनि	=	प्रणयिन् / प्रणयी
13.	माला + इनि	=	मालिन् / माली
14.	दोष + इनि	=	दोषिन् / दोषी
15.	ज्ञान + इनि	=	ज्ञानिन् / ज्ञानी
16.	दान + इनि	=	दानिन् / दानी
17.	माया + इनि	=	मायिन् / मायी

3. त्व और तल् प्रत्यय

(1) ''तस्य भावस्त्वतलौ'' (5.1.119) सूत्र से किसी शब्द को भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए उस शब्द में 'त्व' अथवा 'तल्' (ता) प्रत्यय जोड़ देते हैं।

(2) 'त्व' से अन्त होने वाले शब्द सदा नपुंसकलिङ्ग में होते हैं और 'तल्' से अन्त होने वाले शब्द स्त्रीलिङ्ग में होते हैं।

(3) 'ग्रामजनबन्धुभ्यस्तल्' (4.2.43) सूत्र से तल् प्रत्यय होता है। जैसे- ग्रामता, बन्धुता, जनता आदि।

(4) गजता, सहायता आदि में भी तल् प्रत्यय है।

'त्व' और तल् प्रत्ययान्त पदों की सूची

शब्द	'त्व' प्रत्ययान्त पद	'तल्' प्रत्ययान्त पद
1. कुशल	कुशलत्वम्	कुशलता
2. गुरु	गुरुत्वम्	गुरुता
3. मित्र	मित्रत्वम्	मित्रता
4. देव	देवत्वम्	देवता
5. सुन्दर	सुन्दरत्वम्	सुन्दरता
6. मनुष्य	मनुष्यत्वम्	मनुष्यता
7. शिशु	शिशुत्वम्	शिशुता
8. पशु	पशुत्वम्	पशुता
9. मूर्ख	मूर्खत्वम्	मूर्खता
10. दुर्जन	दुर्जनत्वम्	दुर्जनता
11. महत्	महत्त्वम्	महत्ता

4. ठक् प्रत्यय

(1) 'ठक्' प्रत्यय का प्रयोग भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए होता है। शब्द के साथ जुड़ने पर 'ठक्' के 'ठ्' के स्थान पर 'इक' आदेश होता है।

(2) शब्द के प्रथम स्वर में वृद्धि हो जाती है; जैसे- 'अ' को 'आ', 'इ' को 'ऐ', 'उ' को 'औ' हो जाता है। अर्थात् आदि अच् की वृद्धि होती है।

ठक् (इक) प्रत्ययान्त पदों की सूची

1. धर्म + ठक् (इक) = धार्मिकः
2. अस्ति + ठक् (इक) = आस्तिकः
3. सप्ताह + ठक् (इक) = साप्ताहिकः
4. संस्कृति + ठक् (इक) = सांस्कृतिकः
5. अश्व + ठक् (इक) = आश्विकः
6. साहित्य + ठक् (इक) = साहित्यिकः
7. लोक + ठक् (इक) = लौकिकः
8. दिन + ठक् (इक) = दैनिकः

स्त्रीप्रत्यय

पुंलिङ्ग शब्दों को स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए जिन प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें **'स्त्रीप्रत्यय'** कहा जाता है।
जैसे- टाप्, चाप्, डाप्, ङीप्, ङीष्, ङीन्, ऊङ्, ति आदि।

(1) टाप् प्रत्यय

(i) अजाद्यतष्टाप् (4.1.4) सूत्र से अजादिगण में गिने गये शब्दों को और अकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों को स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए 'टाप्' प्रत्यय लगाया जाता है।

(ii) 'टाप्' प्रत्यय के 'ट्' और 'प्' का लोप होकर केवल 'आ' बचता है। अतः 'टाप्' प्रत्ययान्त शब्द आकारान्त स्त्रीलिङ्ग कहलाते हैं।

(iii) 'टाप्' प्रत्यय से बने शब्दों के रूप 'रमा' की भाँति चलते हैं। जैसे-

अज + टाप् = **अजा**
चटक + टाप् = **चटका**
सुत + टाप् = **सुता**
शूद्र + टाप् = **शूद्रा**
कनिष्ठ + टाप् = **कनिष्ठा**
प्रथम + टाप् = **प्रथमा**
बाल + टाप् = **बाला**
अश्व + टाप् = **अश्वा**
क्षत्रिय + टाप् = **क्षत्रिया**
अनुकूल + टाप् = **अनुकूला**
सुनयन + टाप् = **सुनयना**
अचल + टाप् = **अचला**
कुशल + टाप् = **कुशला**

नोट- 'टाप्' प्रत्यय जोड़ते समय यदि शब्द के अन्त में 'क' हो, और 'क' से पूर्व 'अ' हो तो.....'अ' के स्थान पर 'इ' हो जाता है। जैसे-

कारक + टाप् = **कारिका**
नाटक + टाप् = **नाटिका**
बालक + टाप् = **बालिका**
अध्यापक + टाप् = **अध्यापिका**
गायक + टाप् = **गायिका**

(2) ङीष् प्रत्यय

(i) **'षिद्गौरादिभ्यश्च'** (4.1.41) सूत्र से 'ङीष्' प्रत्यय का विधान किया जाता है।

(ii) जिन प्रत्ययों में 'षकार' का लोप हुआ हो, ऐसे प्रत्ययों से बने हुए शब्दों से तथा गौरादिगण के शब्दों से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए 'ङीष्' प्रत्यय का प्रयोग होता है।

(iii) 'ङीष्' में 'ङ्' की और 'ष्' की इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है, केवल 'ई' शेष बचता है। इसीलिए ङीष् प्रत्ययान्त पद ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग पद कहलाते हैं।

(iv) ङीष् प्रत्ययान्त पदों का रूप 'नदी' की तरह चलता है।

जैसे-

नर्तक + ङीष् = **नर्तकी**

गौर + ङीष् = **गौरी**

नट + ङीष् = **नटी**

मातामह + ङीष् = **मातामही**

चन्द्रमुख + ङीष् = **चन्द्रमुखी**

मनुष्य + ङीष् = **मनुषी**

शिखण्ड + ङीष् = **शिखण्डी**

तट + ङीष् = **तटी**

शूद्र + ङीष् = **शूद्री**

(3) ङीप् प्रत्यय

(i) 'ङीप्' प्रत्यय के 'ङ्' और 'प्' का लोप होकर 'ई' शेष बचता है।

(ii) ङीप् प्रत्ययान्त पद ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग कहलाते हैं, इनका रूप भी 'नदी' की तरह चलता है।

(iii) "टिड्ढाणञ् ...." "वयसि प्रथमे" "द्विगोः" आदि सूत्रों से 'ङीप्' प्रत्यय का विधान होता है।

जैसे-

नद + ङीप् = **नदी**

देव + ङीप् = **देवी**

तरुण + ङीप् = **तरुणी**

गार्ग्य + ङीप् = **गार्गी**

कुमार + ङीप् = **कुमारी**

किशोर + ङीप् = **किशोरी**

त्रिलोक + ङीप् = **त्रिलोकी**

अष्टाध्याय + ङीप् = **अष्टाध्यायी**

पञ्चवट + ङीप् = **पञ्चवटी**

त्रिपाद + ङीप् = **त्रिपादी**

(4) ङीन् प्रत्यय

(i) 'ङीन्' प्रत्यय का भी 'ङ्' और 'न्' का लोप होकर 'ई' शेष बचता है।

(ii) इस प्रत्यय से बने रूप भी ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग होते हैं, अतः इनका रूप भी 'नदी' की तरह चलेगा।

(iii) **"शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन्"** एवं **"नृनरयोर्वृद्धिश्च"** से 'ङीन्' प्रत्यय का विधान होता है।

जैसे-

ब्राह्मण + ङीन् = **ब्राह्मणी**

शार्ङ्गरव + ङीन् = **शार्ङ्गरवी**

नृ + ङीन् = **नारी**

नर + ङीन् = **नारी**

❑❑

वाच्य

➢ वाक्य के कहने की विधि को संस्कृत में वाच्य कहते हैं। वाच्य तीन प्रकार के होते हैं-

1. कर्तृवाच्य 2. कर्मवाच्य 3. भाववाच्य

1. कर्तृवाच्य- जिस वाक्य में कर्ता प्रधान हो उसे कर्तृवाच्य कहते हैं।

कर्तृवाच्य के वाक्यों में-

(i) कर्ता में प्रथमा विभक्ति होती है

(ii) कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है

(iii) क्रिया का पुरुष तथा वचन कर्ता के अनुसार होता है।

जैसे-

	कर्ता	कर्म	क्रिया।
(i)	सीता	गृहं	गच्छति।
(ii)	अहं	रामायणं	पठामि।

उपर्युक्त दोनों वाक्यों के कर्ता में प्रथमाविभक्ति, कर्म में द्वितीया विभक्ति तथा क्रिया कर्ता के अनुसार प्रयुक्त है।

2. कर्मवाच्य- कर्मवाच्य के वाक्यों में कर्म की प्रधानता होती है, अतः-

(i) कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है।

(ii) कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है।

(iii) क्रिया का पुरुष तथा वचन कर्म के अनुसार होता है।

	कर्ता	कर्म	क्रिया
जैसे-	बालकेन	पुस्तकं	पठ्यते।
	त्वया	विद्यालयः	गम्यते।
	मया	पत्रं	लिख्यते।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वाक्यों के कर्ता में तृतीया विभक्ति, कर्म में प्रथमा विभक्ति तथा क्रिया कर्म के अनुसार प्रयुक्त है।

अतः सभी वाक्य कर्मवाच्य के उदाहरण हैं।

3. भाववाच्य- 'भाव' का अर्थ है- क्रिया। जिस वाक्य में भाव (क्रिया) की प्रधानता होती है, उसे भाववाच्य कहते हैं।

भाववाच्य में -

(i) कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है।

(ii) क्रिया हमेशा प्रथमपुरुष एकवचन की प्रयुक्त होगी।

(iii) अकर्मक (कर्म रहित) धातुओं से ही भाववाच्य होगा।

(iv) भाववाच्य में कर्म का अभाव होता है।

जैसे-

	कर्ता	क्रिया
(i)	मया	हस्यते।
(ii)	त्वया	स्थीयते।
(iii)	ईश्वरेण	भूयते।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त उदाहरणों में कर्ता में तृतीया विभक्ति तथा अकर्मक क्रिया प्रथमपुरुष एकवचन की प्रयुक्त है। कर्म पद का अभाव है।

वाच्य के सन्दर्भ में कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य

➢ वाक्य में जो प्रधान होता है, उसमें प्रथमा विभक्ति आती है कर्तृवाच्य के वाक्यों में कर्ता प्रधान होता है, अतः इसके कर्ता में प्रथमा विभक्ति आती है। इसीप्रकार कर्मवाच्य के वाक्यों में कर्मप्रधान होता है, अतः इसके कर्म में प्रथमा विभक्ति आती है।

➢ सकर्मक (कर्म सहित) धातुओं के रूप दो वाच्यों में होते हैं- (i) कर्तृवाच्य और (ii) कर्मवाच्य

➢ अकर्मक (कर्म रहित) धातुओं के रूप भी दो वाच्यों में होते हैं- (i) कर्तृवाच्य (ii) भाववाच्य

➢ सकर्मक एवं अकर्मक दोनों प्रकार की धातुओं से- कर्तृवाच्य
सकर्मक धातुओं से - कर्मवाच्य
अकर्मक धातुओं से - भाववाच्य

➢ कर्मवाच्य और भाववाच्य में सार्वधातुक लकारों (लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्) में धातु और प्रत्यय के बीच 'यक्' लग जाता है। 'यक्' का 'य' शेष रहता है। धातु का रूप सदा आत्मनेपद में ही चलता है।

जैसे- पठ्यते, लिख्यते, हस्यते, नीयते, पीयते आदि।

कर्ता पदों की सूची

कर्तृवाच्य कर्ता	कर्मवाच्य कर्ता/भाववाच्य कर्ता
भवान्	भवता
भवती	भवत्या
त्वम्	त्वया
अहम्	मया
सः	तेन
सा	तया
कः	केन
का	कया

कर्तृवाच्य कर्ता	कर्मवाच्य कर्ता/भाववाच्य कर्ता
एषः	एतेन
एषा	एतया
यः	येन
या	यया
सर्वः	सर्वेण
सर्वा	सर्वया
अयम्	अनेन
इयम्	अनया
रामः	रामेण
बालकः	बालकेन
हरिः	हरिणा
मुनिः	मुनिना
पिता	पित्रा
माता	मात्रा
रमा	रमया
लता	लतया
नदी	नद्या
लक्ष्मीः	लक्ष्म्या
गुरुः	गुरुणा
साधुः	साधुना
मतिः	मत्या
युवतिः	युवत्या
मित्रम्	मित्रेण
फलम्	फलेन
वारि	वारिणा

कर्मवाच्य/भाववाच्य के अनुसार प्रमुख धातुरूप

भू धातु (अकर्मक, अनिट्, परस्मैपद)

1. लट् लकार

भूयते भूयेते भूयन्ते
भूयसे भूयेथे भूयध्वे
भूये भूयावहे भूयामहे

2. विधिलिङ् लकार

भूयेत भूयेयाताम् भूयेरन्
भूयेथाः भूयाथाम् भूयध्वम्
भूयेय भूयेवहि भूयेमहि।

3. लोट् लकार

भूयताम् भूयेताम् भूयन्ताम्
भूयस्व भूयेथाम् भूयध्वम्
भूयै भूयावहै भूयामहै।

4. लङ् लकार

अभूयत अभूयेताम् अभूयन्त
अभूयथाः अभूयेथाम् अभूयध्वम्
अभूये अभूयावहि अभूयामहि।

5. लृट् लकार

भविष्यते भविष्येते भविष्यन्ते
भविष्यसे भविष्येथे भविष्यध्वे
भविष्ये भविष्यावहे भविष्यामहे

गम् धातु (सकर्मक, अनिट्, परस्मैपद, भ्वादिगण)

लट् लकार

गम्यते गम्येते गम्यन्ते
गम्यसे गम्येथे गम्यध्वे
गम्ये गम्यावहे गम्यामहे

वद् धातु (सकर्मक,सेट्,परस्मैपद,भ्वादिगण)

उद्यते उद्येते उद्यन्ते
उद्यसे उद्येथे उद्यध्वे
उद्ये उद्यावहे उद्यामहे

पठ् धातु (सकर्मक,सेट्,परस्मैपद,भ्वादिगण)

पठ्यते पठ्येते पठ्यन्ते
पठ्यसे पठ्येथे पठ्यध्वे
पठ्ये पठ्यावहे पठ्यामहे

कृ धातु लट् लकार

क्रियते क्रियेते क्रियन्ते
क्रियसे क्रियेथे क्रियध्वे
क्रिये क्रियावहे क्रियामहे

याच् धातु (सकर्मक,सेट्,उभयपदी,भ्वादिगण)

याच्यते याच्येते याच्यन्ते
याच्यसे याच्येथे याच्यध्वे
याच्ये याच्यावहे याच्यामहे

पच् धातु (सकर्मक, अनिट्, उभयपदी, भ्वादिगण)

पच्यते पच्येते पच्यन्ते
पच्यसे पच्येथे पच्यध्वे
पच्ये पच्यावहे पच्यामहे

रुच् धातु (अकर्मक, सेट्, आत्मनेपद, भ्वादिगण)

रुच्यते रुच्येते रुच्यन्ते
रुच्यसे रुच्येथे रुच्यध्वे
रुच्ये रुच्यावहे रुच्यामहे

रम् धातु (अकर्मक, अनिट्, आत्मनेपद, भ्वादिगण)

रम्यते रम्येते रम्यन्ते
रम्यसे रम्येथे रम्यध्वे
रम्ये रम्यावहे रम्यामहे

यज् धातु (सकर्मक,अनिट्,उभयपदी,भ्वादिगण)

इज्यते	इज्येते	इज्यन्ते
इज्यसे	इज्येथे	इज्यध्वे
इज्ये	इज्यावहे	इज्यामहे

वह् धातु (सकर्मक,अनिट्,उभयपदी,भ्वादिगण)

उह्यते	उह्येते	उह्यन्ते
उह्यसे	उह्येथे	उह्यध्वे
उह्ये	उह्यावहे	उह्यामहे

श्रु धातु (सकर्मक,अनिट्,परस्मैपद,भ्वादिगण)

श्रूयते	श्रूयेते	श्रूयन्ते
श्रूयसे	श्रूयेथे	श्रूयध्वे
श्रूये	श्रूयावहे	श्रूयामहे

तुद् धातु (सकर्मक,अनिट्,उभयपदी,तुदादिगण)

तुद्यते	तुद्येते	तुद्यन्ते
तुद्यसे	तुद्येथे	तुद्यध्वे
तुद्ये	तुद्यावहे	तुद्यामहे

भुज् धातु (अकर्मक,अनिट्,परस्मैपद,तुदादिगण)

भुज्यते	भुज्येते	भुज्यन्ते
भुज्यसे	भुज्येथे	भुज्यध्वे
भुज्ये	भुज्यावहे	भुज्यामहे

हन् धातु (सकर्मक,अनिट्,परस्मैपद,अदादिगण)

हन्यते	हन्येते	हन्यन्ते
हन्यसे	हन्येथे	हन्यध्वे
हन्ये	हन्यावहे	हन्यामहे

हस् धातु (अकर्मक,सेट्,परस्मैपद,भ्वादिगण)

हस्यते	हस्येते	हस्यन्ते
हस्यसे	हस्येथे	हस्यध्वे
हस्ये	हस्यावहे	हस्यामहे

क्रीड् धातु (अकर्मक,सेट्,परस्मैपद,भ्वादिगण)

क्रीड्यते	क्रीड्येते	क्रीड्यन्ते
क्रीड्यसे	क्रीड्येथे	क्रीड्यध्वे
क्रीड्ये	क्रीड्यावहे	क्रीड्यामहे

स्था धातु

स्थीयते	स्थीयेते	स्थीयन्ते
स्थीयसे	स्थीयेथे	स्थीयध्वे
स्थीये	स्थीयावहे	स्थीयामहे

आस् धातु (अकर्मक,सेट्,आत्मनेपद,अदादिगण)

आस्यते	आस्येते	आस्यन्ते
आस्यसे	आस्येथे	आस्यध्वे
आस्ये	आस्यावहे	आस्यामहे

जीव् धातु (अकर्मक,सेट्,परस्मैपद,भ्वादिगण)

जीव्यते	जीव्येते	जीव्यन्ते
जीव्यसे	जीव्येथे	जीव्यध्वे
जीव्ये	जीव्यावहे	जीव्यामहे

धातु/अर्थ	कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य/ भाववाच्य	कर्मवाच्य/ भाववाच्य प्रयोग	कर्तृवाच्य प्रयोग
भू (होना)	भवति	भूयते	ईश्वरेण भूयते	ईश्वरः अस्ति।
भी (डरना)	बिभेति	भीयते	शिशुभिः मूषकेभ्यः भीयते	शिशवः मूषकेभ्यः बिभ्यति।
शी (सोना)	शेते	शय्यते	पथिकैः मार्गे शय्यते	पथिकाः मार्गे शेरते।
याच् (माँगना)	याचति	याच्यते	याचकैः भैक्ष्यं याच्यते	याचकाः भैक्ष्यं याचन्ते।
अद् (खाना)	अत्ति	अद्यते	तेन मिष्ठानं अद्यते	सः मिष्ठान्नं अत्ति।
वद् (बोलना)	वदति	उद्यते	आचार्येण सत्यम् उद्यते	आचार्यः सत्यं वदति।
ज्ञा (जानना)	जानाति	ज्ञायते	तेन श्लोकः न ज्ञायते	सः श्लोकं न जानाति।
खन् (खोदना)	खनति	खन्यते	श्रमिकेण भूमिः खन्यते	श्रमिकः भूमिं खनति।
वप् (बोना)	वपति	उप्यते	कृषकेण बीजानि उप्यन्ते	कृषकः बीजानि वपति।
स्था (ठहरना)	तिष्ठति	स्थीयते	मुनिना कुटीरे स्थीयते	मुनिः कुटीरे तिष्ठति।
कथ् (कहना)	कथयति	कथ्यते	ऋषिणा रामकथा कथ्यते	ऋषिः रामकथां कथयति।
दुह् (दोहना)	दोग्धि	दुह्यते	तेन गौः पयः दुह्यते	सः गां पयः दोग्धि।

धातु/अर्थ	कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य/ भाववाच्य	कर्मवाच्य/ भाववाच्य प्रयोग	कर्तृवाच्य प्रयोग
नी (ले जाना)	नयति	नीयते	भृत्येन भारः नीयते	भृत्यः भारं नयति।
गम् (जाना)	गच्छति	गम्यते	पुत्रेण ग्रामः गम्यते	पुत्रः ग्रामं गच्छति।
भक्ष् (खाना)	भक्षयति	भक्ष्यते	मया फलानि भक्ष्यन्ते	अहं फलानि भक्षयामि।
हन् (मारना)	हन्ति	हन्यते	राज्ञा सिंहः हन्यते	राजा सिंहं हन्ति।
पा (पीना)	पिबति	पीयते	शिशुना दुग्धं पीयते	शिशुः दुग्धं पिबति।
अस् (होना)	अस्ति	भूयते	तेन कुत्रापि न भूयते	सः कुत्रापि न भवति।
श्रु (सुनना)	शृणोति	श्रूयते	बालकेन कथा श्रूयते	बालकः कथां शृणोति।
सेव् (सेवा करना)	सेवते	सेव्यते	प्रजाभिः राजा सेव्यते	प्रजाः राजानं सेवन्ते।
चि (चुनना)	चिनोति	चीयते	मालाकारेण पुष्पाणि चीयन्ते	मालाकारः पुष्पाणि चिनोति।
हु (हवन करना)	जुहोति	हूयते	यतिभिः अग्नौ हूयते	यतयः अग्नौ जुह्वति।
स्वप् (सोना)	स्वपिति	सुप्यते	चालकेन मार्गे सुप्यते	चालकः मार्गे स्वपिति।
मन्थ् (मथना)	मथ्नाति	मथ्यते	मात्रा दधि मथ्यते	माता दधि मथ्नाति।
पूज् (पूजा करना)	पूजयति	पूज्यते	यत्र नार्यः पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः	यत्र नारीः पूजयन्ति रमन्ते तत्र देवताः।
कृ (करना)	करोति	क्रियते	ऋषिभिः शुभकर्माणि क्रियन्ते	ऋषयः शुभकर्माणि कुर्वन्ति।
धृ (धारण करना)	धारयति	धार्यते	शिष्येण वस्त्रं धार्यते	शिष्यः वस्त्रं धरति
गण् (गिनना)	गणयति	गण्यते	छात्रेण शतं गण्यते	छात्रः शतं गणयति।
लिख् (लिखना)	लिखति	लिख्यते	छात्रेण पत्रं लिख्यते	छात्रः पत्रं लिखति।
स्मृ (याद करना)	स्मरति	स्मर्यते	मया ईश्वरः स्मर्यते	अहं ईश्वरं स्मरामि।
दृश् (देखना)	पश्यति	दृश्यते	बालकेन चित्रं दृश्यते	बालकः चित्रं पश्यति।
प्रच्छ् (पूछना)	पृच्छति	पृच्छ्यते	अध्यापकेन प्रश्नः पृच्छ्यते	अध्यापकः प्रश्नं पृच्छति।
वस् (रहना)	वसति	उष्यते	बालकैः उद्याने उष्यते	बालकाः उद्याने वसन्ति।

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में प्रयोग

- कर्तृवाच्य के कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति तथा कर्मवाच्य के कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है।
- कर्तृवाच्य के कर्म में द्वितीया विभक्ति तथा कर्मवाच्य के कर्म में प्रथमा विभक्ति हो जाती है।
- कर्मवाच्य में क्रिया का पुरुष और वचन कर्म के पुरुष और वचन के अनुसार हो जाता है।

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
अहं शिक्षां लभे	मया शिक्षा लभ्यते
सः पुस्तकं पठति	तेन पुस्तकं पठ्यते
सः ईश्वरं स्मरति	तेन ईश्वरः स्मर्यते
छात्राः प्रश्नं पृच्छन्ति	छात्रैः प्रश्नः पृच्छ्यते
गायकः गीतानि गायति	गायकेन गीतानि गीयन्ते
शिशुः दुग्धं पिबति	शिशुना दुग्धं पीयते
सः सत्यं वदति	तेन सत्यम् उद्यते
अहं पुस्तकं पश्यामि	मया पुस्तकं दृश्यते
माता ओदनं पचति	मात्रा ओदनं पच्यते
वयं युद्धं कुर्मः	अस्माभिः युद्धं क्रियते

कर्मवाच्य से कर्तृवाच्य में प्रयोग

- कर्मवाच्य में कर्ता की तृतीया विभक्ति कर्तृवाच्य के कर्ता में प्रथमा विभक्ति हो जाती है।
- कर्मवाच्य में कर्म के स्थान पर प्रयुक्त प्रथमा विभक्ति कर्तृवाच्य में द्वितीया विभक्ति हो जाती है।
- क्रिया के पुरुष और वचन कर्त्ता के अनुसार हो जाते हैं।
- कर्मवाच्य में प्रयुक्त क्त के स्थान पर कर्तृवाच्य में क्तवतु प्रत्यय हो जाता है।
- कर्मवाच्य में प्रयुक्त तव्यत् प्रत्यय के स्थान पर कर्तृवाच्य में विधिलिङ् का प्रयोग कर दिया जाता है।

वाच्य परिवर्तन अभ्यास

कर्मवाच्य	कर्तृवाच्य
अध्यापकेन पाठः पठ्यते	अध्यापकः पाठं पठति
अस्माभिः सिंहः दृश्यते	वयं सिंहं पश्यामः
सैनिकैः युद्धं क्रियते	सैनिकाः युद्धं कुर्वन्ति
रमेशेन ईश्वरः स्मर्यते	रमेशः ईश्वरं स्मरति
बालकेन पत्रं लिख्यते	बालकः पत्रं लिखति
गायकेन गीतं गीयते	गायकः गीतं गायति
नृपेण सिंहः हन्यते	नृपः सिंहं हन्ति
स्वामिना कथा कथ्यते	स्वामी कथां कथयति
तेन ग्रामः गम्यते	सः ग्रामं गच्छति
सेनया युद्धः जीयते	सेना युद्धं जयति
तेन कथा श्रूयते	सः कथां शृणोति
मया चन्द्रः दृश्यते	अहं चन्द्रं पश्यामि
गुरुभिः किं न ज्ञायते	गुरवः किं न जानन्ति
मया लोभः त्यजते	अहं लोभं त्यजामि
वृक्षैः फलानि दीयन्ते	वृक्षाः फलानि ददति

कर्तृवाच्य से भाववाच्य में प्रयोग

भाववाच्य के कर्त्ता में तृतीया विभक्ति होती है और क्रिया सदा प्रथम पुरुष एकवचन में होती है। उदाहरण-

कर्तृवाच्य	भाववाच्य
छात्रः क्रीडति	छात्रेण क्रीड्यते
बालकाः तिष्ठन्ति	बालकैः स्थीयते
सिंहः गर्जति	सिंहेन गर्ज्यते
अहं पठामि	मया पठ्यते
ईश्वरः अस्ति	ईश्वरेण भूयते
अश्वाः धावन्ति	अश्वैः धाव्यते
कन्याः लिखन्ति	कन्याभिः लिख्यते
अहं गच्छामि	मया गम्यते
त्वं खादसि	त्वया खाद्यते
लता वर्धते	लतया वर्ध्यते
युवां हसथः	युवाभ्यां हस्यते
पुष्पाणि विकसन्ति	पुष्पैः विकस्यते
गुरुः तिष्ठति	गुरुणा स्थीयते
वयं हसामः	अस्माभिः हस्यते
त्वं पठसि	त्वया पठ्यते

भाववाच्य	कर्तृवाच्य
हरिणा वैकुण्ठे उष्यते	हरिः वैकुण्ठे वसति
अस्माभिः विद्यालये स्थीयते	वयं विद्यालये तिष्ठामः
मयूरैः नृत्यते	मयूराः नृत्यन्ति
मया नैव रुद्यते	अहं नैव रोदिमि
तेन गृहे सुप्यते	सः गृहे स्वपिति

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
रामः वेदं पठति	रामेण वेदः पठ्यते।
बालकः चन्द्रं पश्यति	बालकेन चन्द्रः दृश्यते।
बालकः गीतां पठति	बालकेन गीता पठ्यते।
रामः पत्रं लिखति	रामेण पत्रं लिख्यते।
सुरेशः ग्रामं गच्छति	सुरेशेन ग्रामः गम्यते।
सः आपणं गच्छति	तेन आपणः गम्यते।
सः गीतं गायति	तेन गीतं गीयते।
सः रघुवंशं पठति	तेन रघुवंशं पठ्यते।
कृष्णः जलं पिबति	कृष्णेन जलं पीयते।
बालकः मोहनं पश्यति	बालकेन मोहनः दृश्यते।
बालिका पुस्तकं पठति	बालिकया पुस्तकं पठ्यते।
रजकः गर्दभं ताडयति	रजकेन गर्दभः ताड्यते।
कृषकः जलं पिबति	कृषकेण जलं पीयते।
सः दुग्धं पिबति	तेन दुग्धं पीयते।
कविः काव्यं करोति	कविना काव्यं क्रियते।
सा विद्यालयं गच्छति	तया विद्यालयः गम्यते।
माता ओदनं पचति	मात्रा ओदनं पच्यते।
रामः तीव्रं हसति	रामेण तीव्रं हस्यते।
भक्तः ज्ञानं प्राप्नोति	भक्तेन ज्ञानं प्राप्यते।
रामः धनं ददाति	रामेण धनं दीयते।
सः ईश्वरं स्मरति	तेन ईश्वरः स्मर्यते।
सः सत्यं वदति	तेन सत्यम् उद्यते।
सः कथां शृणोति	तेन कथा श्रूयते।
वृक्षाः फलानि ददति	वृक्षैः फलानि दीयन्ते।
सैनिकाः युद्धं कुर्वन्ति	सैनिकैः युद्धं क्रियते।
छात्राः पत्रं लिखन्ति	छात्रैः पत्रं लिख्यते।
तौ प्रयागं गच्छतः	ताभ्याम् प्रयागः गम्यते।
छात्राः पुस्तकानि नयन्ति	छात्रैः पुस्तकानि नीयन्ते।
तौ गृहं गच्छतः	ताभ्याम् गृहं गम्यते।
कृषकाः जलं पिबन्ति	कृषकैः जलं पीयते।
ते पुस्तकानि पठन्ति	तैः पुस्तकानि पठ्यन्ते।

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
बालकौ गीतं गायतः	बालकाभ्यां गीतं गीयते।
भक्तौ ईश्वरं स्मरतः	भक्ताभ्याम् ईश्वरः स्मर्यते।
तौ पुस्तकं पठतः	ताभ्याम् पुस्तकं पठ्यते।
त्वं गृहं गच्छसि	त्वया गृहं गम्यते।
त्वं पत्रं लिखसि	त्वया पत्रं लिख्यते।
त्वं किं लिखसि	त्वया किं लिख्यते।
यूवां पुस्तकं पठथः	युवाभ्याम् पुस्तकं पठ्यते।
त्वं कुत्र गच्छसि	त्वया कुत्र गम्यते।
त्वं ईश्वरं पश्यसि	त्वया ईश्वरः दृश्यते।
त्वं प्रश्नं पृच्छसि	त्वया प्रश्नः पृच्छ्यते।
युवां गृहं गच्छथः	युवाभ्यां गृहं गम्यते।
युवां प्रश्नानि पृच्छथः	युवाभ्यां प्रश्नानि पृच्छयन्ते।
युवां बालकौ पश्यथः	युवाभ्यां बालकौ दृश्येते।
यूयं पुस्तकानि पठथ	युष्माभिः पुस्तकानि पठ्यन्ते।
यूयं गीतानि गायथ	युष्माभिः गीतानि गीयन्ते।
अहं पुस्तकं पठामि	मया पुस्तकं पठ्यते।
अहं दुग्धं पिबामि	मया दुग्धं पीयते।
अहं पुस्तकं लिखामि	मया पुस्तकं लिख्यते।
अहं त्वां पश्यामि	मया त्वं दृश्यसे।
अहं जलं पिबामि	मया जलं पीयते।
अहं पत्रं लिखामि	मया पत्रं लिख्यते।
आवां गृहं गच्छावः	आवाभ्यां गृहं गम्यते।
आवां पुस्तकानि पठावः	आवाभ्यां पुस्तकानि पठ्यन्ते
आवां जलं पिबावः	आवाभ्यां जलं पीयते
वयं पत्रं लिखामः	अस्माभिः पत्रं लिख्यते
वयं नगरं गच्छामः	अस्माभिः नगरं गम्यते
वयं विद्यालयं गच्छामः	अस्माभिः विद्यालयः गम्यते
वयं बालकं पश्यामः	अस्माभिः बालकः दृश्यते।
रामः वेदं पठिष्यति	रामेण वेदः पठिष्यते
बालकः चन्द्रं द्रक्ष्यति	बालकेन चन्द्रः द्रक्ष्यते।
रमेशः पत्रं पठिष्यति	रमेशेन पत्रं पठिष्यते।
सीता काव्यं करिष्यति	सीतया काव्यं करिष्यते।
सः ग्रन्थं पठिष्यति	तेन ग्रन्थः पठिष्यते।
मोहनः दुग्धं पास्यति	मोहनेन दुग्धं पास्यते
मुनिः रामायणं कथयिष्यति	मुनिना रामायणं कथयिष्यते
छात्रः विद्यालयं गमिष्यति	छात्रेण विद्यालयः गंस्यते
राधा नृत्यं करिष्यति	राधया नृत्यं करिष्यते
शिशुः दुग्धं पास्यति	शिशुना दुग्धं पास्यते।
सः त्वां द्रक्ष्यति	तेन त्वं द्रक्ष्यसे

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
सः आपणं गमिष्यति	तेन आपणः गम्यते
तौ दुग्धं पास्यतः	ताभ्याम् दुग्धं पास्यते
तौ कार्याणि करिष्यतः	ताभ्याम् कार्याणि करिष्यन्ते
तौ वनं गमिष्यतः	ताभ्याम् वनं गंस्यते
ते पत्राणि पठिष्यन्ति	तैः पत्राणि पठिष्यन्ते
ते फलानि नेष्यन्ति	तैः फलानि नेष्यन्ते
ते कथां कथयिष्यन्ति	तैः कथा कथयिष्यते।

कर्तृवाच्य	भाववाच्य
सः हसति	तेन हस्यते
त्वं पठसि	त्वया पठ्यते
अहं गच्छामि	मया गम्यते
वयं हसामः	अस्माभिः हस्यते
ते हसन्ति	तैः हस्यते
रामः गच्छति	रामेण गम्यते
सीता गच्छति	सीतया गम्यते
पिता गच्छति	पित्रा गम्यते
अहं वदामि	मया उद्यते
यूयं पठथ	युष्माभिः पठ्यते
अहं हसामि	मया हस्यते
सा लिखति	तया लिख्यते
सः तिष्ठति	तेन स्थीयते
त्वं हससि	त्वया हस्यते
त्वं खादसि	त्वया खाद्यते
सः क्रीडति	तेन क्रीड्यते
रामः हसति	रामेण हस्यते
अहं तिष्ठामि	मया स्थीयते
श्यामः गच्छति	श्यामेन गम्यते
छात्रः क्रीडति	छात्रेण क्रीड्यते
बालकाः तिष्ठन्ति	बालकैः स्थीयते
ईश्वरः अस्ति	ईश्वरेण भूयते
गुरुः तिष्ठति	गुरुणा स्थीयते
मयूराः नृत्यन्ति	मयूरैः नृत्यते

❑❑

उपसर्ग एवं अव्यय

उपसर्ग

- **उप** उपसर्ग पूर्वक **√'सृज्'** धातु से **घञ्** प्रत्यय करने पर ''उपसर्ग'' शब्द निर्मित होता है। जिसका अर्थ है- 'जो समीप रखे जाय'
- **''उपसृज्यन्ते धातूनां समीपे क्रियन्ते इति उपसर्गाः''** अर्थात् जो धातुओं के समीप रखे जाते हैं, वे उपसर्ग कहलाते हैं।
- पाणिनि कहते हैं **''प्रादयः उपसर्गाः क्रियायोगे''** (1.4.59) अर्थात् क्रिया के योग में 'प्र' आदि उपसर्गसंज्ञक होते हैं।

यथा- प्रभवति, पराभवति, अपहरति, निरीक्षते आदि।

- जो किसी भी 'धातु' अथवा शब्द के पहले जुड़कर अर्थ को बदल देता है, उसे 'उपसर्ग' कहा जाता है। जैसे- हार = माला, या पराजय किन्तु इसमें 'प्र' उपसर्ग जुड़कर इसके अर्थ को परिवर्तित कर देता है- **प्रहारः** (चोट, आघात), **आहारः** (भोजन), **संहारः** (विनाश), **विहारः** (भ्रमण), **परिहारः** (त्याग)।

उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते।
प्रहाराहार-संहार-विहार-परिहारवत्॥

- उपसर्ग सहित धातुओं के प्रयोग से भाषा परिष्कृत, सुन्दर और चमत्कृत लगती है।
- उपसर्ग हमेशा **धातुओं या शब्दों के पूर्व** ही जोड़े जाते हैं। उपसर्ग भी अव्यय पद ही हैं।

धातु के साथ उपसर्गों के जुड़ने से तीन परिवर्तन होते हैं-

(i) क्रिया का अर्थ बिल्कुल बदल जाता है अर्थात् मुख्यार्थ को बाधकर नवीन अर्थ का बोध कराता है। जैसे- विजयते = जीतता है (वि उपसर्ग जि धातु), पराजयते = हारता है (परा उपसर्ग जि धातु), उपकार - अपकारः। आहारः - प्रहारः आदि।

(ii) क्रिया के अर्थ में विशिष्टता आ जाती है। जैसे- गच्छति-अनुगच्छति, आप्नोति - प्राप्नोति आदि।

(iii) क्रिया के अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं होता। जैसे- वसति-निवसति, उच्यते-प्रोच्यते, वसति-अधिवसति आदि।

- यही बात इस श्लोक में इसप्रकार से कही गयी है-

धात्वर्थं बाधते कश्चित् कश्चित् तमनुवर्तते।
विशिनष्टि तमेवार्थमुपसर्गगतिस्त्रिधा॥

- उपसर्गों के योग से कहीं कहीं अकर्मक भी सकर्मक हो जाती है। जैसे भू (भवति) धातु अकर्मक है किन्तु 'अनु' उपसर्ग के साथ 'अनुभवति' सकर्मक क्रिया हो जाती है। जैसे- सः सुखम् अनुभवति। माता दुःखम् अनुभवति। आदि।

उपसर्गों की संख्या- संस्कृत व्याकरण में कुल **22 (बाइस)** उपसर्ग हैं। जिनका अर्थसहित प्रयोग अधोलिखित तालिका में देखा जा सकता है-

1. प्र 2. परा 3. अप 4. सम् 5. अनु 6. अव 7. निस् 8. निर् 9. दुस् 10. दुर् 11. वि 12. आङ् 13. नि 14. अधि 15. अपि 16. अति 17. सु 18. उत् 19. अभि 20. प्रति 21. परि 22. उप

उपसर्गयुक्त शब्द

क्रम	उपसर्ग	अर्थ	उपसर्गयुक्त शब्द
1.	**प्र**	विशेष रूप से, उत्कर्ष, अधिक	प्रचारः, प्रसारः, प्रहारः, प्रकारः, प्रख्यातम्।
2.	**परा**	पीछे, विपरीत, अनादर, नाश	पराक्रमः, परामर्शः, पराजयः, पराकाष्ठा।
3.	**अप**	दूर, विरोध, लघुता	अपमानः, अपकारः, अपयशः, अपशब्दः, अपकर्षः।
4.	**सम्**	साथ, अच्छा, अच्छी तरह से पूर्ण	संकल्पः, संसर्गः, सम्मोहः, संग्रहः।
5.	**अनु**	पीछे, साथ-साथ, योग्य, अनुकूल	अनुजः, अनुचरः, अनुभवः, अनुनयः।
6.	**अव**	नीचे, दूर, अनादर, हीनता, पतन	अवगुणः, अवनतिः, अवलोकनम्, अवतारः।
7.	**निस्**	वियोग, बिना, बाहर	निस्सारः, निश्शंकः, निस्तत्त्वम्, निश्चयः।
8.	**निर्**	निषेध, रहित, बाहर, बिना, निकलना	निरपराधः, निर्गच्छति, निरक्षरः, निर्दयः।
9.	**दुस्**	कठिन, बुरा	दुस्तरः, दुष्करः, दुस्साहसः।
10.	**दुर्**	बुरा, कठिनता, दुष्टता, निन्दा	दुराचारः, दुराग्रहः, दुर्गतिः, दुरात्मा।

क्रम	उपसर्ग	अर्थ	उपसर्गयुक्त शब्द
11.	**वि**	विशेषता, अलग, बिना	विकारः, विवादः, विज्ञानम्, विदेशः, विरोधः।
12.	**आङ् (आ)**	तक, कम, स्वीकृति	आहारः, आरम्भः, आचारः, आग्रहः, आगमनम्।
13.	**नि**	नीचे, निषेध, समूह, निश्चित	निबन्धः, नियुक्तः, निषेधः, निवारणम्।
14.	**अधि**	ऊपर, श्रेष्ठ, प्रधान	अधिकम्, अध्यात्मम्, अध्यक्षः, अधिभारः, अधिकृतः।
15.	**अति**	बहुत, अधिक, बाहर	अत्याचारः, अतिशयः, अत्युत्तमम्, अत्यन्तम्, अतिरिक्तम्।
16.	**सु**	सुन्दर, अच्छा, अत्यधिक	स्वागतम् , सुवेषः, सुस्वरः, सूक्तिः, सुपुत्रः।
17.	**उत्**	ऊपर, श्रेष्ठ, विपरीत	उत्पत्तिः, उत्तरम्, उत्तमः, उन्नतिः, उद्धारः।
18.	**अभि**	सामने, ओर, ऊपर, पास, तरफ	अभ्यागतः, अभियानम्, अभिमुखम्, अभिमानः।
19.	**प्रति**	ओर, तरफ, पीछे, विपरीत	प्रतिकूलम्, प्रत्युत्तरम्, प्रतिध्वनिः, प्रतिपन्नः, प्रतिकारः।
20.	**परि**	चारों ओर, और भी, आस-पास	परिश्रमः, परिवादः, परिचयः, परिजनः।
21.	उप	निकट, समीप, शक्ति	उपकारः, उपदेशः, उपाधिः, उपेन्द्रः, उपद्रवः।
22.	अपि	निकट	अपिधानः, अपिगीर्णः।

उपसर्गयुक्त क्रियायों का वाक्य में प्रयोग

क्र०	उपसर्ग	धातु (अर्थसहित)	उपसर्ग सहित धातुरूप	प्रयोग
1.	उत्	√अय् (जाना)	**उदयति** (उगना)	सूर्यः उदयति
2.	प्र	√अर्थ् (माँगना)	**प्रार्थयते** (प्रार्थना करना)	भक्तः भगवन्तं प्रार्थयते।
3.	अभि	√अस् (फेंकना)	**अभ्यसति** (अभ्यास करना)	छात्रः पाठम् अभ्यसति।
4.	प्र	√आप् (प्राप्त करना)	**प्राप्नोति** (प्राप्त करना)	छात्रः अध्यापकात् ज्ञानं प्राप्नोति
5.	अव	√इ (जाना)	**अवेहि** (जानना)	अवेहि मां किङ्करमष्टमूर्तेः।
6.	प्रति	√ईक्ष् (देखना)	**प्रतीक्षते** (इन्तजार करना)	न हि प्रतीक्षते कालः।
7.	अनु	√कृ (करना)	**अनुकरोति** (नकल करना)	बालः मातरम् अनुकरोति।
8.	अव	√क्षिप् (फेंकना)	**अवक्षिपति** (निन्दा करना)	दुष्टः सज्जनम् अवक्षिपति।
9.	आङ्	√गम् (जाना)	**आगच्छति** (आना)	अहं विद्यालयात् आगच्छामि।
10.	अनु	√गम् (जाना)	**अनुगच्छति** (पीछे पीछे चलना)	दिलीपः नन्दिनीम् अनुगच्छति
11.	उप	√चर् (चरना)	**उपचरति** (सेवा करना)	वैद्यः रोगिणं उपचरति।
12.	सम्	√चि (चुनना)	**सञ्चिनोति** (संग्रह करना)	धनिकः धनं सञ्चिनोति।
13.	निर्	√दिश् (देना, सौंपना)	**निर्दिशति** (निर्देश देना)	माता अङ्गुल्या निर्दिशति।
14.	वि	√धा (धारण करना)	**विदधीत** (करना)	सहसा विदधीत न क्रियाम्।
15.	नि	√मन्त्र (मन्त्रणा करना)	**निमन्त्रयति** (निमन्त्रण देना)	मित्रं मां निमन्त्रयति।
16.	अप	√लप् (बोलना)	**अपलपति** (मुकरना)	सः अपलपति।
17.	अव	√सद् (बैठना)	**अवसीदति** (दुःखित होना)	उद्यमं कृत्वा न अवसीदति जनः।
18.	अधि	√स्था (रुकना)	**अधितिष्ठति** (बैठना)	राजा सिंहासनम् अधितिष्ठति।
19.	अति	√वह (बहना)	**अतिवहति** (बिताना)	सः सुखेन कालम् अत्यवहत्।
20.	निस्	√क्रम् (चलना, जाना)	**निष्क्रामति** (निकलना)	इति निष्क्रान्ताः सर्वे।

महत्त्वपूर्ण उपसर्गयुक्त क्रियायें

उपसर्ग	उपसर्ग युक्त क्रियायें
प्र	प्रभवति, प्रसरति , प्राप्नोति, प्रददाति।
परा	पराभवति, पराजयते, पलायते आदि।
अप	अपहरति, अपनयति, अपकरोति, अपेहि, अपेक्षते, अपलपति।
सम्	संक्षिपति, सञ्चिनोति, संगृह्णाति, सन्तपति, सन्तरति, संहरति।
अनु	अनुभवति, अनुतिष्ठति, अनुकरोति, अनुगच्छति, अनुवदति।
अव	अवरोहति, अवतरति, अवजानाति, अवक्षिपति, अवगच्छति।
निस्	निश्चिनोति, निष्क्रामति।
निर्	निरीक्षते, निरस्यति, निर्दिशति।
दुस्	दुष्करोति, दुश्चरति।
दुर्	दुर्गच्छति, दुर्वक्ति।
वि	विचरति, विलपति, वितरति, व्याप्नोति, विदधति, विरमति।
आङ्	आरोहति, आगच्छति, आददाति, आक्षिपति, आचरति, आनयति।
नि	निषीदति, निगृह्णाति, निमन्त्रयति, नियन्त्रयति, निवर्तते।
अधि	अधिगच्छति, अधिक्षिपति, अध्यास्ते, अधितिष्ठति।
अपि	अपिधत्ते, अपिनह्यति।
अति	अतिशेते, अतिरिच्यते, अत्येति, अतिक्रामति, अतिवहति।
सु	सुचरति, सुकरोति, सुनयति।
उत्	उत्पतति, उत्तिष्ठति, उत्तरति, उदयति, उदेति, उत्क्षिपति।
अभि	अभिमन्यते, अभिजानाति, अभिधत्ते।
प्रति	प्रतिवदति, प्रतीक्षते, प्रतिजानाति, प्रतिवसति।
परि	परिवर्तते, परिचिनोति, परीक्षते।
उप	उपदिशति, उपतिष्ठते, उपक्रमते, उपासते, उपैति, उपकरोति, उपचरति।

अव्यय

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्॥

- जो शब्द तीनों लिङ्गों, सभी विभक्तियों तथा तीनों वचनों में समान रहते हैं; वे 'अव्यय' कहलाते हैं।
- **'न व्ययम् इति अव्ययम्'** अर्थात् जो व्यय (खर्च, घट-बढ, यानी परिवर्तन) को प्राप्त नहीं होता अर्थात् हमेशा ज्यों का त्यों यथावत् स्थिति में रहता है वह अव्यय (अविकारी) पद कहा जाता है।
- अव्यय पदों का रूप नहीं चलता।
  जैसे- यथा, तत्र, अत्र, किम्, कुत्र, कदा आदि।
- **''स्वरादिनिपातमव्ययम्'' (1.1.37)** सूत्र से स्वर् आदि शब्द तथा निपातशब्द अव्यय संज्ञक होते हैं।

जैसे- स्वः, अन्तः, प्रातः, पुनः, उच्चैः, नीचैः, शनैः, ऋते, पृथक्, अद्य, ईषत्, आदि।

- **तद्धितश्चासर्वविभक्तिः, कृन्मेजन्तः, क्त्वातोसुन्कसुनः** आदि सूत्रों से कुछ तद्धित प्रत्ययान्त एवं कुछ कृदन्त प्रत्ययान्त शब्दों की अव्यय संज्ञा होती है।

जैसे-

(i) कृदन्त प्रत्यय जो अव्यय बनाते हैं- क्त्वा, ल्यप्, तुमुन्, तोसुन्, कसुन् आदि प्रत्ययों से बने पद अव्यय संज्ञक होते हैं- गत्वा, आगत्य, पठितुम् आदि पद अव्यय पद हैं।

(ii) तद्धित प्रत्यय तसिल् , त्रल् , थाल् , धा, शस् प्रत्ययों से भी अव्यय पद बनते हैं। जैसे-
सर्वतः, अत्र, तत्र, सर्वथा, एकधा, द्विधा, अनेकशः, अक्षरशः, शब्दशः आदि

➢ **अव्ययीभावश्च (1.1.41)** अव्ययीभाव समास भी अव्यय होता है। जैसे- यथाशक्ति, उपगङ्गम्, यथानिर्देशम्, यथोचितम् आदि।

मुख्यतः अव्यय चार प्रकार के हैं-

(i) **उपसर्ग-** प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव आदि 22 उपसर्ग।

(ii) **क्रियाविशेषण-** अद्य, अत्र, अधुना, अभितः, किल आदि।

(iii) **समुच्चय बोधक-** च, इति, तथापि, तु, वा आदि।

(iv) **मनोविकार सूचक** (विस्मयबोधक)- अहा, अहो, हन्त, धिक्, अये, अरे, आदि।

प्रमुख अव्यय पदों का वाक्यों में प्रयोग

अव्यय पद	वाक्य प्रयोग
1. **सदा** (हमेशा)	रामः सदा सत्यं वदति।
2. **सर्वत्र** (सब जगह)	ईश्वरः सर्वत्र अस्ति।
3. **प्रतिदिनम्** (प्रतिदिन)	अहं प्रतिदिनं दुग्धं पिबामि
4. **यदा तदा** (जब-तब)	यदा कृष्णः आगच्छति तदा सुदामा गच्छति।
5. **अत्र** (यहाँ)	सः अत्र आगच्छति
6. **तत्र** (वहाँ)	सः तत्र गच्छति।
7. **श्वः** (आने वाला कल)	अहं श्वः विद्यालयं गमिष्यामि।
8. **कुत्र** (कहाँ)	बालकाः कुत्र निवसन्ति।
9. **एवम्** (ऐसा)	जनाः एवं कथयन्ति।
10. **कथं** (कैसे)	सा कथं लिखति।
11. **अद्यैव** (आज ही)	रामः अद्यैव गमिष्यति।
12. **प्रातः** (सवेरे)	प्रातः सूर्यः उदयति।
13. **यथाशक्ति** (शक्ति के अनुसार)	कृषकः यथाशक्ति दानं ददाति।
14. **अधः** (नीचे)	बालकः अधः पतति।
15. **एकदा** (एक बार)	एकदा बालकः तत्र गतवान्।
16. **स्वयमेव** (स्वयं ही)	सः स्वयमेव धनं दास्यति।
17. **विना** (बिना)	मोहनः लेखन्या विना कथं लिखति।
18. **सायम्** (सायंकाल)	चन्द्रः सायं उदयति।
19. **नमः** (नमस्कार)	गणेशाय नमः।
20. **नक्तम्** (रात्रि में)	सः नक्तं भोजनं न करोति।
21. **दिवा** (दिन में)	मोहनः दिवा न पठति।
22. **अधुना** (इस समय)	राजेन्द्रः अधुना न पठति।
23. **अचिरम्** (शीघ्र ही)	अचिरं सः गतवान्।
24. **उभयतः** (दोनों ओर)	विद्यालयम् उभयतः वृक्षाः सन्ति।

अव्यय शब्दों का संग्रह

अव्ययशब्द		हिन्दी
		अ
अकस्मात्	–	अचानक
अग्रतः	–	आगे
अग्रिमवर्षे	–	परसाल, अगले साल।
अग्रे	–	पहले, आगे
अचिरेण	–	शीघ्र, जल्दी
अचिरम्	–	शीघ्र
अचिराय	–	शीघ्र
अचिराद्	–	शीघ्र, जल्दी
अजस्रम्	–	निरन्तर/लगातार
अतएव	–	इसलिए
अतः	–	इसलिए
अतःपरम्	–	इसके बाद
अति	–	बहुत
अत्यन्तम्	–	बहुत
अतीव	–	बहुत ही
अत्र	–	यहाँ
अत्रापि	–	यहाँ भी
अत्रैव	–	यहाँ ही/यहीं
अथ	–	इसके बाद/तब/फिर / मङ्गल
अथवा	–	या, अथवा
अथ किम्	–	और क्या, तो क्या, हाँ
अद्य	–	आज
अद्यतनम्	–	आज का
अद्यत्वे	–	आजकल
अद्यपर्यन्तम्	–	आजतक

अव्ययशब्द		हिन्दी
अद्यप्रभृति	–	आज से लेकर
अद्यापि	–	आज भी
अद्यारभ्य	–	आज से
अद्यावधि	–	आज तक, अब तक
अधः	–	नीचे, नीचा
अर्धम्	–	आधा
अधस्तात्	–	नीचे
अधिकम्	–	अधिक, बहुत
अधिकतरम्	–	अधिकतर
अधुना	–	अब
अधुनापि	–	आज भी/अभी
अधुनैव	–	अभी
अन्तः	–	अन्दर, भीतर, बीच में
अन्ततः	–	आखिरकार, आखिर
अन्ततोगत्वा	–	आखिरकार, आखिर
अनन्तरम्	–	पीछे, बाद में
अन्तरा	–	बीच में
अन्यत्	–	दूसरा
अन्यच्च	–	और भी, और
अन्तिकम्	–	पास
अनारतम्	–	निरन्तर/लगातार
अनायासेन	–	बिना मेहनत के
अनवरतम्	–	निरन्तर/लगातार
अनिशम्	–	निरन्तर/लगातार
अनुमानतः	–	लगभग
अनेकम्	–	अनेक
अन्तर्बहिः	–	बाहर-भीतर
अन्यत्र	–	दूसरी जगह
अन्यथा	–	नहीं तो
अन्योन्यम्	–	परस्पर
अपरत्र	–	दूसरी जगह
अपरम्	–	और, दूसरा
अब्दे	–	परसाल, अगले साल
अपि	–	भी
अपितु	–	बल्कि, वरन्
अन्येद्युः	–	दूसरे दिन
अपरेद्युः	–	दूसरे दिन
अपेक्षया	–	अपेक्षा

अव्ययशब्द		हिन्दी
अभिमुखम्	–	तरफ
अभितः	–	दोनों ओर, पास
अये	–	हे (आदर सहित बुलाने में)
आरात्	–	दूर
अर्थम्	–	लिए
अरे	–	हे (अवज्ञापूर्वक बुलाने में)
अल्पम्	–	थोड़ा, कुछ, (मात्रा)
अल्पशः	–	थोड़ा-थोड़ा
अलम्	–	बस/काफी, रहने दो
अविलम्बम्	–	जल्दी, शीघ्र
अवश्यम्	–	जरूर/अवश्य/निश्चय ही
अर्वाक्	–	पहले
असकृत्	–	बार-बार
असत्यम्	–	असत्य
अस्तु	–	इसलिए, खैर, अच्छा, ठीक है
असाम्प्रतम्	–	अनुचित
अहा	–	उल्लास या हर्षसूचक, अहो, अहा

आ

आः	–	क्रोधसूचक
आगत्य/आगम्य	–	आकर के
आगामिदिनम्	–	आने वाला कल
आदि	–	बगैरह
आम्	–	हाँ (अङ्गीकारवाचक)
आश्चर्यम्	–	ओफ-हो
आशु	–	शीघ्र/त्वरित

इ

इत्थम्	–	इसप्रकार से, ऐसे
इति	–	समाप्ति सूचक शब्द
इतस्ततः	–	इधर-उधर, जहाँ-तहाँ
इतरेद्युः	–	दूसरे दिन
इतः	–	यहाँ से
इत्थमेव	–	यों ही
इदानीम्	–	अब/इससमय
इदानीमपि	–	आज भी
इयत्	–	इतना

अव्ययशब्द		हिन्दी
इव	–	तरह/सदृश, समान
इह	–	यहाँ/इस लोक में

ई

अव्ययशब्द		हिन्दी
ईषत्	–	थोड़ा, कुछ (मात्रा)

उ

अव्ययशब्द		हिन्दी
उच्चैः	–	ऊँचे/जोर से
उत्तरेद्युः	–	दूसरे दिन
उत	–	अथवा (विकल्पार्थवाचक)
उपरि	–	ऊपर
उपर्यधः	–	ऊपर- नीचे
उभयतः	–	दोनों ओर, दोनों तरफ
उभयेद्युः	–	दोनों दिन
ऊर्ध्वम्	–	ऊपर

ऋ

अव्ययशब्द		हिन्दी
ऋतम्	–	बिना, सत्य
ऋते	–	बिना, सिवाय

ए

अव्ययशब्द		हिन्दी
एकधा	–	एकप्रकार से
एकदा	–	एकबार, एक समय
एकैकम्	–	एक-एक करके
एकपदे	–	एक साथ, अचानक
एकत्र	–	इकट्ठा
एतर्हि	–	इसीसमय/अब
एव	–	ही
एवम्	–	इसतरह/और/तुल्य/हाँ
एवमस्तु	–	ऐसा ही हो।
एतावत्	–	इतना
एकैकशः	–	एक-एक करके

ऐ

अव्ययशब्द		हिन्दी
ऐषमे	–	इस वर्ष

क

अव्ययशब्द		हिन्दी
कच्चित्	–	क्या
कतिवारम्	–	कितनी बार
किञ्च	–	और
कुतः	–	कहाँ से, क्यों
कुत्र	–	कहाँ
कुतश्चन	–	कहीं से

अव्ययशब्द		हिन्दी
कुत्रापि	–	कहीं/कहीं पर/कहीं भी
कृते	–	के लिए, लिए
कृतम्	–	बस
कथम्	–	कैसे/क्यों
कथमपि	–	जैसे-तैसे, किसी प्रकार
कदा	–	कब/किस समय
कदापि	–	कभी भी, जब कभी
कदाचित्	–	कभी/शायद
कष्टम्	–	अफसोस
कुत्रचित्	–	कहीं
किञ्चित्	–	कुछ, थोड़ा
किञ्चिदपि	–	कुछ भी
किन्तु	–	लेकिन, मगर
कथञ्चित्	–	किसी तरह
कतिचित्	–	थोड़ा/कुछ (संख्या)
कतिपय	–	थोड़ा (संख्या)
कस्मात्	–	क्यों
कस्मात् स्थानात्	–	कहाँ से
कस्मिन् स्थाने	–	कहाँ
किम्	–	क्या/क्यों
कियत्	–	कितना
किमुत	–	और कितना
किमपि	–	कुछ (संख्या)
किं परिमाणम्	–	कितना
किं मात्रम्	–	कितना
किं भोः	–	क्यों हो
किमिति	–	क्यों
क्रमशः	–	लगातार
किल	–	सचमुच/निश्चय
केन प्रकारेण	–	कैसे
केवलम्	–	केवल,सिर्फ
क्व	–	कहाँ
क्वचित्	–	कहीं
कर्हि	–	कब
किमर्थम्	–	क्यों
कतिशः	–	एक बार में कितना, कितनी बार
खलु	–	निश्चय ही/जरूर
गतेद्युः	–	कल (बीता हुआ)

अव्ययशब्द		हिन्दी
		च
च	–	और
चतुर्धा	–	चार प्रकार से
चिरम्	–	देर तक, देर में
चिराय	–	देर तक, देर में
चिरात्	–	देर तक
चिरेण	–	देर तक, देर में
चेत्	–	यदि/अगर
		ज
जातु	–	कभी भी
जातुचित्	–	कभी भी
जयतु जयतु	–	जय जय
झटिति	–	शीघ्र, जल्दी, झटपट
		त
ततः	–	फिर/तब/वहाँ से
ततः प्रभृति	–	तब से
ततः पर्यन्तम्	–	तब तक
तत्र	–	वहाँ/वहाँ पर
तत्रापि	–	वहाँ भी
तत्रैव	–	वहीं
तथा	–	उस तरह/वैसे
तथैव	–	उसी तरह/वैसे ही
तथापि	–	फिर भी, तो भी
तथाहि	–	जैसे कि, वैसे ही
तदा	–	तब
तदानीम्	–	तभी, उस समय, तब
तदारभ्य	–	तब से
तदा-तदा	–	तब-तब
तदापि	–	तब भी
तु	–	तो, किन्तु, लेकिन, मगर
तूष्णीम्	–	चुपचाप
तावत्	–	तब तक, उतना
तर्हि	–	तब, तो
तेन प्रकारेण	–	वैसे
तावन्मात्रम्	–	उतना

अव्ययशब्द		हिन्दी
		द
दक्षिणतः	–	दाहिना
दिने दिने	–	प्रतिदिन
दिने	–	दिन में
दूरम्	–	दूर
दूरे	–	दूर
द्वारा	–	द्वारा, मारफत
दिवा	–	दिन में
दिशि-दिशि	–	चारों तरफ
दिष्ट्या	–	सौभाग्य से
द्राक्	–	शीघ्र/फौरन
द्रुतम्	–	शीघ्र, जल्दी
दैवात्	–	भाग्यवश
द्विधा	–	दो प्रकार से
		ध
धिक्-धिक्	–	धिक्कार है, छिः-छिः
ध्रुवम्	–	निश्चय ही/जरूर
धन्यम्-धन्यम्	–	शाबास-शाबास
		न
निकटे	–	समीप, नजदीक
न	–	नहीं, मत
न च	–	न कि
न तु	–	न कि
नमस्कारः	–	नमस्कार
नो	–	नहीं, मत
नहि	–	नहीं, मत
नमः	–	प्रणाम/नमस्कार
निकषा	–	समीप, नजदीक
नित्यम्	–	हमेशा/लगातार/ नित्य
निरन्तरम्	–	लगातार, निरन्तर
नीचैः	–	नीचा
निस्सन्देहम्	–	बेशक
निमित्तम्	–	हेतु
नितराम्	–	बिल्कुल
नोचेत्	–	नहीं तो

अव्ययशब्द		हिन्दी
नाना	–	अनेक
नक्तम्	–	रात को, रात में

प

अव्ययशब्द		हिन्दी
परन्तु	–	लेकिन, मगर
परम्	–	परन्तु
परश्वः	–	परसों (आने वाला)
परस्परम्	–	आपस में, परस्पर
पदे पदे	–	जगह-जगह
परह्यः	–	परसों (बीता हुआ)
परितः	–	चारों ओर
प्रत्यूषः	–	प्रातः काल
प्रतिकूलम्	–	विरुद्ध
प्रथमम्	–	पहले
पृष्ठदेशे	–	पीछे
प्राक्	–	पहले, पूर्वकाल में
प्रायशः	–	अक्सर
प्रायेण	–	अक्सर
प्रातः	–	प्रातःकाल
प्रायः	–	अक्सर
पश्चात्	–	बाद में/पीछे/फिर
परेद्युः	–	दूसरे दिन, आने वाला कल
पर्याप्तम्	–	काफी/यथेष्ट/ बस
प्रकामम्	–	काफी/यथेष्ट
प्रतिदिनम्	–	रोज/नित्य प्रतिदिन
प्रसह्य	–	जबरदस्ती
प्रत्युत्	–	बल्कि, वरन्
पायं-पायम्	–	पी-पीकर/पीते-पीते
पुनः	–	फिर
पुनश्च	–	फिर भी
पुनरपि	–	फिर भी
पुनः-पुनः	–	बार-बार
पुरः	–	सामने/आगे
पुरतः	–	सामने/आगे
पुरस्तात्	–	सामने/आगे
पुरा	–	पहले/प्राचीन काल में
पूर्वेद्युः	–	पहले दिन
पूर्वदिने	–	कल (बीता हुआ)
पूर्वम्	–	पहले, पूर्वकाल में
पृथक्	–	अलग, अलावा
पृष्ठतः	–	पीछे
पार्श्वतः	–	बगल में/पास में
पार्श्वदेशे	–	बगल में
पर्याप्तम्	–	काफी

ब

अव्ययशब्द		हिन्दी
बलात्	–	जबरदस्ती से
बहिः	–	बाहर
बहु	–	अधिक
बहुधा	–	अक्सर, अधिकतर
बहुकालम्	–	देर में, देर तक
बहु	–	अधिक
बहुत्र	–	बहुत जगह
बाढम्	–	अच्छा/हाँ (अंगीकार सूचक), बहुत अच्छा
बारम्बारम्	–	बार-बार
बाहुल्येन	–	अधिकता से

भ

अव्ययशब्द		हिन्दी
भिन्नम्	–	अलग
भूयः	–	फिर/अधिक/बार-बार
भूयोऽपि	–	फिर भी
भूरि	–	बहुत
भृशम्	–	अधिक/बार-बार
भोः	–	हे (आदर सहित बुलाने में), अरे

म

अव्ययशब्द		हिन्दी
मङ्गलम्	–	मङ्गल
मध्ये	–	बीच में, भीतर, मध्य में
मनाक्	–	थोड़ा, कुछ (मात्रा)
मन्दम्	–	धीरे-धीरे
मा	–	मत, नहीं
मा स्म	–	रहने दो
मिथः	–	परस्पर/एकान्त में/ आपस में
मिथ्या	–	झूठ, असत्य
मुधा	–	बेकार में
मुहुर्मुहुः	–	बार-बार
मृषा	–	झूठा/बेकार/ असत्य
मौनम्	–	चुप

य

अव्ययशब्द		हिन्दी
यत्र	–	जहाँ/जहाँ पर

अव्ययशब्द		हिन्दी
यत्र-तत्र	–	जहाँ-तहाँ
यत्र-कुत्र	–	जहाँ-कहीं
यत्र कुत्रापि	–	जहाँ कहीं भी
यत्रापि	–	जहाँ भी
यत्रैव	–	जहाँ पर ही
यत्	–	कि/क्योंकि/जो
यतः	–	क्योंकि/जो/जहाँ से
यथार्थतः	–	सचमुच/वस्तुतः/ दर-असल
यथापूर्वम्	–	पूर्व के अनुसार/पहले की तरह
यथा-तथा	–	जिस प्रकार से/जैसे-तैसे करके/ जैसे-तैसे
यथाशक्ति	–	शक्ति के अनुसार
यथा	–	जैसे/जैसे कि/ ताकि/ समान
यथायथम्	–	यथायोग्य
यथायोग्यम्	–	यथायोग्य
यथेष्टम्	–	मनमाना
यथाकथञ्चित्	–	जैसे-तैसे
यत्किञ्चित्	–	जो कुछ
यद्यपि	–	हलाकि/यद्यपि
यदा	–	जब
यदापि	–	जब कभी
यदा कदाचित्	–	जब कभी
यदा-यदा	–	जब -जब
यदापर्यन्तम्	–	जब तक
यदि	–	अगर, यदि
यदैव	–	जब ही
यदा-कदा	–	कभी-कभी
यावत्	–	जब तक, जीतना
यस्मात्	–	क्योंकि/जहाँ से
यस्मिन् काले	–	जब
यस्मिन् स्थाने	–	जहाँ
यस्मात् स्थानात्	–	जहाँ से
युक्तम्	–	युक्त
युगपत्	–	एकसाथ
यथार्थम्	–	सत्य
येन केन प्रकारेण	–	किसी भी प्रकार
येन	–	जिससे
येन प्रकारेण	–	जैसे
रे रे	–	हे (अवज्ञा से बुलाने में)
रात्रौ	–	रात्रि में

व

अव्ययशब्द		हिन्दी
वस्तुतः	–	वास्तविक
व्यर्थम्	–	व्यर्थ
वृथा	–	व्यर्थ/बेकार में
वत्	–	समान
विना	–	बिना
विशेषतः	–	विशेष रूप से
विलम्बेन	–	देर से ,देर तक
विषये	–	बाबत
विपरीतम्	–	विरुद्ध
वरम्	–	श्रेष्ठ, बढ़िया, अच्छा
वा	–	अथवा
वामतः	–	बाँए, बायाँ

श

अव्ययशब्द		हिन्दी
शनैः	–	धीरे-धीरे
श्वः	–	कल (आने वाला)
शाश्वत्	–	निरन्तर, सदा, नित्य, लगातार
शीघ्रम्	–	जल्दी, शीघ्र
श्रावं श्रावम्	–	सुनते-सुनते, सुन-सुन कर।
शोभनम्	–	अच्छा

स

अव्ययशब्द		हिन्दी
स्वैरम्	–	स्वेच्छा से।
सततम्	–	लगातार।
सपदि	–	शीघ्र, तुरन्त।
सत्यम्	–	सत्य
समक्षम्	–	सामने
समानम्	–	समान
स्पष्टम्	–	स्पष्ट
स्फुटम्	–	स्पष्ट
स्तोकम्	–	थोड़ा, कुछ (मात्रा)
सद्यः	–	शीघ्र, तुरन्त
सम्प्रति	–	इसी समय, अब
साम्प्रतम्	–	इसी समय, अब, ठीक, युक्त
सकृत्	–	एक बार
स्थाने- स्थाने	–	जगह-जगह
स्थले-स्थले	–	जगह-जगह
स्तोकशः	–	थोड़ा-थोड़ा
सदा	–	हमेशा
संवत्सरे	–	अगले साल

अव्ययशब्द		हिन्दी
सर्वदा	–	हमेशा
सदैव	–	हमेशा
सायम्	–	शाम, सायंकाल
सर्वत्र	–	जब जगह
सर्वथा	–	सब तरह से, बिल्कुल
सविधे	–	समीप, नजदीक
समीपम्	–	पास, नजदीक
सम्बन्धे	–	बाबत
सम्भवतः	–	लगभग
सम्यक्	–	भली प्रकार से
सहसा	–	एक दम, अचानक
सह	–	साथ
साकम्	–	साथ
समम्	–	साथ
सार्धम्	–	साथ
सुष्ठु	–	ठीक, अच्छी तरह, अच्छा
साधु	–	ठीक, खूब, अच्छा
साधु-साधु	–	शाबाश (प्रशंसा सूचक), वाह-वाह
स्वस्ति	–	आशीर्वाद, कल्याण, कल्याण हो, मङ्गल
साक्षात्	–	प्रत्यक्ष, तुल्य।
समन्तात्	–	आसपास, चारों तरफ।
सपद्येव	–	तुरन्त, एकदम।

अव्ययशब्द		हिन्दी
स्वयम्	–	अपने आप, खुद, स्वयं
स्वतः	–	अपने आप।
सहितम्	–	साथ।
समकालम्	–	एक साथ
समन्ततः	–	चारों तरफ
समम्	–	साथ, बराबर-बराबर।
समया	–	निकट, समीप, नजदीक
समीचीनम्	–	ठीक, अच्छा
सम्मुखम्	–	सामने, तरफ
सर्वतः	–	चारों ओर/सभी ओर
स्मारं-स्मारम्	–	याद कर-करके, याद करते-करते।
सत्वरम्	–	शीघ्रता से, जल्दी-जल्दी, झटपट।
सुतराम्	–	बिलकुल

ह

अव्ययशब्द		हिन्दी
हठात्	–	जबरदस्ती
हि	–	इसलिए, निश्चय वाचक।
ह्यः	–	कल (बीता हुआ)।
हन्त	–	विषादसूचक, हर्ष सूचक, हा।
हा	–	शोक या पीड़ासूचक।
हा हा	–	शोक या परितापसूचक।
हुम्	–	क्रोध सूचक।
हे	–	हे, अरे
हेतौ	–	हेतु

शब्दरूप

1. अकारान्त पुँल्लिङ्ग बालक (बालक)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	बालकः	बालकौ	बालकाः
द्वितीया	बालकम्	बालकौ	बालकान्
तृतीया	बालकेन	बालकाभ्याम्	बालकैः
चतुर्थी	बालकाय	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
पञ्चमी	बालकात् /बालकाद्	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
षष्ठी	बालकस्य	बालकयोः	बालकानाम्
सप्तमी	बालके	बालकयोः	बालकेषु
सम्बोधन	हे बालक!	हे बालकौ!	हे बालकाः!

अन्य अकारान्त पुंलिङ्ग शब्द

राम,कृष्ण, वृक्ष, कोविद (विद्वान्), सिंह (शेर), नृप, चन्द्र, चिकित्सक (डॉक्टर), नाग (साँप), छात्र, अश्व, वैद्य (डॉक्टर), जनक (पिता), नर, वानर, मधुप (भौंरा), सुत (पुत्र), पुत्र, सुर, खग (पक्षी), कर (हाथ), मूषक, अर्चक (पुजारी), तस्कर (चोर), नायक (हीरो), मातुल, काण (काना), गर्दभ (गदहा), गायक (गाने वाला), गज, कृपण (कंजूस), याचक (भिक्षुक), चालक (ड्राइवर), सर्प, विप्र (ब्राह्मण), इन्द्र, कूप, नारिकेल (नारियल), गणेश, तडाग, केशव (कृष्ण), मयूर आदि अनेक अकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों के रूप 'बालक' की तरह चलेंगे।

2. इकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द

कवि (कवि)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कविः	कवी	कवयः
द्वितीया	कविम्	कवी	कवीन्
तृतीया	कविना	कविभ्याम्	कविभिः
चतुर्थी	कवये	कविभ्याम्	कविभ्यः
पञ्चमी	कवेः	कविभ्याम्	कविभ्यः
षष्ठी	कवेः	कव्योः	कवीनाम्
सप्तमी	कवौ	कव्योः	कविषु
सम्बोधन	हे कवे!	हे कवी!	हे कवयः!

अन्य इकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द

अग्नि (आग), मणि (मणि), अरि (शत्रु), अहि (साँप), यति (संन्यासी), अतिथि (मेहमान), कपि (वानर), राशि (ढेर), उदधि (समुद्र), ध्वनि (आवाज), सभापति (सभाध्यक्ष), गिरि (पहाड़), पशुपति (शिव), परिधि (एक रेखा), नृपति (राजा), पाणिनि (वैयाकरण), आधि (मानसिक कष्ट), मारुति (हनुमान्), सन्धि (मेल), अवधि (सीमा), रमापति (विष्णु), सारथि (ड्राइवर), प्रणिधि (प्रार्थना), विधि (तरीका), उपाधि (उपाधि), रश्मि (किरण), समाधि (समाधि), निधि (खजाना), अद्रि (पर्वत), पाणि (हाथ), बलि (राजा बलि), अवि (भेंड) आदि।

नोट- इसीप्रकार सभी इकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों के रूप 'कवि' के समान बना लीजिए।

3. उकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द

भानु (सूर्य)			
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	भानुः	भानू	भानवः
द्वितीया	भानुम्	भानू	भानून्
तृतीया	भानुना	भानुभ्याम्	भानुभिः
चतुर्थी	भानवे	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
पञ्चमी	भानोः	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
षष्ठी	भानोः	भान्वोः	भानूनाम्
सप्तमी	भानौ	भान्वोः	भानुषु
सम्बोधन	हे भानो!	हे भानू!	हे भानवः!

अन्य उकारान्त पुंलिङ्ग शब्द

विष्णु, रिपु, गुरु, शिशु, कृशानु (आग), प्रभु (स्वामी), विधु (चन्द्रमा), बाहु (भुजा), पांशु (धूलि), वायु (हवा), पशु (पशु), तरु (वृक्ष), इषु (गन्ना) आदि।

नोट- इसी प्रकार सभी उकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों के रूप 'भानु' की तरह चलेंगे।

4. ऋकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द

पितृ (पिता)			
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	पिता	पितरौ	पितरः
द्वितीया	पितरम्	पितरौ	पितॄन्
तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
चतुर्थी	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
पञ्चमी	पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
षष्ठी	पितुः	पित्रोः	पितॄणाम्
सप्तमी	पितरि	पित्रोः	पितृषु
सम्बोधन	हे पितः!	हे पितरौ!	हे पितरः!

नोट- भातृ (भाई) देवृ (देवर) जामातृ (दामाद) इत्यदि सम्बन्ध-सूचक ऋकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों के रूप 'पितृ के समान चलते हैं।

दातृ (देने वाला)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	दाता	दातारौ	दातारः
द्वितीया	दातारम्	दातारौ	दातॄन्
तृतीया	दात्रा	दातृभ्याम्	दातृभिः
चतुर्थी	दात्रे	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
पञ्चमी	दातुः	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
षष्ठी	दातुः	दात्रोः	दातॄणाम्
सप्तमी	दातरि	दात्रोः	दातृषु
सम्बोधन	हे दातः!	हे दातारौ!	हे दातारः!

अन्य ऋकारान्त पुंलिङ्ग शब्द

नोट- इसी प्रकार धातृ (ब्रह्मा), कर्तृ (करने वाला), गन्तृ (जाने वाला), नप्तृ (पोता) नेतृ (नेता), नेष्टृ (नष्टा), वक्तृ (वक्ता), होतृ (होता), प्रष्टृ (प्रष्टा), रक्षितृ (रक्षिता), श्रोतृ (श्रोता), नप्तृ (नप्ता), सवितृ (सविता), क्रेतृ (खरीदने वाला), पठितृ (पढ़ाने वाला), ज्ञातृ, भर्तृ, रचयितृ (रचना करने वाला), स्मर्तृ (स्मरण करने वाला), जेतृ (जीतने वाला), भोक्तृ (भोग करने वाला), प्रशास्तृ (प्रशासक), वष्टृ (विश्वकर्मा) आदि रूप दातृ के समान चलते हैं।

5. अकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

फल (फल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	फलम्	फले	फलानि
द्वितीया	फलम्	फले	फलानि
तृतीया	फलेन	फलाभ्याम्	फलैः
चतुर्थी	फलाय	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
पञ्चमी	फलात्/फलाद्	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
षष्ठी	फलस्य	फलयोः	फलानाम्
सप्तमी	फले	फलयोः	फलेषु
सम्बोधन	हे फल!	हे फले!	हे फलानि!

अन्य अकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

मित्रम्, पापम्, उपनेत्रम्, उद्यानम्, उदकम्, रत्नम्, मुखम्, क्रीडनकम्, कमलम्, जलजम्, वचनम्, पात्रम्, गृहम्, कार्यम्, कुसुमम्, मौनम्, द्वारम्, फलकम्, चरणम्, उदरम्, पुस्तकम्, सोपानम्, समाचारपत्रम्, तैलम्, पृष्ठम्, वस्त्रम्, मन्दिरम्, अक्षरम्, धनम्, नयनम्, कारयानम्, जलम्, अरण्यम्, ज्ञानम्, सुखम्, व्यजनम्, दुग्धम्, अमृतम्, दुःखम्, चित्रम्, तिलकम्, आसनम् आदि।

नोट- उपर्युक्त शब्दों के रूप 'फल' की तरह बनाइये।

6. उकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

वस्तु (समान)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वस्तु	वस्तुनी	वस्तूनि
द्वितीया	वस्तु	वस्तुनी	वस्तूनि
तृतीया	वस्तुना	वस्तुभ्याम्	वस्तुभिः
चतुर्थी	वस्तुने	वस्तुभ्याम्	वस्तुभ्यः
पञ्चमी	वस्तुनः	वस्तुभ्याम्	वस्तुभ्यः
षष्ठी	वस्तुनः	वस्तुनोः	वस्तूनाम्
सप्तमी	वस्तुनि	वस्तुनोः	वस्तुषु
सम्बोधन	हे वस्तो, हे वस्तु!	हे वस्तुनी!	हे वस्तूनि!

नोट- इसी प्रकार दारु (काठ), जानु (घुटना), जतु (लाख), जत्रु (कंधों की संधि), तालु, मधु (शहद), सानु (पर्वत की चोटी) इत्यादि शब्दों के रूप वस्तु के समान होते हैं।

7. ऋकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

कर्तृ (करने वाला)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कर्तृ	कर्तृणी	कर्तृणि
द्वितीया	कर्तृ	कर्तृणी	कर्तृणि
तृतीया	कर्त्रा/कर्तृणा	कर्तृभ्याम्	कर्तृभिः
चतुर्थी	कर्त्रे/कर्तृणे	कर्तृभ्याम्	कर्तृभ्यः
पञ्चमी	कर्तुः/कर्तृणः	कर्तृभ्याम्	कर्तृभ्यः
षष्ठी	कर्तुः/कर्तृणः	कर्त्रोः/कर्तृणोः	कर्तृणाम्
सप्तमी	कर्तरि/कर्तृणि	कर्त्रोः/कर्तृणोः	कर्तृषु
सम्बोधन	हे कर्तृ!/हे कर्तः!	हे कर्तृणी!	हे कर्तृणि!

नोट- इसी प्रकार धातृ, नेतृ इत्यादि के भी रूप होते हैं।

8. आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

विद्या (विद्या)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	विद्या	विद्ये	विद्याः
द्वितीया	विद्याम्	विद्ये	विद्याः
तृतीया	विद्यया	विद्याभ्याम्	विद्याभिः
चतुर्थी	विद्यायै	विद्याभ्याम्	विद्याभ्यः
पञ्चमी	विद्यायाः	विद्याभ्याम्	विद्याभ्यः
षष्ठी	विद्यायाः	विद्ययोः	विद्यानाम्
सप्तमी	विद्यायाम्	विद्ययोः	विद्यासु
सम्बोधन	हे विद्ये!	हे विद्ये!	हे विद्याः!

नोट- इसी प्रकार बालिका, लता, रमा (लक्ष्मी), बाला (स्त्री), निशा (रात), कन्या, ललना (स्त्री), भार्या (पत्नी), बडवा (घोड़ी), राधा, सुमित्रा, तारा, कौशल्या, कला इत्यादि आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप विद्या के समान होते हैं।

9. इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

रुचि (इच्छा)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	रुचिः	रुची	रुचयः
द्वितीया	रुचिम्	रुची	रुचीः
तृतीया	रुच्या	रुचिभ्याम्	रुचिभिः
चतुर्थी	रुच्यै/रुचये	रुचिभ्याम्	रुचिभ्यः
पञ्चमी	रुच्याः/रुचेः	रुचिभ्याम्	रुचिभ्यः
षष्ठी	रुच्याः/रुचेः	रुच्योः	रुचीनाम्
सप्तमी	रुच्याम् /रुचौ	रुच्योः	रुचिषु
सम्बोधन	हे रुचे!	हे रुची!	हे रुचयः!

नोट- इसी प्रकार धूलि (धूल), मति, बुद्धि गति, शुद्धि, भक्ति, शक्ति, श्रुति, स्मृति, शान्ति, नीति, रीति, जाति, रात्रि, पंक्ति, गीति इत्यादि सभी इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप रुचि के समान होते हैं।

10. ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

नदी (नदी)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पञ्चमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	हे नदि!	हे नद्यौ!	हे नद्यः!

नोट- इसी प्रकार जननी, नगरी, गगरी इत्यादि ईकारान्त शब्दों के रूप चलते हैं।

11. उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

धेनु (गाय)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वितीया	धेनुम्	धेनू	धेनूः
तृतीया	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
चतुर्थी	धेन्वै, धेनवे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पञ्चमी	धेन्वाः, धेनोः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
षष्ठी	धेन्वाः, धेनोः	धेन्वोः	धेनूनाम्
सप्तमी	धेन्वाम्, धेनौ	धेन्वोः	धेनुषु
सम्बोधन	हे धेनो!	हे धेनू!	हे धेनवः!

12. ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

वधू (बहू)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	वधूः	वध्वौ	वध्वः
द्वितीया	वधूम्	वध्वौ	वधूः
तृतीया	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
चतुर्थी	वध्वै	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
पञ्चमी	वध्वाः	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
षष्ठी	वध्वाः	वध्वोः	वधूनाम्
सप्तमी	वध्वाम्	वध्वोः	वधूषु
सम्बोधन	हे वधु!	हे वध्वौ!	हे वध्वः!

नोट- इसी प्रकार चमू (सेना), रज्जू (रस्सी), श्वश्रू (सास), कर्कन्धू (बेर) इत्यादि सभी ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप वधू के समान होते हैं।

13. ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

मातृ (माता)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	माता	मातरौ	मातरः
द्वितीया	मातरम्	मातरौ	मातॄः
तृतीया	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः
चतुर्थी	मात्रे	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
पञ्चमी	मातुः	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
षष्ठी	मातुः	मात्रोः	मातॄणाम्
सप्तमी	मातरि	मात्रोः	मातृषु
सम्बोधन	हे मातः!	हे मातरौ!	हे मातरः!

नोट- यातृ (देवरानी), दुहितृ (लड़की) के रूप मातृ के समान होते हैं।

स्वसृ (बहिन)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स्वसा	स्वसारौ	स्वसारः
द्वितीया	स्वसारम्	स्वसारौ	स्वसॄः
तृतीया	स्वस्रा	स्वसृभ्याम्	स्वसृभिः
चतुर्थी	स्वस्रे	स्वसृभ्याम्	स्वसृभ्यः
पञ्चमी	स्वसुः	स्वसृभ्याम्	स्वसृभ्यः
षष्ठी	स्वसुः	स्वस्रोः	स्वसॄणाम्
सप्तमी	स्वसरि	स्वस्रोः	स्वसृषु
सम्बोधन	हे स्वसः!	हे स्वसारौ!	हे स्वसारः!

सर्वनामरूप

(1) एतद् (यह)

पुँल्लिङ्ग
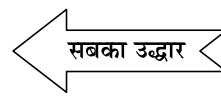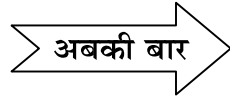
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एषः	एतौ	एते
द्वितीया	एतम् /एनम्	एतौ/एनौ	एतान्/एनान्
तृतीया	एतेन/एनेन	एताभ्याम्	एतैः
चतुर्थी	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः
पञ्चमी	एतस्मात् /द्	एताभ्याम्	एतेभ्यः
षष्ठी	एतस्य	एतयोः/एनयोः	एतेषाम्
सप्तमी	एतस्मिन्	एतयोः/एनयोः	एतेषु

नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एतत् /द्	एते	एतानि
द्वितीया	एतत् /द् ,एनत् /द्	एते/एने	एतानि/एनानि
तृतीया	एतेन/एनेन	एताभ्याम्	एतैः
चतुर्थी	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः
पञ्चमी	एतस्मात् /द्	एताभ्याम्	एतेभ्यः
षष्ठी	एतस्य	एतयोः/एनयोः	एतेषाम्
सप्तमी	एतस्मिन्	एतयोः/एनयोः	एतेषु

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एषा	एते	एताः
द्वितीया	एताम्/एनाम्	एते/एने	एताः/एनाः
तृतीया	एतया/एनया	एताभ्याम्	एताभिः
चतुर्थी	एतस्यै	एताभ्याम्	एताभ्यः
पञ्चमी	एतस्याः	एताभ्याम्	एताभ्यः
षष्ठी	एतस्याः	एतयोः/एनयोः	एतासाम्
सप्तमी	एतस्याम्	एतयोः/एनयोः	एतासु

(2) तद् (वह)

पुँल्लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्/तस्माद्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	तत् /तद्	ते	तानि
द्वितीया	तत् /तद्	ते	तानि
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्/तस्माद्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पञ्चमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु

(3) यद् (जो)

पुँल्लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	यः	यौ	ये
द्वितीया	यम्	यौ	यान्
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पञ्चमी	यस्मात् /यस्माद्	याभ्याम्	येभ्यः
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	ययोः	येषु

नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	यत् /यद्	ये	यानि
द्वितीया	यत् /यद्	ये	यानि
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पञ्चमी	यस्मात् /यस्माद्	याभ्याम्	येभ्यः
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	ययोः	येषु

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	या	ये	याः
द्वितीया	याम्	ये	याः
तृतीया	यया	याभ्याम्	याभिः
चतुर्थी	यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः
पञ्चमी	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
षष्ठी	यस्याः	ययोः	यासाम्
सप्तमी	यस्याम्	ययोः	यासु

(4) किम् (कौन)

पुँल्लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कः	कौ	के
द्वितीया	कम्	कौ	कान्
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पञ्चमी	कस्मात् /कस्माद्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	किम्	के	कानि
द्वितीया	किम्	के	कानि
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पञ्चमी	कस्मात् /कस्माद्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	का	के	काः
द्वितीया	काम्	के	काः
तृतीया	कया	काभ्याम्	काभिः
चतुर्थी	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
पञ्चमी	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
षष्ठी	कस्याः	कयोः	कासाम्
सप्तमी	कस्याम्	कयोः	कासु

	5. अस्मद् (मैं)			6. युष्मद् (तुम)		
1.	अहम्	आवाम्	वयम्	त्वम्	युवाम्	यूयम्
2.	माम् /मा	आवाम् /नौ	अस्मान् /नः	त्वाम् /त्वा	युवाम्/वाम्	युष्मान्/वः
3.	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
4.	मह्यम् /मे	आवाभ्याम् /नौ	अस्मभ्यम् /नः	तुभ्यम् /ते	युवाभ्याम्/ वाम्	युष्मभ्यम्/वः
5.	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
6.	मम/मे	आवयोः/नौ	अस्माकम् /नः	तव/ते	युवयोः/वाम्	युष्माकम्/वः
7.	मयि	आवयोः	अस्मासु	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

नोट- अस्मद् और युष्मद् शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों में यही रूप चलेगा। इनका सम्बोधन रूप नहीं होता।

❑❑

धातुरूप

1. भू (होना) 'भू' सत्तायाम्
भ्वादिगण, परस्मैपदी , अकर्मक

1. लट्लकार (वर्तमानकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवति	भवतः	भवन्ति
मध्यम पुरुष	भवसि	भवथः	भवथ
उत्तम पुरुष	भवामि	भवावः	भवामः

2. लृट्लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उत्तम पुरुष	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

3. लोट्लकार (आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवतु/भवतात्	भवताम्	भवन्तु
मध्यम पुरुष	भव/भवतात्	भवतम्	भवत
उत्तम पुरुष	भवानि	भवाव	भवाम

4. विधिलिङ्लकार (प्रार्थना, निवेदन)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
मध्यम पुरुष	भवेः	भवेतम्	भवेत
उत्तम पुरुष	भवेयम्	भवेव	भवेम

5. लङ्लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
मध्यम पुरुष	अभवः	अभवतम्	अभवत
उत्तम पुरुष	अभवम्	अभवाव	अभवाम

2. गम् (जाना) 'गम्लृँ' गतौ

भ्वादिगण, परस्मैपदी , सकर्मक

1. लट्लकार (वर्तमानकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
मध्यम पुरुष	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ
उत्तम पुरुष	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः

2. लृट्लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ
उत्तम पुरुष	गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः

3. लोट्लकार (आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छतु/गच्छतात्	गच्छताम्	गच्छन्तु
मध्यम पुरुष	गच्छ/गच्छतात्	गच्छतम्	गच्छत
उत्तम पुरुष	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम

4. विधिलिङ्लकार (प्रार्थना, निवेदन)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः
मध्यम पुरुष	गच्छेः	गच्छेतम्	गच्छेत
उत्तम पुरुष	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम

5. लङ्लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
मध्यम पुरुष	अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत
उत्तम पुरुष	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

3. पठ् (पढ़ना) 'पठँ' व्यक्तायां वाचि

भ्वादिगण, परस्मैपदी , सकर्मक

1. लट्लकार (वर्तमानकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यम पुरुष	पठसि	पठथः	पठथ
उत्तम पुरुष	पठामि	पठावः	पठामः

2. लृट्लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उत्तम पुरुष	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

3. लोट्लकार (आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठतु/पठतात्	पठताम्	पठन्तु
मध्यम पुरुष	पठ/पठतात्	पठतम्	पठत
उत्तम पुरुष	पठानि	पठाव	पठाम

4. विधिलिङ्लकार (प्रार्थना, निवेदन)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
मध्यम पुरुष	पठेः	पठेतम्	पठेत
उत्तम पुरुष	पठेयम्	पठेव	पठेम

5. लङ्लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
मध्यम पुरुष	अपठः	अपठतम्	अपठत
उत्तम पुरुष	अपठम्	अपठाव	अपठाम

4. पा (पीना) 'पा' पाने

भ्वादिगण, परस्मैपदी, सकर्मक

1. लट्लकार (वर्तमानकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पिबति	पिबतः	पिबन्ति
मध्यम पुरुष	पिबसि	पिबथः	पिबथ
उत्तम पुरुष	पिबामि	पिबावः	पिबामः

2. लृट्लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति
मध्यम पुरुष	पास्यसि	पास्यथः	पास्यथ
उत्तम पुरुष	पास्यामि	पास्यावः	पास्यामः

3. लोट्लकार (आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पिबतु/पिबतात्	पिबताम्	पिबन्तु
मध्यम पुरुष	पिब/पिबतात्	पिबतम्	पिबत
उत्तम पुरुष	पिबानि	पिबाव	पिबाम

4. विधिलिङ्लकार (प्रार्थना, निवेदन)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पिबेत्	पिबेताम्	पिबेयुः
मध्यम पुरुष	पिबेः	पिबेतम्	पिबेत
उत्तम पुरुष	पिबेयम्	पिबेव	पिबेम

5. लङ्लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपिबत्	अपिबताम्	अपिबन्
मध्यम पुरुष	अपिबः	अपिबतम्	अपिबत
उत्तम पुरुष	अपिबम्	अपिबाव	अपिबाम

5. लभ् (पाना) 'डुलभँष्' प्राप्तौ

भ्वादिगण, आत्मनेपदी , सकर्मक

1. लट्लकार (वर्तमानकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लभते	लभेते	लभन्ते
मध्यम पुरुष	लभसे	लभेथे	लभध्वे
उत्तम पुरुष	लभे	लभावहे	लभामहे

2. लृट्लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते
मध्यम पुरुष	लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे
उत्तम पुरुष	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे

3. लोट्लकार (आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
मध्यम पुरुष	लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्
उत्तम पुरुष	लभै	लभावहै	लभामहै

4. विधिलिङ्लकार (प्रार्थना, निवेदन)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लभेत	लभेयाताम्	लभेरन्
मध्यम पुरुष	लभेथाः	लभेयाथाम्	लभेध्वम्
उत्तम पुरुष	लभेय	लभेवहि	लभेमहि

5. लङ्लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अलभत	अलभेताम्	अलभन्त
मध्यम पुरुष	अलभथाः	अलभेथाम्	अलभध्वम्
उत्तम पुरुष	अलभे	अलभावहि	अलभामहि

6. दा (देना) 'डुदाञ्' दाने

जुहोत्यादिगण, उभयपदी , सकर्मक

1. लट्लकार (वर्तमानकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ददाति	दत्तः	ददति
मध्यम पुरुष	ददासि	दत्थः	दत्थ
उत्तम पुरुष	ददामि	दद्वः	दद्मः

2. लृट्लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
मध्यम पुरुष	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ
उत्तम पुरुष	दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः

3. लोट्लकार (आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ददातु/दत्तात्	दत्ताम्	ददतु
मध्यम पुरुष	देहि/दत्तात्	दत्तम्	दत्त
उत्तम पुरुष	ददानि	ददाव	ददाम

4. विधिलिङ्लकार (प्रार्थना, निवेदन)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः
मध्यम पुरुष	दद्याः	दद्यातम्	दद्यात
उत्तम पुरुष	दद्याम्	दद्याव	दद्याम

5. लङ्लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अददात्	अदत्ताम्	अददुः
मध्यम पुरुष	अददाः	अदत्तम्	अदत्त
उत्तम पुरुष	अददाम्	अदद्व	अदद्म

7. प्रच्छ् (पूँछना) 'प्रच्छँ' ज्ञीप्सायाम्

तुदादिगण, परस्मैपदी , द्विकर्मक

1. लट्लकार (वर्तमानकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पृच्छति	पृच्छतः	पृच्छन्ति
मध्यम पुरुष	पृच्छसि	पृच्छथः	पृच्छथ
उत्तम पुरुष	पृच्छामि	पृच्छावः	पृच्छामः

2. लृट्लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	प्रक्ष्यति	प्रक्ष्यतः	प्रक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	प्रक्ष्यसि	प्रक्ष्यथः	प्रक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	प्रक्ष्यामि	प्रक्ष्यावः	प्रक्ष्यामः

3. लोट्लकार (आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पृच्छतु/पृच्छतात्	पृच्छताम्	पृच्छन्तु
मध्यम पुरुष	पृच्छ/पृच्छतात्	पृच्छतम्	पृच्छत
उत्तम पुरुष	पृच्छानि	पृच्छाव	पृच्छाम

4. विधिलिङ्लकार (प्रार्थना, निवेदन)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पृच्छेत्	पृच्छेताम्	पृच्छेयुः
मध्यम पुरुष	पृच्छेः	पृच्छेतम्	पृच्छेत
उत्तम पुरुष	पृच्छेयम्	पृच्छेव	पृच्छेम

5. लङ्लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपृच्छत्	अपृच्छताम्	अपृच्छन्
मध्यम पुरुष	अपृच्छः	अपृच्छतम्	अपृच्छत
उत्तम पुरुष	अपृच्छम्	अपृच्छाव	अपृच्छाम

8. चुर् (चोरी करना) 'चुरँ' स्तेये

चुरादिगण, उभयपदी , सकर्मक

1. लट्लकार (वर्तमानकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयति	चोरयतः	चोरयन्ति
मध्यम पुरुष	चोरयसि	चोरयथः	चोरयथ
उत्तम पुरुष	चोरयामि	चोरयावः	चोरयामः

2. लृट्लकार (भविष्यकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयिष्यति	चोरयिष्यतः	चोरयिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	चोरयिष्यसि	चोरयिष्यथः	चोरयिष्यथ
उत्तम पुरुष	चोरयिष्यामि	चोरयिष्यावः	चोरयिष्यामः

3. लोट्लकार (आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयतु/चोरयतात्	चोरयताम्	चोरयन्तु
मध्यम पुरुष	चोरय/चोरयतात्	चोरयतम्	चोरयत
उत्तम पुरुष	चोरयाणि	चोरयाव	चोरयाम

4. विधिलिङ्लकार (प्रार्थना, निवेदन)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयेत्	चोरयेताम्	चोरयेयुः
मध्यम पुरुष	चोरयेः	चोरयेतम्	चोरयेत
उत्तम पुरुष	चोरयेयम्	चोरयेव	चोरयेम

5. लङ्लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अचोरयत्	अचोरयताम्	अचोरयन्
मध्यम पुरुष	अचोरयः	अचोरयतम्	अचोरयत
उत्तम पुरुष	अचोरयम्	अचोरयाव	अचोरयाम

संस्कृत संख्यायें

1	एकः, एकम् ,एका
2	द्वौ ,द्वे, द्वे
3	त्रयः ,त्रीणि ,तिस्रः
4	चत्वारः, चत्वारि ,चतस्रः
5	पञ्च
6	षट्
7	सप्त
8	अष्ट/अष्टौ
9	नव
10	**दश**
11	एकादश
12	द्वादश
13	त्रयोदश
14	चतुर्दश
15	पञ्चदश
16	षोडश
17	सप्तदश
18	अष्टादश
19	नवदश
20	**विंशतिः**
21	एकविंशतिः
22	द्वाविंशतिः
23	त्रयोविंशतिः
24	चतुर्विंशतिः
25	पञ्चविंशतिः
26	षड्विंशतिः
27	सप्तविंशतिः
28	अष्टाविंशतिः
29	नवविंशतिः
30	**त्रिंशत्**
31	एकत्रिंशत्
32	द्वात्रिंशत्
33	त्रयस्त्रिंशत्
34	चतुस्त्रिंशत्
35	पञ्चत्रिंशत्
36	षट्त्रिंशत्
37	सप्तत्रिंशत्
38	अष्टात्रिंशत्
39	नवत्रिंशत् , एकोनचत्वारिंशत्
40	**चत्वारिंशत्**

41	एकचत्वारिंशत्
42	द्विचत्वारिंशत् , द्वाचत्वारिंशत्
43	त्रिचत्वारिंशत् , त्रयश्चत्वारिंशत्
44	चतुश्चत्वारिंशत्
45	पञ्चचत्वारिंशत्
46	षट्चत्वारिंशत्
47	सप्तचत्वारिंशत्
48	अष्टचत्वारिंशत्, अष्टाचत्वारिंशत्
49	नवचत्वारिंशत्, एकोनपञ्चाशत्
50	**पञ्चाशत्**
51	एकपञ्चाशत्
52	द्विपञ्चाशत्, द्वापञ्चाशत्
53	त्रिपञ्चाशत्, त्रयःपञ्चाशत्
54	चतुःपञ्चाशत्
55	पञ्चपञ्चाशत्
56	षट्पञ्चाशत्
57	सप्तपञ्चाशत्
58	अष्टपञ्चाशत्, अष्टापञ्चाशत्
59	नवपञ्चाशत् , एकोनषष्टिः
60	**षष्टिः**
61	एकषष्टिः
62	द्विषष्टिः, द्वाषष्टिः
63	त्रिषष्टिः , त्रयःषष्टिः
64	चतुःषष्टिः
65	पञ्चषष्टिः
66	षट्षष्टिः
67	सप्तषष्टिः
68	अष्टषष्टिः, अष्टाषष्टिः
69	नवषष्टिः , एकोनसप्ततिः
70	**सप्ततिः**
71	एकसप्ततिः
72	द्विसप्ततिः , द्वासप्ततिः
73	त्रिसप्ततिः , त्रयःसप्ततिः
74	चतुःसप्ततिः
75	पञ्चसप्ततिः
76	षट्सप्ततिः
77	सप्तसप्ततिः
78	अष्टसप्ततिः, अष्टासप्ततिः
79	नवसप्ततिः, एकोनाशीतिः
80	**अशीतिः**

81	एकाशीतिः
82	द्व्यशीतिः
83	त्र्यशीतिः
84	चतुरशीतिः
85	पञ्चाशीतिः
86	षडशीतिः
87	सप्ताशीतिः
88	अष्टाशीतिः
89	नवाशीतिः , एकोननवतिः
90	**नवतिः**
91	एकनवतिः
92	द्विनवतिः, द्वानवतिः
93	त्रिनवतिः, त्रयोनवतिः
94	चतुर्नवतिः
95	पञ्चनवतिः
96	षण्णवतिः
97	सप्तनवतिः
98	अष्टनवतिः , अष्टानवतिः
99	नवनवतिः , एकोनशतम्
100.	**शतम्**

एक हजार	-	सहस्रम्
दस हजार	-	अयुतम् (दशसहस्रम्)
एक लाख	-	लक्षम्
दस लाख	-	नियुतम्,प्रयुतम्, दशलक्षम्
एक करोड़	-	कोटिः
दस करोड़	-	दशकोटिः
एक अरब	-	अर्बुदम्
दस अरब	-	दशार्बुदम्
एक खरब	-	खर्वम्
दस खरब	-	दशखर्वम्
एक नील	-	नीलम्
दस नील	-	दशनीलम्
एक पद्म	-	पद्मम्
दशपद्म	-	दशपद्मम्
एक शंख	-	शंखम्
दस शंख	-	दशशंखम्
महाशंख	-	महाशंखम्

संख्या सम्बन्धी कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य

- 101 = एकाधिकं शतम्
  102 = द्व्यधिकं शतम्
  103 = त्र्यधिकं शतम्
  104 = चतुरधिकं शतम्
  105 = पञ्चाधिकं शतम् आदि।

- 200 = द्विशती/शतद्वयम्/द्विशतम्
  300 = त्रिशती/शतत्रयम् / त्रिशतम्
  400 = चतुःशती / चतुःशतम्
  500 = पञ्चशती / पञ्चशतम्
  600 = षट्शती / षट्शतम्
  700 = सप्तशती / सप्तशतम्।

- त्रि (3) से लेकर अष्टादशन् (18) तक सभी शब्दों के रूप केवल बहुवचन में चलते हैं।
- **''विंशत्यादिरानवतेः''** एकोनविंशतिः (19) से नवनवतिः (99) तक सभी शब्द एकवचनान्त स्त्रीलिङ्ग हैं। इनके रूप हमेशा एकवचन में ही चलेंगे।
- इकारान्त विंशति, षष्टि, सप्तति, अशीति, नवति – जिन पदों के अन्त में ये पद आयें उनके रूप 'मति' के समान चलेंगे।
- तकारान्त त्रिंशत्, चत्वारिंशत्, पञ्चाशत् आदि शब्दों के रूप 'सरित्' के समान चलेंगे।
- शतम्, सहस्रम्, अयुतम्, लक्षम्, नियुतम्, प्रयुतम्, आदि शब्द सदा एकवचनान्त नपुंसकलिङ्ग में होते हैं। इनके रूप 'फल' की तरह चलेंगे।

प्रमुख लेखकों/कवियों का सामान्य परिचय एवं उनकी कृतियाँ

महाकवि कालिदास

- **पत्नी** – विद्योत्तमा
- **श्वसुर** – शारदानन्द
- **मित्र** – लङ्का के राजा कुमारदास
- **समय** – ईसापूर्व प्रथम शताब्दी
- **जन्मस्थान** – उज्जयिनी (काश्मीरी/बंगाली)
- **आश्रयदाता** – चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य
- **जाति/गोत्र** – ब्राह्मण
- **रचनायें कालक्रम की दृष्टि से** – 1. ऋतुसंहार (गीतिकाव्य) 2. कुमारसम्भवम् (महाकाव्य) 3. मालविकाग्निमित्रम् (नाटक) 4. विक्रमोर्वशीयम् (त्रोटक) 5. मेघदूतम् (खण्डकाव्य) 6. रघुवंशम् (महाकाव्य) 7. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (नाटक)
- **उपासक** – शिव के
- **प्रिय छन्द** – उपजाति/अनुष्टुप्
- **प्रिय अलङ्कार** – उपमा
- **कालिदास की रीति एवं गुण** – वैदर्भी रीति एवं प्रसादगुण
- **कालिदास का प्रिय रस** – शृङ्गार रस
- **कालिदास की अन्य कृतियाँ**– (i) कालीस्तोत्र, (ii) गङ्गाष्टक, (iii) ज्योतिर्विदाभरण, (iv) राक्षसकाव्य, (v)श्रुतबोध

कालिदासीय जीवन के कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य

- काली देवी की उपासना से विद्या की प्राप्ति।
- विद्याप्राप्ति के बाद कालिदास का कथन–
  'अनावृतकपाटं द्वारं देहि' (दरवाजा खोलो)
- इसके उत्तर में पत्नी **विद्योत्तमा** का कथन–
  'अस्ति कश्चित् वाग्विशेषः' (लगता है कोई विद्वान् है)
- **'अस्ति' से कुमारसम्भवम्** – ''अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा...."
- **'कश्चित्' से मेघदूतम्** – ''कश्चित् कान्ता विरहगुरुणा...."
- **'वाग्' से रघुवंशम्** – ''वागर्थाविव सम्पृक्तौ....."
- **विक्रमादित्य की सभा में 9 रत्न** थे, जिसमें से एक कालिदास भी थे–

  धन्वन्तरि-क्षपणकामरसिंह -शङ्कु-
  वेतालभट्ट-घटकर्पर-कालिदासाः।
  ख्यातो वराहमिहिरो नृपतेः सभायां
  रत्नानि वै वररुचिर्नव विक्रमस्य।।

  (ज्योतिर्विदाभरण 22-10)
- एक किंवदन्ती के अनुसार धारा के राजा भोज के प्रधानकवि कालिदास थे।
- एक किंवदन्ती के अनुसार कालिदास का अन्तिम समय लंका के महाराज कुमारदास के यहाँ बीता, वहाँ धन के लोभ में एक वेश्या ने उनकी **हत्या करा दी**।
- कालिदास ने वेद, दर्शन, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, गीता, पुराण, आयुर्वेद, धनुर्वेद, सङ्गीतशास्त्र, ज्योतिष, व्याकरण, छन्दःशास्त्र, काव्यशास्त्र आदि का गम्भीर अध्ययन किया था।
- बाद में राजकवियों को 'कालिदास' कहने की परम्परा चल पड़ी। **राजशेखर** ने ऐसे तीन कालिदासों का उल्लेख किया है–

  एकोऽपि जीयते हन्त कालिदासो न केनचित्।
  शृङ्गारे ललितोद्गारे कालिदासत्रयी किमु।।
- **कालिदास की उपाधियाँ**–(i) दीपशिखा कालिदास (ii) रघुकार (iii) कविकुलगुरु (iv) कविताकामिनीविलास (v) उपमासम्राट्
- महाकवि कालिदास ने मालविकाग्निमित्र की प्रस्तावना में **''प्रथितयशसां भाससौमिल्ल....."** के द्वारा भास, सौमिल्ल आदि अपने पूर्ववर्ती कवियों को सादर स्मरण किया है।

अभिज्ञानशाकुन्तलम्

- **लेखक** – कालिदास
- **विधा** – नाटक
- **अङ्क** – 7 (सात)
- **प्रधानरस** – शृङ्गार (सम्भोगशृङ्गार)
- **कथानक** – राजा दुष्यन्त एवं शकुन्तला का परस्पर प्रेम, विरह एवं मिलन का वर्णन है।
- **प्रमुखपात्र** – दुष्यन्त (नायक), शकुन्तला (नायिका) कण्व, अनसूया, प्रियंवदा, माढव्य (विदूषक), गौतमी, शार्ङ्गरव, शारद्वत, हंसपदिका, वसुमती, मातलि, सानुमती, सर्वदमन (भरत), मारीच ऋषि, अदिति (दाक्षायणी), दुर्वासा, मेनका
- शाकुन्तलम् का उपजीव्य/आधारग्रन्थ है **– 1. महाभारत**

के आदिपर्व का शकुन्तलोपाख्यान (68-74 अध्यायों में), 2. पद्मपुराण के स्वर्गखण्ड में भी यह कथा मिलती है।

➤ अभि0 शाकुन्तलम् नाटक की रीति – **वैदर्भी रीति**

➤ वैदर्भीरीतिसन्दर्भे विशिष्यते – **कालिदासः**

➤ कालिदास के काव्यों में किस वृत्ति का विशेष प्रयोग है– **कैशिकी**

➤ कालिदास का प्रिय अलङ्कार – **उपमा** (उपमा कालिदासस्य)।

➤ अभि0शाकु0 के प्रथम अङ्क का नाम – **आश्रम प्रवेश**

➤ द्वितीय अङ्क का नाम – **आश्रम निवेश**

➤ तृतीय अङ्क का नाम – **मिलन अङ्क**

➤ चतुर्थ अङ्क का नाम – **विदा अङ्क**

➤ पञ्चम अङ्क का नाम – **प्रत्याख्यान अङ्क**

➤ षष्ठ अङ्क का नाम – **पश्चात्ताप अङ्क।**

➤ सप्तम अङ्क का नाम – **पुनर्मिलन अङ्क।**

➤ शाकुन्तलम् के **चतुर्थ अङ्क** में करुणरस का प्रयोग है।

➤ शकुन्तला का हस्तिनापुर (पतिगृह) गमन **चतुर्थ अङ्क में** वर्णित है।

➤ अभिज्ञानशाकुन्तलम् का नायक – **दुष्यन्त**

➤ दुष्यन्त **धीरोदात्त** कोटि का नायक है।

➤ राजा दुष्यन्त कहाँ का राजा है – **हस्तिनापुर**

➤ अभिज्ञानशाकुन्तलम् की नायिका – **शकुन्तला**

➤ शकुन्तला किस कोटि की नायिका है – **मुग्धा**

➤ शकुन्तला है – **शकुन्तभिः पक्षिभिः लालिता पालिता इति शकुन्तला**

➤ अभिज्ञानशाकुन्तलम् का मङ्गलाचरण है – **आशीर्वादात्मक**

➤ अभि0 शाकुन्तलम् के मङ्गलाचरण में छन्द है – **स्रग्धरा**

➤ ''या सृष्टिः स्रष्टुराद्या....." इत्यादि श्लोक कहाँ का है – **अभि0शाकु0 नाटक का मङ्गलाचरण**

➤ अभि0शाकु0 के मङ्गलाचरण में किसकी स्तुति की गयी है – **अष्टमूर्ति शिव की**

➤ **''तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कः''** से सम्बन्धित नाटक – **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**

➤ **''तत्र श्लोकश्चतुष्टयम्''** किससे सम्बन्धित है – **अभि0 शाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क से**

➤ ''काव्येषु नाटकं रम्यम्'' इस वाक्य में किस नाटक का संकेत है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम् का**

➤ दुष्यन्त का विनोदप्रिय मित्र – **माढव्य**

➤ अभि0 शाकुन्तलम् का विदूषक – **माढव्य**

➤ शकुन्तला की दोनों सखियाँ – **1. अनसूया. 2. प्रियंवदा।**

➤ शकुन्तला के माता और पिता– **मेनका और ऋषि विश्वामित्र**

➤ शकुन्तला के पालक (धर्मपिता) पिता – **महर्षि कण्व**

➤ महर्षि कण्व के दो प्रमुख शिष्य – **शार्ङ्गरव और शारद्वत**

➤ दुष्यन्त और शकुन्तला का विवाह हुआ – **गान्धर्व विवाह**

➤ शकुन्तला को किसने शाप दिया – **ऋषि दुर्वासा ने**

➤ शकुन्तला को शाप का कारण – **अतिथि रूप में पधारे दुर्वासा ऋषि का तिरस्कार**

➤ शकुन्तला के शाप को जानने वाली – **प्रियंवदा और अनसूया**

➤ शकुन्तला को शाप मिला– **अभि0शाकु0 के चतुर्थ अङ्क में**

➤ अभि0शा0 में शाप की कल्पना का कारण – **प्रेम के आदर्शस्वरूप की स्थापना**

➤ शाप का प्रभाव किस अङ्क में दिखायी पड़ता है – **अभि0शा0 के पञ्चम अङ्क में**

➤ राजा दुष्यन्त के पश्चात्ताप का वर्णन – **षष्ठ अङ्क में**

➤ राजा दुष्यन्त और शकुन्तला का पुनर्मिलन होता है – **अभि0शा0 के सप्तम अङ्क में**

➤ हेमकूट पर्वत में आश्रम है – **महर्षि मारीच का।**

➤ दुष्यन्त और शकुन्तला का पुनर्मिलन – **हेमकूट पर्वत के मारीच आश्रम में।**

➤ शकुन्तला की मुद्रिका प्राप्त होती है– **धीवर मीनपालक को**

➤ दुष्यन्त और शकुन्तला के पुत्र का नाम– **सर्वदमन (भरत)**

➤ अभि0 शा0 का प्रारम्भ होता है – **नान्दीपाठ से (या सृष्टिः स्रष्टुराद्या)**

➤ अभि0शा0 का समापन होता है – **भरत वाक्य से (प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः....)।**

➤ कालिदास का सर्वस्वभूतग्रन्थ है – **अभिज्ञानशाकुन्तलम्। ''कालिदासस्य सर्वस्वमभिज्ञानशाकुन्तलम्।''**

मेघदूतम् (खण्डकाव्य/गीतिकाव्य)

➤ **लेखक** – कालिदास

➤ **विधा** – खण्डकाव्य/गीतिकाव्य

➤ **दो भागों में**–(i) पूर्वमेघ (ii) उत्तरमेघ

➤ **प्रधानरस** – विप्रलम्भशृङ्गार

➤ **छन्द** – मन्दाक्रान्ता

➤ **मेघदूतम् की रीति** – वैदर्भी रीति

➤ **उपजीव्य** – कथानक ब्रह्मवैवर्तपुराण से एवं दूत की कल्पना वाल्मीकीयरामायण से

➤ **नायक** – यक्ष (हेममाली) ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार

➤ **नायिका** – यक्षिणी (विशालाक्षी)

➤ **कथानक** – दूतकाव्य के रूप में एक 'गीतिकाव्य' है, जिसमें एक यक्ष का विरह वर्णित है।

- 50 से अधिक संस्कृत टीकायें।
- जर्मन विद्वान् **मैक्समूलर ने मेघदूतम् का जर्मन भाषा में पद्यानुवाद** और **श्वेट्ज ने जर्मनभाषा में गद्यानुवाद** किया है।
- **आर्थर राइडर और एच. जी रूक** ने अंग्रेजी में मेघदूतम् का पद्यानुवाद किया है।
- हिन्दीभाषा में मेघदूतम् के **6 पद्यानुवाद** हो चुके हैं।
- क्षेमेन्द्र ने कालिदास के मन्दाक्रान्ता छन्द की प्रशंसा की– **'सुवशा कालिदासस्य मन्दाक्रान्ता विराजते' – सुवृत्ततिलक**
- मेघदूत में उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक आदि अलङ्कारों का सुन्दर प्रयोग है।
- डॉ. कीथ ने मेघदूत को **Elegy (शोकगीत)** कहा है।
- भारतीय मत में मेघदूत शोकगीत या करुणगीत न होकर **विरहगीत** या **विप्रलम्भगीत** है।
- **प्रमुखपात्र**–यक्ष (हेममाली) यक्षिणी (विशालाक्षी) मेघ (बादल) कुबेर (यक्षाधिपति)
- संस्कृत के गीतिकाव्यों का आदिमग्रन्थ महाकवि कालिदास का मेघदूत है।
- दक्षिणावर्तनाथ और मल्लिनाथ ने मेघदूत लिखने में रामायण से प्रेरणा मानी है।
- यक्ष को अलकाधीश्वर कुबेर ने जो शाप दिया उसका आधार पद्मपुराण है।
- वहाँ के योगिनी नामक आषाढ़-कृष्ण-एकादशी-महात्म्य-प्रसंग में यह कथा संक्षेप में है।
- 'ब्रह्मवैवर्तपुराण' को भी मेघदूत का उपजीव्य माना जाता है।
- मेघदूत में 115 पद्य हैं। यह दो भागों पूर्वमेघ और उत्तरमेघ में विभक्त है।
- पूर्वमेघ में 63 और उत्तरमेघ में 52 पद्य हैं।
- मल्लिनाथ ने 121 पद्य स्वीकार किए हैं किन्तु 6 श्लोकों को प्रक्षिप्त माना है।
- मेघदूत का **मुख्य रस विप्रलम्भ शृङ्गार** है।
- पूरे मेघदूत में **मन्दाक्रान्ता छन्द** प्रयुक्त है।
- यक्षों के अधिपति कुबेर हैं। उन्होंने अपने कार्य में प्रमाद करने के कारण किसी अपने अनुचर 'यक्ष' को शाप दे दिया।

रघुवंशम् (महाकाव्य)

- **रचयिता-** महाकवि कालिदास
- **नायक-** दिलीप, रघु, अज, दशरथ, रामादि अनेक रघुवंशी राजागण (सभीनायक धीरोदात्त प्रकृति के) मुख्यरूप से 'राम' धीरोदात्त नायक।
- **काव्यविधा-** 'महाकाव्य'
- **रचनाकाल-** ई. पू. प्रथम शताब्दी से चतुर्थ शताब्दी के मध्य (विद्वानों में मतभेद)
- **सर्ग-** 19 सर्ग

सर्ग क्र.	सर्गों के नाम	श्लोक संख्या
01.	वशिष्ठ आश्रम अभिगमन	95
02.	नन्दिनी वरदान	75
03.	रघुराज्याभिषेक	70
04.	रघुदिग्विजय	88
05.	स्वयंवर-अभिगमन	76
06.	स्वयंवर-वर्णन	86
07.	अज-पाणिग्रहण	71
08.	अजविलाप	95
09.	मृगयावर्णन	82
10.	रामावतार	86
11.	सीता-विवाहवर्णन	93
12.	रावण-वध	104
13.	दण्डका-प्रत्यागमन	79
14.	सीता-परित्याग	87
15.	श्रीराम-स्वर्गारोहण	103
16.	कुमुद्वती-परिणय	88
17.	अतिथि-वर्णन	81
18.	वंशानुक्रम	53
19.	अग्निवर्ण शृङ्गार	57
कुल सर्ग - 19		**कुल श्लोक -1569**

रघुवंश के प्रमुख संवाद

- दिलीप-वशिष्ठ-संवाद - प्रथमसर्ग
- दिलीप-सिंह-संवाद - द्वितीय सर्ग
- इन्द्र-रघु संवाद - तृतीय सर्ग
- कौत्स-रघु संवाद - पञ्चम सर्ग
- राम-परशुराम-संवाद - एकादश सर्ग
- सीता-लक्ष्मण संवाद - चतुर्दश सर्ग
- कुश-नायिका रूप अयोध्या - षोडश सर्ग (स्वप्न संवाद)

कुमारसम्भवम्-(महाकाव्य)

- 'कुमारसम्भवम्' महाकाव्य कालिदास की प्रारम्भिक रचना है।
- इसमें कवि शिव-पार्वती विवाह, कुमार कार्तिकेय के जन्म, तथा उनके द्वारा तारकासुर के वध की कथा वर्णित है।
- इस महाकाव्य में **17 सर्ग** हैं।
- किन्तु प्रथम 8 सर्गों को ही कालिदास की रचना माना जाता है।
- 'विवरण टीका' के लेखक- नारायण पण्डित ने कहा कुमारसम्भव काव्य का लक्ष्य पार्वती द्वारा शिव के चित्त का आकर्षण मात्र था।
- काव्यशात्रीय आचार्यों ने प्रथम आठ सर्गों से ही उद्धरण दिये हैं।
- मल्लिनाथ की संजीवनी टीका वस्तुतः आठ सर्गों तक ही है।
- मल्लिनाथ के पूर्ववर्ती अरुणगिरिनाथ ने भी आठ सर्गों तक ही टीका लिखी है।
- भाषा, भाव की दृष्टि से परवर्ती सर्ग मौलिक सर्गों की अपेक्षा हीनतर है।
- केवल सीताराम नामक कवि ने संजीवनी नाम से उन सर्गों की व्याख्या की है।
  (सर्वप्रथम टीका सम्पूर्ण काव्य पर 17 सर्ग तक)
- 'कुमारसम्भवम्' में 'सम्भव' शब्द सम्भावना की ही ध्वनि देता है।
- वास्तविक जन्म को प्रकाशित नहीं करता है।

कुमारसम्भवम् - महाकाव्य का परिचय

- **प्रणेता-** महाकवि कालिदास की प्रारम्भिक रचना।
- **नायक-** कुमारसम्भव के नायक शिव दिव्य कोटि के हैं।
- **प्रतिनायक**- तारकासुर
- **सर्ग संख्या-** 17 सर्ग (मूल रूप से 8 सर्ग)
- **उपजीव्य-** शिवपुराण, रामायण, महाभारत।

रस

- कुमारसम्भवम् का अङ्गी रस **शृङ्गार** है।
- शिवपार्वती के असाधारण प्रेम और प्रणय लीलाओं का चित्रण इस काव्य में होने से सम्पूर्ण काव्य शृङ्गार मय है।

तं यथात्मसदृशं वरं वधूरन्वरज्यत वरस्तथैव ताम्।
सागरादनपगा हि जाह्नवी सोऽपि तन्मुखरसैकवृत्तिभाक्॥

(कुमार. 08/16)

- चतुर्थ सर्ग में रति के करुण विलाप में आद्यन्त करुण रस छाया हुआ है।

गत एव न ते निवर्तते स सखा दीप इवानिलाहतः।
अहमस्य दशेव पश्य माम विषह्यव्यसनेन धूमिताम्॥

(कुमार. 4/30)

- समाधिस्थ शिव की मूर्ति एवं पार्वती की तपस्या वर्णन में शान्त रस की छटा दिखती है।
- अंग रस के रूप में हास्य रस भी इस महाकाव्य में विन्यस्त है।

छन्द

- कालिदास को छोटे छन्द अधिक प्रिय थे।
- बड़े छन्दों का प्रयोग सर्गान्त में किया गया है।
- छोटे छन्दों में भी उपजाति और अनुष्टुप् अतिप्रिय छन्द हैं।
- कुमारसम्भव में सर्वाधिक उपजाति छन्द का प्रयोग हुआ है।

सर्गानुसार कथावस्तु

सर्ग- 1
- हिमालय का भव्य वर्णन
- हिमालय-मैना विवाह
- पार्वती का जन्म और सौन्दर्य
- नारद द्वारा शिव-पार्वती विवाह की चर्चा।
- पार्वती द्वारा शिव की आराधना।

सर्ग- 2
- तारकासुर से पीड़ित देवताओं के द्वारा ब्रह्मा की प्रार्थना।
- ब्रह्मा द्वारा उपाय कि शङ्कर-पार्वती पुत्र ही तारक-वध कर सकता है।

सर्ग- 3
- देवगण शिव के चित्त में क्षोभ उत्पन्न करने के लिए कामदेव का उपयोग करते हैं।
- कामदेव द्वारा वसन्त ऋतु फैलाना शिव पर बाण चलाना।
- शिव द्वारा कामदेव को भस्मसात् करना।

सर्ग- 4
- कामदेव की पत्नी रति का विलाप
- वियोगिनी छन्द का कवि द्वारा प्रयोग।

सर्ग- 5
- महाकाव्य का श्रेष्ठ सर्ग।
- पार्वती की घोर तपस्या का वर्णन
- असाध्य शिव को तपस्या ही द्रवित करती है।
- शिव पार्वती का रमणीय संवाद।

सर्ग- 6
- विवाहेच्छुक शिव का सन्देश लेकर सप्तर्षिगण हिमालय के पास जाते हैं।

सर्ग- 7
- शिव की दर्शनीय वर यात्रा।
- पार्वती-परिणय।

सर्ग- 8
- रथोद्धता छन्द में विवाह के अनन्तर शिव पार्वती दाम्पत्य जीवन। केलि विहार वर्णन।
- कुछ विद्वान् 8 सर्ग तक ही कालिदास की रचना मानते हैं।

सर्ग- 9
- शिव-पार्वती का विहार यात्रा करते हुए कैलास पर्वत गमन।

सर्ग- 10
- कार्तिकेय (कुमार, स्कन्द का गर्भ में आना।)

सर्ग- 11
- कुमार का जन्म तथा बाल्यावस्था वर्णन अर्जुन की चार पत्नी-

द्रौपदी, सुभद्रा, नागकन्या लूपी, चित्रांगदा

सर्ग-12

➢ कुमार का सेनापति बनना।

सर्ग-13

➢ कुमार का सैन्य संचालन कौशल वर्णन।

सर्ग-14

➢ देवसेना द्वारा आक्रमण हेतु प्रस्थान।

सर्ग-15

➢ देवासुर-सेनाओं का संघर्ष।

सर्ग-16

➢ युद्ध वर्णन

सर्ग-17

➢ कुमार द्वारा तारकासुर का वध।

भवभूति

➢ **पितामह** – भट्टगोपाल
➢ **पिता** – नीलकण्ठ
➢ **माता** – जतुकर्णी (जातुकर्णी)
➢ **भवभूति का मूलनाम** – श्रीकण्ठ या भट्टश्रीकण्ठ
➢ **गुरु** – (i) ज्ञाननिधि (ii) कुमारिलभट्ट
➢ **भवभूति का दार्शनिक नाम** – उदुम्बर/उम्बिकाचार्य/उम्बेक
➢ **जन्मस्थान** – दक्षिणभारत में पद्मपुर नगर
➢ **उपाधि** – (i) पदवाक्यप्रमाणज्ञ, पद = व्याकरण, वाक्य = मीमांसा, प्रमाण = न्याय
(ii) वश्यवाक्, (iii) परिणतप्रज्ञ, (iv) शिखरिणीकवि
➢ **वंश/गोत्र** – काश्यप
➢ **जाति** – कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखापाठी ब्राह्मण
➢ **आश्रयदाता** – कान्यकुब्जनरेश यशोवर्मा
➢ **समय**– 650 ई. से 750 ई. के बीच (सातवीं शताब्दी का उत्तरार्ध)
➢ **रचनायें** – 1. मालतीमाधवम् (प्रकरण)
2. महावीरचरितम् (नाटक)
3. उत्तररामचरितम् (नाटक)
➢ **भवभूति की रीति** – गौडी
(उत्तररामचरितम् में गौड़ी और वैदर्भी का समन्वय)
➢ **भवभूति का प्रियरस** – करुण
➢ **भवभूति के प्रियछन्द** – अनुष्टुप् और शिखरिणी
➢ **उपासक** – शिव के
➢ उत्तररामचरितम् में भवभूति अपने आपको **'परिणतप्रज्ञ'** कहते हैं।
➢ महावीरचरितम् में भवभूति अपने आपको **'वश्यवाक्'** कहते हैं।
➢ भवभूति के नाटकों में **'अभिधावृत्ति'** मुख्य है।
➢ भवभूति की कृतियों में **'ओजगुण'** अधिक है।
➢ **क्षेमेन्द्र ने 'सुवृत्ततिलक'** में भवभूति के शिखरिणी की प्रशंसा में उसे **'निरर्गलतरङ्गिणी'** कहा है –
भवभूतेः शिखरिणी निरर्गलतरङ्गिणी।
रुचिरा घनसन्दर्भे या मयूरीव नृत्यति॥ (सु. 3.33)
➢ भवभूति के तीनों नाटकों में **विदूषक का सर्वथा अभाव** है।

उत्तररामचरितम्

➢ **लेखक** – भवभूति
➢ **विधा** – नाटक
➢ **अङ्क** – 7 (सात)
➢ **प्रधानरस** – करुण
➢ **उपजीव्य** (i) वाल्मीकीयरामायण उत्तरकाण्ड (सर्ग 42-97 तक) (ii) पद्मपुराण (पातालखण्ड 1-68 तक)
➢ **विशेषतायें**– (1) सप्तम अङ्क में **गर्भनाटक** की योजना
(2) प्रथम अङ्क में **चित्रवीथी** की योजना
(3) **विदूषक रहित** नाटक
(4) तृतीय अङ्क में **छायाङ्क** की योजना
➢ **प्रमुखपात्र** – राम (नायक), सीता (नायिका), गोदावरी, भागीरथी, तमसा, मुरला, वासन्ती (वनदेवता), पृथ्वी, आत्रेयी, वशिष्ठ, कौशल्या, मुनिबालक सौधातकि, गुप्तचरदुर्मुख, लव, कुश, चन्द्रकेतु, वाल्मीकि, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, अष्टावक्र, दण्डायन, सुमन्त्र, अरुन्धती, जनक, कञ्चुकी आदि।
➢ अनुष्टुप् (84 श्लोक), शिखरिणी (30) वसन्ततिलका (26) शार्दूलविक्रीडित (25) आदि।
➢ उत्तररामचरितम् में भवभूति ने **38 अलङ्कारों का प्रयोग** किया है; और प्रयोग की दृष्टि से उन्हें–उपमा, उत्प्रेक्षा, काव्यलिङ्ग, रूपक, अर्थान्तरन्यास अत्यन्त **प्रिय अलङ्कार** माने जाते हैं।
➢ इसमें **7 (सात) अङ्कों में** रामायण के उत्तरकाण्ड की कथा वर्णित है।
➢ राम के वन-प्रत्यागमन के बाद राजगद्दी पाने से लेकर सीता-मिलन तक की सम्पूर्ण कथाएँ कुछ कल्पना-प्रसूत घटनाओं के साथ दिखाई गई हैं। यह **भवभूति का सर्वश्रेष्ठ नाटक** है।
➢ सप्तम अंक में **'गर्भाङ्क' की कल्पना** है।
➢ पद्मपुराण में वर्णित रामकथा से उत्तररामचरित की कथा का अधिक साम्य है।
➢ उत्तररामचरित में **कुल पात्रों की संख्या 30** है। इनके

अतिरिक्त 6 पात्रों का उल्लेख मात्र है।

- भवभूति ने उत्तररामचरित में **19 छन्दों का प्रयोग** किया है।
- उत्तररामचरित में **कुल श्लोकों की संख्या 256** है।
- **अनुष्टुप् के पश्चात् शिखरिणी छन्द** का सर्वाधिक प्रयोग हुआ है। मङ्गलाचरण में अनुष्टुप् छन्द है।
- भवभूति ने उत्तररामचरित में केवल **'शौरसेनी प्राकृत'** का प्रयोग किया है।
- नाटक का आरम्भ **'चित्रदर्शन'** से होता है।

भर्तृहरि

- विक्रमसंवत् के प्रवर्तक विक्रमादित्य के बड़े भाई।
- **पत्नी** – पिङ्गला
- **गुरु** – (i) गोरखनाथ (ii) वसुरात (बौद्धमत में)
- **भाई (अनुज)** – विक्रमादित्य
- **पिता** – गन्धर्वसेन (मालवदेश के राजा)
- ईत्सिंग के कथन के आधार पर **भर्तृहरि को बौद्ध** कहा जाता है।
- भर्तृहरि **वेदान्तोक्त ब्रह्म के उपासक** थे।
- **भर्तृहरि का समय** – (i) 57 ई. पू. अथवा (ii) 575 से 650 ई.
- **भर्तृहरि की शैली/रीति एवं गुण** – वैदर्भीरीति, प्रसाद और माधुर्यगुण
- **मुक्तक काव्य के प्रथमकवि** – भर्तृहरि
- **भर्तृहरि के प्रिय छन्द** – शार्दूलविक्रीडित, शिखरिणी
- मृत्यु 650 ई. (चीनी यात्री इत्सिंग के अनुसार)
- **रचनायें– (i) वाक्यपदीयम्** (व्याकरणग्रन्थ), (ii) **नीतिशतकम्** (मुक्तककाव्य) 111 श्लोक, (iii) **शृङ्गारशतकम्** (मुक्तककाव्य) 103 श्लोक, (iv) **वैराग्यशतकम्** (मुक्तककाव्य) 111 श्लोक

नीतिशतकम्

- **लेखक** – भर्तृहरि
- **विधा** – मुक्तककाव्य
- **कुलश्लोक** – 111
- **कुलपद्धतियाँ** – 11 (मङ्गलाचरण सहित)
  1. अज्ञपद्धति (मूर्खनिन्दापद्धति)
  2. विद्वत्पद्धति
  3. मानशौर्यपद्धति
  4. अर्थपद्धति
  5. दुर्जनपद्धति
  6. सुजनपद्धति
  7. परोपकारपद्धति
  8. धैर्यपद्धति
  9. दैवपद्धति
  10. कर्मपद्धति
- मुक्तक का लक्षण–**''पूर्वापरनिरपेक्षेणापि हि येन रसचर्वणा क्रियते तदेव मुक्तकम्''**
  इसप्रकार अर्थप्रकाशन के लिए एक दूसरे की अपेक्षा न रखने वाले स्वतन्त्र पद्य (श्लोक) मुक्तक कहे जाते हैं।
- नीतिशतक में वर्ण्य विषय को ग्यारह पद्धतियों में समाहित किया गया है।
- भर्तृहरि ने नीतिशतक में ब्रह्म की स्तुति के पश्चात् 'मूर्ख-निन्दा' से ग्रन्थ का आरम्भ किया है।
- नीतिशतक में भर्तृहरि की शैली प्रसादगुण से युक्त और मुहावरेदार है।
- नीतिशतक के मङ्गलाचरण में अनन्त, ज्ञानमय स्वानुभवमात्र से जानने योग्य, ज्योतिस्वरूप **ब्रह्म को नमस्कार** किया गया है।
- नीतिशतक का **मङ्गलाचरण नमस्कारात्मक** है।
- मङ्गलाचरण **(दिक्कालाद्यनवच्छिन्नानन्तचिन्मात्रमूर्तये)** में **अनुष्टुप्** छन्द प्रयुक्त है।

बाणभट्ट

बाणभट्ट का वंशवृक्ष

वत्स
।
कुबेर
(कर्मकाण्डी श्रुतिशास्त्र सम्पन्न ब्राह्मण)
।
पाशुपत
।
अर्थपति (इनके 11 पुत्र हुए)
।
चित्रभानु
।
बाणभट्ट
।
भूषणभट्ट (पुलिन्दभट्ट, पुलिनभट्ट)

- **निवास** – शोण (सोन) नदी के पास 'प्रीतिकूट' नामक ग्राम। (वर्तमान में शाहाबाद, आरा, बिहार।)
- **राज्याश्रय** – सम्राट् हर्ष के सभापण्डित
- **पितामह** – अर्थपति
- **पिता** – चित्रभानु
- **माता** – राजदेवी
- **पत्नी** – कवि मयूरभट्ट की बहन
- **पुत्र** - भूषणभट्ट (पुलिन या पुलिन्दभट्ट)

- **बहन** – मालती
- **बाण के दो भाई** – चित्रसेन और मित्रसेन
- बाण ने स्वयं हर्षचरितम् के प्रथम तीन उच्छ्वासों तथा कादम्बरी की प्रस्तावना के पद्यों में अपना परिचय दिया है।
- **वंश/गोत्र** – वात्स्यायन / वत्स वंश (ब्राह्मण)
- **उपासक** – शिव (शैव)
- **बाण की रीति** – पाञ्चाली
- बाल्यावस्था में ही बाण की माता का स्वर्गवास।
- 14 वर्ष की आयु में बाण के पिता का भी स्वर्गवास।
- राजा हर्ष ने इन्हें **''महानयं भुजङ्गः''** (बहुत चरित्रभ्रष्ट) कहा।
- **हर्ष का राज्याभिषेक** अक्टूबर 606 ई. में हुआ, और उनकी मृत्यु 648 ई. में हुई।
- **ह्वेनसांग** ने 629 से 645 ई. तक भारत भ्रमण किया था और वह हर्ष के निकट सम्पर्क में भी आया था।
- **बाण का समय** – सातवीं शताब्दी ई. का पूर्वार्द्ध
- **बाणभट्ट का विवाह** महाकवि मयूर भट्ट (सूर्यशतकम्) की बहन से हुआ था।
- **बाण की रचनायें**– 1. कादम्बरी (कथा), 2. हर्षचरितम् (आख्यायिका), 3. चण्डीशतकम् (मुक्तक), 4.मुकुटताडितक (नाटक), 5. पार्वतीपरिणय (नाटक)
- हर्षवर्धन के चचेरे भाई कृष्ण के निमन्त्रण पर बाणभट्ट हर्ष के राजदरबार में पहुँचे।

कादम्बरी

- **लेखक** – बाणभट्ट
- **काव्यविधा** – कथा
- **दो खण्ड** – (i) पूर्वार्द्ध (ii) उत्तरार्द्ध
- **प्रधानरस** – शृङ्गाररस
- **उपजीव्य** – गुणाढ्य की 'बृहत्कथा'
- **नायक** – चन्द्रापीड (शूद्रक)
- **नायिका** – कादम्बरी
- **सहनायक** – वैशम्पायन (पुण्डरीक)
- **सहनायिका** – महाश्वेता
- **वैशिष्ट्य** – तीन जन्मों की कथा
- **प्रमुखपात्र** – चन्द्रापीड, कादम्बरी, पुण्डरीक, महाश्वेता, शूद्रक, तारापीड, विलासवती, शुकनास, मनोरमा, वैशम्पायन, इन्द्रायुध (घोड़ा) पत्रलेखा (दासी) जाबालि, हारीत, चाण्डालकन्या, शबर, कपिञ्जल, शुक, हंस, चित्ररथ
- कादम्बरी उत्तरार्ध की रचना बाण के पुत्र **भूषणभट्ट** (भूषणबाण/पुलिन्द/पुलिनभट्ट/पुलिन्ध्र) ने की।
- **कादम्बरी की रीति** – पाञ्चाली
- **कादम्बरी में अलङ्कार** – विरोधाभास, श्लेष, परिसंख्या, अनुप्रास, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा।
- **कादम्बरी के प्रमुखवर्णन–**
शूद्रकवर्णन, शुकवर्णन, चाण्डालकन्यावर्णन, विन्ध्याटवीवर्णन, शबरसैन्यवर्णन, शाल्मलीवृक्षवर्णन जाबाल्याश्रमवर्णन, जाबालिवर्णन, उज्जयिनीवर्णन, तारापीडवर्णन, इन्द्रायुधवर्णन, अच्छोदसरोवरवर्णन, महाश्वेतावर्णन, कादम्बरीवर्णन आदि।

हर्षचरितम्

लेखक - बाणभट्ट
काव्यविधा- आख्यायिका
उच्छ्वास- 8 (आठ)
उच्छ्वासों का नाम

उच्छ्वास-	**नाम**
प्रथम	वात्स्यायनवंश वर्णन
द्वितीय	राजदर्शन
तृतीय	राजवंश-वर्णन
चतुर्थ	चक्रवर्ति-जन्मवर्णन
पञ्चम	महाराज-मरण-वर्णन
षष्ठ	राजप्रतिज्ञा-वर्णन
सप्तम	छत्रलब्धि
अष्टम	विन्ध्याद्रिनिवेशन

उपजीव्य- ऐतिहासिक घटना
रीति- पाञ्चाली
शैली- उत्कृष्ट गद्य-शैली
प्रधान/अङ्गी रस- वीररस **अङ्ग रस-** करुण, शृङ्गार

हर्षचरितम्

- महाराज हर्षवर्धन का जीवन-परिचय होने के कारण इस आख्यायिका का नाम 'हर्षचरित' पड़ा।

अम्बिकादत्तव्यास

- **पितामह** – पं राजाराम
- **पिता** – दुर्गादत्त
- **चाचा/दादा** – देवीदत्त
- **पुत्र** – पं. राधाकुमारव्यास
- **गोत्र** – पराशरगोत्रीय यजुर्वेदी/त्रिप्रवर/भीडावंश
- **जन्मस्थान** – राज्य - राजस्थान, जिला - जयपुर, ग्राम - रावत जी का धूला, मुहल्ला - सिलावटी
- **जन्मसमय** – चैत्र शुक्लपक्ष अष्टमी सं. 1915 (1858 ई.)
- **मृत्यु** – मार्ग शीर्ष (अगहन) कृष्णपक्ष त्रयोदशी सोमवार सं. 1957 (सन् 1900 ई.)
- **कर्मस्थली –** काशी में अध्ययन - अध्यापन

- **कुल रचनाएं** – लगभग 78
- **संस्कृत रचनायें**– शिवराजविजयम् (उपन्यास) सामवतम् (नाटक) (22 वर्ष की अवस्था में) रत्नाष्टक, कथाकुसुमम्
- **हिन्दी रचनाएं**– बिहारी-विहार (कुण्डलिनी छन्द में)
- **पत्रिका**–'पीयूष-प्रवाह' का सम्पादन
- **उपाधियाँ**– 1. सुकवि (भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, काशी कवितावर्धिनी सभा)
  2. घटिकाशतक (ब्रह्मामृतवर्षिणी सभा)
  3. शतावधान
  4. भारतरत्न (काशी की 'महासभा')
  5. अभिनवबाण/आधुनिकबाण
  6. भारतभूषण
  7. महाकवि
- प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास के प्रणेता अम्बिकादत्तव्यास।
- 'बिहारी-विहार' में व्यास जी ने अपना संक्षिप्त जीवन-परिचय लिखा है।
- लगभग 12 वर्ष की अवस्था में व्यास जी ने धर्मसभा की परीक्षा में पुरस्कार प्राप्त किया था।
- बिहार में **'संस्कृत-सञ्जीवनी-समाज'** की स्थापना।
- व्यास जी ने 10 वर्ष की अवस्था से ही काव्य रचना आरम्भ कर दी थी।
- व्यास जी ने **'शिवराज-विजयम्'** 1870 ई. में लिखा जो काशी से 1901 ई. में उनकी मृत्यु के बाद प्रकाशित हुआ।
- गवर्नमेण्ट संस्कृत-कॉलेज पटना में प्राध्यापक।
- वक्ता और साहित्यस्रष्टा के साथ ही चित्रकारिता, अश्वारोहण संगीत और शतरंज में भी व्यास जी विशेष रुचि रखते थे।
- सितार, हारमोनियम, जलतरङ्ग और मृदङ्ग इनके प्रिय वाद्य थे।
- व्यास जी हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी और बंगला भाषा के ज्ञाता थे।
- न्याय, व्याकरण, वेदान्त और दर्शन में इनकी अच्छी गति थी।
- एक घड़ी (24 मिनट) में 100 श्लोकों की रचना करने से व्यास जी को **'घटिकाशतक'** की उपाधि दी गयी थी।
- सौ प्रश्नों को एक साथ ही सुनकर उन सभी प्रश्नों का उत्तर उसी क्रम में देने की अद्भुतक्षमता होने से उन्हें **'शतावधान'** की उपाधि दी गयी थी।
- **बयालीस वर्ष की अवस्था** में ही व्यास जी संवत् 1957 (1900 ई.) में अपने पीछे एक नववर्षीयपुत्र, एक कन्या और विधवा पत्नी को असहाय छोड़कर पञ्चतत्व को प्राप्त हो गये।

शिवराजविजय–ऐतिहासिक उपन्यास

- **लेखक** – अम्बिकादत्तव्यास
- **विधा** – ऐतिहासिक उपन्यास
- **विभाजन** – तीन विराम, 12 निःश्वास।
- **प्रधानरस** – वीर
- **उपजीव्य** – इतिहासप्रसिद्ध
- **नायक** – शिवाजी
- **कथानक** – शिवाजी का जीवनचरित।
- **प्रमुखपात्र** – शिवाजी, गौरसिंह, श्यामसिंह, ब्रह्मचारी गुरु, योगिराज, अफ़जलखान, शाइस्ताखान, रघुवीरसिंह, यवनयुवक यशवन्तसिंह, औरंगजेब, रसनारी (रोशनआरा)
- 'शिवराजविजय' **1870 ई0** में लिखा गया था, जो काशी से **1901 ई. में प्रकाशित** हुआ।
- संस्कृतवाङ्मय का **प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास 'शिवराजविजय' है।**
- शिवराजविजय की सम्पूर्ण कथा 3 विरामों और 12 निःश्वासों में विभक्त है।
- शिवराजविजय में दो समान्तर धाराएँ स्वतन्त्र रूप से प्रवाहित होती हैं – एक के नायक शिवाजी हैं तो दूसरी के नायक रघुवीर सिंह हैं।
- शिवराजविजय **'वीर रस' प्रधान काव्य** है। **'विरोधाभास'** व्यास जी का प्रिय अलङ्कार है। शिवराजविजय में पाञ्चालीरीति प्रयुक्त है।
- व्यासजी ने 'शिवराजविजय' में मुगलकालीन समाज का सुन्दर चित्रण किया है।

भारवि

- **पिता** – (i) श्रीधर, (ii) नारायणस्वामी (अवन्तिसुन्दरीकथा के अनुसार)
- **माता** – सुशीला
- **पत्नी** – रसिकवती या रसिका
- **पुत्र** – मनोरथ
- **मूल नाम** – दामोदर
- **गोत्र** – कुशिक
- **जन्म स्थान** – (i) दक्षिण भारत में नासिक प्रदेश के **'अचलपुर'** (एलिचपुर), (ii) धारानगरी (अवन्तिसुन्दरी कथा के अनुसार)
- **समय** – छठवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध/सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध

भारवि का वंशवृक्ष

भारवि
।
मनोरथ (पुत्र)
।
वीरदत्त - गौरी (पौत्र)
।
दण्डी (प्रपौत्र)

➢ **सम्प्रदाय** – शैव
➢ **उपाधि** – 'आतपत्र भारवि'
➢ **आधत्ते कनकमयातपत्रलक्ष्मीम्'' (किरात. 5.39)** इस श्लोक में **'कनकमय आतपत्र'** (सोने का छाता) की उपमा को अति सुन्दर मानकर आलोचकों ने कवि का नाम ही **'आतपत्र भारवि'** रख दिया।
➢ **आश्रयदाता** – 1. विष्णुवर्द्धन (पुलकेशिन द्वितीय के अनुज), 2. सिंहविष्णु (अवन्तिसुन्दरीकथा के अनुसार), 3. दुर्विनीत, 4. महेन्द्रविक्रम (सिंहविष्णु का पुत्र)
➢ राजा दुर्विनीत ने 'किरातार्जुनीयम्' के 15वें सर्ग पर संस्कृतटीका लिखी।
➢ 'भारवि' **दण्डी के प्रपितामह** हैं।
➢ भारवि की वाणी को **'प्रकृतिमधुरा'** कहा जाता है।
➢ भारवि महाकाव्यों में **'अलङ्कृतकाव्यशैली'** या **'रीतिशैली' के जन्मदाता हैं।** इनके काव्यमार्ग को **विचित्रमार्ग** कहते हैं।
➢ श्री एन. सी. चटर्जी भारवि को **'ट्रावनकोर' का निवासी** सिद्ध करते हैं।
➢ एक किंवदन्ती के अनुसार पिता द्वारा अपमानित भारवि उनके वध के लिए उद्यत हो गये, परन्तु पिता द्वारा उनके हित के लिए डाँटा गया, यह जानकर उन्हें बहुत पश्चात्ताप हुआ, और पिता ने छः माह तक ससुराल में सेवा करने का आदेश दिया।
➢ भारवि का जन्म 560 ई. के लगभग तथा रचनाकाल 580 ई. के लगभग अधिकांश आलोचकों ने माना है।
➢ भारवि **'अर्थगौरव'** के लिए प्रसिद्ध हैं।
➢ आचार्य मल्लिनाथ ने भारवि के 'किरातार्जुनीयम्' पर **'घण्टापथ'** नाम की टीका लिखी है।
➢ भारवि राजनीति के प्रकाण्ड पण्डित हैं।
➢ मल्लिनाथ, भारवि की कविता की उपमा **'नारिकेलफल'** से करते हैं– **'नारिकेलफलसम्मितं वचः'**
➢ दक्षिण के **'एहोल शिलालेख'** में भारवि का नाम उल्लिखित है।
➢ भारवि के किरातार्जुनीयम् को **'लक्ष्म्यन्त'** महाकाव्य, माघ के शिशुपालवधम् को **'श्र्यन्त'** महाकाव्य तथा श्रीहर्ष के नैषधीय चरितम् को **'आनन्दान्त'** महाकाव्य कहते हैं।

➢ भारवि का प्रामाणिक जीवनवृत्त सर्वथा अप्राप्त है, कुछ किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं।
➢ महाकवि दण्डी विरचित 'अवन्तिसुन्दरीकथा' के अनुसार भारवि का जीवनवृत्त निम्नलिखित है।
➢ भारवि चालुक्यवंशी सम्राट् पुलकेशिन द्वितीय के अनुज विष्णुवर्धन (615 ई0) के मित्र/सभापण्डित/राजकवि थे।

स मेधावी कविर्विद्वान् भारविः प्रभवो गिराम्।
अनुरुध्याकरोन्मैत्रीं नरेन्द्रे विष्णुवर्धने॥

➢ भारवि का वास्तविक नाम – **दामोदर**
➢ माता का नाम – **सुशीला**
➢ पिता का नाम – **नारायण स्वामी (श्रीधर)**
➢ पत्नी का नाम – **रसिकवती या रसिका**
➢ उपाधि/उपनाम – **आतपत्र भारवि**
➢ महाकवि दण्डी के प्रपितामह – **भारवि**
➢ भारवि **कुशिक/कौशिक गोत्रीय** ब्राह्मण थे।

भारवि की वंशपरम्परा

नारायणस्वामी (श्रीधर) – (भारवि के पिता)
↓
भारवि – (दण्डी के प्रपितामह)
↓
मनोरथ – (दण्डी के पितामह)
↓
वीरदत्त-गौरी – (दण्डी के पिता-माता)
↓
दण्डी – (भारवि के प्रपौत्र)

➢ दण्डी की रचना – **दशकुमारचरितम्।**
➢ भारवि का सम्बन्ध कोङ्कण के गङ्गवंशी नरेश दुर्विनीत और काञ्ची के पल्लववंशी नरेश सिंहविष्णु तथा उनके पुत्र महेन्द्रविक्रम के साथ भी था।
➢ सिंहविष्णु से मिलते समय कवि की अवस्था थी – **बीस वर्ष।**
➢ किरातार्जुनीयम् के 15वें सर्ग की संस्कृत टीका लिखी थी– **विद्वान् नरेश दुर्विनीत ने।**
➢ एक अन्य किंवदन्ती के अनुसार भारवि धारानगरी के निवासी थे।

किरातार्जुनीयम्

➢ **लेखक** – भारवि
➢ **विधा** – महाकाव्य

- **सर्ग** – 18
- **प्रधानरस** – वीर
- **उपजीव्य** – महाभारत का वनपर्व
- **कथानक** – अर्जुन द्वारा भगवान् शिव की तपस्या से पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति।
- **प्रमुखपात्र** – अर्जुन, द्रौपदी, युधिष्ठिर, भीम, नकुल, सहदेव, श्रीकृष्ण, वनेचर, सुयोधन (दुर्योधन), इन्द्र, किरातवेशधारी शिव, व्यास, यक्ष आदि

महाकवि माघ

- शिशुपालवध-नामक महाकाव्य के रचयिता महाकवि माघ हैं। इन्हें विद्वानों ने श्रेष्ठ महाकाव्य का प्रणेता माना है-

काव्येषु माघः

- भारवि के द्वारा प्रवर्तित विचित्र-मार्ग को माघ ने बहुत ऊँचाई पर पहुँचाया तथा भारवि से आगे बढ़ने का सफल प्रयास किया।
- माघ के **पितामह सुप्रभदेव** थे जो राजा वर्मलात (या श्रीवर्मल) के सर्वाधिकारी अर्थात् दीवान थे। वे पुण्यात्मा, अनासक्त तथा सात्त्विक वृत्ति के पुरुष थे-

सर्वाधिकारी सुकृताधिकारी श्रीवर्मलाख्यस्य बभूव राज्ञः।
असक्तदृष्टिर्विरजाः सदैव देवोऽपरः सुप्रभदेवनामा॥

- सुप्रभदेव के पुत्र का नाम 'दत्तक' था जो अत्यन्त उदार, क्षमाशील, कोमल स्वभाव के एवं धर्मपरायण थे।
- इन्हें लोग 'सर्वाश्रय' भी कहते थे क्योंकि सबकी सहायता के लिए वे तत्पर रहते थे।इन्हीं दत्तक के पुत्र महाकवि माघ थे।
- माघ सूर्य-पूजक थे।
- माघ की मृत्यु 'पादशोथ'-रोग से हुई।

निवासस्थान

- माघ का निवासस्थान श्रीमाल या भिन्नमाल नामक नगर में था।यह नगर अभी माउंटआबू से 40 मील पूर्व जोधपुर प्रमण्डल (राजस्थान) में अवस्थित है।यह नगर उस समय गुर्जर राज्य की राजधानी के रूप में प्रसिद्ध था
- श्रीमाल (भीनमाल) संस्कृत विद्या का महान् केन्द्र था, अनेक विद्याएँ यहाँ पढ़ायी जाती थीं।
- वर्मलात नामक राजा इसी नगर में रहते थे। माघ के पितामह उनके प्रधानमन्त्री थे। माघ का परिवार बहुत धनाढ्य था जगत्स्वामी सूर्य के मन्दिर के ये लोग उपासक थे। माघ अनेक शास्त्रों के विद्वान् थे, राजाश्रित होने के कारण अनेक शास्त्रों के अध्ययन की सुविधा इन्हें प्राप्त थी।

माघ का समय

- माघ को 675 ई. के अनन्तर माना जा सकता है। अधिकतर विद्वान् 700 ई. के आसपास ही माघ को स्वीकार करने के पक्षधर हैं।

शिशुपालवधम् (महाकाव्य)

- यह महाकवि माघ की एकमात्र कृति 20 सर्गों के महाकाव्य के रूप में है।
- इसमें 1645 पद्य हैं, पन्द्रहवें सर्ग में 34प्रक्षिप्त श्लोक हैं जिनकी व्याख्या मल्लिनाथ ने नहीं की है। पाँच पद्य कविवंश वर्णन के हैं उन्हें मिलाकर माघ की रचना 1650 पद्यों की है।

शिशुपालवध की कथा

- **सर्ग 1**- देवर्षि नारद का द्वारका में आगमन,श्रीकृष्ण द्वारा उनका सत्कार, नारद द्वारा शिशुपाल के पूर्वजन्मों तथा उसके अत्याचारों का वर्णन, शिशुपाल को मारने के लिए प्रेरित करना।
- **सर्ग 2**- श्रीकृष्ण, बलराम और उद्धव की मन्त्रणा,बलराम का शिशुपाल पर आक्रमण का प्रस्ताव किन्तु उद्धव का नीतिपूर्ण प्रस्ताव कि इस विषय में शीघ्रता न करके युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में सेना-सहित भाग लें।
- **सर्ग 3**- द्वारका से श्रीकृष्ण का इन्द्रप्रस्थ के लिए प्रस्थान। नगरी, सेना और समुद्र का वर्णन।
- **सर्ग 4**- रैवतक पर्वत का वर्णन।
- **सर्ग 5**- रैवतक पर सैन्य-शिविर की स्थापना।
- **सर्ग 6**- छह ऋतुओं का द्रुतविलम्बित छन्द में 'यमक' का निवेश करते हुए वर्णन।
- **सर्ग 7**- वन-विहार-वर्णन
- **सर्ग 8**- जलक्रीडा-रात्रि-विहार का वर्णन।
- **सर्ग 9**- सन्ध्या, चन्द्रोदय तथा शृङ्गार-विधान का वर्णन।
- **सर्ग 10**- पान-गोष्ठी एवं रात्रि-विहार का वर्णन।
- **सर्ग 11**- प्रभात-वर्णन।
- **सर्ग 12**- श्रीकृष्ण का पुनः प्रस्थान तथा यमुना नदी का वर्णन।
- **सर्ग 13**- श्रीकृष्ण और पाण्डवों का मिलना, नगर-प्रवेश तथा दर्शक नारियों की चेष्टाओं का, अश्वघोष तथा कालिदास से प्रतिस्पर्धा करते हुये वर्णन।
- **सर्ग 14**- युधिष्ठिर द्वारा राजसूय यज्ञ का प्रस्ताव, श्रीकृष्ण की पूजा तथा भीष्म-द्वारा उनकी स्तुति।
- **सर्ग 15**- शिशुपाल का कोप और उनके पक्ष के राजाओं का युद्ध के लिए सन्नद्ध होना।
- **सर्ग 16**- शिशुपाल के दूत का श्रीकृष्ण के समक्ष उभयार्थक शब्दों का प्रयोग, सात्यकि का उत्तर,दूत का पुनः शिशुपाल के पराक्रम का वर्णन करना।
- **सर्ग 17**- श्रीकृष्ण के पक्ष के राजाओं का कोप, सेना की प्रस्तुति तथा प्रस्थान।
- **सर्ग 18**- सेनाओं के घोर युद्ध का वर्णन
- **सर्ग 19**- चित्रालङ्कार से पूर्ण पद्यों के द्वारा व्यूह-रचना एवं विचित्र युद्ध का वर्णन।
- **सर्ग 20** -श्रीकृष्ण और शिशुपाल का शस्त्र-युद्ध, दिव्यास्त्र युद्ध

तथा वाग्युद्ध, शिशुपाल के शब्दों से कुपित कृष्ण द्वारा सुदर्शनचक्र से शिशुपाल का शिरश्छेदन , शिशुपाल के तेज का विजयी कृष्ण में प्रवेश।

- यह कथानक महाभारत के सभापर्व (अध्याय 35-43) से लिया गया है, जिसमें युधिष्ठिर के यज्ञ में शिशुपाल के मारे जाने की कथा है।

महाकवि श्रीहर्ष

- **नाम** - श्रीहर्ष
- **पिता** - श्रीहीर
- **माता** - मामल्लदेवी
- **श्रीहर्षं कविराजराजिमुकुटालङ्कारहीरः सुतम्**
  श्रीहीरः सुषुवे जितेन्द्रियं मामल्लदेवी च यम्। 1/145
- **समय-** 12वीं शताब्दी के मध्य से 12वीं शताब्दी के उत्तरार्ध के बीच (सम्भावित)
  आश्रयदाता- जयचन्द्र
  उपाधि-1.नवभारती 2. कविपण्डित (राजा गोविन्दचन्द्र द्वारा)
  उपासक- शिव, विष्णु, सरस्वती
  प्रिय छन्द- उपजाति
- श्रीहीर काशी के राजा गहरवारवंशी विजयचन्द्र की राज्यसभा के प्रधान पण्डित थे।
- श्रीहीर को विजयचन्द्र की राज्यसभा में मिथिला के प्रसिद्ध पण्डित श्री उदयनाचार्य ने शास्त्रार्थ में पराजित किया था।
- श्रीहीर पुत्र श्रीहर्ष ने उदयनाचार्य को पराजित करने का वचन अपने पिता (श्रीहीर) को उनके मरते समय दिया था।
- श्रीहर्ष ने 'चिन्तामणि' मन्त्र का एक वर्ष पर्यन्त जप किया था।
- त्रिपुरादेवी के वरदान से श्रीहर्ष **अत्यन्त** उत्कृष्ट विद्वान् हो गये।
- जयचन्द्र की प्रार्थना स्वीकार कर श्रीहर्ष ने नैषधीयचरितम् महाकाव्य की रचना की।
- नैषधीयचरित महाकाव्य की दोष रहित प्रामाणिकता के लिए श्रीहर्ष कश्मीर गये थे।
- महाकवि श्रीहर्ष नदी तट पर बैठकर रुद्र मन्त्र का जप किये थे।
- हरिहर कवि को भी श्रीहर्ष का वंशज माना जाता है।
- श्रीहर्ष के निवास स्थान के सम्बन्ध में विद्वान् मतैक्य नहीं हैं।
- कुछ विद्वान् कन्नौज का, कुछ वाराणसी का, कुछ बंगाल का एवं अन्य कश्मीर का निवासी बतलाते हैं। "**ताम्बूलद्वयमासनं च लभते यः कान्यकुब्जेश्वरात्।**" (नैषध. 22/15)
- कविवर राजशेखर सूरि ने महाकवि श्रीहर्ष की सौ से अधिक रचनायें होने का उल्लेख किया है -
  "**खण्डनादिग्रन्थान् परश्शतान् जग्रन्थ।**"
- नैषधीयचरित में नैषध के अतिरिक्त 8 ग्रन्थों का उल्लेख किया गया है।
- महाकवि श्रीहर्ष ने अपने नैषधीयचरित में अपनी रचनाओं के साथ-साथ प्रत्येक सर्गान्त श्लोक में अपने माता व पिता का भी उल्लेख किया है। श्रीहर्षं कविराजराजिमुकुटालङ्कारहीरः सुतम् श्रीहीरः सुषुवे जितेन्द्रियं मामल्लदेवी च यम्।।
- श्रीहर्ष के शताधिक ग्रन्थों के नाम का कोई प्रबल प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं।
- ये 10 रचनायें अविवादित व प्रमाणित हैं-
  1. नैषधीयचरित 2. स्थैर्यविचारप्रकरण 3. विजय-प्रशस्ति 4. खण्डनखण्डखाद्य 5. गौडोर्वीशकुल-प्रशस्ति 6. अर्णववर्णन 7. छिन्दप्रशस्ति 8. शिवशक्तिसिद्ध 9. नवसाहसाङ्कचरितचम्पू 10. ईश्वराभिसन्धि
- इनमें से नैषधीयचरित व खण्डनखण्डखाद्य के अलावा शेष 8 ग्रन्थ अनुपलब्ध हैं।
- श्रीहर्ष की काव्य शैली प्रसादगुणों से युक्त वैदर्भी शैली है।
- गुण में प्रमुखतः माधुर्य और ओज की प्रचुरता है।
- महाकाव्य में एक स्थल पर श्लेष अलंकार का इतना सुन्दर चित्रण किया है कि, अन्य कवि इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं।
  देवः पतिर्विदुषि नैषधराजगत्या
  निर्णीयते न किमु न ब्रियते भवत्या।
  नायं नलः खलु तवातिमहानलाभो
  यद्येनमुज्झसि वरः कतरः पुनस्ते ॥ नैषध 13/33
- हर्ष ने उपर्युक्त श्लोक के पाँच अर्थ बताये हैं-
  1. इन्द्रपक्ष में 2. अग्नि पक्ष में 3. यम पक्ष में 4. वरुण पक्ष में 5. नल पक्ष में
- नैषधीयचरित में 9 निधियों का उल्लेख है-
  महापद्म, पद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील व खर्व

नैषधीयचरितम्

- **लेखक -** श्रीहर्ष
- **काव्यविधा -** महाकाव्य
- **कुल सर्ग -** 22 (बाईस)
- **नायक -** नल (धीरोदात्त)
- **नायिका -** दमयन्ती
- **प्रतिनायक -** 4 नल के रूप में क्रमशः अग्नि, वरुण, इन्द्र व यम।
- **अङ्गीरस/प्रधानरस -**शृङ्गार
- **अन्य रस-**वीर, हास्य, करुण, रौद्र एवं अद्भुत आदि।
- **गुण -** माधुर्य, ओज, प्रसाद (प्रायः सभी काव्य गुण पाये जाते हैं)
- **रीति -** मुख्यतः वैदर्भी
- **अलङ्कार -** अनुप्रास (मुख्य रूप से)
- **अन्य अलङ्कार -** अतिशयोक्ति आदि।
- **छन्द -** कुल उन्नीस 19 छन्दों का प्रयोग है जिनमें उपजाति, वसन्ततिलका, अनुष्टुप्, वंशस्थ तथा शिखरिणी प्रुमख हैं। (उपजाति सर्वाधिक 7 सर्गों में है।)

नामकरण

- निषध देश के राजा (नल) का चरित वर्णित होने से इस ग्रन्थ का नाम 'नैषधीयचरितम्' रखा गया है।

महाकवि भास

- **कवि का नाम-** भास (प्रामाणिक जीवनपरिचय अज्ञात)
- **उपाधि-** धावक
- **गोत्र-** अगस्त्य गोत्र की हैमोदक शाखा में 'भाष' गोत्र है।
- **जन्म समय-** 100ई0पू0- 200ई0 के मध्य
- **उपासक-** वैष्णवधर्म
- **रीति-** वैदर्भी
- **गुण-** प्रसाद,माधुर्य एवं ओज तीनों का प्रयोग
- **रस-** मुख्यतया शृङ्गार एवं वीररस का प्रयोग।
- **शैली-** सरल भाषा का प्रयोग,अकृत्रिम शैली।
- **प्रिय अलंकार-** अनुप्रास,उपमा,स्वभावोक्ति,उत्प्रेक्षा, रूपक आदि
- **भास की कृतियाँ**
- त्रिरुवांकुर नगर निवासी **टी0गणपति शास्त्री** ने सन् - 1910-12 में **'भासनाटकचक्रम्'** नाम से भास के 13नाटकों का संग्रह **अनन्तशयन ग्रन्थमाला (त्रिवेन्द्रम्)** से प्रकाशित किया।
- कथावस्तु के आधार पर भास के 13 नाटकों को चार भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

➢ कथावस्तु के आधार पर भास के नाटकों का वर्गीकरण

रामायणमूलक	महाभारतमूलक	उदयनकथामूलक	कल्पनामूलक
1.अभिषेकनाटक	3.मध्यमव्यायोग	10.प्रतिज्ञायौगन्धरायण	12.अविमारक
2.प्रतिमानाटक	4.दूतवाक्यम्	11.स्वप्नवासवदत्तम्	13.दरिद्रचारुदत्त
	5.कर्णभार		
	6.दूतघटोत्कच		
	7.पञ्चरात्रम्		
	8.ऊरुभंग		
	9.बालचरित		

भास के रूपकों का संक्षिप्त परिचय

1. **अभिषेकनाटक-** यह **छः अङ्कों** का नाटक है। इसमें किष्किन्धाकाण्ड से लेकर लङ्काकाण्ड तक की सम्पूर्ण कथा संक्षेप में दी गयी है। अंत में रावण वध के पश्चात् राम के राज्याभिषेक का वर्णन है।
2. **प्रतिमानाटक-** इस नाटक में **सात अङ्क** हैं। इसमें भी राम के जीवन का वर्णन है।
3. **मध्यमव्यायोग-** यह **एक अङ्क** का व्यायोग नामक रूपक है। इसमें मध्यम पाण्डव भीम के द्वारा घटोत्कच के हाथ से एक ब्राह्मण पुत्र को बचाने का वर्णन है। भीम अपने पुत्र घटोत्कच को देखकर आनन्दित होते हैं और हिडिम्बा से उनका पुनर्मिलन होता है।
4. **दूतवाक्यम्-** यह **एकाङ्की** रूपक है। इसमें कृष्ण के दूत बनकर पाण्डवों का सन्धि प्रस्ताव लेकर दुर्योधन के पास जाने का वर्णन है।
5. **कर्णभार-** यह भी **एकाङ्की** है। इसमें कर्ण का,ब्राह्मण वेशधारी इन्द्र को कवच और कुण्डल दान में देने का वर्णन है।
6. **दूतघटोत्कच-** यह **एकाङ्की** नाटक है। अभिमन्यु की मृत्यु के बाद श्रीकृष्ण का घटोत्कच को दूत बनाकर धृतराष्ट्र के पास भेजना और दुर्योधन द्वारा उसका अपमान।
7. **पञ्चरात्र-** इस रूपक में **तीन अङ्क** हैं। यज्ञ की समाप्ति पर द्रोण ने दुर्योधन से दक्षिणा माँगी कि पाण्डवों को आधा राज्य दे दो। दुर्योधन शर्त लगाता है कि यदि पाँच रात के अन्दर पाण्डव मिल जाते हैं तो दे दूँगा। द्रोण के प्रयास से पाण्डव मिलते हैं और आधा राज्य प्राप्त करते हैं।
8. **ऊरुभङ्ग-** यह **एकाङ्की** नाटक है। द्रौपदी के अपमान के प्रतीकार स्वरूप भीम द्वारा दुर्योधन की जंघा को तोड़ करके उसको मारने का वर्णन है।
9. **बालचरित-** इस नाटक में **पाँच अङ्क** हैं। इसमें श्रीकृष्ण के जन्म से लेकर कंसवध तक की कथा वर्णित है।
10. **चारुदत्त-** इसमें **चार अङ्क** हैं। इसमें निर्धन ब्राह्मण चारुदत्त और वसन्तसेना नाम की वेश्या के प्रणय का वर्णन है। इसमें भरतवाक्य नहीं है और कथा अधूरी है।
11. **अविमारक-** इस नाटक में **छः अङ्क** हैं। इसमें राजकुमार अविमारक का राजा कुन्तिभोज की पुत्री कुरङ्गी के साथ प्रणय-विवाह का वर्णन है।
12. **प्रतिज्ञायौगन्धरायण-** इस नाटक में **चार अङ्क** हैं। उदयन के वासवदत्ता से प्रेम और विवाह का वर्णन है। यौगन्धरायण द्वारा उदयन को प्रद्योत के यहाँ से छुड़ाने और उसकी नीतिमत्ता का वर्णन है।
13. **स्वप्नवासवदत्तम्-** इसमें **छः अङ्क** हैं। यौगन्धरायण का वासवदत्ता के मरने के प्रवाद को फैलाकर उदयन का पद्मावती से विवाह कराना तथा उदयन के अपहृत राज्य को पुनः प्राप्त कराने का वर्णन है।

प्रतिमानाटकम्

लेखक- महाकवि भास

काव्यविधा- नाटक

विभाजन- 7 (सात) अङ्कों में

उपजीव्य- रामायण

श्लोक संख्या- 157

अङ्क	श्लोक संख्या
प्रथम	31
द्वितीय	21
तृतीय	24
चतुर्थ	28
पञ्चम	22
षष्ठ	16
सप्तम	15
योग	**157**

नायक- राम
नायिका- सीता
प्रतिनायक- रावण
कञ्चुकी- बालाकि
प्रतीहारी- विजया
प्रधान/अङ्गीरस- करुण रस
नोट- म.टी. गणपतिशास्त्री 'धर्मवीररस' को अङ्गीरस मानते हैं।
अन्य रस- वीर, शृङ्गार, अद्भुत आदि
अलङ्कार- उपमा, स्वभावोक्ति
प्रमुख छन्द- अनुष्टुप्
रीति- वैदर्भी

स्वप्नवासवदत्तम्

- **लेखक-** महाकवि भास
- **काव्यविधा-** नाटक
- **विभाजन-** 6 अङ्कों में
- **उपजीव्य-** ऐतिहासिक (गुणाढ्यकृत बृहत्कथा)
- **श्लोक संख्या-** 57

अङ्क	श्लोक संख्या	अङ्क	श्लोक संख्या
प्रथम	16	द्वितीय	00
तृतीय	00	चतुर्थ	09
पञ्चम	13	षष्ठ	19
		योग-	**57**

- **नायक-** उदयन
- **नायिका-** वासवदत्ता
- **विदूषक-** वसन्तक
- **कञ्चुकी-** बादरायण (उदयन का), रभ्य (महासेन प्रद्योत का)
- **प्रतिनायक-** आरुणि
- **प्रधान/अङ्गी रस-** शृङ्गार रस
- **अन्य रस/गौण रस** वीर, करुण एवं अद्भुत रस
- **नायक कोटि-** धीरललित (दक्षिण नायक)
- **अलङ्कार-** उपमा के साथ-साथ रूपक और उत्प्रेक्षा।
- **गुण-** प्रसाद, माधुर्य और ओज का समन्वय।
- **रीति-** वैदर्भी
- **छन्द-** सर्वाधिक प्रयुक्त छन्दों में अनुष्टुप् (22) और वसन्ततिलका (11) मुख्य हैं।

विशाखदत्त

- **नाम-** विशाखदत्त
- **पिता का नाम-** भास्करदत्त
(कुछ संस्करणों में इनके पिता का नाम 'पृथु' भी दिया गया है।)
- **पितामह-** बटेश्वरदत्त
- **निवासस्थान-** सम्भवतः बंगाल अथवा बिहार
- **उपासक-** शिव के
- **रीति-** वैदर्भी किन्तु उग्रता या भयङ्करता का वर्णन करने के लिए गौड़ी रीति का प्रयोग।
- **प्रिय छन्द-** अनुष्टुप्, वसन्ततिलका, शार्दूलविक्रीडित।
- **प्रिय अलङ्कार-** अर्थालङ्कार।
- **समय-** अधिकांश विद्वानों के अनुसार चतुर्थ शताब्दी।
- **आश्रयदाता-** तैलङ्ग महोदय के अनुसार 'अवन्तिवर्मा'।
- **रचनाएँ-** 1.मुद्राराक्षस 2.देवीचन्द्रगुप्त 3.अभिसारिकवञ्चितकम्
- 'मुद्राराक्षस' ही विशाखदत्त की एकमात्र प्रामाणिक रचना है।

मुद्राराक्षस

- **लेखक-** विशाखदत्त
- **काव्यविधा-** नाटक (ऐतिहासिक)
- **विभाजन-** 7 (सात) अङ्कों में
- **श्लोक संख्या-** 169

अङ्क	अङ्कों का नाम	श्लोक संख्या
प्रथम	मुद्रा-लाभ	27
द्वितीय	राक्षस-विचार	23
तृतीय	कृतक-कलह	33
चतुर्थ	राक्षस-उद्योग	22
पञ्चम	राक्षस-निकार	24
षष्ठ	राक्षस-निर्वेद	21
सप्तम	राक्षस-निग्रह	19
	योग-	169

गुण- ओज,माधुर्य तथा प्रसाद गुणों का समन्वय। मुद्राराक्षस में तीनों गुणों का सम्मिलित रूप से प्रयोग है।
अलङ्कार- उपमा, रूपक, समासोक्ति, उत्प्रेक्षा, श्लेष, अर्थान्तरन्यास अलङ्कारों की प्रधानता।
रीति- वैदर्भी के साथ-साथ गौड़ी रीति।
छन्द- सम्पूर्ण नाटक में 19 प्रकार के छन्दों का प्रयोग है।
- अनुष्टुप् तथा आर्या जैसे छोटे छन्द तथा वसन्ततिलका, शिखरिणी, शार्दूलविक्रीडित, स्रग्धरा जैसे बड़े छन्दों का भी प्रयोग है।

मुख्य/प्रधान/अङ्गी रस- वीररस।

उपजीव्य- विष्णुपुराण तथा श्रीमद्भागवतमहापुराण

- दशरूपककार धनञ्जय, मुद्राराक्षस का उपजीव्य 'बृहत्कथा' को मानते हैं।

नायक- चाणक्य (कौटिल्य, विष्णुगुप्त) कुछ विद्वान् चन्द्रगुप्त को नायक मानते हैं।

नायिका- कोई नायिका नहीं। (नायिका विहीन नाटक)

प्रतिनायक- राक्षस (सुबुद्धिशर्मा)

कञ्चुकी- 1.जाजलि (मलयकेतु का)
2.वैहीनर (चन्द्रगुप्त का)

मुद्राराक्षस का नामकरण

- मुद्राराक्षस का नामकरण इस नाटक के कथानक की एक महत्त्वपूर्ण घटना के आधार पर किया गया है और वह है- 'राक्षस की मुद्रा प्राप्ति'।
- चाणक्य, चन्द्रगुप्त के राज्य को चिरस्थायी बनाने के लिए राक्षस को उसका अमात्यपद ग्रहण करवाना चाहता है। अचानक ही अपने गुप्तचर निपुणक द्वारा चाणक्य को राक्षस के नाम से अङ्कित उसकी अँगूठी प्राप्त हो जाती है।
- यही अँगूठी (मुद्रा) राक्षस को वश में करने की यन्त्र बन जाती है।

महाकवि दण्डी

लेखक - दण्डी

समय - सप्तम शती का प्रारम्भिक काल

पितामह - मनोरथ **पिता** वीरदत्त

माता - गौरी

प्रपितामह - भारवि (अवन्तिसुन्दरी कथानुसार)

जन्मस्थल - अवन्तिसुन्दरी के अनुसार दण्डी के पूर्वज गुजरात राज्य के 'आनन्दपुर' के रहने वाले थे। बाद में एलिचपुर आकर रहने लगे। इसके बाद स्वयं काञ्ची में आकर बसे।

- संस्कृत गद्यकाव्य के इतिहास में गद्य के लेखक के रूप में दण्डी का नाम अमर है।
- एक प्रशस्ति में वाल्मीकि और व्यास के बाद तीसरा स्थान दण्डी को ही दिया गया।

जाते जगति वाल्मीकौ कविरित्यभिधाभवत्।
कवी दूती ततो व्यासे कवयस्त्वयि दण्डिनि॥

कृतित्व - दण्डी के नामतः निम्न ग्रन्थ प्रचलित ग्रन्थ है-

1. दशकुमारचरितम् 2. काव्यादर्श 3. अवन्तिसुन्दरीकथा 4. छन्दोविचिति 5. कलापरिच्छेद 6. द्विसन्धानकाव्य

- दण्डी की प्रशस्ति के रूप में **'दण्डिनः पदलालित्यम्'** अत्यधिक प्रसिद्ध आभाणक है।

दशकुमारचरितम्

विधा - कथा/आख्यायिका

(यद्यपि दशकुमारचरित में गद्य के दोनों लक्षण प्राप्त होते हैं किन्तु स्वयं दण्डी इसे कथा मानते हैं)

विभाजन - वर्तमान ग्रन्थ 3 भागों में उपलब्ध है।

(i) पूर्वपीठिका - पाँच उच्छ्वास

(ii) मूलग्रन्थ दशकुमारचरितम् - आठ उच्छ्वास

(iii) उत्तरपीठिका

उपजीव्य - मौलिक कल्पना, गुणाढ्य कृत बृहत्कथा।

प्रधानरस- अद्भुत रस

रीति - वैदर्भी

गुण - प्रसाद

मुख्य अलङ्कार - उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा

- दण्डी सुकुमार मार्ग के कवि हैं।
- दण्डी के बारे में कहा गया है- **'कविर्दण्डी कविर्दण्डी कविर्दण्डी न संशयः।'**

नायक - राजवाहन

नायिका - अवन्तिसुन्दरी

प्रतिनायक - मानसार

अन्य पात्र - राजहंस (राजा), वसुमती (रानी), धर्मपाल, पद्मोद्भव, सितवर्मा, उपहारवर्मा, अपहारवर्मा, सुमन्त्र, सुमित्र, कामपाल, सुश्रुत, रत्नोद्भव, सुमति, सत्यवर्मा, मित्रगुप्त, मन्त्रगुप्त, अर्थपाल, विश्रुत, पुष्पोद्भव, प्रमति, सोमदत्त

प्रमुख टीकाएं -

(i) भूषण टीका - शिवरामपण्डित
(ii) पदचन्द्रिका - कविन्द्राचार्य
(iii) लघुदीपिका - भानुचन्द्र

नोट- ये टीकाएं केवल मध्यभाग की हैं पूर्वपीठिका और उत्तरपीठिका की नहीं।

- मध्य भाग के सप्तम उच्छ्वास में ओष्ठ्य वर्णों का बिल्कुल प्रयोग नहीं है।

राजकुमारों के नाम - 1. राजवाहन 2. उपहारवर्मा 3. अपहारवर्मा 4. मित्रगुप्त 5. मन्त्रगुप्त 6. अर्थपाल 7. विश्रुत 8. पुष्पोद्भव 9. प्रमति 10. सोमदत्त

उच्छ्वास विवरण

पूर्वपीठिका (5 उच्छ्वास)

उच्छ्वास	वर्णन
प्रथम	पुष्पपुरी, राजहंस, वसुमती आदि का वर्णन।
द्वितीय	कुमारों की दिग्विजय यात्रा का वर्णन।
तृतीय	सोमदत्त का चारित्रिक वर्णन।
चतुर्थ	पुष्पोद्भव का चारित्रिक वर्णन।
पञ्चम	राजवाहन का चारित्रिक वर्णन प्रारम्भ (अवन्तिसुन्दरी से विवाह)

मूलग्रन्थ दशकुमारचरितम् (8 उच्छ्वास)

उच्छ्वास	नाम (वर्णन)
प्रथम	राजवाहन-चरित
द्वितीय	अपहारवर्मा-चरित

तृतीय	उपहारवर्मा-चरित
चतुर्थ	अर्थपाल-चरित
पञ्चम	प्रमति-चरित
षष्ठ	मित्रगुप्त-चरित
सप्तम	मन्त्रगुप्त-चरित
अष्ठम	विश्रुत-चरित

उत्तरपीठिका - 4-5 पृष्ठात्मक

- उत्तर भाग में विश्रुत चरित की समाप्ति और ग्रन्थ की समाप्ति।

विष्णुशर्मा

नाम- विष्णुशर्मा

समय- लगभग 300 ई.पू.

(कथामुख में विष्णुशर्मा को शकलशास्त्रपारंगत छात्रों में अतिप्रिय एवं 80 वर्ष का वृद्ध व्यक्ति बताया गया है।)

*कुछ विद्वान् चाणक्य को ही विष्णुशर्मा मानते हैं, कुछ चाणक्य के पुत्र के रूप में विष्णुशर्मा को स्वीकार करते हैं। अन्य कुछ विद्वान् विष्णुशर्मा को इन सबसे अलग मानते हैं।

पञ्चतन्त्र

लेखक- विष्णुशर्मा

काव्यविधा- नीतिकथा

विभाजन- 5 (पाँच) तन्त्रों में

उपजीव्य- ऋग्वेद, छान्दोग्य उपनिषद्

मुख्य कथाएँ- 6

उपकथाएँ- 69

कुल कथाएँ-75

श्लोक- 1103

तन्त्र	तन्त्रनाम	उपकथाएँ	श्लोकसंख्या	कथा
प्रथम	मित्रभेद	22	461	शेर और बैल की कथा
द्वितीय	मित्रसंप्राप्ति	6	199	काक,कूर्म,मृग, चूहे की मित्रता
तृतीय	काकोलूकीय	16	255	कौए एवं उल्लू की कथा
चतुर्थ	लब्धप्रणाश	11	80	बन्दर और मगर की कथा
पञ्चम	अपरीक्षितकारक	14	98	ब्राह्मणी एवं नेवले की कथा
	(मुख्यकथा)	6	10	(भूमिका)
योग-		**75**	**1103**	

शैली- सरस एवं सरल

गुण- प्रसाद और माधुर्य

महाकवि शूद्रक

- **वास्तविक नाम-** शिमुक या सिमुक।
- **समय-** प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व।
- **आयु-** 100 वर्ष 10 दिन।
- शूद्रक ने स्वेच्छा से आत्मदाह किया था।
- महापराक्रमी, सुन्दर आकृति वाले एवं ब्राह्मणों में श्रेष्ठ थे।

''द्विजमुख्यतमः कविर्बभूव प्रथितः शूद्रक इत्यगाधसत्त्वः।''

- शूद्रक ऋग्वेद, सामवेद आदि वेदों के ज्ञाता, गणित, संगीत तथा हस्तिविद्या में निपुण थे।
- महाकवि शूद्रक शिव-पार्वती के भक्त थे।
- शूद्रक ने शिव के प्रताप से दिव्य दृष्टि पाकर, पुत्र को राजसिंहासन देकर, महामहिमशाली अश्वमेघ यज्ञ भी किया था।
- 'मृच्छकटिकम्' शूद्रक की एक मात्र रचना है।
- शूद्रक प्रथम नाटककार हैं, जिन्होंने तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था को ही अपनी लेखनी का आधार बनाया।
- **रीति-** वैदर्भी

मृच्छकटिकम्

- **लेखक-** शूद्रक
- **विधा-** प्रकरण
- **अङ्क-** 10(दस)
- **प्रधान/अङ्गी रस-** शृङ्गार
- **गौण/अङ्ग रस-** हास्य, करुण, भय तथा अद्भुत।
- **उपजीव्य-** भासकृत दरिद्रचारुदत्त
- डॉ. कान्तानाथ शास्त्री तेलंग के अनुसार 'गुणाढ्य' की बृहत्कथा में वर्णित 'गोपालदारक तथा आर्यक के विद्रोह की कथा।'
- **कुल श्लोक संख्या-** 380 (तीन सौ अस्सी)
- **नायक-** चारुदत्त (धीरप्रशान्त)
- **नायिका-** 1. कुलजा- धूता
  2. वेश्या (गणिका)- वसन्तसेना (प्रगल्भा नायिका)
- **प्रतिनायक-** शकार (संस्थानक)
- **अन्य पात्र-** आर्यक, शर्विलक, विट, सूत्रधार, नटी, रदनिका, मदनिका, धूता, चन्दनक, संवाहक, रोहसेन आदि।
- **पात्र संख्या-** 24 पुरुष और 8 स्त्रीपात्र हैं। सूत्रधार और नटी को छोड़ने पर 30 पात्र स्वीकृत हैं।
- मञ्च पर न आने वाले पात्र- जूर्णवृद्ध, पालक,रेभिल,सिद्ध।

मृच्छकटिकम् में अङ्कवार श्लोक

अङ्क	नाम	श्लोक
प्रथम	अलङ्कारन्यास	58
द्वितीय	द्यूतकर संवाहक	20
तृतीय	सन्धिच्छेद	30
चतुर्थ	मदनिका शर्विलक	33
पञ्चम	दुर्दिन	52
षष्ठ	प्रवहण विपर्यय	27
सप्तम	आर्यकापहरण	9
अष्टम	वसन्तसेना मोटन	47
नवम	न्यायालय (व्यवहार)	43
दशम	संहार (उपसंहार)	61
	योग-	**380**

रामायण

- रामायण महर्षि वाल्मीकि की कृति है।
- इसमें सात काण्ड हैं-

काण्ड का नाम	**सर्ग संख्या**
1. बालकाण्ड	77सर्ग
2. अयोध्याकाण्ड	119 सर्ग
3. अरण्यकाण्ड	75 सर्ग
4. किष्किन्धाकाण्ड	67 सर्ग
5. सुन्दरकाण्ड	68 सर्ग
6. युद्धकाण्ड	128 सर्ग
7. उत्तरकाण्ड	111 सर्ग
कुलसर्ग	**645 सर्ग**

- इसमें 24000 श्लोक हैं, अतः इसे **चतुर्विंशति साहस्त्री संहिता** भी कहते हैं।
- रामायण में मुख्यतः **अनुष्टुप्** श्लोक (छन्द) हैं।
- गायत्री मन्त्र में 24 वर्ण होते हैं। अतः यह मान्यता है कि इसको आधार मानकर रामायण में **24,000 श्लोक** लिखे गये हैं।
- प्रत्येक 1000 श्लोकों के बाद गायत्री मन्त्र के नये वर्ण से नया श्लोक प्रारम्भ होता है।
- संस्कृत साहित्य में इतिहास संज्ञक दो ग्रन्थ प्राप्त होते हैं एक रामायण दूसरा महाभारत।
- रामायण तथा महाभारत दोनों महाकाव्य के रूप में प्रसिद्ध हैं।
- वाल्मीकिकृत रामायण **आदिकाव्य** है।
- यह संस्कृतवाङ्मय में प्राप्त रामकथाओं के अतिरिक्त संसार के अनेक रामकथाओं जैसे अध्यात्म रामायण,अद्भुत रामायण, कम्बरामायण आदि राम विषयक काव्यों का मूल उपजीव्य स्वीकार किया जा सकता है।
- राजशेखर ने काव्यमीमांसा में इतिहास के दो भेद किये हैं,
  1. परिक्रिया **2. पुराकल्प**
- परिक्रियात्मक इतिहास एक नायक से सम्बद्ध है, पुराकल्पात्मक इतिहास अनेक नायकों से सम्बद्ध होता है।
- इसप्रकार रामायण केवल एक नायक विषयक होने से परिक्रियात्मक इतिहास स्वीकार किया जा सकता है।
- महाभारत में अनेक नायक सम्बन्धित कथायें होने से उसे पुराकल्पात्मक इतिहास माना जाना चाहिए।
- वेदों के बाद सर्वप्रथम अनुष्टुप् वाणी का प्रवर्तन आदि काव्य रामायण में ही है।
- ऋषि वाल्मीकि के द्वारा विरचित होने के कारण इसे **आर्षकाव्य** भी कहा जाता है।
- वाल्मीकि ने नारदजी से राम का वृत्तान्त सुना जो रामायण के बालकाण्ड का प्रथम सर्ग है जिसे **मूल रामायण** भी कहा जाता है।
- वाल्मीकि राम के समकालीन थे, अतः उन्होंने राम के चरित्र को काव्यबद्ध किया।
- ब्रह्मा की आज्ञा से वाल्मीकि ऋषि ने रामायण को रचा।

न ते वागनृता काव्ये काचिदत्र भविष्यति।
कुरु रामकथां पुण्यां श्लोकबद्धां मनोरमाम्॥

रामायण पर आश्रित ग्रन्थ

रामायण ग्रन्थ

1.योग वासिष्ठ (वसिष्ठ रामायण) ।

2. अध्यात्म रामायण ।
3. कम्बरामायण - तमिल भाषा में ।
4. अद्भुत रामायण ।
5. अगस्त्य रामायण ।
6. रङ्गनाथ रामायण - तेलगु में ।
7. कृत्तिवास रामायण - बंगला भाषा में
8. रामचरितमानस (तुलसीकृत) - अवधीभाषा में ।

रामायण आधारित महाकाव्य

रघुवंशम् - कालिदास । रामचरित -कवि अभिनन्द ।
रावणवध - भट्टि कवि । सेतुबन्ध - प्रवरसेन।
जानकीहरण - कुमारदास । रामायणमंजरी -क्षेमेन्द्र।
रघुनाथाभ्युदय - वामनभट्ट बाण। राघवपाण्डवीय - माधवभट्ट ।
रामायणसार -रघुनाथ ।

रामायण आधारित रूपक ग्रन्थ

1.भास - प्रतिमानाटक 2. भास - अभिषेकनाटक
3. दिङ्नाग - कुन्दमाला 4. भवभूति - उत्तररामचरित
5. भवभूति - महावीरचरित 6. राजशेखर - बालरामायण
7. मुरारि - अनर्घराघव 8. जयदेव - प्रसन्नराघव
9. शक्तिभद्र - आश्चर्य चूड़ामणि 10. रामभद्र - जानकीपरिणय
11. महादेव - अद्भुत दर्पण
12. दामोदर मिश्र - हनुमन्नाटक (महानाटक)

रामायण आश्रित चम्पूग्रन्थ

1. रामायणचम्पू - भोज 2. उत्तरचम्पू - वेंकटाध्वरि
3. चम्पूराघव - अनन्ताचार्य 4. अमोघराघव - दिवाकर
5. रामचन्द्र चम्पू - विश्वनाथ सिंह

महाभारत

- महाभारत के लेखक का नाम व्यास (कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास)है।
- **पिता का नाम -** पराशर ऋषि।
- **माता का नाम -** सत्यवती।
- यमुनाद्वीप में जन्म के कारण वेद व्यास को- द्वैपायन कहा जाता है।
- शरीर से कृष्ण वर्ण होने के कारण- कृष्णमुनि कहा जाता है।
- वैदिक मन्त्रों को याज्ञिक उपयोग के लिए चार वेदों में विभक्त करने के कारण- वेदव्यास कहा जाता है।
  'विव्यास वेदान् यस्मात् स तस्मात् व्यास इति स्मृतः'
- व्यास ने तीन वर्षों में महाभारत जैसे महान् ग्रन्थ की रचना की थी।

वंशावली -

वशिष्ठ
|
शक्ति
|
पराशर + सत्यवती
|
व्यास
|
शुकदेव

- **जन्म स्थान**- उत्तरापथ हिमालय
- भारतीय जनमानस की विश्वास परम्परा के आधार पर व्यास को कौरवों और पाण्डवों के समकालीन माना जाता है।
- वेदव्यास वेदों के विभाजन कर्त्ता, महाभारत, एवं भागवत पुराण सहित सभी अट्ठारह पुराणों के कर्त्ता के रूप में प्रसिद्ध हैं।
- भारतीय विश्वास में प्रत्येक द्वापर में आकर वेदव्यास वेदों का विभाजन करते हैं। अट्ठाईसवें व्यास का नाम 'कृष्ण द्वैपायन व्यास' है।
- पाश्चात्त्य विद्वानों के अनुसार 'व्यास' किसी का नाम न होकर प्रतीकात्मक कल्पना है।

व्यास का अन्य नाम-

1. बादरायण व्यास (बदरिकाश्रम में ज्ञान की साधना की थी।
2. पराशर्य (पराशर का पुत्र)

महाभारत का परिचय एवं महत्त्वपूर्ण तथ्य

- विश्व वाङ्मय में सर्वाधिक विशाल ग्रन्थ महाभारत है।
- महाभारत में एक लाख से अधिक श्लोक हैं।
- यह भारतीय जीवन शैली की समग्र और यथार्थ प्रस्तुति है।
- यह आकरग्रन्थ है, इसकी मान्यताएँ शाश्वत अर्थात् सार्वकालिक और सार्वदेशिक हैं।
- भारतीय परम्परा महर्षि व्यास की गणना सप्त चिरंजीवियों में करती है।
  अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमांश्च विभीषणः।
  कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः॥
- महाभारत भारतीय संस्कृति और आचार परम्परा का सर्वोत्तम विश्वसनीय और आदर्श एवं महानतम ग्रन्थ है।
- महाभारत एक आर्षमहाकाव्य है।
- ऋषि प्रणीत काव्यों को आर्षमहाकाव्य कहा जाता है।

- को एक लाख श्लोक होने के कारण महाभारत **शतसाहस्त्री संहिता** भी कहा जाता है।
- महाभारत, वाल्मीकि रामायण से चार गुना विशाल है।
- महाभारत में लेखक ने अपने युग के समस्त उल्लेखनीय विषयों को उल्लिखित किया है-'**यन्न भारते तन्न भारते।**'
- भारतवर्ष के समस्त पक्ष महाभारत में निहित हैं-
  धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ ।
  यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित् ॥
- अनेक आध्यात्मिक तथा भक्तिपूर्ण ग्रन्थ जैसे-**गीता, विष्णुसहस्रनाम, अनुगीता, गजेन्द्रमोक्ष, भीष्मस्तवराज** (पञ्चरत्न) महाभारत के ही भाग हैं।
- वैदिक धर्म और सिद्धान्तों का व्यावहारिक रूप हमें महाभारत में उपलब्ध होता है।
- महाभारत जीवित भारतीय संस्कृति का प्रकाश स्तम्भ है।

महाभारत का समय

- बालगंगाधर तिलक -ई.पू. 5000
- डॉ. वचनदेव कुमार -ई.पू. 3100 वर्ष
- विण्टरनित्स-ई.पू. चौथी शताब्दी से पहले।
- रामजी उपाध्याय ई.पू. 600 से 1200 के मध्य
- चन्द्रशेखर पाण्डेय एवं डॉ. नानूराम व्यास-320ई.पू. से 50 ई. के मध्य।

महाभारत का स्वरूप

- एक लाख से अधिक श्लोक हैं।
- 'शत-साहस्त्री-संहिता' भी कहते हैं।
- अट्ठारह पर्वों में विभक्त है।
- युधिष्ठिर इस ऐतिहासिक काव्य के नायक हैं।
- सबसे बड़ा पर्व शान्तिपर्व (14 हजार श्लोक)
- सबसे छोटा पर्व- महाप्रस्थानिक पर्व (1500 श्लोक) है।
- अट्ठारह पर्वों के अलावा अन्त में इसके परिशिष्ट के रूप में हरिवंश पर्व में कृष्ण जीवन चरित वर्णित है, इसे मिलाकर श्लोकों की संख्या एक लाख होती है।

महाभारत आश्रित ग्रन्थ

महाकाव्य -

किरातार्जुनीय	-	भारवि	-	बृहत्त्रयी
शिशुपालवध	-	माघ	-	बृहत्त्रयी
नैषधीयचरित	-	श्रीहर्ष	-	बृहत्त्रयी
भारतमञ्जरी	-	क्षेमेन्द्र		
नलाभ्युदय	-	वामनभट्ट बाण		
दूतघटोत्कच	-	भास		
मध्यमव्यायोग	-	भास		
बालचरित	-	भास		
ऊरुभङ्ग	-	भास		
पञ्चरात्र	-	भास		
दूतवाक्य	-	भास		
कर्णभार	-	भास		
अभिज्ञानशाकुन्तल	-	कालिदास		
वेणीसंहार	-	भट्टनारायण		
बालभारत	-	राजशेखर		
किरातार्जुनीयव्यायोग	-	वत्सराज		

चम्पूग्रन्थ

नलचम्पू	-	त्रिविक्रमभट्ट
भारतचम्पू	-	अनन्तभट्ट
भारतचम्पू	-	राजचूड़ामणि दीक्षित
पाञ्चालीस्वयंवरचम्पू	-	नारायण चम्पू

महाभारत का अंश भगवद्गीता

- स्मार्त परम्परा में एकमात्र ग्रन्थ भगवद्गीता स्वीकृत है।
- यह भीष्मपर्व (अध्याय-25-42) में है।
- इसमें 18 अध्याय, 700श्लोक एवं अनुष्टुप् छन्द है।

श्रीमद्भगवद्गीता

- श्रीमद्भगवद्गीता = श्रीमता भगवता गीतं या सा यह एक सार्वभौमिक ग्रन्थ है गीता मानव मात्र का धर्मशास्त्र है।
- गीता में उन सभी विषयों का समावेश है जो हमें पृथक् पृथक् शास्त्रों में प्राप्त होते हैं। अतएव महर्षि वेदव्यास ने कहा है-
  गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।
  या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिःसृता॥
  'गीता सुगीता करने योग्य है अर्थात् श्रीगीता जी को भली भाँति पढ़कर अर्थ और भावसहित अन्तः करण में धारण कर लेना मुख्य कर्तव्य है, जो कि स्वयं पद्मनाभ भगवान् श्रीविष्णु के मुखारविन्द से निकली हुई है, फिर अन्य शास्त्रों के विस्तार से क्या प्रयोजन है।
- गीता को **उपनिषदों का सार** बताते हुए कहा गया है कि सभी उपनिषदें मानों गऊयें हैं और उनका दोहन करने वाले गोपालनन्दन श्रीकृष्ण हैं, अर्जुन बछड़े हैं और 'गीता' दूध रूपी अमृत है-
  सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः।
  पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत्॥
- महर्षिवेदव्यास द्वारा विरचित महाभारत के भीष्मपर्व में वर्णित श्रीमद्भगवद्गीता सर्वाधिक लोकप्रिय भारतीय सनातनधर्म का ग्रन्थरत्न है।
- विश्व में सर्वाधिक टीकाओं से युक्त होने का गौरव गीता को ही प्राप्त है।
- श्रीमद्भगवद्गीता संस्कृत भाषा की सर्वाधिक लोकप्रिय रचना है।
- दार्शनिक चिन्तन के तीन प्रस्थान हैं-
  श्रौतप्रस्थान, सौत्रप्रस्थान व स्मार्तप्रस्थान।
- गीता का अर्थ है - गायी गयी / कही गयी ।
- भीष्म पर्व के अनुसार -
  ''या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिःसृता।''
- उपनिषद् शब्द स्त्रीलिङ्ग है अतः गीता शब्द में स्त्रीलिङ्ग का प्रयोग।
- गीता में उपनिषत्सु शब्द का प्रयोग है। यह आदरार्थ प्रयोग है ।
- गीता का रचनाकाल महाभारत का प्रारम्भिक दिवस है।
- मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी को गीता जयन्ती मनाई जाती है ।
- गीता पर सर्वाधिक प्राचीन भाष्य **'शाङ्करभाष्य'** है।

गीता में वर्णित शंख

पाञ्चजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनञ्जयः।
पौण्ड्रं दध्मौ महाशङ्खं भीमकर्मा वृकोदरः।। 1/15
अनन्तविजयं राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः।
नकुलः सहदेवश्च सुघोषमणिपुष्पकौ।। 1/16

देवता		शंख
श्रीकृष्ण	-	पाञ्चजन्य
अर्जुन	-	देवदत्त
भीम	-	पौण्ड्र
युधिष्ठिर	-	अनन्तविजय
नकुल	-	सुघोष
सहदेव	-	मणिपुष्पक

गीता के अध्याय एवं श्लोक संख्या

अध्याय नाम	-	श्लोकसंख्या
1. अर्जुनविषादयोग	-	47
2. सांख्ययोग	-	72
3. कर्मयोग	-	43
4. ज्ञानकर्मसंन्यासयोग	-	42
5. कर्मसंन्यासयोग	-	29
6. आत्मसंयमयोग	-	47
7. ज्ञानविज्ञानयोग	-	30
8. अक्षरब्रह्मयोग	-	28
9. राजविद्याराजगुह्ययोग	-	34
10. विभूतियोग	-	42
11. विश्वरूपदर्शनयोग	-	55
12. भक्तियोग	-	20
13. क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोग	-	34
14. गुणत्रय विभागयोग	-	27
15. पुरुषोत्तमयोग	-	20
16. दैवासुरसम्पद्विभागयोग	-	24
17. श्रद्धात्रयविभागयोग	-	28
18. मोक्षसंन्यासयोग	-	78
कुल श्लोक	**-**	**700**

- सबसे बड़ा अध्याय - 18, मोक्षसंन्यासयोग (78 श्लोक)
- सबसे छोटा अध्याय - 12और 15 वाँ (20-20 श्लोक)

श्रीमद्भगवद्गीता के प्रमुख पात्र एवं उनका परिचय-

धृतराष्ट्र - दुर्योधन आदि कौरवों के पिता
संजय - दिव्यदृष्टि प्राप्त धृतराष्ट्र के मन्त्री
धृष्टद्युम्न - पाण्डवों के सेनापति, द्रौपदी के भाई, द्रुपद के पुत्र
भीम - पाण्डवों में द्वितीय पाण्डव, कुन्तीपुत्र
अर्जुन - श्रीकृष्ण के सखा, पाण्डवों में तृतीय पाण्डव, कुन्तीपुत्र
युधिष्ठिर - पाण्डवों में प्रथम पाण्डव, कुन्तीपुत्र, धर्मराज के अवतार
नकुल - पाण्डवों में चतुर्थ पाण्डव,माद्री के पुत्र
सहदेव - पाण्डवों में अन्तिम पाण्डव, माद्री के पुत्र
द्रुपद - द्रौपदी के पिता
धृष्टकेतु - पाण्डव पक्ष के वीर योद्धा
चेकितान - पाण्डव पक्ष के वीर योद्धा
काशिराज - पाण्डव पक्ष के वीर योद्धा
पुरुजित् - पाण्डव पक्ष के वीर योद्धा
कुन्तिभोज - पाण्डव पक्ष के प्रमुख योद्धा
अभिमन्यु - अर्जुन और सुभद्रा के पुत्र
पितामह भीष्म - कौरव पक्ष के प्रथम सेनापति, 10 दिन तक सेनापति रहे।
द्रोणाचार्य - कौरवों और पाण्डवों के गुरु, कौरवों के द्वितीय सेनापति,05 दिन तक सेनापति।
कर्ण - कौरवों के तीसरे सेनापति, 2 दिन तक सेनापति रहे।
कृपाचार्य - कौरवों के प्रमुख योद्धा, सप्त चिरंजीवियों में एक
अश्वत्थामा - द्रोणाचार्य के पुत्र, कौरव पक्ष के प्रमुख योद्धा
विकर्ण - कौरव पक्ष का प्रमुख योद्धा (दुर्योधन का भाई)
भूरिश्रवा - कौरव पक्ष का प्रमुख योद्धा
श्रीकृष्ण - भगवान् विष्णु के अवतार, अर्जुन को गीता का उपदेश देने वाले
राजा विराट - पाण्डव पक्ष के प्रमुख योद्धा, अज्ञातवास में पाण्डव इन्हीं के यहाँ रहे थे।
दुर्योधन - धृतराष्ट्र के पुत्र, 100 पुत्रों में सबसे बड़ा